बाल-सखा

सचित्र

मासिक पत्र

भाग २३

जनवरी-दिसम्बर

१६३६

सम्पादक

श्रीनाथसिंह

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

वार्षिक मूल्य ढाई रुपये

लेख-सूची

* ये लेख सचित्र हैं।

नम्बर	विषय	लेखक	पृष्ठ

रङ्गीन चित्र

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वर्ष २३] जनवरी १९३९—पौष १९९५ [संख्या १

प्रथम किरण

लेखक, प्रो० मनोरञ्जन, एम० ए०

मैं हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ।
आलस्य शिथिलता अन्धकार
को दूर भगाने आई हूँ॥
मैं नव जीवन की मस्ती ले,
सौरभ सुषमा की बस्ती ले
घर-घर उत्सव, घर-घर मंगल
के पर्व रचाने आई हूँ।
मैं हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ॥
लख कर मेरी टेढ़ी चितवन,
जा छिपे खोह में तमचरगण
गई निशा, हँस उठी दिशा
सबके ही मन भाई हूँ।
मैं हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ॥
मेरे गुन गाता मलय पवन,
मेरा स्वागत करते खगगण,
मैं सोने का संसार लिये
कंचन बरसाने आई हूँ।
मैं हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ॥
जागो, लाला, तुम भी जागो,
यह आलस की मुद्रा त्यागो,
लूटो अमूल्य धन-राशि ललन,
मैं मुफ्त लुटाने आई हूँ।
मैं हूँ प्रभात की प्रथम किरण,
नवज्योति जगाने आई हूँ॥

एकलव्य [चित्रकार, श्रीयुत एम० पी० जोशी ।
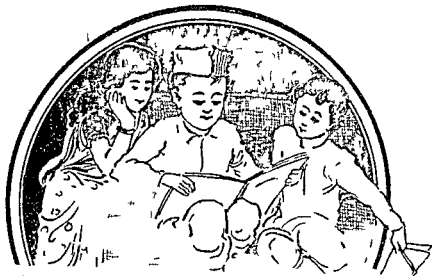
सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वर्ष २३] जनवरी १९३९—पौष १९९५ [सख्या १

प्रथम किरण

लेखक, प्रो० मनोरञ्जन, एम० ए०

मै हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ।
आलस्य शिथिलता अंधकार
को दूर भगाने आई हूँ॥
मैं नव जीवन की मस्ती ले,
सौरभ सुषमा की बस्ती ले
घर-घर उत्सव, घर-घर मगल
के पर्व रचाने आई हूँ।
मै हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ॥
लख कर मेरी टेढ़ी चितवन,
जा छिपे खोह मे तमचरगण
छिप गई निशा, हँस उठी दिशा
मैं सबके ही मन भाई हूँ।

मै हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ॥
मेरे गुन गाता मलय पवन,
मेरा स्वागत करते खगगण,
मै सोने का ससार लिये
कचन बरसाने आई हूँ।
मै हूँ प्रभात की प्रथम किरण
नवज्योति जगाने आई हूँ॥
जागो, लाला, तुम भी जागो,
यह आलस की मुद्रा त्यागो,
लूटो अमूल्य धन-राशि ललन,
मै मुफ्त लुटाने आई हूँ।
मै हूँ प्रभात की प्रथम किरण,
नवज्योति जगाने आई हूँ॥

मेरी जल्दबाज़ी

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

सभी बच्चे अपने माँ-बाप के दुलारे हैं, वे ग़रीब हों या अमीर। मेरे पिता जी मुझे बहुत प्यार करते थे। मेरे मुँह से निकली और किसी न किसी तरह वह ही कर देते। मेरी आदत इतनी ख़राब गई, कि मैं अपनी बात पूरी कराये बिना तो स्वयं चैन से बैठता न माता-पिता को चैन लेने देता। मेरी बात जब पिता जी मानते तो मैं माता के सामने ना रोता कि उनका कोमल ृय उसे सहन न कर सकता ौर वह पिता जी से, ख़ुशामद रके, मेरी माँग पूरी करा देतीं।

मैं ज्यों ज्यों बड़ा होता गया, मेरी माँगें बढ़ती गई और पूरी होती गईं। मगर हमेशा इस शर्त पर कि अब बहुत दिन कुछ न माँगूँगा। मगर अब तो मैं खूब जानता हूँ कि आदमी की चाहना कभी पूरी नहीं होती। इतना ही नहीं, ज्यों ज्यों उसकी माँगे पूरी होती हैं त्यों त्यों नई और उससे भी बड़ी माँगे तैयार हो जाती हैं। एक चाहना पूरी होते देर नहीं होती कि दूसरी तैयार हो जाती है। जब मैं यह वादा करता था कि बहुत दिन कुछ न माँगूँगा, मेरी नियत यही होती थी कि प्रतिज्ञा पूरी करूँगा, मगर वह कभी पूरी नहीं कर सकता था।

पंडित मोहनलाल नेहरू

ज्यों ज्यों मैं समझदार होता गया, माता-पिता मुझे अधिकाधिक समझाने के प्रयत्न करते रहे, मगर लोभी बालक को भला समझ से क्या काम? जैसे क्रोध में आदमी आधा पागल हो जाता है वैसे ही लोभी बालक हो उठता है। पिता जी तो दो चार दफ़े समझा कर डाँट फटकार से काम लेने लगे मगर माता जी अपने हृदय को वैसा कठोर न बना सकीं। उन्होंने कभी न डाँटा न फटकारा, परन्तु बहुत दिन बाद मैं समझा कि उन्होंने दूसरी तरकीब मेरे साथ चली।

अब मैं इतना बड़ा हो गया था कि केवल तीज-त्योहार को ही बड़े पुरस्कार माँगता और जब कुछ संतोष से बैठने का वादा कर लेता तो अपनी माँगों को दबाये रखता।

एक दिन अपनी माता के साथ बाजार गया तो क्या देखा कि तरह तरह की बदूकें बिक रही हैं। मुझे शिकार खेलने का शौक़ बचपन से था। मक्खियाँ, मच्छर, खटमल इत्यादि का शिकार किया ही करता था। अब बड़े जानवरों, जैसे चिड़िया इत्यादि को मारने का शौक़ चर्राया। उसी दूकानदार के सामने मैंने माता से वह बदूक लेने को कहा जिसमें एक के बाद एक छर्रे चल सकते थे। दाम उसके अधिक थे।

माता जी उतने मूल्य का उपहार मुझे देना नहीं चाहती थीं। बोलीं—अभी तो होली को पद्रह दिन है। उस समय तक ठहरो तो इस बदूक को दिला दूँ। और यदि अभी चाहो तो यह एकनाली मामूली बदूक मिल सकती है मगर फिर होली पर कोई उपहार नहीं मिलेगा।

मै तो इस समय बदूक के पीछे दीवाना था। इतनी समझ कहाँ कि पद्रह दिन ठहर कर बढिया पदार्थ लेता। जरा हूँ हाँ कर मैं वही लेने पर राजी हो गया और खुश करते पर बदूक रखे घर पहुँचा।

होली तक तो कितने ही गिरगिट बदूक से मारे गये, परन्तु होली आने पर अपनी जल्दबाजी पर बहुत पछताया। बात और बताऊँ। यह पहली दफा नहीं था कि जब मुझे इस तरह पछताना पडा हो। जल्द-बाज आदमी को बहुधा पछताना ही पडता है।

सरदी आई

लेखक, कुँवर टीकारामसिंह "अशुमाली"

सरदी आई, कपडे लाई
ऊनी रङ्ग-बिरङ्गे।
शाल, दुशाले, कम्बल लोई
गलाबन्द औ' अङ्गे॥
धूप, आग, पाजामा, टोपा,
मोजे औ' दस्ताने।
सारे जग को लगे खूब ही
अब तो दिन प्रति भाने॥
दिन तो अब होते है छोटे
राते बड़ी-बडी।
दिन मे और रात में ओ हो!
पडती ठड कड़ी॥
रात हुई तो हरी घास पर
ओस बूँद आ सोती।
बडे सुबह वह ऐसी दिखती
जैसे चमकें मोती॥
कभी कभी बादल हो जाता
पड़ता कुहरा पाला।
सूर्योदय के पूर्व नहाकर
बाबा जपते माला॥
काम बन्द रहता लिखने का
कलम न जाती पकड़ी।
सूर्य निकलने के पहिले तक
रहे अँगुलियाँ अकडी॥
माताएँ उठ बड़े सवेरे
गातीं शिशु ले लोरी।
बिस्तर तज कर, छत पर जाकर
लेतीं खूब घमोरी॥

हुआ पीपल के पेड़ की तरफ़ चला। वह गुप्त दरवाजा मिल गया। पेड़ के ही वह घास सा चमक रहा था। दूर सा जान पड़ता था कि धूप में घास का चमक रहा है। दुबरी दरवाजा खोल-अन्दर गया और सीढ़ियों पर उतरने। वह जल्दी ही जादूगर के बाग़ में गया। वहां उसने देखा कि जादूगर ाग़ में जो आलू, भाँटा और गोभी के पौदे उसके बाग़ के पौदों से बहुत अच्छे नहीं परन्तु फूल अच्छे-अच्छे खिले हुए हैं

दुबरी और जादूगर

और पौदों को सींचने के लिए एक छोटा सा डोल भी रक्खा हुआ है। उस डोल के चोंगे में लाल धागे से बँधा हुआ एक कंकड़ लटक रहा है। दुबरी माली ने कंकड़ की तरफ़ ग़ौर से देखा और कहा—"मुमकिन है, यही वह जादू का कंकड़ हो।" दुबरी का यह कहना ही था कि कंकड़ से यह आवाज़ निकली—

"हलका रहे डोल यह हरदम,
माली का हो काम।
इसी लिए मैं लटक रहा हूँ,
इसमें दुबरीराम॥
दिन हो या हो रात, सुबह हो
या आजाय शाम।
इसे फूल सा हलका रखना,
बस है मेरा काम"॥

दुबरी चिल्लाकर बोला—"बस, यही तो मैं भी चाहता हूँ। तुम नहीं सोच सके कि मेरा डोल कितना भारी है, और इतना भारी है कि उसको खींचते-खींचते मेरी तो आफत आ जाती है।"

दुबरी को फ़ासले पर से एक आवाज़ सुनाई पड़ी—"अगर तुम कोशिश करो तो तुमको एक कंकड़ मिल सकता है।"

यह जादूगर की आवाज थी, जिसका वह बाग था। वह ऊँची टोपी लगाये हुए बैठा था और अजीब तरह से एक विलायती जूता पहने हुए था। दुबरी माली ने कहा—"आप कब और कैसे यहाँ पर आकर बैठ गये, यह मुझे मालूम भी नहीं हुआ।

मैं आपके बाग़ का कोई नुकसान नहीं करता हूँ।"

जादूगर ने कहा—"मेरे आने-जाने की खबर किसी को नहीं होती और मैं यह जानता हूँ कि तुम कोई नुकसान नहीं कर रहे हो। अगर तुम जादू का कंकड चाहते हो तो तुम्हें एक काम करना पडेगा। मेरे इस बाग को दूसरे जादूगर ने अपने जादू से ऐसा बना दिया है कि इसमें कोई चीज पैदा ही नहीं होती। अगर तुम यह जादू उतार सको तो तुम जो काम कहोगे वह मैं तुम्हारे वास्ते करूँगा।"

दुबरी बोला—"लेकिन मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं।"

जादूगर ने कहा—"मैं सब बता दूँगा। सुनो। सबसे पहले तुम मेरे बाग के चारो तरफ खाँई खोदो। खाँई खोदने में तुमको कोई तकलीफ न होगी, क्योंकि तुमको जादू का फावड़ा दूँगा। उससे तुमको काम में तकलीफ न पहुँचेगी।"

दुबरो माली ने फावडा लेकर फौरन काम शुरू कर दिया। जब खाँई खुद गई तब जादूगर ने कहा—"अब हमारे काम का मुश्किल हिस्सा शुरू होता है। सुनो, उस जगल में एक सुन्दर कटीली झाड़ी है। वह जगल का बट कहलाती है। तुमको उस झाडी के पास जाना होगा। उन काँटो को तोडकर इन खाँइयों में बिखेरना होगा। ... तुमको अपने करीब नहीं फटकने देगी ... तुम कोई डाली तोड नहीं सकते हो।"

"कोशिश करूँगा" कहकर दुबरी माली चल पडा। वह जगल में पहुँचा और उसको वह सुन्दर कटीली झाड़ी दिखलाई पडी। इस झाडी की जडें जमीन मे नीचे-नीचे दुबरी के बाग तक पहुँची थी और दुबरी जब अपने बाग को सींचता था तब इस झाडी को पानी मिल जाता था। इसलिए यह झाडी दुबरी पर बहुत मेहरबान थी और उसने दुबरी से कहा—"चूँकि तुमने इतनी मेहनत की है कि जिससे मुझे पानी मिला है, इसलिए मैं तुम्हें एक डाली दूँगी।"

दुबरी इस कटीली झाडी को लेकर जादूगर के बाग़ में पहुँचा और काँटो को खाँई में बिखेर दिया। आखिरी काँटे के गिरते ही जादूगर का बाग गायब हो गया था। वह उस जगह पर चला गया जहाँ जादूगर का घर था और वहाँ पर दुबरी ने देखा कि एक लाल कंकड पडा हुआ रह गया है। यह वह जादू का कंकड था जिसको दुबरी चाहता था। दुबरी इस कंकड को अपने बाग में ले आया और उसे अपने डोल में बाँध दिया। अब उसका डोल बहुत हलका हो गया और वह अपने बाग को उसकी सहायता से दिन रात और सुबह-शाम बराबर सींचने लगा।

मजेदार कहानी

सुनहरा पहाड़

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी बी० ए०

रामू के पिता वशीधर अबीसीनिया में ापार किया करते थे। उससे उन्हें काफ़ी यदा हुआ और उन्होंने बहुत ज्यादा ज़मीन ीद ली, जिसके एक भाग में छोटा सा ाड भी था। लोग उसे सुनहरा पहाड़ ्ते थे। वहाँ पर उन्होंने एक बँगला बना ाया और वहाँ के आदमियों की मदद से खेती करने लगे। उनके पास दो मोटरें, ार साइकिलें और कई घोडे थे। रामू की म्र यद्यपि १२ साल की ही थी, फिर भी वह ाटर चला लिया करता था और अपने पिता ़ न रहने पर मोटर मे अपने भाई और बहन ा बैठाकर ख़ूब घुमाता था।

एक रोज़ रामू मोटर घुमाकर लौट रहा ा। उसने सडक पर एक आदमी को बैठा हुआ देखा। मोटर रोककर वह उसके पास गया। उस आदमी के पैर में चोट लग गई थी और उसके लिए चलना-फिरना दूभर हो गया था। रामू ने उसे मोटर में लेटा दिया। उसे वह बँगले पर ले आया। रामू के पिता उसके इस काम से बहुत खुश हुए। जिस आदमी को रामू ले आया था उसका नाम अम्बापा था और रामू के बँगले से १० मील पर उसका मकान था। अम्बापा कई महीनो तक रामू के बँगले पर रहा। रामू उसे खाने के लिए अच्छी चीजें देता और खाली

अम्बापा

रहने पर उसे पढाता। धीरे-धीरे अम्बापा चगा हो गया और पढना-लिखना सीख गया। बाद में वह रामू और उसके पिता वशीधर से आज्ञा लेकर अपने घर चला गया।

रामू के बँगले से शहर २५ मील की दूरी पर था और वह भी उसी नदी पर था जिस पर रामू का बँगला था। एक दिन रामू के पिता ने उससे कहा—"मुझे शहर जाना है और वहाँ एक ज़रूरी काम है। मै कल शाम तक वहीं रहूँगा। तुम घर की देख-भाल करना।" इतना कहकर वशीधर मोटर मे बैठकर रवाना हो गये।

अब रामू को काफी आजादी मिली। रामू के भाई सुरेश ने कहा, "इस वक्त बाबू जी नहीं है। चलो हम लोग मछली मारे।" सुरेश की बात रामू को अच्छी लगी। इतनी ही देर में रामू की छोटी बहन कमला भी आ गई। यद्यपि उसे मछली मारने में कुछ भी मजा नहीं आता था फिर भी वह बँगले में

अकेला रहना पसन्द नहीं करती थी। वह भी जाने के लिए तैयार हो गई। बस, तीनों नदी की ओर चल पड़े। वे लोग जाकर मछली पकड़ने लगे। दो घंटे में रामू ने १० मछलियां पकड़ीं और सुरेश ने सिर्फ तीन। कमला बैठी-बैठी विसूर रही थी।

इतने ही में एक लड़के ने रामू को एक चिट्ठी दी। उसमें यह लिखा था,—"भैया रामू, यहाँ के रहनेवालों ने आपके खलिहान को जलाने और आप लोगों को मारने का निश्चय कर लिया है। उन्हे आप लोगों की खेती-बारी नहीं अच्छी लगती। मैंने आपके पिता जी को शहर जाते हुए देखा है। इस वक्त आप लोग अकेले ही होंगे। आपका नौकर आपकी कुछ भी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि वह भी झगडा करनेवालों से मिला हुआ है। आप मोटर पर बैठकर शहर नहीं जा सकते, क्योंकि आपके बॅगले से १५ मील की दूरी पर सड़क पर पत्थर के बडे-बड़े टुकडे रख दिये गये है। उन्हें हटाकर आगे मोटर चलाना बहुत कठिन है। मैं खुद आपके बॅगले पर नहीं आ सकता, क्योंकि ऐसा करने से मैं भी मारा जाऊँगा और आप लोग भी न बच सकेंगे। अगर आप मोटर में बैठकर उस जगह आ जायँ, जहाँ पर आपने मुझे पहिले मोटर में बैठाया था, तो मैं आप लोगों की जिन्दगी बचा सकूँगा। देर न कीजिए। हो सके तो साथ में टार्च भी लेते आना।"

पत्र में किसी का दस्तखत नहीं था। फिर भी रामू लिखावट पहचान गया। यह अम्बापा का लिखा हुआ पत्र था जिसके साथ रामू और उसके पिता ने मिहरबानी की थी।

रामू समझदार था। उसने यह समझकर उस पत्र को अपने जेब में रख लिया कि उसे पढ़ते ही सुरेश रोने लगेगा। सुरेश और कमला के साथ वह बॅगले की ओर झपटा और उसकी सभी किवाडियों को बन्द करके मोटरखाने की ओर बढा। उसने अपने पास रुपये की थैलियाँ रख लीं और साथ ही अपने पिताजी का टार्च भी रख लिया। सुरेश और कमला को मोटर मे बैठाकर वह मोटर चलाने लगा।

थोड़ी ही देर मे रामू की मोटर वहाँ पहुँची, जहाँ कई महीने पहले रामू को अम्बापा मिला था। अम्बापा वहीं पर आज भी खडा था। मोटर रोककर रामू उसके पास पहुँचा। अम्बापा ने कहा—"तुम लोग मत डरो। हमारे साथ चलो और मैं तुम लोगों को अच्छी तरह रक्खूँगा। मोटर यहीं छोड दो। रास्ते मे कुछ बोलना मत। हमारे पीछे चुप-चाप चले आओ।" इतना कहकर अम्बापा चलने लगा और कमला, रामू और सुरेश उसके पीछे आने लगे। वे लोग धीरे-धीरे चलते रहे। थोडी ही देर में शाम हो गई। अम्बापा चलता ही रहा। अंत में वह एक जगह रुक गया। रामू ने अपना टार्च जलाया। उसने देखा कि वह घूम-फिर कर सुनहले पहाड की एक गुफा में पहुँच गया

एक मजेदार कहानी

सुनहरा पहाड़

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी बी० ए०

रामू के पिता वशीधर अबीसीनिया में व्यापार किया करते थे। उससे उन्हें काफी फायदा हुआ और उन्होंने बहुत ज्यादा जमीन खरीद ली, जिसके एक भाग में छोटा सा पहाड़ भी था। लोग उसे सुनहरा पहाड़ कहते थे। वहाँ पर उन्होंने एक बँगला बना लिया और वहाँ के आदमियों की मदद से वे खेती करने लगे। उनके पास दो मोटरें, चार साइकिलें और कई घोड़े थे। रामू की उम्र यद्यपि १२ साल की ही थी, फिर भी वह मोटर चला लिया करता था और अपने पिता के न रहने पर मोटर में अपने भाई और बहन को बैठाकर खूब घुमाता था।

एक रोज रामू मोटर घुमाकर लौट रहा था। उसने सड़क पर एक आदमी को बैठा हुआ देखा। मोटर रोककर वह उसके पास गया। उस आदमी के पैर में चोट लग गई थी और उसके लिए चलना-फिरना दूभर हो गया था। रामू ने उसे मोटर में लेटा दिया। उसे वह बँगले पर ले आया। रामू के पिता उसके इस काम से बहुत खुश हुए। जिस आदमी को रामू ले आया था उसका नाम अम्बापा था और रामू के बँगले से १० मील पर उसका मकान था। अम्बापा कई महीनों तक रामू के बँगले पर रहा। रामू उसे खाने के लिए अच्छी चीजें देता और खाली

अम्बापा

रहने पर उसे पढ़ाता। धीरे-धीरे अम्बापा चंगा हो गया और पढ़ना-लिखना सीख गया। बाद में वह रामू और उसके पिता वशीधर से आज्ञा लेकर अपने घर चला गया।

रामू के बँगले से शहर २५ मील की दूरी पर था और वह भी उसी नदी पर था जिस पर रामू का बँगला था। एक दिन रामू के पिता ने उससे कहा—"मुझे शहर जाना है और वहाँ एक जरूरी काम है। मैं कल शाम तक वहीं रहूँगा। तुम घर की देख-भाल करना।" इतना कहकर वशीधर मोटर में बैठकर रवाना हो गये।

अब रामू को काफी आजादी मिली। रामू के भाई सुरेश ने कहा, "इस वक्त बाबू जी नहीं हैं। चलो हम लोग मछली मारें।" सुरेश की बात रामू को अच्छी लगी। इतनी ही देर में रामू की छोटी बहन कमला भी आ गई। यद्यपि उसे मछली मारने में कुछ भी मजा नहीं आता था फिर भी वह बँगले में

अकेला रहना पसन्द नहीं करती थी। वह भी जाने के लिए तैयार हो गई। बस, तीनों नदी की ओर चल पड़े। वे लोग जाकर मछली पकड़ने लगे। दो घंटे में रामू ने १० मछलियाँ पकड़ीं और सुरेश ने सिर्फ तीन। कमला बैठी-बैठी विसूर रही थी।

इतने ही में एक लड़के ने रामू को एक चिट्ठी दी! उसमें यह लिखा था,—"भैया रामू, यहाँ के रहनेवालों ने आपके खलिहान को जलाने और आप लोगों को मारने का निश्चय कर लिया है। उन्हें आप लोगों की खेती-बारी नहीं अच्छी लगती। मैंने आपके पिताजी को शहर जाते हुए देखा है। इस वक्त आप लोग अकेले ही होंगे। आपका नौकर आपकी कुछ भी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि वह भी झगड़ा करनेवालों से मिला हुआ है। आप मोटर पर बैठकर शहर नहीं जा सकते, क्योंकि आपके बँगले से १५ मील की दूरी पर सड़क पर पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े रख दिये गये हैं। उन्हें हटाकर आगे मोटर चलाना बहुत कठिन है। मैं खुद आपके बँगले पर नहीं आ सकता, क्योंकि ऐसा करने से मैं भी मारा जाऊँगा और आप लोग भी न बच सकेंगे। अगर आप मोटर में बैठकर उस जगह आ जायें, जहाँ पर आपने मुझे पहिले मोटर में बैठाया था, तो मैं आप लोगों की जिन्दगी बचा सकूँगा। देर न कीजिए। हो सके तो साथ में टार्च भी लेते आना।"

पत्र में किसी का दस्तखत नहीं था। फिर भी रामू लिखावट पहचान गया। यह अम्बापा का लिखा हुआ पत्र था जिसके साथ रामू और उसके पिता ने मिहरबानी की थी।

रामू समझदार था। उसने यह समझकर उस पत्र को अपने जेब में रख लिया कि उसे पढ़ते ही सुरेश रोने लगेगा। सुरेश और कमला के साथ वह बँगले की ओर झपटा और उसकी सभी किवाड़ियों को बन्द करके मोटरखाने की ओर बढ़ा। उसने अपने पास रुपये की थैलियाँ रख लीं और साथ ही अपने पिताजी का टार्च भी रख लिया। सुरेश और कमला को मोटर में बैठाकर वह मोटर चलाने लगा।

थोड़ी ही देर में रामू की मोटर वहाँ पहुँची, जहाँ कई महीने पहले रामू को अम्बापा मिला था। अम्बापा वहीं पर आज भी खड़ा था। मोटर रोककर रामू उसके पास पहुँचा। अम्बापा ने कहा—"तुम लोग मत डरो। हमारे साथ चलो और मैं तुम लोगों को अच्छी तरह रक्खूँगा। मोटर यहीं छोड़ दो। रास्ते में कुछ बोलना मत। हमारे पीछे चुप चाप चले आओ।" इतना कहकर अम्बापा चलने लगा और कमला, रामू और सुरेश उसके पीछे आने लगे। वे लोग धीरे-धीरे चलते रहे। थोड़ी ही देर में शाम हो गई। अम्बापा चलता ही रहा। अन्त में वह एक जगह रुक गया। रामू ने अपना टार्च जलाया। उसने देखा कि वह घूम फिर कर सुनहले पहाड़ की एक गुफा में पहुँच गया

है। लेकिन उसने इस बार एक अजीब चीज देखी जिसे उसने कभी पहले नहीं देखा था। जहाँ पर वे खड़े थे उसके पास ही जमीन के नीचे एक नदी बह रही थी और उसके पास ही एक नाव बँधी थी। अम्बापा, जो अभी तक चुप था, बोल उठा—"रामू, तुम लोग नाव में बैठ जाओ। नाव बहुत हलकी है। तुम लोगों से अधिक आदमियों के बैठने पर यह डूब जायगी। इसी से मैं तुम लोगों के साथ नहीं चल सकता। तुम इसमें बैठे रहना और यह नाव धीरे-धीरे पहाड़ के चारों ओर घूमती हुई बहाव के साथ शहर पहुँच जायगी। तुम्हारे पिता जी शहर में जहाँ रहते हैं, तुम जानते ही हो। उतर कर वहाँ चले जाना। अब देर मत करो।"

रामू, कमला और सुरेश तीनों नाव में बैठ गये। रामू ने रुपये की थैली अम्बापा के हाथ में रखते हुए कहा—"अम्बापा, लो इन रुपयों को लो। यह हम लोगों की जान बचाने का इनाम है।" अम्बापा उन रुपयों को नहीं लेना चाहता था। इस पर रामू ने कहा,—"हम लोगों को अपने पास रुपयों की थैली न रखनी चाहिए, नहीं तो चोर-डाकुओं का डर बना रहेगा।" अम्बापा ने थैली ले ली। उसने उस पहाड़ में से थोड़ा सा टुकड़ा तोड़कर रामू को दे दिया और कहा—"इसे अपने पिता जी को दे देना।" अब उसने नाव की रस्सी छोड़ दी और वह नदी की धार में बह चली।

नाव बहुत देर तक भीतर ही भीतर पहाड़ के पास ही घूमती रही। इसके बाद वह खुले मैदान में आई। रात अँधेरी थी। कमला और सुरेश रामू से चिपटे थे। रामू उनसे कहता, "डरो मत। अब थोड़ी ही देर में हम लोगों की नाव शहर तक पहुँच जायगी और हम लोग सही-सलामत पिता जी के पास पहुँच जायँगे।"

रामू की नाव कई घंटे तक चलती रही। अंत में वह शहर के किनारे लग गई। रामू जमीन पर उतर पड़ा। वह कमला और सुरेश को लेकर अपने पिता के पास गया। वंशीधर ने रामू की सारी कहानी सुनी। वह अचंभे में रह गये। उन्होंने रामू, कमला और सुरेश को उठाकर छाती से लगा लिया। रामू ने पहाड़ का वह टुकड़ा भी दिया जिसे अम्बापा ने उसे, नाव छोड़ने के पहले, दिया था। यह सोने का टुकड़ा था। वंशीधर बहुत खुश हुए। अब उन्हें सोने की खदान का पता लग गया जो सुनहले पहाड़ में छिपी थी और जिसे वंशीधर नहीं जानते थे।

पुलिस की मदद से वंशीधर ने झगड़ा शान्त किया। उन्होंने पुराने बँगले की जगह पर, जिसे वहाँ के लोगों ने बरबाद कर दिया था, एक नया बँगला बनवाया। उन्होंने आदमी लगाकर सोने की खदान का भी काम शुरू कर दिया। अम्बापा ने ही उस खदान का पता बतलाया था और उसने वंशीधर के बच्चों की जिंदगी भी बचाई थी इसलिए उन्होंने अम्बापा को खदान का साझीदार बना दिया।

सात कहानियाँ

लेखक, रायबहादुर पं० लज्जाशंकर झा, बी० ए०, आइ० ई० एस०

१—एक समय अकबर बादशाह के दरबार में बैठने का वक्त झगड़ा पैदा हुआ। एक नवाब यह कहने लगा कि पहिली कुर्सी मेरी रहनी चाहिए, दूसरा सरदार कहता था कि अव्वल कुर्सी तो मेरी ही होनी चाहिए, तीसरा जोर देता था कि सिवा मेरे किसी दूसरे का हक नहीं कि पहिले बैठे। आखिर को मामला बादशाह के सामने पेश हुआ। वे भी बड़ी चिंता में पड़े कि किसको पहला रक्खूँ और किसका दूसरा। हर सूरत में झगड़ा बढ़ता ही नजर आया। बीरबल से पूछा कि दरबार में पहिली कुर्सी किसको मिलना चाहिए ? बीरबल ने चट से जवाब दिया—"जहाँपनाह, कल्लू हज्जाम को"। बादशाह जवाब सुन खिसिया कर बोले—"तुम न आव देखो न ताव, बेवकूफी का जवाब दे देते हो। कहाँ हमारे नव्वाब और सरदार और कहाँ एक नाई !! होश की दवा करो !"

बीरबल बोला—"जहाँपनाह ! मैं देखता हूँ कि जब कल्लू आता है तब वह आपकी दाढ़ी-मूँछ पर हाथ फेरता है, कभी नाक, कभी कान पकड़ता है, कभी सिर पकड़ कर दायें-बायें, ऊपर-नीचे करता है, और खुद बादशाह सलामत उसके इशारे की तामील करते हैं। क्या कोई दरबारी आपके साथ इतनी बेअदबी कर सकता है ? यदि हिम्मत भी करे तो वह कितनी देर तक जीता रह सकेगा ? अगर यह सब देखकर मैंने कल्लू हज्जाम का दर्जा बड़ा बताया तो क्या बेवकूफी का ?"

उत्तर सुनकर बादशाह हँस पड़े और दरबारी भी शरमाकर चुपके से अपने अपने आसन पर जा बैठे। झगड़ा यों ही ठंडा हो गया।

२—एक गरीब रँगरेज का लड़का पढ़ने-लिखने में होशियार निकला—अक्ल का तेज था। वजीफा फटकारता गया और आखिर को बी० ए० पास हो गया। पीछे वह नायब तहसीलदार, तहसीलदार होते हुए डिप्टी मैजिस्ट्रेट भी हो गया। आदमी चलता-पुर्जा और होशियार था। दिन दिन ऊँचा चढ़ता गया, पर अपनी जात छिपाये रखता था।

किसी एक मामले में दो एक बड़े आदमी फँस गये और इनकी अदालत में मुकदमा चला। इन्होंने अच्छी छान-बीन की और कम कर सजा दी। फैसला भी ऐसा अच्छा लिखा कि जजी से और हाईकोर्ट से भी बहाल रहा और अपील में मैजिस्ट्रेट की तारीफ हुई।

जिस दिन हाईकोर्ट से अपील का फैसला आया, उस दिन अदालत में मैजिस्ट्रेट के पास एक इंस्पेक्टर पुलिस बैठे थे। उन्हें मैजिस्ट्रेट साहिब की असलियत का हाल मालूम नहीं था और उन्होंने उस मामले में पैरवी भी की थी। मैजिस्ट्रेट साहिब फैसला पढ़कर फूले न समाये और ऐंठ के साथ इंस्पेक्टर से कहने लगे—"कहिये इंसपेक्टर साहिब, मैंने फैसला कैसा लिखा ?"

इंस्पेक्टर खुश करने को और कदाचित् सच्चे मन से भी कहने लगे—"हुजूर ! आप अपने फैसले में ऐसा गहरा रंग देते हैं कि हाईकोर्ट

भी धुलवाने से मुलजिम रंग न छुडवा सके।" इतना कहना था कि मैजिस्ट्रेट साहिब आग-बबूला हो गये और इंस्पेक्टर को उन्होंने बडी रुखाई से चले जाने को कहा।

बाहर आकर पुलिस इंस्पेक्टर अपने दोस्तों से कहने लगे कि अजीब आदमी है, मैंने तो उनके फैसले की बडाई की लेकिन उनका मिजाज बिगड गया। तब किसी ने उन्हें समझाया कि क्या तुम्हें रँगरेजों की ही उपमा देने को मिली थी। क्या उनकी असलियत नहीं जानते ?

३—एक मौलवी साहिब बडी भक्ति के साथ नमाज पढा करते थे। नमाज पढते समय किसी भी प्रकार के विघ्न का आना पसन्द नहीं करते थे। यदि कोई उस समय पास आ जावे, बोले या टोके, तो बेतरह बिगडते और खरी खोटी सुनाते थे। इतना तो निश्चय था कि विघ्नकर्ता को गधा तो बना ही देते। 'तू बडा गधा है'—ये शब्द उनके मुँह से निकल ही पडते। एक दिन मौलवी साहिब किसी खुले मैदान में दरी बिछा कर नमाज पढ रहे थे कि अचानक एक गधा चरता हुआ पास आया और उसने दरी के कोने पर पैर रख दिये। मौलवी साहिब की तबियत गर्म हो गई और कहना ही चाहते थे कि तू पूरा गधा है, पर कुछ सोचे समझे और कहने लगे कि 'जनाबे आली। आप की खिदमत में मैं क्या अर्ज करूँ ? आप तो आप ही हैं।'

४—एक काबुली पहिली बार हिन्दुस्तान आया। उसे हिन्दी बहुत कम आती थी। दिन अकेला बाजार गया और एक हलवाई दुकान पर खड़ा होकर पूछने लगा कि 'ये क्या है और ये क्या है'। हलवाई ने कहा कि आगा। ये बरफियाँ हैं, ये लड्डू हैं और ये जलेबियाँ हैं। तब आगा ने एक दूसरी चीज दिखा कर पूछा कि ये क्या है। हलवाई ने कहा—खाजा। आगा मूर्ख तो था ही, चट उठाकर खा गया। हलवाई डंडा लेकर मारने को तैयार हो गया और कहने लगा कि अबे, उल्लू के पट्ठे। मेरी मिठाई क्यों खा गया और उसे गिटला दी। काबुली ने कहा कि तुमने कहा खा जाओ और हम खा गये। लोग जमा हुए और आगा को पकड़ कर कोतवाली ले गये। कोतवाल ने देखा कि वह मूर्ख है, न अपनी गलती समझे, न पैसे देने को तैयार हो। हुक्म दिया कि इसका काला मुँह करके गधे पर बिठला बस्ती में फिराओ और डोंडी पीटते हुए स्टेशन ले जाओ और फिर टिकट दिलाकर वापिस अपने देश भेज दो। वैसा ही किया गया।

जब देश में पहुँचा तो गाँववाले पूछने लगे कि इतनी जल्दी क्यों आ गये। क्या हिन्दुस्तान पसंद नहीं आया ? उस बेवकूफ ने जवाब दिया कि नहीं, मुल्क बडा अच्छा है, 'मुफ्त में खाजा, मुफ्त में गाजा (रंग)। मुफ्त में खर (गधा चढने को) और मुफ्त में बाजा, फिर मुफ्त मे घर आजा।' सब मुफ्त होता है।

५—ब्रजदेश में बडा नामी एक गाँव था। वहाँ एक पण्डा रहता था। एक देहाती उसके बारे मे ब्रजभाषा मे इस प्रकार शिकायत करते सुना गया—

देहाती—मैंने बडावारे पडा स कही ही कि तू मेरे बडा में कडा मत धरिये पर सारे पड़ा ने
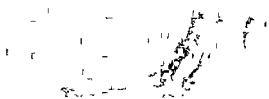
मेरे बडा हूँ मैं कडा धरि दीन्हे। कहा पडा के बाप को बडा रखो कि बान बडा मैं कडा धरि दीन्हे? सारो मण्डा मुसण्डा वाके एक डण्डा मार दूँगो तो वाको भण्डा फूटि जायगो।

लोग बेचारे देहाती की शिकायत की ओर ध्यान न देते उल्टे उसी पर बेतहाशा हँसते, सो क्यों? बालको, उत्तर लिख भेजो।

६—एक देहाती डाकघर गया और डाक मुंशी से पूछने लगा—"मुंशीजी, मेरे नाम की कोई चिट्ठी आई है क्या?" डाकमुंशी ने सवाल किया कि तुम्हारा नाम क्या है। देहाती ने जवाब दिया कि मेरा नाम मेरी चिट्ठी पर लिखा मिलेगा। मुंशी ने कहा कि तुम्हारा नाम मुझे मालूम नहीं, चिट्ठी दे नहीं सकता। देहाती बडबडाता गाँव में गया और लोगों से शिकायत करने लगा, कि देखो मुंशीजी की चालबाजी। मेरा नाम मालूम नहीं है ऐसा बताते हैं। साल भर में कुछ नहीं तो एक दर्जन चिट्ठियाँ डाकिये द्वारा मेरे घर भेजी हैं॥

बालको! यह तो बतलाओ कि कौन गलती करता है-डाकमुंशी या देहाती?

७—मध्यप्रदेश में एक अँगरेज अफसर थे, जिन्हें हिंदी कम आती थी। उनका एक लडका ७, ८ बरस का था। किसी कारण डाक्टर ने उनको सलाह दी कि लडके को गधी का दूध पिलाओ। साहिब को यह नहीं मालूम था कि गधा का स्त्रीलिंग कैसे बनता है। बैरा को बुलाया-वह अँगरेजी नहीं जानता था। बोले, "बैरा! डको (देखो), बाबा (लडके) के वास्टे गाडा (गधा) चाहिए—गाडा अमारे माफिक नहीं, मेम साहिब के माफिक गाडा लाओ।" बेचारा बैरा समझा कि बाबा के चढने के लिए गधा चाहिए और मेम साहिबा के समान सुन्दर होना चाहिए। बाजार से एक सुन्दर गधा ले आया। साहिब गधे को देखकर झुँझलाये और बोले-"डाम फूल! काला आडमी (आदमी) बाट (बात) समजटा (समझता) नहीं। साहिब गाडा नहीं माँगटा (माँगता) मेम साहिब गाडा माँगटा।" बेचारा बैरा घबराकर बोला कि साहिब, आपके दुशमन गधे हों। हमारी मालकन क्यों हों? इतने में दफ्तर के बाबू आ गये और उनसे साहिब ने बैरा की शिकायत की कि वह बडा बेवकूफ है, बात समझता नहीं। बाबू ने बैरा को समझा दिया कि साहिब को दूध देने-वाली गधी चाहिए। बैरा थोडी देर में ले भी आया। किस्सा खतम, पैसा हजम।

नमस्कार

लेखिका, कुमारी लक्ष्मीदेवी (आयु ८ वर्ष)

जिसने फूलों को गन्ध दिया,
जिसके हाथों ने रँगे मोर,
जिसने सारा संसार रचा,
जिसका कोई पाता न छोर।

जो सूरज को देता प्रकाश,
देता रजनी को अन्धकार,
मैं हाथ जोड़कर भक्ति सहित,
करती हूँ उसको 'नमस्कार'।

धुवाँधार

लेखक, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०, एल-एल० बी०

मैं अभी गया था जबलपूर
सब जिसे जानते दूर दूर
इस जबलपूर में कुछ हट कर
है भेड़ाघाट बना सुन्दर
नर्मदा वहाँ गिरती अपार
वह जगह कहाती 'धुवाँधार'
दिखलाता कैसा धुवांधार
सुन लो, है जैसा धुवांधार।

ऊपर हैं ऊँचे शृङ्ग शिखर
नीचे हैं चट्टानें पत्थर
ऊपर जल आता घहर घहर
नीचे जल आता हहर हहर
गल गल गल जल आता अपार
खल खल खल जल धाता अपार
गिरती धारा मोटी प्रगाढ़
मानो कोई खिसका पहाड़।

नीचे जल भगता उछल उछल
फिर, रुकता जाता मचल मचल
फिर, आगे बढ़, फिर पीछे रुक
फिर, ऊपर उठ, फिर नीचे झुक
खल खल खल खल
गल गल गल गल
कल कल कल कल
छल छल छल छल

बहता रहता है निर्मल जल
बहता रहता है शीतल जल
बहता रहता है उज्ज्वल जल
बहता रहता है प्रतिपल जल।

श्री सोहनलाल द्विवेदी

गिरती रहतीं सैकड़ों धार
मुश्किल करना जिनका शुमार
धारों से फिर फिर धार निकल
धारों में जातीं धार पिघल
ऊपर ऊँची चोटी सुढार
नीचे चट्टानें चमकदार
जब गिरतीं आतीं धार धार
नीचे बन जातीं चार चार
उठती इतनी फुहियाँ अपार
छा जाता भारी अन्धकार

कुछ दीख न पड़ता आरपार
इससे कहलाता 'धुवांधार'

खल खल छल छल
कल कल गल गल
कड़ कड़ खड़ खड़
गड़ गड़ घड़ घड़

मचता रहता है अजब शोर
धीमी अवाज तो कभी जोर
होता है ऐसा कभी शोर
मानो वर्षा आ गई घेर।

जल बहता नचता गाता सा
बच्चा सा शोर मचाता-सा
है कभी सामने भगता-सा
तो कभी किनारे लगता सा
है कभी निकलने लगता-सा
तो कभी निलखने लगता सा
है कभी हृदय दहलाता सा
तो कभी हृदय बहलाता-सा
कल कल छल छल कल कल छल छल
यों धुवांधार में बहता जल।

पड़ती रहती है कहीं भँवर
जल खाता फिरता है चक्कर
भीतर जा जा, बाहर आ आ
जल भगता है टक्कर खा खा,
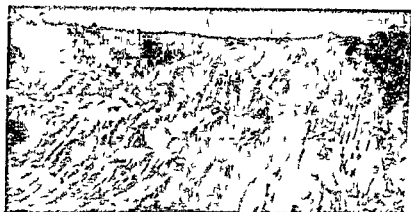
धुवांधार

धुवांधार का दूसरा दृश्य

यदि बात करो घर के समान
कुछ भी सुन सकते नहीं कान

करता रहता है जल किलोल
सैकड़ों तरह बन गोल गोल
क्षण सिमिट सिमिट क्षण फैल फैल
क्षण सिकुड़ सिकुड़ क्षण छल छैल

जल मथता रहता यों अपार
पानी बन जाता दूध धार
फेना मक्खन सा बार बार
ऊपर उठ छाता आर पार

कल कल छल छल कल कल छल छल
यों धुवांधार में बहता जल।

सिक्के जमा करना

लेखक, बाबू मुहम्मद अख़्तर प्रतापगढ़।

टिकट जमा करने की तरह सिक्के जमा करने का शौक भी एक अच्छा और लाभदायक शौक है। जिस तरह हम टिकट जमा करते हैं उसी तरह पुराने और नये सिक्के भी जमा किये जा सकते हैं। हम लोगों में सिक्के इकट्ठा करने का स्वभाव बहुत कम पाया जाता है। स्कूलों और कालेजों में इसका बयान बहुत कम आता है लेकिन इधर कुछ समय से इसकी तरफ ध्यान दिया जा रहा है, परन्तु इस तरह का ध्यान नियमानुसार और लाभदायक नहीं है। टिकट हाल ही की चीज है अर्थात् १८३४ ई० में इसका प्रचार हुआ, फिर भी थोड़े ही समय में हजारों तरह के टिकट छप गये और टिकट के शौकीनों ने हजारों टिकट जमा कर लिये। अगर हम आज चाहें तो टिकट की किसी दूकान से चार पाँच रुपये में हजारों टिकटों का पैकेट मोल लेकर एक सुन्दर और कीमती अलबम तैयार कर सकते हैं। लेकिन सिक्के इकट्ठा करना इतना आसान काम नहीं है और न इतनी संख्या में नाना प्रकार के सिक्के इकट्ठे ही किये जा सकते हैं। सिक्के टिकटों के पहले से ही पाये जाते हैं फिर भी यह बात बताना बहुत कठिन है कि सिक्के कब से चले और किसने इन्हें चलाया। हजरत ईसा से शताब्दियों पहले के सिक्के पाये जाते हैं।

पहले पहल लोगों ने सिक्के इतने सुन्दर नहीं बनाये थे, बल्कि जिस धातु के सिक्के बनाये जाते थे, उसके मोटे-मोटे टुकड़े काट कर उस पर राजा, बादशाह यह मलका का नाम और उसकी रकम का ठप्पा लगा देते थे। किनारे भी सादे होते थे, दनदानेदार नहीं होते थे। इसी लिए बहुत से लोग उसमें से चाँदी या सोना खुरच लिया करते थे। यही कारण है कि पुराने सिक्के बहुधा कटे-पिटे मिलते हैं। पुराने सिक्कों में आवाज भी नहीं होती जिसके दो कारण हैं। अव्वल तो ये बहुत मोटे होते थे, दूसरे केवल चाँदी या सोने के होते थे। इनमें ताँबे या पीतल की मिलावट नहीं होती थी।

हमारे देश के सिक्कों की तरह दूसरे देश के पुराने सिक्के भी इसी प्रकार भद्दे और मोटे बिना दनदानों के होते थे। धीरे-धीरे सिक्कों को सुन्दर बनाने की कोशिश की गई। अतएव एक फ्रान्सीसी कारीगर ने, जिसका नाम ब्रायट (Briot) था, सिक्कों का एक खूबसूरत मिन्ट निकाला और चाँदी-सोने के सिक्कों के लिए दनदाने निकाले। यह कारीगर और इसके शिष्य, योरप के टकसालों में खास-खास नक्काश नियुक्त हुए। हमारे देश में १७९३ ई० में रुपये का बाकायदा और सुन्दर मिन्ट चला।

यह बात तो कोई मनोरंजक न थी। यह हमने इसलिए बता दिया कि अगर कहीं तुमको बिना दनदाने का कोई सिक्का मिल जाय, और उस पर सन् इत्यादि न हों तो समझ लो कि वह बहुत पुराना है। टिकटों के समान पुराने से पुराने सिक्कों का मूल्य अधिक से अधिक होता है। इसी लिए थोड़ी कोशिश करके इसको अपने क़ब्जे में कर लो।

अब हम यह बताना चाहते हैं कि यदि तुमको सिक्के जमा करने का शौक़ है, तो कौन से सिक्के जमा करना चाहिए। हमारी राय में चाँदी और सोने के सिक्कों को छोड़ो, क्योंकि तुम अभी छोटे हो। कहीं कमबख्त चोर सुन पायें तो आठों पहर तुम्हारे बस्ते की ताक ही में लगे रहें। और यों भी सिक्के जमा करने के शौक़ीन घेरे ही रहेंगे और इधर-उधर से पत्रों की बौछार होने लगेगी। हाँ, तो तुम ताँबे के सिक्के जमा करो, और अभी अपने ही देश के। हमारे देश के ताँबे के सिक्के इतने पुराने हैं कि संसार के किसी देश में न निकलेंगे। हज़रत ईसा से शताब्दियों पहले के पैसे मिलते हैं। यदि तुमने इतिहास पढ़ा होगा तो तक्षशिला का नाम अवश्य पढ़ा होगा। इसके भी पैसे पाये जाते हैं। योरप में इँगलैंड में ताँबे का सिक्का पहले पहल १६७२ ई० में चार्ल्स द्वितीय ने चलाया, और पीतल के सिक्के १७९७ ई० से आरम्भ हुए। हमारे पास द्वितीय चार्ल्स के समय की एक हाफ पेनी है, किन्तु इस समय एक नुमाइश की हवा खा रही है। हम फिर किसी समय उसको भेज देंगे और उसका चित्र निकल जायगा, तो तुम देख लेना।

अब तुम पूछोगे कि आखिर सिक्के कहाँ और कैसे मिलेंगे। इसके जवाब में हम इरिक उड (Eric Wood) साहब की किताब की एक कहानी सुनाना चाहते हैं, जिसको पढ़कर तुम्हें हँसी तो अवश्य आयेगी पर उससे यह बात ज्ञात हो जायगी कि धुन के पक्के मतलब की चीज कहाँ-कहाँ से निकाल लाते हैं।

डरबीशायर इँगलैंड में एक जगह है। वहाँ का कोई मछुआ डोव नदी के किनारे मछली मारने गया। बेचारा मछली की राह देखते-देखते थक गया। अन्त में कोई चीज फँसी मालूम हुई। बड़ी भारी थी। उसने समझा कि बड़ी भारी मछली है। खींच कर निकाला तो क्या देखता है कि लकड़ी का एक डिब्बा है। उसको खोला तो बहुत से सिक्के निकले। बस, सिक्कों के शौक़ीन जमा हो गये और लूट मचा दी। इसी प्रकार केन्ट में एक बैल के पेट से बीसों सिक्के निकले, जिसमें १६७४ और १८०६ के भी सिक्के थे।

हमारे यहाँ एक तरकारीवाली आती थी। वह एक हमेल पहने थी, जिसमें मुगल बादशाहों के रुपये लगे थे। एक दिन हमने उससे कहा कि एक पुराना रुपया हमें दे दो और हमसे एक चवन्नी ले लो। उसने
"भइया, भला यह तुम्हारे में

आधा आना
HALF
ANNA
INDIA
1862
सरकार
EAST INDIA COMPANY
HALF
ANNA
HALF
ANNA
आधा आना

विविध सिक्के

सकता है।" वह बड़ी चालाक थी। किसी तरह राजी न होती थी। आखिर पाँच आने पर फैसला हो गया और उसने हमें अलाउद्दीन के समय का एक रुपया दिया जो मुगल बादशाहों के रुपया से भी अधिक बहुमूल्य था, जिसकी कीमत सिक्के बेचनेवाले पाँच रुपये से दस रुपये तक लेते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि धुन रक्खो और डटे रहो और हर तरह के लोगों से बातचीत करते रहो। वह आप ही तुम्हारी सहायता कर देंगे। वे या तो मुफ़ में दे देंगे या कुछ पैसे लेकर। सिक्कों के दूकानदार भी सिक्के बेचते हैं, पर वे दाम अधिक लेते हैं। तुम सिक्के बदलने का नियम अख्तियार करो। एक दूसरे से सिक्के बदल लो। और यदि दुकानदारों से मोल लेना हो तो इन बातों का ध्यान रक्खो कि गलियोंवाली दुकानों में न जाओ, और न कभी अकेले जाओ। अपने दो-एक दोस्तों को साथ ले लो, ताकि सिक्के चुनने में आसानी हो और सहायता मिल सके। ताँबे के सिक्कों के दाम दो तीन आने से अधिक न दो।

फ्रांस, जर्मनी, अरब, ईरान, चीन, अफरीका इत्यादि देशों के ताँबे के सिक्के जमा किये जा सकते हैं। परन्तु तुम केवल भारतवर्ष के सिक्के जमा करो, और बहुत प्राचीन सिक्कों के पीछे न पड़ो। इस समय तुम इसी तरह के सेट तैयार करो। जब तैयार हो जायँ या एक आध सिक्के की कमी रह जाय तो हमको पत्र लिखना। हम आगे के लिए दूसरा उपाय बतायेंगे। किस समय किस तरह के सिक्के बनते थे, उसका जिक्र इस तरह है—

(१) ईस्ट इंडिया कम्पनी के समय में पतले और मोटे दोनों तरह के सिक्के बनते थे। पैसे, धेले के सिक्के ही मोटे होते थे।

(२) ईस्ट इंडिया कम्पनी सुन्दर और पतले सिक्के भी बनाती थी, जैसे अधन्ना (दुकड़हा), पैसा, धेला, पाई।

(३) महारानी विक्टोरिया के समय में अधन्ना, पैसा, धेला, पाई के सिक्के तैयार होते थे।

(४) एडवर्ड सप्तम के समय में पैसा, धेला, पाई के सिक्के तैयार होते थे।

(५) जार्ज पंचम के समय में पैसा, धेला, पाई के सिक्के बनाये जाते थे।

इसके अतिरिक्त देशी रियासतों के सिक्के भी जमा करना चाहिए। रियासतों में हैदराबाद, ट्रावनकोर, ग्वालियर, जावरा, भूपाल, पटियाला, भावलपुर, इन्दौर, इत्यादि के पुराने सिक्के भी जमा करने के काबिल हैं। इन सब रियासतों में अधन्ना, पैसा और धेला आम तौर पर चलता था। भरतपुर, जयपुर, जोधपुर और उदयपुर के पैसे भी जमा कर लेना चाहिए।

पैसा भी भिन्न भिन्न प्रकार का होता है। ईस्ट इंडिया कम्पनी, महारानी [illegible] एडवर्ड सप्तम और जार्ज पंचम के

तीन प्रकार का पैसा और भी मिल जाता है। एक पैसा वह है जिस पर अरबी लिपि में (ضرب فی مسقط) ज़रबा फ़ी मसकत लिखा होता है। दूसरा वह पैसा है जिस पर लिखा होता है "फ़ैसल टर्की उमान"। और इसी प्रकार का एक पैसा और होता है जो बहुधा हमारे चालू पैसों में निकल आता है।

सिक्के जमा करने में भी आतशी शीशा (Magnifying glass) की आवश्यकता पड़ती है, ताकि उसके अक्षर अच्छी तरह पढ़ लिये जायें। टिकटों की तरह सिक्के भी कटे-पिटे न होने चाहिएँ। मैले सिक्कों को साफ करने का आसान उपाय यह है कि उनको खटाई के पानी में थोड़े समय के लिए डाल दो और फिर तार के ब्रश से रगड़कर साफ कर लो। तार के ब्रुश के बजाय हाथ से भी काम लिया जा सकता है। पर हाथों से काम करने में यह डर है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम साबुन से बिना अच्छी तरह हाथ धोये कोई चीज खाने लगो या खाने की किसी चीज़ में हाथ डाल दो जिससे नुक़सान हो या जी मचलने लगे या और कोई खराबी पैदा हो जाय।

हाँ, एक बात और याद रखनी चाहिए। हैदराबाद के सिक्कों पर अरबी लिपि में अक्षर लिखे होते हैं। यह अरबी नहीं होती बल्कि उर्दू होती है। तुम इसको पढ़ सकते हो। हिन्दू रियासतों के सिक्कों पर देवनागरी लिपि लिखी होती है।

सिक्कों के रखने के लिए छोटे छोटे डिब्बे ले लो या एक बड़ा सन्दूकचा और उसके खानों में अलग-अलग सिक्के रखते जाओ। हर एक खाने पर लिखकर लेबिल लगा दो कि ऐसी ऐसी जगह के सिक्के हैं।

पुस्तक के रूप में सिक्कों की सूची निकलती रहती है और इनमें ब्रिटिश म्यूज़ियम की तरफ़ से जो किताब निकली है वह बहुत अच्छी है। हमारी भाषा में इस विषय पर कोई किताब नहीं है। अगर तुम्हें यह बात जानने की आवश्यकता हो कि सिक्के जमा करने की आदत किन लड़कों में है तो हम कुछ लड़कों के पते लिख देंगे।

भारत के वीर कहावेंगे

लेखिका, श्रीमती कमल

सिर पर आफत पड़े सहेंगे।
मुख से उफ तक नहीं कहेंगे॥
भर लेंगे ताकत अपने में।
हम नहीं डरेंगे सपने में॥

हम अपनी धुन के सच्चे हैं।
हम सब वीरों के बच्चे हैं॥
जननी की लाज बचावेंगे।
भारत के वीर कहावेंगे॥

बहादुर कुत्ता

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी

अमेरिका के जंगल में एक साल का एक कुत्ता अपनी माँ के पास बैठा था। उन दोनों के बाल काफी बड़े थे। इससे दूर से देखनेवाले उन्हें भेड़िया समझ लेते थे। थोड़ी ही देर में कुत्ते ने आदमियों की आवाज सुनी और वह भूकना ही चाहता था कि इतने में उसकी बूढ़ी माँ की गरदन में एक तीर लगा और वह वहीं जमीन पर गिर गई। कुत्ते को यह बात बहुत बुरी लगी और वह तीर चलानेवाले लोगों की ओर भूं भूं करता हुआ झपटा। रेड इंडियनों के गोल में से एक आदमी उस पर भी तीर चलाना चाहता था, कि इतने में एक रेड इंडियन लड़का आगे बढ़ा और बोला, 'तुम्हें इस छोटे से कुत्ते पर तीर चलाते हुए शर्म नहीं आती। रहने दो, मैं इसे पालूँगा।" ऐसा कहकर रेड इंडियन लड़का आगे बढ़ा और उसने उस कुत्ते को पकड़ लिया। कुत्ता उसे काटना चाहता था परंतु लड़के ने इस होशियारी से उसका गला पकड़ रक्खा था कि वह लड़के को काट नहीं सका।

वह लड़का रेड इंडियनों के एक सरदार का लड़का था। उसने इस कुत्ते को पालना शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में कुत्ता भी उस लड़के से प्रेम करने लगा। एक दिन लड़के ने उस कुत्ते को थपथपाते हुए कहा, "तुम एक बहादुर कुत्ता हो। तुम्हारी बहादुरी हम सब लोग जंगल में देख चुके हैं। तुम जबरदस्त लड़ाकू हो। तुम्हारी बहादुरी की वजह से हम लोग अब आज से तुम्हें 'बहादुर' कहेंगे।" कुत्ता उस लड़के की बात सुनता गया। उसकी समझ में एक भी बात नहीं आई लेकिन प्रेम दिखलाने के लिए वह पूँछ हिलाता रहा।

रेड इंडियन लड़का और उसके साथी उस कुत्ते को 'बहादुर' कहकर पुकारने लगे। धीरे धीरे कुत्ता भी समझ गया कि उसका नाम 'बहादुर' रक्खा गया है। रेड इंडियन लड़का जब उसे 'बहादुर' कह कर दूर से पुकारता तो वह कुत्ता बेतहाशा दौड़कर उसके पास जाता और उसके इर्द गिर्द कूदने लगता। वह लड़का रोजाना मछली और मांस के टुकड़े उसे खाने को देता। जहाँ कहीं वह लड़का जाता, बहादुर कुत्ता उसके साथ जरूर जाता।

एक दिन दोपहर को रेड इंडियन लड़का धनुष-बाण लेकर उसी जंगल की ओर गया जहाँ उसे बहादुर कुत्ता मिला था। उसके साथ बहादुर कुत्ता भी था। अपने लड़कपन के जंगल को देखकर बहादुर खूब खुश हुआ। वह इधर-उधर उछलने कूदने लगा। थोड़ी ही देर में वह उस जगह भी पहुँचा जहाँ वह अपनी माँ के साथ रहा करता था और जहाँ उसकी माँ को तीर चलानेवाले रेड इंडियनों ने मार डाला था। वह बड़ी देर तक वहाँ उस पेड़ के नीचे खड़ा रहा जिसके नीचे वह बचपन में अपनी माँ का दूध

पीता और उसके बदन पर लोटता था। रेड इंडियन लडका यह समझता था कि बहादुर कुत्ता उसके पीछे आ रहा है। इसी से वह बहुत दूर चला गया।

थोडी ही देर मे बहादुर के कानो में यह आवाज पडी, "बहादुर! बहादुर!! दौडो, बचाओ! तुम कहाँ हो? बहादुर, दौडो!" बहादुर अपने मालिक की आवाज अच्छी तरह पहचानता था। वह तेजी से उसी ओर झपटा जिधर से डरी हुई आवाज आ रही थी। थोडी ही देर में वह उस जगह पहुँच गया जहाँ उसका मालिक खडा था। उसके पास ही जमीन पर कई मरे हुए भेडिये पडे थे जिन्हें उस रेड इंडियन लड़के ने धनुष और बाण की सहायता से मार डाला था। अब उसके पास एक भी बाण नहीं था और सामने की झाडी मे एक खूँखार भेड़िये की आँखें चमक रही थी। यह भेडिया मरे हुए भेडियों का सरदार था। बहादुर कुत्ते ने आते ही सभी बाते समझ लीं। यह बात भी उसकी समझ में आ गई कि सामने की झाडी मे भेडियों का सरदार बैठा है और वह तुरंत ही उसके मालिक रेड इंडियन पर धावा करनेवाला है। बहादुर झाडी में छिपे हुए भेडिये की ओर झपटा। दोनो में बहुत देर तक लडाई होती रही। कभी भेडिया ऊपर जाता और कभी नीचे। रेड इंडियन लडका बार-बार कुत्ते को शाबाशी देता हुआ कहता, "शाबाश, बहादुर।" थोडी ही देर में भेडिया जमीन पर गिर गया और मर गया। रेड इंडियन लडके ने दौडकर बहादुर को उठा लिया और उसे थपथपाना शुरू कर दिया। बहादुर का शरीर भी कई जगह कट गया था और वह बडे जोरों से हाँफ रहा था। लडका थोडी देर तक वहाँ रुका रहा। बाद में उसने बहादुर का मुँह अपने हाथ में लेकर कहा, "बहादुर, मैंने तुम्हारी जिंदगी बचाई थी। आज तूने मेरी जिंदगी बचा दी। तुम हमारे सब से बडे दोस्त हो।" इसके बाद दोनों चल पडे।

बहादुर कुत्ता

वह मौत से खेला था

लेखक, श्री रामगोपाल डालमिया

क्रियो एक गरीब गुलाम था और यूनान में रहा करता था। उसका दिमाग ललित कलाओं का घर था। सौंदर्य उसका देवता था। लेकिन ग्रीस में एक नवीन कानून बना। इस क़ानून के अनुसार कोई गुलाम एक आजाद व्यक्ति के समान ललित कलाओं का अध्ययन नहीं कर सकता था। उन दिनों ग्रीस का समाज दो भागों में बँटा था—पहला स्वतंत्र और दूसरा गुलाम।

स्वतंत्र व्यक्ति ही सब तरह की कलाओं और ऐश-आराम के अधिकारी थे। वे मन-मानी मौज उड़ाते। गुलामों के हाथ में कठिन से कठिन काम था। खरीदे हुए गुलाम सिंहों के साथ लड़ाई करने के लिए छोड़ दिये जाते। जिस समय यह क़ानून जारी हुआ, उन दिनों क्रियो संगमरमर की कई मूर्तियाँ बनाने में लगा था। संगमरमर के टुकड़ों में उसने अपना दिमाग निकाल कर रख दिया था, उसमें अपना हृदय उँड़ेल दिया था और अपनी आत्मा रख दी थी।

ग्रीस में हर साल मूर्तियों की नुमाइश हुआ करती थी, और उसके अध्यक्ष होते थे—पेरीक्लीज। उनसे इनाम पाने की क्रियो की मुराद थी। लेकिन इस कानून ने तो मानों उसके हाथ काट डाले। उसका दिल मानों टूट गया।

क्रियो की एक बहिन थी जुलिया। उसे भी इस घटना से बहुत चोट लगी। वह आँखों में आँसू भरकर देवी-देवताओं से प्रार्थना करने लगी—"हे माता! हमारे घर की पूज्य देवी! मेरे भाई की रक्षा करो। तुम्हारे चरणों में हमारा मस्तक अर्पित है। देवी! तुम्हारी कृपा ही हमारे जीवन की रक्षा कर सकती है।"

जुलिया ने फिर अपने भाई से कहा—भैया! तुम मकान के नीचेवाले तहखाने में अपनी चीजें लेकर चलो। मैं थोड़ी देर दीपक और खाना लेकर आती हूँ। तु अपने काम को जारी रक्खो, मैं तुम्हारी मद करूँगी। भगवान् जरूर हमारी मदद करेंगे

क्रियो तहखाने में गया। वहाँ उसर्क बहिन उसकी सेवा में तैयार रहती थी दिन और रात वह अपने महान् और प्रतिभा-शाली काम को करता रहा।

वसंत आया। चारों तरफ अच्छे अच्छे प्राकृतिक दृश्य दिखलाई देने लगे। इसी समय कला के नमूनों का प्रदर्शन देखने के लिए सारा ग्रीस ऐथन्स की कला-प्रदर्शनी में निमन्त्रित किया गया। पेरीक्लीज उस उत्सव के सभा-पति बनाये गये। उनके पास ही श्रीमती एस्पे-सिया बैठी हुई थी। फीडीयास, साक्रेटीज, साफोक्लीज आदि सब आदमी भी मौजूद थे।

प्रदर्शनी में बहुत सी उच्च कला के नमूने थे। लेकिन एक समूह की ओर ही सबका ज्यादा ध्यान जा रहा था। यह अन्य समूहों की अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर था और ऐसा मालूम होता था, कि ललित कलाओं के देवता 'अपोलो' ने ही स्वयं अपने हाथों से उसे बनाया है। दूसरे कलाविशारदों को उसे देखकर जलन हो रही थी।

"इसका बनानेवाला कौन है?"—दर्शकों ने पूछा।

लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। बार-बार चोबदार ने यह प्रश्न किया, पर कहीं से कोई जवाब नहीं मिला। लोग मूर्ति बनानेवाले को जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे और तरह-तरह की बातें तथा प्रश्न कर रहे थे। इतने में एक लड़की घसीट कर लाई गई। उसके कपड़े तितर-बितर हो रहे थे, बाल बिखरे हुए थे, होठ बन्द थे, परन्तु उसके चेहरे से दृढ़ता टपकती थी।

"यह लड़की कारीगर को जानती है, परन्तु उसका नाम नहीं बताती।"—शान्ति-रक्षकों ने कहा।

लड़की से फिर पूछा गया, मगर वह चुप रही। उसे उत्तर न देने की सजा की सूचना दे दी गई, लेकिन उसने फिर भी अपना मुँह नहीं खोला। तब पेरीक्लीज ने कहा—"क़ानून जरूर अमल में लाया जाना चाहिए। इस लड़की को कैदखाने में ले जाओ।"

वह जुलिया थी।

पेरीक्लीज के शब्दों को निकले अभी देर नहीं हुई थी कि भीड़ में से एक युवक निकल पड़ा। उसके बाल उड़ रहे थे, आँखों से प्रतिभा की ज्योति निकल रही थी। दौड़कर वह पेरीक्लीज के पैरों पर गिर पड़ा और बोला—"क्षमा करो। उस लड़की को बचा लो। वह मेरी बहिन है। अपराधी मैं हूँ, इन मूर्तियों को मेरे ही ग़ुलाम हाथों ने तैयार किया है।"

ग़ुलाम और कला! क्रोधी जनसमूह ने बात भी पूरी न सुनी और चिल्लाकर कहा—"ले जाओ, इसे जल्दी ही जेलखाने में बन्द कर दो।"

लेकिन पेरीक्लीज ने जनसमूह को शान्त करते हुए कहा—"नहीं, जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक ऐसा नहीं हो सकता। एक बार उस कलासमूह की ओर तो देखो। देखो, कला के देवता भगवान् अपोलो खुद फैसला कर रहे हैं कि ग्रीस का यह कानून कितना जालिम है। कानून का सब से ऊँचा उद्देश्य कला का विकाश होना चाहिए। हमारा कला-प्रेम ही हमें अमर बना सकता है, जेल-खाना नहीं। इस युवक के लिए जेलखाना स्थान नहीं है परन्तु वह स्थान मेरे पास है, इसे मेरे पास ले आओ।"

हजारों आदमियों के सामने श्रीमती एस्पेसिया ने क्रियो के सिर पर ताज रख दिया।

सब लोगों की तुमुल हर्ष-ध्वनि के बीच क्रियो की बहिन का श्रीमती एस्पेसिया ने स्नेह से चुम्बन कर लिया।

———

सर्दी या ज़ुकाम

लेखक, प्रिन्सपल केदारनाथ गुप्त, एम० ए०

प्यारे बच्चो, इस समय काफी सर्दी पड़ रही है। इस मौसिम में बहुत से लोगों की नाक बहती है और वे बार-बार रूमाल से उसे पोंछते रहते हैं। यहाँ तक कि उनकी नाक लाल हो जाती है।

इस ज़ुकाम का यह नतीजा होता है कि र हमेशा चढ़ा रहता है और किसी काम के रने में जी नहीं लगता। यह ज़ुकाम यदि ुराना हो गया तो बुखार पैदा हो जाता है ग्रौर तब और भी अधिक परेशानी होती है।

ज़ुकाम का कारण

क्या आपने कभी सोचा है कि ज़ुकाम यों होता है? आप कहेंगे कि ठंढी हवा में ूमने से ज़ुकाम पैदा होता है। कुछ अंश यह ठीक है लेकिन पूरे अंश में यह बात ीक नहीं है। मैं अपने अनुभव से आपको ता सकता हूँ कि मैं कड़े से कड़े जाड़े में खुली ा में सोता हूँ और खुली हवा में घूमने ाता हूँ किन्तु मुझे ज़ुकाम कभी नहीं होता।

बच्चो, सब बीमारियों की जड़ पेट की राबी है। जब पेट अपना काम बन्द कर ा है और भोजन हजम नहीं होता तभी सब मारियाँ पैदा होती हैं। ज़ुकाम भी पेट ी खराबी से पैदा होता है। इसलिए पेट ा इलाज करना भी बड़ा जरूरी है।

ज़ुकाम का इलाज

(१) ज़ुकाम से शरीर की भीतरी खराबी बलगम के रूप में बाहर निकलती है, इसलिए उसे निकल जाने दीजिए। कोई दवा खाकर उसे बन्द न कीजिए।

(२) ज़ुकाम का कुछ कारण मौसिम की सर्दी भी है, इसलिए शरीर को गर रखिए। गरम रखने का मतलब यह नहीं ि कि बन्द कमरे में रहिए। गरम रखने क अर्थ यह है कि गरम कपड़े पहिनिए लेकिन खुली हवा में टहलने जरूर जाइए।

(३) ज़ुकाम के दिनों में शरीर को आराम दीजिए।

(४) ज़ुकाम पेट की खराबी से पैदा होता है, इसलिए तीन-चार रोज़ तक उसको आराम दीजिए। आराम देने का मतलब यह है कि आप उपवास कीजिए।

उपवास के दिनों में हर रोज दिन में तीन-चार बार शहद और नीबू का पानी पीजिए। यदि इस प्रकार के उपवास से आपको तकलीफ हो तो तीन चार रोज तक केवल उबाला हुआ दूध पीजिए और फल खाइए। पाँचवें रोज हलका अन्न खाइए और छठवें रोज अपने मामूली भोजन में आ जाइए।

बच्चो, यदि अच्छी हालत में आप पन्द्रह रोज में एक उपवास कर लिया करें तो

ज़ुकाम क्या, कोई भी बीमारी आपके पास न आ सकेगी और आप हमेशा तन्दुरुस्त रहेंगे।

कितने अफ़सोस की बात है कि हर इतवार को आपको स्कूल से छुट्टी मिलती है लेकिन आप पेट को कभी छुट्टी नहीं देते। आप कितने स्वार्थी हैं। इसी स्वार्थ का आपको नतीजा भोगना पड़ता है।

स्वच्छता

प्रेषक—श्री कृष्णगोपाल माहेश्वरी, बम्बई

भला और बुरा

लेखक, श्रीयुत हरिवल्लभ झा, बी० ए०

एक था 'भला' और एक था 'बुरा'। 'भला' था भला और 'बुरा' था बुरा। लेकिन दोनों थे दोस्त—पक्के दोस्त। गरीबी के कारण खाने-पीने की तंगी देखी और दोनों ने सोचा, चलो कहीं बाहर चलें और कुछ कमायें। बुरे ने कहा—"तो कल ही तैयार हो जाओ। रास्ते के लिए कुछ ले लेना। कुछ नहीं तो चूडा और शक्कर ही सही।"

भला ने कहा—अच्छा।

दूसरे दिन सवेरे ही दोनों घर से निकल पड़े। जाते जाते वे एक घने जङ्गल में पहुँचे।" देर बहुत हो चली थी। सूर्य सिर पर आकर आग बरसा रहा था। इधर भूख और थकावट से दोनों ही परेशान थे। 'बुरा' ने देखा, चूडा तो है लेकिन जैसी भूख लगी है उस देखते यह दो आदमियों के लिए काफी नहीं है। फिर भी यह है तो माल 'भला' का। वह खुद भूखा रह कर मुझे अधिक कैसे दे सकता है ?

बुरा इसी उधेड़ बुन में था कि एक ओर से काले बादल उमडते हुए आते दीख पड़े। 'बुरा' ने कहा—"भाई 'भला', वह देखो प्रलय की आँधी आ रही है, चलो उस बगीचे में दौड़ चलें। कुछ तो आड़ मिलेगी।" दोनों जने दौड़े। रास्ते में 'बुरा' ने कहा—'भाई, पोटली लेकर तुम्हें दौड़ने में दिक्कत होती है, लाओ, इसे हम ले लें।" 'भला' ने धन्यवाद सहित पोटली दे दी।

इधर वे बगीचे में पहुँचे और उधर जोरों से आँधी भी आई। 'बुरा' ने कहा—" 'भला', हम एक पेड़ के नीचे रहें और तुम दूसरे के। जरा दूर ही हट कर। क्योंकि यदि एक पेड़ गिर पड़े और कहीं एक मर जाय तो सवाद पहुँचाने के लिए भी तो एक रह सकेगा। नहीं तो दोनों ही न कहीं पिस जायँ।" वह जरा दूर हटकर एक वृक्ष की आड़ में बैठ रहा।

कुछ देर हवा चलती रही और फिर तो पानी पड़ने लगा। 'बुरा' ने जोर से पुकार कर कहा—"भला', देखना जड़ में खूब सट कर बैठ जाना, कहीं पत्थर भी न गिरें।" 'भला' और दबक गया। इधर 'बुरा' ने चूडा खाला, जो वर्षा में अब तक कुछ कुछ फूल भी गया था। खोलते ही वह उस पर टूट पड़ा। जब तक आसमान साफ हो तब तक इधर चूडा भी साफ था। 'भला' आया और बोला—'भाई, चूडा निकालो, बड़ी भूख लगी है।" बुरे ने आसानी से कहा—"भाई, चूडा तो हमने पेट में रख लिया, सोचा, वर्षा से कहीं खराब न हो जाय।"

भला' क्या बोलता ? थोड़ी देर चुप रहकर उसने कहा—"अच्छा तो चलो, किसी कुएँ पर पानी पिया जाय।" प्यास तो 'बुरा' को भी लगी थी। ढूँढते ढूँढते दोनों एक पुराने कुएँ पर पहुँचे। 'बुरा' ने कहा—"झाँक कर देखो तो कुएँ में पानी है कि नहीं।" ज्योंही 'भला'

झाँकने लगा, बुरे ने उसे इधर से ऐसा उच-काया कि धम्म से वेचारा नीचे जा गिरा। 'बुरा' ने खुशी खुशी घर का रास्ता नापा।

(२)

सयोग की वात, भूलते-भटकते कुछ चरवाहे उधर ही आ निकले। कुआँ देख उन्हें पानी पीने की इच्छा हुई। लोटे मे रस्सी लगाई और उसे कुएँ में डाला। लेकिन फिर जब उसे खींचता है तो लोटा बाहर आने का नाम ही नहीं लेता। चरवाहा बडी मुश्किल में पडा। झाँका तो देखता क्या है कि कोई उसे पकडे हुए है। चरवाहों ने उसे भूत समझा और लगे उसकी मिन्नतें करने। इधर 'भला' की जान में जान आई। बोला—भाई, न मैं दूत हूँ और न कोई भूत। मैं हूँ एक आदमी। दया कर मुझे बाहर निकालो।

चरवाहों ने डरते डरते उसे बाहर खींचा और उसे कुएँ पर ही छोड कर भागे। उन्हे मालूम था कि भूत अनेकों रूप धारण कर सकते हैं।

सध्या निकट आ रही थी। सुनसान जगल, न कहीं आदमी न कोई प्राणी। 'भला' जाय तो कहाँ? पास ही जो पेड उसे मिला वह उसी पर चढ गया और चुपचाप बैठ रहा। अँधेरा हुआ। चारों ओर काली रात छा गई। इसी समय उस वृक्ष के नीचे चार जानवर पहुँचे—सिह, बाघ, भालू और भेडिया। ये चारों थे दोस्त। एक दूसरे की खबर पूछने लगे।

सिह ने कहा—"भाई, आजकल का मा तो कभी मिला ही न था। जगल म निर्द्वन्द्व राज करता हूँ। राजा आजकल शिकार खेलने नहीं आता। उसका लडका बीमार है। वह उसी दु ख मे रात दिन पडा रहता है।"

बाघ ने कहा—"नहीं भाई! हम लोगों को आराम और चैन कहाँ? राजा के पास अनेकों वैद्य हैं। आज न सही, कल तो लडका आराम हो ही जायगा। फिर तो हम लोगों का शिकार होगा ही।"

सिह ने कहा—"नहा जी, उसका भी कोई डर नहीं है। लडका तो आराम होगा ही नहीं। इतने वैद्य हैं तो क्या, उसकी दवा भी कोई जानता है? लडके की आँखें फूट गई हैं। सो तो, जब तक उसको इस बरगद के दूध का अजन इक्कीस बार न लगाया जाय तब तक वह अच्छा हो ही नहीं सकता। दूसरे, लडका सूखकर काँटा हो गया है। लेकिन इसकी भी एक दवा है। कोई उसकी खाट के नीचे करीब चार हाथ ज़मीन खोदे। वहाँ एक बडा मेढक है। उसे तेल में पका कर यदि उसकी मालिश लडके के शरीर पर की जाय तो एक महीने में वह फिर मोटा-तगडा बन जायगा। लेकिन इसे जानता कौन है?"

'भला' सब सुन रहा था। धीरे धीरे उसने एक पत्ता तोडा। उसके दूध का उसने एक-एक कर इक्कीस बार अजन किया। देखा, कुएँ मे गिरने से जो उसकी आँखें फूट गई थीं, अब चगी हैं। इतने मे पूरब की ओर लालिमा छाने लगी। पक्षियों का कलरव आरम्भ हुआ। धीरे धीरे सवेरा हुआ। सिह, बाघ, भालू और भेड़िया सब अपने-अपने शिकार की टोह मे

निकल पड़े। 'भला' भी धीरे-धीरे उतरा और कुछ पत्ते लेकर राजधानी की ओर रवाना हुआ।

बहुत से वैद्य वहाँ इकट्ठे थे। फिर भी बहुत कहने-सुनने पर 'भला' को भी दवा देने की इजाजत मिली। आँखें तो उसने तुरत अच्छी कर दीं। राजा को उसके ऊपर भरोसा हो गया। उसे खिलाया पिलाया—बेचारा आज दो दिन का भूखा था। दूसरे दिन उसने तेल बनाया और राजा के लड़के को मालिश कराने लगा। धीरे-धीरे वह चङ्गा भी हो गया। फिर क्या पूछना था। 'भला' तो राजसी ठाठ में पानी सा दिन बहाने लगा।

(३)

'बुरा' को खबर लगी कि 'भला' अमीर हो गया है। झट वह उसके पास पहुँचा और उसकी अमीरी का कारण पूछा। 'भला' ने सब कहानी ज्यों की त्यों सुना दी। 'बुरा' का भी लोभ चर्राया। खोजते-खोजते पहुँचा वह उसी पेड़ के नीचे और ऊपर चढ़कर बैठ रहा।

शाम को सब जानवर फिर जुटे। आज वे बड़े गुस्से में थे। राजा आज अचानक शिकार को निकला था। सब जान बचाकर भागे थे। किसी की टाँग घायल थी तो किसी की पूँछ।

सिंह ने कहा—'जरूर यह भालू की ही करतूत है। यही गाँवों की ओर जाता है। वहीं किसी दोस्त को इसने उस दिनवाली तरकीब बता दी है, जिससे लड़का चङ्गा हो गया है। नहीं तो भला यह आफत क्यों आती ?"

इसी गुस्से में सिंह जो भालू की ओर झपटा कि भालू झट पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने 'बुरा' को सिकुड़ा हुआ बैठा पाया। फिर क्या था, चपत लगाई और 'बुरा' धड़ाम से नीचे आ गिरा। चोर पकड़ा जा चुका था। उसे सजा देने में सब एकमत हो गये। बेचारे 'बुरा' पर जो बीती सो वही कह सकता है। लेकिन वह है कहाँ, जो कहे।

मेरे बाल सखाओ! बुराई का फल कभी मिल ही जाता है। भलाई बेकार नहीं जाती।

मोटर

लेखक, श्रीयुत 'बिस्मिल' इलाहाबादी

मोटर पर आलम शेदा है
    लोग जरा समझें तो क्या है,
तेज हवा से चलनेवाली,
    आगे सबसे निकलनेवाली,
गद्दी नर्म सजीली भारी,
    जिस पर बैठे चार सवारी।
पहियों में भी हवा भरी है,
    इंजन में पानी की तरी है।

मिर्जापूर बनारस जाओ,
    फौरन फिर घर वापस आओ।
तेज है रेल से चलना इसका,
    कम नहीं मेल से चलना इसका।
वक्त की कद्र ह करनेवाले,
    इस पर दिल से मरनेवाले।
"बिस्मिल" पे है चाँदी-सोना,
    वक्त का अच्छा कब है

चौथी लकीर का मज़ा

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल हिन्दी रत्न, करसियाङ्ग

एक शहर के नामी सेठ की पुरानी हवेली ने मरम्मत की माँग पेश कर रक्खी थी। टालमटूल कारगर न होती देख, एक शुभ दिन को आखिर सेठजी को मरम्मत का काम शुरू करवा ही देना पड़ा। हवेली कोई दो-चार वर्ष की बच्ची तो थी ही नहीं जो धेले की रेवड़ी चाबकर मस्त फिरती।

अच्छा तो मरम्मत के लिए कई राज-मिस्त्री, बढ़ई और मजदूर लोग काम में डटे हुए थे। उनकी मजदूरी का हिसाब हर रविवार को, सेठजी की ओर से पाई-पाई चुका दिया जाता था।

एक देहाती मजदूर अधेड़ उमर का था। एक दिन संयोगवश उसकी स्त्री उसके गाँव में कुछ बीमार हो गई और उसका बुलावा आ गया। बच्चों की माँ की बीमारी की खबर सुनकर बेचारा अपने गाँव जाने के लिए जी में उतावला हो रहा था। मगर उसके गाँव की ओर जानेवाली रेल शाम के ६॥ बजे ही छूटा करती थी, इसलिए जी मसोसकर वह काम में लगा रहा। शाम को काम खतम कर दौड़ा गया मालिक के पास और अपनी दर्द-नाक कहानी सुनाकर डरते डरते इधर के दो दिनों की मजदूरी माँगी। ले तो सेठजी साफ इनकार कर गये, यह कहकर कि एक के लिए कायदा नहीं तोड़ा जा सकता। काम किये जाओ, रविवार आ ही रहा है। उसी दिन अपनी मजदूरी ले लेना। मगर जब वह मजदूर बुरी तरह गिडगिड़ाने लगा तो, मनुष्य होने के नाते, सेठजी का हृदय कुछ पसीज-सा गया। आप दालान में एक खटिया पर सवार हो हुक्का पीने मे मशगूल थे। कागज-कलम-दावात लाने में अपने भारी-भरकम शरीर को उठाने-बैठाने की दोहरी तकलीफ से बचाने की खातिर उन्होंने पास ही पडे बुझे हुए कोयलों में से एक को उठाया और उस मज़दूर की हथेली पर तीन खड़ी लकीरें, एक पाई लगाकर यों खींच डालीं ।।।) और उससे बोले, "यह हुक्मनामा दूकान पर मुनीमजी को मेरा नाम लेकर दिखाना और तुम्हें ३ चवन्नियाँ (यानी बारह आने के पैसे) वे फौरन दे देंगे।" बेचारा गरीब अपने मालिक को दुआ देकर, उनका भला मनाता हुआ, दूकान की राह नापने लगा। चलते-चलते हथेली पर दृष्टिपात भी करता जाता था। और उसके मन ने उसे यह सलाह दे डाली कि कोयले की ३ लकीरों से तो ३ ही चवन्नियाँ मिलेंगी अगर इन लकीरों के शुरू में १ लकीर और खींच दोगे तो तुम ४ चवन्नियाँ (यानी पूरा एक रुपया) हथिया

सकोगे और मुनीमजी को कुछ पता ही नहीं लग सकता कि इन लकीरों में ३ तो सेठजी ने खींची है और १ तुमने।

बस, इसी मनमानी घर जानी के अनुसार एक हलवाई की दूकान के सामने से उस भले आदमी ने एक नरम सा कोयला उठा ही तो लिया। और राहगीरों की आँखें बचाकर, वैसी ही एक खड़ी लकीर, अपनी उसी हथेली पर खींच डाली। अपनी चालाकी पर वह ही मन, जो खुश हो रहा था उसका क्या ? अब उसकी हथेली पर ऐसा चित्र)

ठीक से लिखवाकर लाओगे तभी तुम्हारा काम बनेगा।" कहना नहीं होगा कि इस जवाब से मजदूरराम के सारे हौसले पस्त हो चले। फिर थोड़ा साहस बटोरकर उसकी अपनी खींची शुरूवाली लकीर को अँगूठे से छिपाते हुए बोला—"लालाजी, अब पढ़कर देखिए जरा ?" मुनीमजी उसकी अनोखी चालाकी पर ठहाका मारकर हँस पड़े और बोले—"हाँ दोस्त! अब तो हमारे सेठजी की लिखावट और हुक्मनामा दोनों ही समझ में आ गये।" और झटपट ।।।) बारह आने उसके हवाले कर दिये।

एक देहाती मजदूर की कहानी

चौथी लकीर का मज़ा

लेखक श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल हिन्दी रत्न, [illegible]

एक शहर के नामी सेठ की पुरानी हवेली ने मरम्मत की माँग पेश कर रक्खी थी। टालमटूल करते देख, एक शुभ दिन को आखिर सेठजी को मरम्मत का काम शुरू करवा ही देना पड़ा। हवेली कोई दो-चार वर्ष की बनी तो थी ही नहीं जो धेले की रेवड़ी चाबकर मस्त फिरती।

अच्छा तो मरम्मत के लिए कई राज-मिस्त्री, बढ़ई और मजदूर लोग काम में डटे हुए थे। उनकी मजदूरी का हिसाब हर रविवार को, सेठजी की ओर से पाई पाई चुका दिया जाता था।

एक देहाती मजदूर अधेड़ उमर का था। एक दिन संयोगवश उसकी स्त्री उसके गाँव में कुछ बीमार हो गई और उसका बुलावा आ गया। बच्चों की माँ की बीमारी की खबर सुनकर बेचारा अपने गाँव जाने के लिए जी में उतावला हो रहा था। मगर उसके गाँव की ओर जानेवाली रेल शाम के ६॥ बजे ही छूटा करती थी, इसलिए जी मसोसकर वह काम में लगा रहा। शाम को काम खतम कर दौड़ा गया मालिक के पास और अपनी दर्द-नाक कहानी सुनाकर डरते [illegible] के दो दिनों की मजदूरी माँगी।

सेठजी साफ इनकार कर गये, यह कहकर कि एक के लिए कायदा नहीं तोड़ा जा सकता। काम किये जाओ, रविवार आ ही रहा है। उसी दिन अपनी मजदूरी ले लेना। मगर जब वह मज़दूर बुरी तरह गिड़गिड़ाने लगा तो, मनुष्य होने के नाते, सेठजी का हृदय कुछ पसीज-सा गया। आप दालान में एक खटिया पर सवार हो हुक्का पीने में मशगूल थे। कागज-क़लम-दावात लाने में अपने भारी-भरकम शरीर को उठाने-बैठाने की दोहरी तकलीफ़ से बचाने की ख़ातिर उन्होंने पास ही पड़े बुझे हुए कोयलों में से एक को उठाया और उस मज़दूर की हथेली पर तीन खड़ी लकीरें, एक पाई लगाकर यों खींच डालीं ।||) और उससे बोले, "यह हुक्मनामा दूकान पर मुनीमजी को मेरा नाम लेकर दिखाना और तुम्हें ३ चवन्नियाँ (यानी बारह आने के पैसे) वे फौरन दे देंगे।" बेचारा गरीब अपने मालिक को दुआ देकर, उनका भला मनाता हुआ, दूकान की राह [illegible] लगा। चलते-चलते हथेली पर [illegible] करता जाता था। और उसके मन [illegible] सलाह दे डाली कि कोयले की [illegible] तो ३ ही चवन्नियाँ मिलेंगी अगर [illegible] के शुरू में १ लकीर और खींच [illegible] ४ चवन्नियाँ (यानी पूरा एक

सकोगे और मुनीमजी को कुछ पता ही नहीं लग सकता कि इन लकीरों में ३ तो सेठजी ने खींची है और १ तुमने।

बस, इसी मनमानी घर जानी के अनुसार एक हलवाई की दूकान के सामने से उस भले आदमी ने एक नग्म सा कोयला उठा ही तो लिया। और राहगीरों की आँखें बचाकर, वैसी ही एक खडी लकीर, अपनी उसी हथेली पर खींच डाली। अपनी चालाकी पर वह मन ही मन, जो खुश हो रहा था उसका क्या कहना? अब उसकी हथेली पर ऐसा चित्र विराजमान था— ||||)

थोडी देर के बाद जा पहुँचा दूकान पर मुनीमजी के पास और अपनी हथेली आगे कर उस पर लिखा सेठजी का हुक्मनामा दिखाते हुए, दो दिनों की मजदूरी का एक रुपैया माँगा। लगे हाथ अपनी स्त्री की बीमारी और उसी रात की गाड़ी से जानेवाली बात भी कही ताकि कुछ अड़गा न लगे।

इधर मुनीमजी ने १) रुपये के बजाय जो ४ खड़ी लकीरों का यह ||||) गोरख धन्धा देखा तो बडे चकराये और मजदूर की चालाकी भली भाँति ताड़ते हुए बोले—"भाई, हथेली पर तो सारा गुड़ गोबर हुआ पड़ा है। माफ करना तुम! इस हुक्मनामे पर तो मैं तुम्हे कुछ भी नहीं दे सकता। साफ-साफ और ठीक से लिखवाकर लाओगे तभी तुम्हारा काम बनेगा।" कहना नहीं होगा कि इस जवाब से मजदूरराम के सारे हौंसले पस्त हो चले। फिर थोड़ा साहस बटोरकर उसकी अपनी खींची शुरूवाती लकीर को अँगूठे से छिपाते हुए बोला—"लालाजी, अब पढ़कर देखिए जरा?" मुनीमजी उसकी अनोखी चालाकी पर ठहाका मारकर हँस पड़े और बोले—"हाँ दोस्त! अब तो हमारे सेठजी की लिखावट और हुक्मनामा-दोनों ही समझ में आ गये।" और झटपट |||) बारह आने उसके हवाले कर दिये।

मुनीमजी के पैर छूकर वह मजदूर बोला—लालाजी, गुस्ताखी मुआफ हो। एक बात पूछता हूँ। आपके सेठजी की खींची तीन लकीरों से तो। पूरे १२ आने बन गये और मुझ गरीब के हाथ से खींची वैसी ही एक चौथी लकीर से ४ चवन्नियों वाला रुपया बनना तो दूर रहा, मेरी हक की कमाई के बारह आने भी जाते रहे। भला यह तो बतलाइए, आपको क्योंकर पता चला कि चौथी लकीर मैंने खींची थी।

बेचारे मुनीम जी के लिए, उस अपढ़ मजदूर की इस मजेदार शंका का समाधान करना, आज तक एक टेढ़ी खीर ही बना आ रहा है।
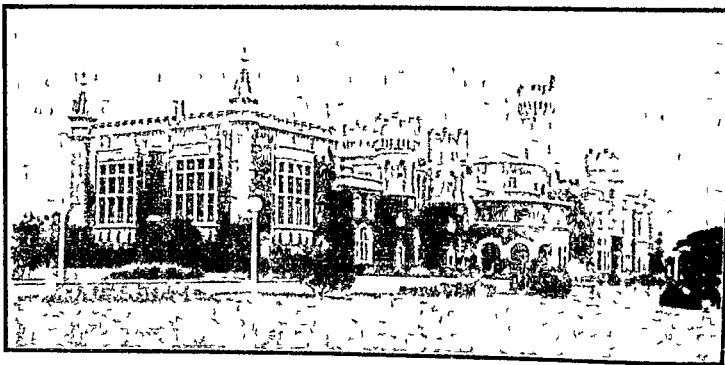
महाराजा मैसूर का राजमहल (बैंगलोर)

मैसूर की सैर

लेखक, श्री ऋषभचन्द्र रांका

जब मैं स्कूल में पढ़ता था तब सब लड़के मुझसे यही कहते कि हम तो दशहरे की छुट्टी में मैसूर जायँगे, क्योंकि वहाँ पर दशहरे का मेला देखने योग्य होता है। मैंने भी वहाँ जाने का इरादा किया। लेकिन यह मैंने किसी से भी नहीं कहा। हमारी भी दशहरे की छुट्टी होनेवाली ही थी कि हमारे मामा जी भी हमारे यहाँ आये। उनकी भी इच्छा मैसूर जाने की हुई। इसी तरह कुछ दिन व्यतीत हुए और हमारी छुट्टियाँ भी हो गई। अब हमारे मामा जी ने हमारी माता जी पर अंतिम निर्णय छोड़ दिया। माता जी ने जाने की आज्ञा दे दी।
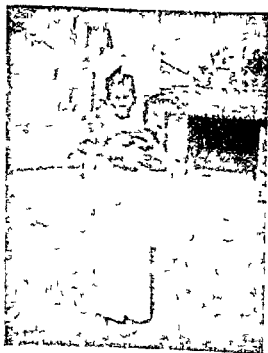
श्री ऋषभचन्द्र रांका

भी यह अच्छा मौका देख, माता जी से पूछा और उन्होंने भी ठीक वही
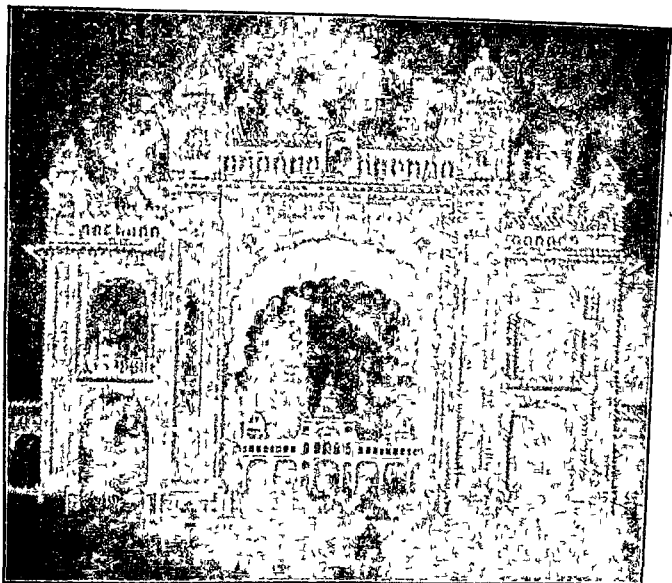
राजमहल का पूरा दरवाजा, बिजली की रोशनी में

उत्तर दिया जो उन्होंने मामा जी को दिया था।

अब हम सब जाने की तैयारी में थे और अपने कपड़े वगैरह अपने-अपने बक्स में रख लिये। जब अन्य आदमियों को इस बात का पता चला तब तीन-चार अन्य आदमी भी हमारे साथ हो गये। जब रेल के आने का समय हुआ तब हम सब स्टेशन गये और गाड़ी में बैठ गये। थोड़ी देर में स्टेशन पर घंटी बजी और रेल सीटी देकर चल दी। मैसूर के नजदीक आने पर हम लोगों ने रेल में से बहुत से चन्दन के पेड़ और बहुत से गन्ने के खेत देखे। हमने एक स्टेशन पर शक्कर की मिल भी देखी

निशातबाग (मैसूर)

हम सब बाहुबल जी की मूर्ति देखने गये जो वहाँ से क़रीब सात मील की दूरी पर थी। बहुत से लोग कहते हैं कि बाहुबल जी चक्रवर्ती राजा भरत के छोटे भाई थे और जब एक बार उनमें झगड़ा हो गया था तब यह निश्चय हुआ कि भरत जी, बड़े भाई होने के कारण, एक मुक्का बाहुबल जी को पहले मारें और बाद में बाहुबल जी मारेंगे। भरत जी ने मुक्का मारा तो बाहुबल जी का

जोग का झरना (मैसूर)

बाल भी बाँका नहीं हुआ लेकिन जब बाहुबल जी ने मुक्का उठाया तो देवताओं ने हाथ पकड़ लिया। तब भी
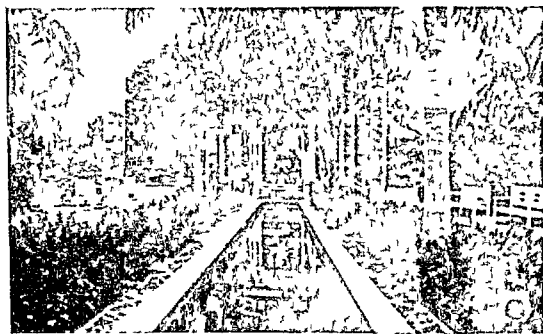
और योंही देखते-भालते हम आख़िर में मैसूर स्टेशन पर उतर गये। वहा से तांगा कर मैसूर शहर में गये और वहाँ पर अपने एक सम्बन्धी के यहाँ ठहर गये।

दूसरे दिन हमने हाथ-मुँह धोकर खाना खाया और शहर को देखने के लिए चल पड़े। शहर देखने के बाद हम सब दो आने का टिकट लेकर अजायबघर देखने गये। वहाँ का अजायबघर, जो कि 'लाल बाग़' कहलाता है, इतना लम्बा और चौड़ा था कि देखते-देखते ही हमारे पाँव दुखने लगे और मैं तो समझता हूँ कि शायद ही कोई ऐसा जानवर हो जो उसमें न हो। मै समझता हूँ कि मैसूर का अजायबघर हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े अजायबघरों में से एक है। ख़ैर, हम उस फंदे से निकल कर वापिस घर आये। हमने टेलीफोन द्वारा एक टैक्सी मँगाई और

भरत जी कमर तक जमीन में धँस गये। बाद में बहनों के अनुरोध से बाहुबल जी ने तपस्या प्रारम्भ कर दी। तपस्या की दशा की उनकी पत्थर की मूर्ति बनाई गई है। यह मूर्ति एक फ्रेंच इंजिनियर ने बनाई है। इसको बनाये लगभग सौ वर्ष हो चुके हैं। यह मूर्ति पहाड़ में से एक ही चट्टान को काटकर बनाई गई है।

मैसूर नगर का फौवारा

हम जब वहाँ पर पहुँचे तब हमने बहुत से दिगम्बर जैन साधु देखे जो कि बिलकुल नग्न थे। रसोई का सामान लेकर रसोई बनाई गई और खा-पीकर अब हम पहाड़ पर चढ़े जिस पर कि बाहुबल जी की मूर्ति थी। वह मूर्ति इतनी ऊँची थी कि अगर कोई आदमी सिर पर टोपी रखकर ऊँचा देखे तो उसकी टोपी नीचे गिर जाय। हमने जब आस-पास के आदमियों से पूछा कि यह कितनी बड़ी है तो उन्होंने उत्तर दिया कि यह ५२ फुट ऊँची है और हमेशा उनके पाँव की ही पूजा की जाती है। उनके मस्तक की पूजा सिर्फ साल में एक दिन होती है।
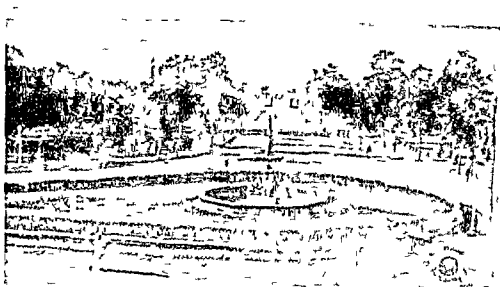
शिवसमुद्र का झरना

वहाँ पर देरी बहुत होने के कारण हम वापिस लौट आये और वहीं से 'कन्नम्बाड़ी कट्टा' (पानी का एक बड़ा भारी बाँध जिसको कि वहाँ के लोग इस नाम से पुकारते हैं) देखने गये। जब वहाँ पर हम पहुँचे तब रात के करीब ७ बज चुके थे और सब जगह बिजली के दीपक जल चुके थे। वहाँ पर इतने बिजली के लट्टू जलते थे मानों वहाँ सदैव दिवाली ही रहती है। जब हम मोटर से उतरे तब मैंने तो समझा कि शायद यह कोई देवलोक है। हमने देखा
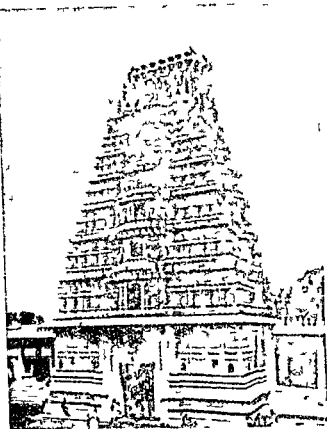
चामुण्डा देवी का मन्दिर (मैसूर)

कि एक बड़ा भारी तालाब है और उस तालाब के बीच में एक सड़क बनाई गई है जिस पर, लोग कहते है कि, करीबन ३ या ४ करोड़ रुपया खर्च हुआ है और एक तरफ उसी पानी के द्वारा फव्वारे लगाये गये हैं और उस फ़व्वारे के नीचे बिजली के रङ्ग-रङ्ग के लट्टू लगाये हुए है। जब फव्वारे छूटते हे तब बिजली के लट्टू जलने लगते हे और पानी का रङ्ग कभी लाल, कभी नीला हो जाता है। उसे देखते हमको कोई रात के दस बज गये थे। हम वापिस घर आये और सो गये।

दूसरे दिन ही मैसूर महाराजा साहब की सवारी निकलनेवाली थी। हम सब बाज़ार जाकर खड़े हो गये। मचानों के ऊपर खड़े होने के लिए हमने एक-एक आदमी के आठ-आठ आने दिये। ख़ैर, लगभग शाम के चार बजे सवारी निकलनी शुरू हुई और हमने महाराजा साहब को एक हाथी पर सवार देखा। उनके ऊपर फूलों की वर्षा हो रही थी। सवारी निकलने के बाद हम सब घर लौटे। भोजन कर हम मैसूर के महाराजा साहब का महल देखने गये। वह महल बिजलियों के लट्टुओं से इतना प्रकाशित था कि अगर दूर से देखा जाय तो ऐसा मालूम पड़ता है कि वह सोने का ही बना हुआ है। हम वहा से चलकर चामुण्डा माता के पहाड़ पर गये और चामुण्डा माता के दर्शन कर वापिस घर आये।

अब हमने जाने की तैयारी की, क्योंकि हमारी छुट्टियाँ समाप्त होने को थीं। हम अब बङ्गलोर गये और वहाँ से मोटर द्वारा शिवसमुद्र देखने गये। वहाँ पर हमने देखा कि आधी कावेरी नदी एक तरफ मोड़ दी गई है और वही नदी एक पहाड़ के ऊपर से गिरती है और वहाँ से बिजली पैदा की जाती है। जब हम बिजलीघर देखने गये तब हमको एक डिब्बे (Tally) में बैठकर नीचे उतरना पड़ा। हमने देखा कि वहाँ से बिजली बंगलोर, मैसूर और कोलार को भेजी जाती है। ख़ैर, वहाँ से हम वापिस बंगलोर स्टेशन पर आये और रात की ९ बजे की गाड़ी में बैठकर वापिस मद्रास शहर में आये और हमेशा की तरह स्कूल जाने लगे।

भाइयो! मैंने तो देखा है कि मैसूर में बहुत कीमती चीज़ें होती हैं जैसे कि चन्दन, सोना वगैरह। मैसूर तो चन्दन, बादाम, किशमिश, रेशम, शकर वगैरह के लिए बहुत प्रसिद्ध है। कोलार, जिसमें सोने की खान है, मैसूर स्टेट में ही है। उस खान से लाखों रुपयों की आमदनी मैसूर राज्य को होती है। इसलिए वह एक दर्शनीय स्थान है और मैं समझता हूँ कि शायद ही कोई ऐसा बच्चा हो जो वहाँ जाना न चाहता हो। जब कभी तुम्हें अवसर मिले तो अवश्य जाना, क्योंकि मैसूर का दशहरा भारत में बहुत प्रसिद्ध है।

कौन ?

लेखक, बाबू सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०, एल एल० बी०

किसने मेरी पटरी काट ली
किसने स्याही को बिखराया ?
है सन्दूक सना दी काली
घर भर में अनाज फैलाया ?

दोना खाली रखा रह गया,
कौन उठा ले गया मिठाई ?
चम्मच नहीं कभी बच पाता
रहे *जरा भी लगी मिठाई।*

दो टुकड़े तस्वीर हो गई
किसने इसकी रस्सी काटी ?
है चाँदनी छेद दी किसने,
झर झर सिर पर आती माटी।

कभी काट जाता है चप्पल,
जूता में है छेद बनाता,
कभी जेब पर है बन आती,
अनजान पैसा गिर जाता।

किसने जिल्द काट डाली है ?
बिखर गये पोथी के पन्ने।
रोज टाँगता धो धोकर मैं
कौन उठा ले जाता छन्ने ?

सिकहर से गिरे पड़ी दुधाँडी
दही गिर गया सारा भू पर।
शक्कर की पुड़िया को पल में
कौन चट्ट कर गया दुबककर ?

औंधी है चूने की भँडिया
भीग गई है गद्दी सारी,
बटुआ फटा बना है चलनी,
कौन ले गया लौंग सुपारी ?

रोज रात भर जगता रहता
खुर खुर इधर उधर है धाता,
कुतर कुतर चीजें धर जाता
कौन शरारत यह कर जाता ?

नासनी

लेखक, श्रीयुत गौरीशंकर तोपनीवाल, प्रयाग

पुराने जमाने की बात है। बड़े गाँव में नासनी नामक एक आदमी रहता था। वह था तो बड़ा ही कायर तथा डरपोक लेकिन लोगों के सामने अपनी बड़ी शेखी बखाना करता था। अपने मित्रों को हमेशा वह अपनी बहादुरी की बातें सुनाया करता था, जो कि सर्वथा झूठी होती थीं। वह प्रतिदिन कठिन कार्यों को करने का कार्यक्रम बनाया करता था, लेकिन उससे कुछ भी नहीं होता था। हाँ, वह गप्पी एक नम्बर का था और जब तब फजूल के काम किया करता था। जब वह अकेला रहता, तो सोचा करता कि मैं इस समय राक्षसों तथा जङ्गली जानवरों से लड़ रहा हूँ। कभी उस राक्षस को पछाड़ा, कभी इस चीते के दाँत मुट्ठी के प्रहार से तोड़ दिये, तो कभी शेरनी के बच्चे को अपने लड़के के साथ खेलने के लिए उठा लाया। बस, इसी तरह की बातें वह दिन भर सोचा करता था। पर वास्तव में था क्या? अगर रात में किसी चुहिया की आवाज ही सुन लेता, तो उसकी नानी मर जाती।

एक दिन की बात है, नासनी साहिब एक खुले मैदान में जा पहुँचे। वहाँ पर किसी को न देखकर बड़े ख़ुश हुए और अपनी भोथरी तलवार, जो कि किसी गँवार लोहार से कुछ पैसों में ही खरीदी गई थी, बड़े जोर से इधर-उधर घुमाने लगे। इस समय आप यह सोच कर बड़े खुश हो रहे थे कि आप बड़े-बड़े राक्षसों से लड़ाई कर रहे हैं। जब तलवार हवा में इधर-उधर घुमाने पर सन-सन करती तो आप सोचते कि राक्षसों के सिर कटकर जमीन पर धड़ा धड़ पड़ रहे हैं। हाँ, इस उछल कूद में तीन मक्खियाँ अवश्य मर गईं।

उन मरी हुई मक्खियों को देखकर नासनी नाचने लगे और कहने लगे, "अहा। मैं कितना बलवान् हूँ, कि इन तीनों को बड़े परिश्रम से मारा है। मेरे लिए तो ये राक्षस ही थीं, और अब भी मैं तो इन्हें राक्षस ही समझता हूँ।" यह कहकर नासनी अपने घर चले गये और उस तलवार पर निम्न शब्द खुदवा लिये—

"यह तलवार वीर नासनी की है, जिसकी मदद से तीन दानव मारे गये हैं।"

एक रोज फिर आप एक बोरा आटा तथा उसी तलवार को लेकर यात्रा के लिए चले। कुछ मील चलने पर जब आपको थकावट मालूम हुई तो पीपल की छाया में आप सुस्ताने लगे। थोड़ी ही देर में आपको नींद ने धर दबाया।

अकस्मात् उसी रास्ते से सात राक्षस निकले। वे भी हवा खोरी करने जा रहे थे। उन्होंने पीपल के पेड़ के नीचे उस छोटे-से मनुष्य को देखा और फिर पढ़ा उस तलवार पर खुदे हुए शब्दों को। उन्हें इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ और एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। उनमें से

एक ने कहने लगा, "देखो! यह कोई बड़ा ताक़तवर दुश्मन है। इसे जगाकर इसकी करामातें देखनी चाहिएँ।"

उनकी बातचीत से नासनी साहिब जाग पड़े। जब आँखें खुलीं तो अपने सामने सात राक्षसों को देखकर बड़े घबराये। डर के मारे उनकी साँस रुकने लगी और शायद पतलून भी बिगाड़ दिया, लेकिन जब उन राक्षसों का हाव-भाव अपने प्रति मित्रता का सा पाया तो उनकी जान में जान आई। आप थे भी बड़े बुद्धिमान्, जल्दी ही सारी परिस्थिति को समझ गये। जब राक्षसों ने इन्हें अपनी ताक़त का परिचय देने के लिए कहा, तो आप ज़रा तनकर उठे और अपने आटे के बोरे पर, जिसको सोने से पहिले धूल में गाड़ कर रक्खा था, कूदने लगे और कहने लगे, "देखो! मैं कितना बलवान् हूँ। जब मैं अपने पैर को जमीन पर पटकता हूँ तो धूल बादलों की तरह उठती है।" इस कूदने-फाँदने से बोरे का तमाम आटा छितर गया और कुछ हवा के साथ उड़कर सफ़ेद बादल सा बन गया।

इस करामात से नासनी साहिब का सातों राक्षसों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। वे लोग इन्हें मनाकर अपने घर ले गये और अपनी बहिन का विवाह भी इनके साथ कर दिया।

यहाँ पर आप बड़े आनन्द से रहने लगे। न खाने की कमी थी, न पीने की। जिस चीज़ की इन्हें आवश्यकता होती, फ़ौरन मिल जाती। राक्षस लोग इनको बहुत मानते थे और इनका हर काम हर समय करने को तत्पर रहते थे। इस तरह नासनी ने बहुत दिन तक मौज़ उड़ाई। एक दिन फिर इनकी परीक्षा का समय आया। एक खूँख़ार चीता इनके जङ्गल में आ धमका। वह हर रोज ऊधम मचाया करता। उसकी दुष्टता से जङ्गल के सभी जानवरों की नाक में दम आ गया। कुछ दिनों बाद उसे राक्षसों के भेड़, बकरी, गाय, बैल आदि का पता लगा। बस, अब वह उन पर भी हाथ सफ़ा करने लगा। यह बात राक्षसों को बहुत बुरी लगी। उन्होंने उस चीते को मारने का बीड़ा उठाया और इस कार्य में नासनी महोदय को भी हाथ बटाने के लिए कहा। यह सुनते ही नासनी की ऐसी हालत हो गई कि काटो तो शरीर में ख़ून नहीं। बेचारे ने स्वप्न के अलावा कभी चीते को देखा भी न था और तब भी उसे देखकर चिल्लाने लगता था। वह बहुत ही घबराया। ख़ैर, किसी तरह धीरज धरकर राक्षसों की बात मानी। यहाँ उसने फिर चालाकी चली।

वह उनसे कहने लगा—"देखो! मेरी तलवार इतने दिन काम में न लाने से ख़राब हो गई है, अतएव मैं इसे घिसकर तेज किये लेता हूँ। आप लोग चलें, मैं कुछ ही देर में आता हूँ।"

ज्योंही सातों राक्षस नासनी की नजर से ओझल हो गये, नासनी झट से दौड़कर एक घने पेड़ पर चढ़कर छिप गया। दैवयोग से ऐसा हुआ कि वह खूँख़ार चीता भी घूमता घामता उस पेड़ की छाया में आ बैठा। वह वहाँ से टस से मस नहीं होता था। बड़ी देर तक बैठा रहा। बेचारे नासनी के तो प्राण सूख गये। मारे डर के तमाम शरीर पसीने से लथ पथ हो गया। उधर राक्षस लोग भी चीते को घूर रहे थे। उन्हें

पेड पर छिपे हुए नासनी साहिब का पता न था। इधर नासनी को डर के मारे कँपकँपी छूट गई और थोडी ही देर में उनका हाथ टहनी से छूट पडा। अब क्या था, साहिब बहादुर धडाम से जमीन पर आ गिरे। पेड पर से मनुष्य की इस वर्षा से चीता बडा हडबडाया और वहाँ से भाग निकला। शिकार को हाथ से निकलता देखकर राक्षसों ने अपने बाण चला दिये और चीते को मार गिराया। उधर इतने समय मे नासनी के होश-हवास ठीक हो गये। मरे हुए चीते को देखकर वह मन ही मन तो बहुत ही खुश हुआ, लेकिन राक्षसों को सम्मुख देखकर दिखावटी तौर पर जरा क्रोधित होकर उन्हें डाँटने लगा, "क्योंजी, तुमने यह क्या गजब ढा दिया ? तुम्हें काम जरा सोच समझ कर करना चाहिए था। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं पेड से क्यों कूदा। उसे देखकर मैंने कुछ मन्त्र पढे और फिर पेड स उतर आया ताकि उसे अपने वश में करके पालतू जानवर बना लूँ। यह चीता पालतू बनकर हम लोगों के बडे काम का साबित होता। तुम लोगों ने तो उसे मारकर सारा गुड गोबर कर दिया।"

नासनी साहिब की इस बात पर सब राक्षसों को बडा अचम्भा हुआ। वे अफसोस प्रकटकर अपनी गलती के लिए नासनी से क्षमा लगे। फिर वे लोग नासनी की वीरता करते हुए घर लौट गये।

दिन ऐसा हुआ कि नासनी सबसे छोटे से किसी बात पर अकड पडे। यहाँ पर सबों पर रोब तो गाँठते ही थे, कारण अपने को उनका सरदार समझते थे। बस, आप ढेकडी में उस सीमा को पार कर गये। लगे उस राक्षस को डाँटने फटकारने। स्वभावत उस राक्षस को बडा बुरा लगा। वह सोचने लगा कि यह कहाँ का रुस्तम आया है। मैं इतना शक्तिशाली होते हुए भी इससे डर रहा हूँ। मैं इससे किसी न किसी दिन जरूर बदला निकालूँगा। यह अपमान मैं नहीं सह सकता। या तो मैं ही मरूँगा या इसे ही मजा चखाऊँगा। यह सोचते सोचते उसका खून खौलने लगा। यह काम उसने उसी रात्रि में करने की ठान ली।

उस छोटे राक्षस ने नासनी को तङ्ग करने के लिए एक चालाकी की। कहीं से दो बिल्लियाँ पकड़ लाया और जब नासनी नींद में खुर्राटे भर रहे थे, उन बिल्लियों को नासनी के कमरे मे लडा कर बाहिर का कुण्डा बन्द कर दिया। दरवाजे से कुछ दूरी पर अपना एक पालतू शिकारी कुत्ता बाँध दिया और उससे लगभग एक फर्लाङ्ग दूरी पर जा डटा। उसने यह सब इस इरादे से किया कि बिल्लियों की लडाई से नासनी जागेगा और आगबबूला होकर घर से निकलेगा। बाहिर कुत्ते से झपट होगी, इससे उसका क्रोध और दूना होगा। अब अगर वह बलवान् हुआ तो राक्षसों स झगडने के लिए उन्हे ढूँढेगा। इतने में मैं भी उसे मिल जाऊँगा और तब उसे समझ लूँगा। अगर वह कायर हुआ तो अव्वल तो वह कुत्ते से ही लथेडा जायगा और फिर यहाँ से भाग छूटेगा। तब तो झगडा ही खत्म

हुआ भी वही। बिल्लियों की खटपट तथा म्याऊँ म्याऊँ से कमरे में कोहराम मच गया। वे कभी इधर कूदने लगीं, तो कभी उधर फाँदने लगीं। नासनी की खटिया पर भी काफी युद्ध हुआ और इसी दरम्यान उन्होंने पंजों से बेचारे के हाथ-पाँव, मुँह आदि को काफी नोच डाला। बहुत देर तक तो वह गुदड़ी में चिपका रहा, लेकिन जब बहुत तङ्ग आ गया, तो उठने की ठानी। उसे तो यह युद्ध अपने लिए महाप्रलय सा जान पड़ा। मारे डर के हुलिया तङ्ग हो गई। किसी तरह दरवाजे को तोड़ ताड़ करके आगे बढ़ा, तो कुत्ते से सामना करना पड़ा। उसने भी नासनी की काफी मट्टी पलीद की। लेकिन जब उसे पहिचान पाया तो छोड़ा। अब वह सिर पर पैर रखकर भागने लगा। रास्ते में उस राक्षस ने पकड़ लिया। उसे देखकर तो नासनी की नानी ही मर गई। जहाँ राक्षस की 'ठहरो' की फटकार पड़ी कि वह बेहोश होते-होते बचा। अब तो मियाँजी की सारी पोल खुल गई। राक्षस के पैरों पर गिरकर लगा गिड़-गिड़ाने। पहिले तो राक्षस को बड़ा गुस्सा आया, लेकिन फिर दया आ गई।

प्रातःकाल होते ही उस राक्षस ने अपने सब भाइयों को एकत्र किया। रात का सारा किस्सा कह सुनाया। डर के मारे नासनी को भी अपने ठगी के व्यापार की पोल खोलनी पड़ी। कैसे आपने अपनी भोथरी तलवार से तीन मक्खियों-रूपी दानवों को मारा था, कैसे चीते को देखकर पेड़ से बेहोश होकर गिरे और तुरन्त ही होश सँभाल कर राक्षसों की गलती पर उन्हें गर्व से डाँटने लगे, आदि सब बतलाना पड़ा। उन्हें भी अपनी बेवकूफी तथा नासनी पर खूब क्रोध आया, लेकिन फिर नासनी की बुद्धिमानी देखकर उन्हें उसपर रहम आ गया। उन्होंने उसके अपराध क्षमा कर दिये, लेकिन अपने यहाँ नौकर रख लिया।

प्यारे बालको! आखिर में आपने झूठ का परिणाम देख लिया। नासनी कायर तथा एक नम्बर का डरपोक था, लेकिन बहुत बनता था। लोगों के सामने अपने को बड़ा भारी योद्धा कहता था। कुछ दिनों तक तो लोग-बाग उसके झाँसे में आ गये। लोगों ने उसकी बहुत पूछ की, बड़ा आदर सत्कार किया, लेकिन यह तभी तक होता रहा, जब तक उसकी पोल न खुली। जब नासनी की वास्तविकता प्रकट हो गई, उसकी शान खाक में मिल गई। यह तो राक्षसों की दयालुता समझिए कि नासनी को कोई कड़ा दण्ड नहीं दिया गया। सच ही है, पाप का घड़ा कभी न कभी अवश्य फूटता है।

जहाँ सूर्य उदय होता है

लेखक, श्रीयुत शान्तिस्वरूप गुप्त

एक दिन यशोदा ने पूरब में निकलते हुए सूर्य को देखकर कहा कि पिताजी, सूर्य कहाँ से निकलता है। मेरी इच्छा उस देश में जाने की होती है, जहाँ से सूर्य निकलता है।

पिता—चीन से कुछ दूर पूरब में एक टापुओं का समूह है। प्रातःकाल वहाँ पर सूर्य भगवान् का प्रकाश सबसे पहले होता है। वहाँ पर सवेरा बड़ी जल्दी होता है। वहाँ हमारे देश से चार-पाँच घण्टे पहले ही सूर्य भगवान् निकल आते हैं। जिस समय हमारे यहाँ के बालक स्कूल जाते हैं उस समय जापान के बालक अपना पाठ समाप्त करके स्कूल से लौटते हैं।

यशोदा—तो जापान के लोगों को सोना भी कम मिलता होगा। बेचारे बालक नींद में झूमते-झामते ही स्कूल जाते होंगे। मैं तो ऐसे देश में रहना कभी भी पसन्द नहीं करूँगी।

पिता—ऐसी बात नहीं है। वहाँ पर रात भी हमारे देश से चार-पाँच घण्टे पहले ही हो जाती है।

जापान एक सुन्दर देश है। वहाँ पर बहुत सुन्दर बाग हैं। अमीर आदमियों के घर में बाग होते हैं। सुन्दर फूल देखने का इनको बड़ा शौक होता है, और इसको देखने के लिए [illegible] दूर चले जाते हैं। जापान के

जापानी बालक

बालक फूलों के बड़े अच्छे-अच्छे गुलदस्ते, गहने बनाते हैं। इनमें वे अच्छी तरह से रंग-बिरंगे फूलों को, उनके उचित स्थान पर, लगाते हैं। इससे वह बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। जापान के गरीब से गरीब बालक भी एक आध घण्टा फूलों के लगाने में व्यतीत कर देते हैं।

जापान के प्रत्येक नगर में खेल-तमाशों के लिए एक बड़ा मैदान होता है। सड़कों पर नट, जादूगर, सँपेरे आदि तमाशा किया करते [illegible] भी देखने को खूब [illegible] हर जगह जाते हैं।

गलियों में लड़कियों के झुण्ड के झुण्ड खेलते फिरते हैं।

यशोदा—वहाँ के बालक कौन-कौन से खेल खेलना पसन्द करते हैं।

पिता—वहाँ के लड़के कुश्ती लड़ना सब से अधिक पसन्द करते हैं। नाव चलाना और पतङ्ग उड़ाना भी उनको पसन्द है। जापानी बालकों को शुरू से ही अपने बड़ों की मदद करना सिखलाया जाता है। और छोटे बच्चे अपने भाई बहिनों का काम करने लगते हैं। वे बहुधा उनको अपनी पीठ पर बाँधकर गलियों में खिलाने ले जाते हैं। जापानी बालक साफ-सुथरे भी बहुत रहते हैं।

यशोदा—पिताजी! जापान के स्कूल कैसे होते हैं?

पिता—वहाँ के बहुत से स्कूलों में बैठने के लिए मेज, कुर्सियाँ होती हैं पर किसी किसी में फर्श पर भी बैठते हैं। जापान में हर एक स्कूल की ड्योढ़ी पर एक खुली हुई अलमारी होती है। स्कूल के अन्दर जाते हुए लड़के अपनी काठ की चट्टियाँ उतार कर बाहर अलमारी पर रख देते हैं, और दूसरी चट्टियाँ अन्दर जाने के लिए पहन लेते हैं।

वे लोग अन्दर और बाहर की चट्टियाँ अलग-अलग रखते हैं। ऐसा करने में कमरा साफ रहता है।

यशोदा—तो क्या जापान में घर के बाहर भी काठ की चट्टियाँ पहनी जाती हैं?

पिता—हाँ, वहाँ पर काठ या भूसे की चट्टियाँ बहुत पहनी जाती हैं। ये सस्ती और सुखदायक होती हैं। जापान के बालक चीन के बालकों की तरह दवात कलम के बजाय रङ्ग की प्याली और ब्रुश से लिखते हैं।

—

माँ का गीत

लेखक, श्रीयुत योग यान 'अमर' बी० ए०

भोले भाले प्यारे बच्चे!
माँ की आँख के तारे बच्चे॥
हुआ सवेरा दुनिया जागी।
रात गई तारीकी भागी॥
तुम भी नींद से आँखें खोलो।
जाग उठो, मुँह हाथ को धोलो॥

वह जिसने संसार बनाया,
तुमको सुख आराम दिलाया—
मन में उसका प्रेम बसाओ।
उसके चरणों में झुक जाओ॥
वह ही तुमको बरकत देगा।
धन इज्जत और सेहत देगा॥

—

लपोड़ शंख की कहानी

लेखिका, श्रीमती त्रिगणा देवा, गया

किसी समय एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। वह भीख माँगकर अपना निर्वाह करता था। परन्तु इस पर भी उसे भर पेट खाने को न मिलता था। उसकी स्त्री उसे सदा नौकरी करने के लिए तग किया करती थी।

एक दिन वह तग आकर नौकरी के लिए विदेश जाने को तैयार हुआ और स्त्री से रास्ते में खाने के लिए भोजन माँगने लगा। पर उस बेचारी के पास कुछ भी देने को न था। खैर, वेचारी पडोसियो से थोड़ा सा आटा माँगकर लाई। परन्तु उस आटे से कुल तीन ही रोटियाँ तैयार हुई।

वेचारा उन्हीं तीन रोटियो को लेकर अपने भाग्य को आजमाने के लिए घर से निकल पडा। वह चलते-चलते एक सूनसान जगल में पहुँचा जहाँ दोपहरी में पृथ्वी तवे की तरह जल रही थी और गर्म हवा का पारावार नहीं था। वह प्यास से व्याकुल था। खोजते ढूँढ़ते उसे उसी जगल में एक कुँआ मिला। उस कुँए का आकार त्रिभुज की तरह था अर्थात् कुँए का मुँह तिकोना था। उन तीनो कोणो पर एक एक भेत का निवास था।

रोटिया निकालकर वह कहने लगा, "एक खाऊँ, दो खाऊँ, या तीनो को खालूँ।"

यह शब्द सुनकर तीनो भूत मन मे सोचने लगे कि वह हम लोगो को खाने के लिए कह रहा है। इसलिए सब भूतों ने उस ब्राह्मण को प्रणाम किया और सामने हाथ जोड़कर कहा, "हम लोग यहाँ बहुत दिन से निवास कर रहे हैं। परन्तु हम लोगों का भेद कोई आज तक नहीं जान सका। इस बात को जाननेवाले आप ही पहले आदमी है। मालूम होता है कि आप बहुत पराक्रमी तथा संसार के भेद जाननेवाले हैं। हम लोगो को आप न खायें।" यह कहते हुए सभी भूतो ने उससे प्राणदान लिया और इसके बदले उसे एक शख दिया। उस शख में यह गुण था कि जो जितना रुपया माँगे, उससे ले सकता था।

शख पाकर ब्राह्मण खुश हुआ और घर की ओर लौटा। लौटती बार उसे रास्ते मे रात हो गई और वह एक बूढ़े आदमी के घर ठहर गया। वहाँ रहकर उसने रात को खाया, पीया, और बातचीत में शख की भी सारी बाते बतला दीं।

शख का बयान सुनते ही वह स्वार्थी बूढ़ा उसके लोभ में आ गया। जब ब्राह्मण सो गया तब उसने उस शख की जगह पर दूसरा शख रख दिया।

जिस समय प्रातःकालीन सूर्य्य की लालिमा छिटक रही थी उस समय ब्राह्मण जगा और वह नकली शंख लेकर घर गया। वहाँ पहुँचने पर उसने अपनी स्त्री से असली शंख का वृत्तान्त कह सुनाया। इसके बाद उसने पत्नी के इच्छानुसार शंख से रुपया माँगा, पर शंख ने न तो रुपया दिया और न कुछ उत्तर ही। यह रंग देखकर उसकी स्त्री ने क्रोधित होकर फिर पति को नौकरी की खोज में जाने को कहा। वह बेचारा लज्जित होकर नौकरी की खोज में निकला।

अब वह तीन रोटियाँ लेकर फिर उसी कुँए पर आ पहुँचा। फिर भी वह पहले की तरह कहने लगा "एक खाऊँ, दो खाऊँ, या तीनों को खाऊँ?" इस बार भी तीनों प्रेत हाथ जोड़कर कहने लगे—"हे ब्राह्मण, आप हम लोगों को इतना क्यों सताते हैं? हम लोगों ने तो आपको शंख दे दिया था। फिर क्यों सताते हैं?" ब्राह्मण ने उत्तर दिया—"तुमने मुझे बहुत धोखा दिया है, क्योंकि शंख तो माँगने पर कुछ भी नहीं देता।" इस पर प्रेतों ने फिर उसे एक शंख दिया। उस शंख से जितना माँगा जाता था, उससे वह दूना देने को कहता था।

शंख पाते ही ब्राह्मण खुश होकर घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में फिर उस स्वार्थी बूढ़े के घर पर ठहरा, क्योंकि रात हो गई थी। इस बार भी उस ब्राह्मण ने पाये हुए शंख की सभी बातें स्वार्थी बूढ़े से कह दीं। हाल सुनते ही फिर वह आदमी उस पर लोभित हो गया।

ब्राह्मण बेचारा खा-पीकर सो गया। उसके सिरहाने वह शंख रक्खा हुआ था। आधी रात को उस आदमी ने उस शंख की जगह पर पहलेवाला शंख रख दिया और नया शंख चुरा लिया। प्रातःकाल ब्राह्मण उठकर शंख लेकर घर गया।

वह ब्राह्मण जब घर पहुँच गया तो जितना रुपया माँगता था उतना उसे मिल जाया करता था। पर स्वार्थी आदमी उस शंख से जितना माँगता था उसका दूना देने को वह कहता तो था पर देता था कुछ नहीं। तब तंग आकर स्वार्थी आदमी ने उस शंख से पूछा कि तुम देने के लिए तो मेरी इच्छा से दूना कहते हो पर देते-लेते कुछ नहीं। शंख ने उत्तर दिया "हमारा काम एक का दो कहना है, मैं देता-लेता कुछ नहीं। मेरा नाम 'लपोड़ शंख' है।"

मनुष्य को स्वार्थी तथा बेईमान न होना चाहिए।

धोबी कैसे प्रसिद्ध हुआ

लेखिका, श्रीमती मनोरमा चौधुरी, एम० ए०

एक वृद्धा स्त्री किसी निर्जन स्थान में अपनी टूटी फूटी कुटिया में रहती थी। उसके कोई न था और वह दरिद्र बहुत थी। वर्षा ऋतु में उसकी छत के चारों ओर पानी टपका करता था। एक रात वह सोई हुई थी। इतने में बारिश आई और जिस जगह उसकी चारपाई लगी हुई थी, वहाँ से पानी की बूँदें गिरने लगीं। बुढ़िया की नींद टूट गई। खिसिया कर वह चिल्ला पड़ी, "क्या इस 'झम झम' के मारे मैं रात को सो भी नहीं सकूँगी? इससे अच्छा तो यह है कि जंगल में जाकर शेरों के साथ सोऊँ।" यह कहकर वह खाट खिसका कर कोठरी के दूसरे कोने में जाकर सो गई।

इधर वर्षा की वजह से उस रात्रि में एक व्याघ्र ने उसी कुटिया में आश्रय लिया था। बुढ़िया की क्रोध भरी बातों को सुनकर वह मन ही मन आश्चर्यान्वित हो गया। उसने इससे 'पहिले' कभी 'झम-झम' शब्द नहीं सुना था, और न अब उसका अर्थ ही समझा। वह सोचने लगा कि झम-झम ऐसा कौन सा आश्चर्यजनक जीव है जो व्याघ्र से भी अधिक भयङ्कर हो।

उस अँधेरी रात में एक धोबी अपना खोया हुआ गधा ढूँढने निकला था। अन्धकार में भटकते-भटकते वह उसी कुटिया में पहुँचा और व्याघ्र को गधा समझ उसी समय, रस्सी से बाँधते हुए, उसको लेकर अपने घर चला आया। व्याघ्र भी बिना विद्रोह किये, पालतू बिल्ली की भाँति, धोबी के पीछे पीछे चलने लगा, क्योंकि वह समझ रहा था कि उसको पकड़कर ले जाने वाला भयङ्कर जीव झम झम ही होगा। झम झम के सिवाय और किसकी मजाल है जो व्याघ्र के पास भटके।

प्रभात होने पर जब धोबी ने अपने आँगन में एक व्याघ्र बँधा हुआ देखा तब उसके भय तथा आश्चर्य की सीमा न रही। परन्तु उसने अपना मनोभाव प्रकट न किया। ग्रामवासियों ने जब सुना कि धोबी ने बिना किसी अस्त्र शस्त्र की सहायता के एक जीवित शेर को अपने आँगन में बाँधकर रक्खा है, तब वे झुण्ड के झुण्ड धोबी के घर यह तमाशा देखने के लिए आये।

चारों ओर धोबी के साहस और वीरता की कहानी फैल गई। जब उस देश के नरेन्द्र के कानों तक यह बात पहुँची तब उन्होंने धोबी को, अत्याश्चर्य साहसिकता के पुरस्कार स्वरूप, अपना सेनापति बना दिया।

इतना उच्च पद पाकर धोबी के घमंड की सीमा न रही परन्तु साथ ही उसे अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। अन्य देश के एक राजा ने उस देश पर चढ़ाई कर दी। धोबी को उसके प्रभु ने युद्धस्थल पर भेजा और उसको उत्साह देने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ घोड़ा उसको पुरस्कार दिया।

धोबी इससे पहिले न तो कभी घोड़े पर सवार हुआ था और न उसमें लड़ने की योग्यता ही थी। परन्तु नरेश की आज्ञा को वह टाल न सका। अपनी पत्नी से उसने कहा कि मेरी देह को घोड़े की पीठ पर अच्छी तरह से रस्सी के द्वारा बाँध दे। पर वह रणक्षेत्र का अश्व ठहरा। धोबी ज्योंही उसके ऊपर बैठा त्योंही वह छलाँग मारकर युद्धस्थल में जा पहुँचा। बहुत चेष्टा करने पर भी धोबी घोड़े को रोक न सका, उसकी सारी सेना पीछे पड़ी रह गई।

वह अश्व दौड़ते दौड़ते एक ताड़ के पेड़ की बगल से जब चलने लगा तब धोबी डर के मारे, अपने प्राण-बचाने को, उसी ताड़ के पेड़ से लिपट गया। परन्तु वह अश्व इतना शक्तिमान था कि उसके आगे दौड़ते ही ताड़ का वृक्ष जमीन से उखड़ गया।

इधर शत्रु राजा की सेना पहिले से ही धोबी के शौर्य-वीर्य का वर्णन सुन चुकी थी। जब शत्रु पक्ष के सैनिकों ने देखा कि बिना ज़ीन के घोड़े पर चढ़ा हुआ, एक विशाल महीरुह को अपने हाथ में पकड़े, बिना किसी देह रक्षक सैनिक के साथ, धोबी उन्हीं के शिविर की ओर दौड़ता आ रहा है, तब सबके सब उन सैनिकों ने भयभीत होकर पीठ फेरी। देखते देखते रण-भूमि शून्य हो गई। धोबी को एक सामान्य पैदल सिपाही से सामना करने तक की आवश्यकता नहीं हुई।

विजयी वीर के रूप में जब धोबी अपने राजा के पास लौट आया, तब उसका बहुत आदर-सम्मान हुआ। अब राजा ने उससे कहा कि इस वीरता के पुरस्कार स्वरूप तुम्हें जिस वस्तु की इच्छा हो, वह मुझे बतलाओ। मैं दे दूँगा। मैं तुम्हारे साहस से प्रसन्न हूँ।

धोबी ने विनयपूर्वक कहा, "महाराज! यदि आपकी ऐसी ही इच्छा है तो मुझे सेनापति के काम से मुक्ति दीजिए। इससे बढ़कर मुझे कोई इच्छा नहीं है।" धोबी चतुर था। वह जानता था कि सेनापति का काम सहज नहीं है। अभी से यदि वह सावधान न हो जायगा तो आगे जाकर उसकी भद्द उड़ेगी।'

राजा धोबी से इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने धोबी को एक बड़ा सा ग्राम पुरस्कार में दिया। धोबी धोबिन के साथ वहीं पर अत्यन्त सुख के साथ जीवन बिताने लगा। बिना चेष्टा या इच्छा से वह इतना यशस्वी हो गया था कि भविष्य में उसे और अधिक यश की आकांक्षा न हुई।

धोबी कैसे प्रसिद्ध हुआ

लेखिका, श्रीमती मनोरमा चौधुरी, एम० ए०

एक वृद्धा स्त्री किसी निर्जन स्थान में अपनी टूटी फूटी कुटिया में रहती थी। उसके कोई न था और वह दरिद्र बहुत थी। वर्षा ऋतु में उसकी छत के चारों ओर पानी टपका करता था। एक रात वह सोई हुई थी। इतने में बारिश आई और जिस जगह उसकी चारपाई लगी हुई थी, वहीं से पानी की बूँदें गिरने लगीं। बुढिया की नींद टूट गई। खिसिया कर वह चिल्ला पड़ी, "क्या इस 'झम झम' के मारे मैं रात को सो भी नहीं सकूँगी? इससे अच्छा तो यह है कि जंगल में जाकर शेरों के साथ सोऊँ।" यह कहकर वह खाट खिसका कर कोठरी के दूसरे कोने में जाकर सो गई।

इधर वर्षा की वजह से उस रात्रि में एक व्याघ्र ने उसी कुटिया में आश्रय लिया था। बुढिया की क्रोध-भरी बातों को सुनकर वह मन ही मन आश्चर्यान्वित हो गया। उसने इससे पहिले कभी 'झम-झम' शब्द नहीं सुना था, और न अब उसका अर्थ ही समझा। वह सोचने लगा कि झम-झम ऐसा कौन सा आश्चर्यजनक जीव है जो व्याघ्र से भी अधिक भयङ्कर हो।

उस अँधेरी रात में एक धोबी अपना खोया हुआ गधा ढूँढने निकला था। अन्धकार में भटकते-भटकते वह उसी कुटिया में पहुँचा और व्याघ्र को गधा समझ उसी समय, रस्सी में बाँधते उसको लेकर अपने घर चला आया। व्याघ्र भी बिना विद्रोह किये, पालतू बिल्ली की भाँति, धोबी के पीछे पीछे चलने लगा, क्योंकि वह समझ रहा था कि उसको पकड़कर ले जानेवाला भयङ्कर जीव झम झम ही होगा। झम-झम के सिवाय और किसकी मजाल है जो व्याघ्र के पास भटके।

प्रभात होने पर जब धोबी ने अपने आँगन में एक व्याघ्र बँधा हुआ देखा तब उसके भय तथा आश्चर्य की सीमा न रही। परन्तु उसने अपना मनोभाव प्रकट न किया। ग्रामवासियों ने जब सुना कि धोबी ने बिना किसी अस्त्र शस्त्र की सहायता के एक जीवित शेर को अपने आँगन में बाँधकर रक्खा है, तब वे झुण्ड के झुण्ड धोबी के घर यह तमाशा देखने के लिए आये।

चारों ओर धोबी के साहस और वीरता की कहानी फैल गई। जब उस देश के नरेन्द्र के कानों तक यह बात पहुँची तब उन्होंने धोबी को, अत्याश्चर्य साहसिकता के पुरस्कार स्वरूप, अपना सेनापति बना दिया।

इतना उच्च पद पाकर धोबी के घमंड की सीमा न रही परन्तु साथ ही उसे अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। अन्य देश के एक राजा ने उस देश पर चढाई कर दी। धोबी को उसके प्रभु ने युद्धस्थल पर भेजा और उसको उत्साह देने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ घोड़ा उसको पुरस्कार दिया।

धोबी इससे पहिले न तो कभी घोड़े पर सवार हुआ था और न उसमें लड़ने की योग्यता ही थी। परन्तु नरेश की आज्ञा को वह टाल न सका। अपनी पत्नी से उसने कहा कि मेरी देह को घोड़े की पीठ पर अच्छी तरह से रस्सी के द्वारा बाँध दे। पर वह रणक्षेत्र का अश्व ठहरा। धोबी ज्योंही उसके ऊपर बैठा त्योंही वह छलाँग मारकर युद्धस्थल में जा पहुँचा। बहुत चेष्टा करने पर भी धोबी घोड़े को रोक न सका, उसकी सारी सेना पीछे पड़ी रह गई।

वह अश्व दौड़ते-दौड़ते एक ताड़ के पेड़ की बगल से जब चलने लगा तब धोबी डर के मारे, अपने प्राण-बचाने को, उसी ताड़ के पेड़ से लिपट गया। परन्तु वह अश्व इतना शक्तिमान था कि उसके आगे दौड़ते ही ताड़ का वृक्ष जमीन से उखड़ गया।

इधर शत्रु राजा की सेना पहिले से ही धोबी के शौर्य वीर्य का वर्णन सुन चुकी थी। जब शत्रु पक्ष के सैनिकों ने देखा कि बिना जीन के घोड़े पर चढ़ा हुआ, एक विशाल महीरुह को अपने हाथ में पकड़े, बिना किसी देह-रक्षक सैनिक के साथ, धोबी उन्हीं के शिविर की ओर दौड़ता आ रहा है, तब सबके सब उन सैनिकों ने भयभीत होकर पीठ फेरी। देखते देखते रण-भूमि शून्य हो गई। धोबी को एक सामान्य पैदल सिपाही से सामना करने तक की आवश्यकता नहीं हुई।

विजयी वीर के रूप में जब धोबी अपने राजा के पास लौट आया, तब उसका बहुत आदर-सम्मान हुआ। अब राजा ने उससे कहा कि इस वीरता के पुरस्कार स्वरूप तुम्हें जिस वस्तु की इच्छा हो, वह मुझे बतलाओ। मैं दे दूँगा। मैं तुम्हारे साहस से प्रसन्न हूँ।

धोबी ने विनयपूर्वक कहा, "महाराज! यदि आपकी ऐसी ही इच्छा है तो मुझे सेनापति के काम से मुक्ति दीजिए। इससे बढ़कर मुझे कोई इच्छा नहीं है।" धोबी चतुर था। वह जानता था कि सेनापति का काम सहज नहीं है। अभी से यदि वह सावधान न हो जायगा तो आगे जाकर उसकी भद्द उड़ेगी।

राजा धोबी से इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने धोबी को एक बड़ा सा ग्राम पुरस्कार में दिया। धोबी धोबिन के साथ वहीं पर अत्यन्त सुख के साथ जीवन बिताने लगा। बिना चेष्टा या इच्छा से वह इतना यशस्वी हो गया था कि भविष्य में उसे और अधिक यश की आकांक्षा न हुई।

बगुला भगत

लेखक,

श्रीयुत कृष्णमनोहरसिंह सांडल
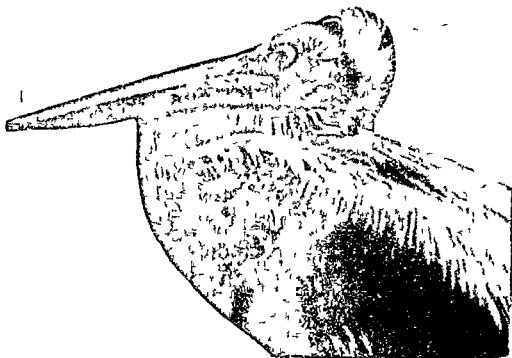
बगुला भगत

बगुला भगत, की सुनो कहानी
कैसी उसने की मनमानी,
कैसा उसने, जाल बिछाया
कैसे करनी का फल पाया।

पंख उसके अतिशय उज्ज्वल
उर कोयले सा काला,
चोंच उसकी बिल्कुल सीधी
पर था वह टेढी बुद्धिवाला।

एक दिन प्रात निकल घर से
झील किनारे वह आया,
जल में विपुल देख मछलियाँ
मन उसका अति ललचाया।

चिडियों की भी कमी नहीं थी
कलरव वहाँ रात दिन होता,
पेड़ों पर थे अगणित पक्षी
कौवा चातक मैना तोता।

एक टाँग उसने ऊपर की
दूसरी को भू पर जमा दिया,
मानो किसी तपस्वी ने
ब्रह्म में ध्यान रमा लिया।

मछलियों ने जब उसको देखा
बेहद घबड़ाई मन में,
सुध बुध बिसर गई उनकी
कँपकँपी छाई तन में।

साहसपूर्वक कुछ जलचर
बगुले के गये निकट,
अटल खड़ा रहा वह कपटी
धैर्य था उसमें बड़ा विकट।

पहली बोली, क्यों भाई
क्या है नाम तुम्हारा ?
'कष्ट न दूँ, कभी किसी को,
बगुला भगत नाम हमारा।'

दूसरी बोली, क्यों भाई
एक टॉग क्यों की ऊपर ?
'रसातल में धँसे पृथ्वी
यदि दोनों रक्खूँ भू पर'।

तीसरी बोली, प्यारे भाई
क्या तुम खाते खाना
'केवल वायु भक्षण करता
शेष नहीं कुछ मुझको पाना।'

प्रसन्न हुए सब जलचर
फिर न उससे भय माना,
सरल साधु औ सज्जन
कपटी बगुले को जाना।

विश्वास किया सब ने उसका
मित्र उसको अपना माना।
बच्चे उसकी रक्षा में रक्खे
हुआ जब उनको जाना।

देखा चिड़ियों के दल ने भी
हानि न बगुले ने पहुँचाई,
अण्डे उसकी देख में छोड़े
एक चिन्ता से छुट्टी पाई।

मन चीती हुई बगुले की
चिर वाञ्छित अवसर पाया,
अगणित अण्डे बच्चों को
उसने अपना भोज्य बनाया।

मछली होती है भोली
भेद न कुछ वे पाईं
चिड़ियों ने न धोखा खाया,
ताड़ी बगुले की कुटिलाई।

तोता बोला, मेरे अण्डे
कहाँ गये हुआ क्या हाय
तभी हमारी रक्षा सम्भव
हो जावे यदि राम सहाय

बड़ी मूर्खता की हमने
बगुले को जो पतिआया।
अजनबी यह था बिल्कुल
यों कौवा चिल्लाया।

सभा उन्होंने तुरत एक की
सब चिड़ियों को बुलवाया,
पता लगाने को चोरी का
कौवे को जासूस बनाया।

बगुला निज स्थान से डोला
एकान्त घड़ी उसने पाई,
अण्डों को पहले खाया
फिर मछली पर चोंच चलाई।

कौवा देख रहा था यह सब
काँव काँव वह चिल्लाया,
दौड़ पड़े सारे पक्षी तब
करनी का फल बगुला पाया।

चोंचें मारीं खूब सभोंने
चोट भयानक उसको आई।
बुरी मौत गया वह मारा
निकल गई सारी भगताई।

बच्चा, अब तो देखा तुमने
कैसा उसने जाल बिछाया।
कैसी उसने की मन मानी
कैसे करनी का फल पाया।
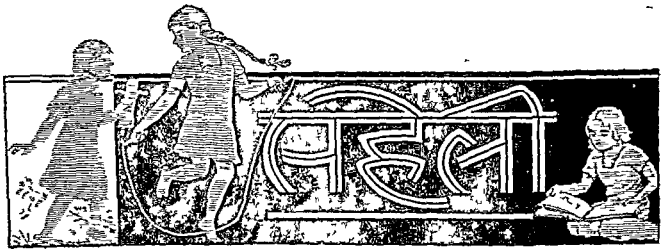
माया रानी बड़ी सयानी, बैठी हैं गुड़िया लेकर,
कहती हैं, मैं इसे खिलाती गरम जलेबी दोना भर।

प्रे० —कृष्ण सांडिल

बहन प्यारी सौंदर्य को
खिलौना तनिक न भाता है।
'बालसखा' को जब यह देखे
प्रमुदित मन हो जाता है॥

कपड़े सीने की मशीन

लेखिका, कुमारी शकुन्तला

मेरे प्यारे भाइयो व बहिनो, मैं आज तुम्हें यह बताने जा रहा हूँ कि जिस मशीन के सिले हुए कपड़े तुम पहनते हो वह कैसे बनी।

कपड़े सीने की मशीन के आविष्कारक का नाम मिस्टर हो (*Mr Howe*) था। वह एक कारखाने में मामूली मजदूर था। एक बार का जिक्र है कि जब वह सारा दिन काम करने के बाद थका माँदा घर लौटा तो क्या देखता है कि उसकी बीमार और कमजोर आँखोंवाली स्त्री एक फटे कपड़े को बहुत कोशिश करने पर भी ठीक नहीं सी सकती।

उस वक्त सहानुभूति के विचारों के साथ मिस्टर हो के दिल में एक ख्याल पैदा हुआ कि क्यों न एक कपड़े सीने की मशीन बनाई जाय ताकि घर की औरतें सुई-धागे की मुसीबत से बचें।

उस दिन से, शाम को जब वह सारा दिन काम करके लौटता तो प्रति दिन आधा या एक घंटा अपनी समस्या को हल करने में लगाता। और थोड़े ही दिन बीतने पर उसने देखा कि वह एक भद्दी सी मशीन बनाने में सफल हो गया है परन्तु अभी तक सुई ठीक तौर से न लग सकी।

एक दिन जब घर आया और मशीन लेकर बैठा, तो यही सोचने लगा कि "क्या यह सब परिश्रम व्यर्थ जायगा और मशीन न बनेगी?" इन्हीं विचारों में गोते लगाते-लगाते उसे नींद ने आ घेरा और फिर स्वप्न ने। उसने क्या देखा—एक राजा और वह उसके दासों में से एक है। राजा ने कपड़े सीने की मशीन बनाने पर बेहद इनाम परन्तु असफलता पर प्राण-दण्ड का हुक्म सुना दिया। वह गया और बोला—"महाराज, सिर्फ सात दिन की अवधि माँगता हूँ।" राजा ने सिर हिला दिया। उसने सारी मशीन तैयार कर ली परन्तु वही सुई-वाला झंझट! निराशा ने आ घेरा। नवें दिन सिपाही आ गये। उन्होंने आज्ञा-पत्र दिखाया और कहा, चलो, प्राण दण्ड के लिए तैयार हो जाओ। वह निराशा के गहरे सागर में गोते खाने लगा। रास्ते में उसने देखा कि सिपाहियों के भालों की नोकों में छेद थे और उनमें चमड़े का एक धागा जैसा पिरोया हुआ था। हर्ष, भय और आश्चर्य से वह हड़बड़ाकर नींद से उठ बैठा।

अन्त में वह सफलता के ताज से सुशोभित हुआ। उसने स्वप्न पर विचार किया और भालों की नकल करके अपनी सुई ठीक बना ली। वही सिलाई की पहली मशीन थी।

वह बहुत भद्दी थी और धीरे-धीरे सभ्यता के अनुसार उसमें भी परिवर्त्तन हुए और वह इस हालत में पहुँची जिसे हम आज दिन देखते हैं।

विज्ञान की बातें

कुरसीदार साइकिल
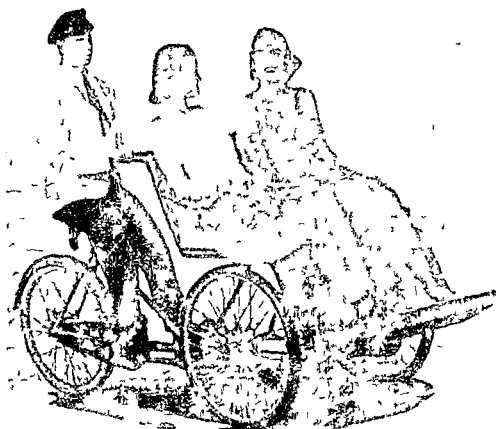
इस तीन पहिये की साइकिल का आविष्कार अभी हाल ही में हुआ है। योरप में समुद्र स्नान करनेवाले लोग मनोविनोद के लिए इस तरह की साइकिल पर चढ़कर घूमना पसंद करते हैं। इसकी बनावट दो पहिये की साइकिल से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इस तसवीर में पीछे की सीट पर बैठा हुआ आदमी इसे चला रहा है और आगे की कुरसी पर दो औरतें आराम से बैठी हैं। बच्चों को स्कूल पहुँचाने में भी इस तरह की साइकिल से मदद मिल सकती है।

मेला बतानेवाला कलेंडर

यह एक नये तरीक़े का कलेंडर है। इस तरह के कलेंडर में तारीख फाड़ने पर नीचे, होनेवाले मेलों के दृश्य दिखलाई पड़ते हैं। इससे कलेंडर देखनेवालों के मन में मेला देखने की इच्छा पैदा होती है। इस तरह का कलेंडर अभी हाल में अमेरिका में बनाया गया है। इसमें अमेरिका के प्रसिद्ध मेलों के दृश्य दिखाई दे रहे हैं।

पानी पर चलनेवाले पहियों का दौड़

हम इस चित्र में पानी में होनेवाले पहियों की दौड़ देख रहे हैं। आजकल योरप के बहुत से देशों में इस तरह का रेस जारी है। इस तरह के पहिये लकड़ी के बने होते हैं। इनमें खड़े होकर लोग अपना वजन आगे की ओर रखते हैं और पहिया घूमने लगता है। मनोविनोद के साथ ही साथ इसे चलाने में काफी मिहनत भी पड़ती है। इससे चलानेवाले लोगों का खासा व्यायाम भी हो जाता है।
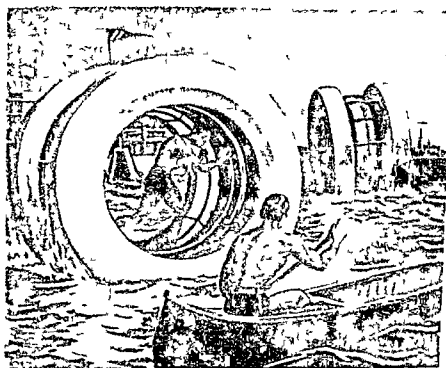
समुद्र की तह से सोना निकालनेवाली मशीन
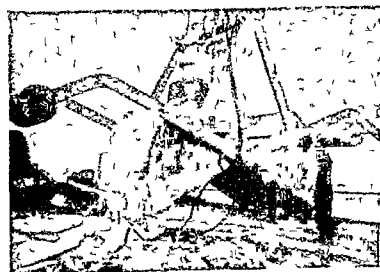
जान सी० विलियम्स नामक एक अमेरिकन इंजीनियर ने अभी हाल में एक मशीन तैयार की है जो एक हजार फुट गहरे समुद्र की पेंदी में होनेवाले सोने का खोदने में मदद करती है। यह मशीन जमीन पर उसी तरह पड़ती है, जिस तरह तसवीर में दिखलाई गई है। जमीन पर पड़ते ही एक बार में यह अपने भीतर पाँच टन मिट्टी भरकर मुँह बन्द कर लेती है और फिर ऊपर खींच ली जाती है।

चारपाई से नफ़रत रखनेवाला आदमी

यह जार्ज एल० बीस नामक एक अमेरिकन की तस्वीर है जिन्हें २५ साल तक लगातार रेलवे की चीजें बेचनी पड़ी। इसी से इन्हें ठेले में बैठकर कई घंटे तक रोजाना सफर करना पड़ता था। नींद आने पर उसी पर ये सो भी जाते थे। इस पेशे के बाद इन्हें घर की चारपाइयों पर आराम नहीं मिला। इसी से इन्होंने अपने आराम के लिए गाड़ी के बर्थ की तरह एक बर्थ बना ली है और उसी पर उन्हें आराम की नींद आती है। हम उन्हें चित्र में उसी बर्थ पर बैठा हुआ देखते हैं।

नक़शा पढने मे मदद करनेवाला यंत्र

सडक के नकशों की लाइनें और शब्द बहुत बारीक होते हैं। इसी से उन्हें पढने में यात्रियों को बहुत कठिनाई होती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए एक यन्त्र बनाया गया है। इसके सिरे पर एक गोल शीशा लगा रहता है जिसकी सहायता से छोटे-छोटे शब्द और लाइनें बडी दिखलाई पड़ती हैं और इसी यंत्र के निचले भाग से दूरी नाप कर, नकशे पर दिये गये स्केल की सहायता से, मीलों को तादाद भी निकाली जाती है। छोटा होने की वजह से लोग आसानी से इसे जेब में भी रख सकते हैं।

सोचो और बताओ

एक घर में तीन आदमी रहते थे। उन्होंने मिलकर कुछ पूरियाँ बनाईं। पूरियों को रखकर वे बाजार चले गये। उनमें से एक आदमी आया और उसने पूरियों के तीन हिस्से किये। तीन हिस्से करने पर एक पूरी बची। उसने बची हुई पूरी फेंककर, अपने हिस्से की पूरियाँ खा लीं। इसी प्रकार दूसरा आदमी आया। उसने भी बाकी पूरियों के तीन हिस्से किये। फिर एक पूरी बची। उसने भी बची हुई पूरी फेंककर अपने हिस्से की पूरियाँ खा लीं। अब तीसरा आदमी आया। उसने शेष पूरियों के तीन हिस्से किये। हिस्से करने पर एक पूरी फिर शेष बची। वह पूरी फेंककर उसने अपने हिस्से की पूरियाँ खा लीं। जब तीनों आदमी साथ घर लौटे तब उन्होंने पूरियों का बँटवारा किया। आश्चर्य की बात है कि पूरियाँ पूरी पूरी बँट गईं और एक टुकड़ा भी न बचा। तो बताओ कितनी पूरियाँ थीं।

(उत्तर—२५ पूरियाँ) —कुमारी सुशीला पचोली

पहेली-कुञ्ज

(१)

१—मैं लेने गई तुझको,
तूने घेर लिया मुझको।
तू छोड़ दे मुझको,
मैं ले जाऊँ तुझको॥

उत्तर—(पानी) मेंह

२—धम्मक धम्मक धूँय धूँय
फर फर फर फूँय फूँय
खदबद खदबद खूँय खूँय
सड़पड़ सड़पड़ सूँय सूँय

उत्तर—खीर

—शिवकला देवी

(२)

१—चार मेरे आऊ जाऊ, चार मेरे कमाऊ।
दो मेरे सूखे लकड़ा, एक मरा उड़ाऊ॥

उत्तर—गाय

२—रहती थी मैं चाँदपुर, उतरी मैं कन्नौज।
हस्तिनापुर पकड़ी गई, मारी गई नकौज॥

उत्तर—जूँ

३—जीभ फटी, अरु सिर कटा,
तजत न अपनी बान।
मन आई कह देत वह,
पञ्चन बीच अजान॥

उत्तर—कलम

४—काले पहाड पर गलगल ब्यानी,
जिसकी तेली बहुत मिठानी।
उत्तर—शहद

५—तूल का लहँगा, अमोआ की तोई।
बरे तोरा लहँगा, मैं सब रात रोई॥
उत्तर—मिर्च

६—तनक सी गलगल, मटकी सा पेट।
कहाँ चली गलगल, राजा क देश॥
राजा है बेईमान, चीर खेहै पेट॥
उत्तर—इलायची

—कुमारी सुशीला पचोलो

(३)

१—निशदिन पानी में रहे, जाके हाड न मास।
काम करे तलवार का, फिर पानी में वास॥
उत्तर—कुँभार का डोरा

२—सावन-भादों बहुत चलत है, माघ मास में थोरी।
सुन री सुन री अजब पहेली सखी सहेली मोरी॥
उत्तर—मोरी

३—हरी थी मन भरी थी, नौ लाख मोती जडी थी।
राजा जी के बाग मे दुसाला ओढे खडी थी॥
उत्तर—भुट्टा

४—लाल मखमल में हाय हाय॥
उत्तर—लाल मिर्च

५—इचक दाना पिचक दाना, दाने ऊपर दाना।
बँगले ऊपर मोर नाचे, राजा है दीवाना॥
उत्तर—अनार

६—चढ चौकी एक बैठी रानी,
सिर पर आग बदन पर पानी।
बार बार सिर काटे उसका,
कोई भेद न पावे उसका॥
उत्तर—हुक्का

७—एक आदमी चलत चलते थक गया।
लाओ चाकू काटो गरदन फिरसे ओही चल पडा॥
उत्तर—पेन्सिल

—लीला कुमारी सकसेना, दोहद

(४)

बीच काटो तो मन बनूँ मैं
काटो सिर तो बनूँ मैं कान।
तीन अक्षरों का तन मेरा
बूझो तो पावो इनाम॥
उत्तर—मकान

—हरवशलाल कपूर, मेरठ

(५)

१—देखी एक अनोखी नारी,
पेट मे कपडा देह उघारी।
उत्तर—दवात

२—एक पुरुष का अचरज भेद,
हाड हाड मे उसके छेद।
मुझे अचम्भा आवे ऐसे,
जीव बसे है उसमें कैसे॥
उत्तर—पिंजडा

३—बन से आई बाँदरी, घर छिदवाये कान।
बडे मजे की दावत मिली, घूरे पर गई जान॥
उत्तर—पत्तल या दोना

—भोलाराम अग्रवाल, आगरा
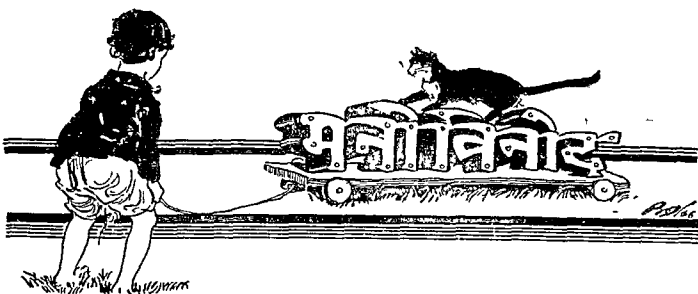
हँसो-हँसाओ

लेखक, कृष्णमोहनसिंह सोंडल

[१]

कमला और विमला सोच में बैठी थीं। उनके सामने एक रकाबी थी। रकाबी में दो अंगूर के गुच्छे थे। एक गुच्छा बहुत बड़ा था, दूसरा छोटा।

कमला ने कहा—"विमला, क्या तू लालची है ?"

विमला—(गर्व से) "नहीं, मैं बिल्कुल लालची नहीं हूँ।"

कमला—(सन्तोष से) "अच्छा, पहले तू ले, पीछे मैं लूँगा।"

[२]

एक लड़के को शराब पीने की बुरी आदत पड़ गई थी। शिक्षक ने लत छुड़ाने की बहुत चेष्टा की किन्तु सफल नहीं हुआ। एक दिन उसने लड़के का पीछा किया। वह दुकान में जाकर शराब पीने लगा। शिक्षक ने उसकी पीठ पर हाथ रक्खा। लड़का चौंक उठा। शिक्षक ने कहा—"बेटा, क्या तुम समझते हो कि यह घातक वस्तु तुम्हारी प्यास बुझा सकेगी ?"

लड़के ने छूटते ही उत्तर दिया—"नहीं, भला एक गिलास से क्या होगा।"

[३]

रमेश को पहली बेर जहाज पर सवार होने का अवसर मिला था। वह बहुत परेशान था। जहाज के स्टिवार्ड ने कहा—"हुजूर, आप इतना घबड़ाइए मत। समुद्र की बीमारी इतनी भयकर नहीं होती कि मृत्यु हो जाय।"

रमेश—"ऐसा मत कहो। केवल मरने की आशा से ही मैं अभी तक जीवित हूँ।"

[४]

हेड मास्टर साहब आफिस में बैठे थे। किसी ने टेलीफोन में कहा—"मेरा लड़का बीमार है। स्कूल नहीं जा सकेगा।"

हेड मास्टर—"खेद है लड़का बीमार हो गया। कौन बोल रहा है ?"

आवाज आई—"मेरा बाप।"

[५]

लल्लू अँगुली मे पट्टी बाँधने की कोशिश कर रहा था। माँ ने पूछा—"लल्लू, तुम्हारी अँगुली में क्या हो गया ?"

लल्लू—"हथौडे से चोट लग गई।"

माँ को आश्चर्य हुआ। उसने कहा—"मैंने तेरे रोने की आवाज नहीं सुनी।"

लल्लू—"अम्मा, मैं समझा तुम घर में नहीं हो। मासी के यहाँ गई हो।"

[६]

एक मजदूर ने जमादार से कहा—"दो दिन मुझको खेत पर काम करते हो गये, फावडा नहीं मिला।"

जमादार—"तुम्हारा क्या हर्ज है ? कम मेहनत पडेगी।"

मजदूर—"और सब फावडे का सहारा लेकर आराम करते हैं। मैं किसका सहारा लूँ ?"

नये चुटकुले।

(१)

एक बार तीन मूर्ख आपस मे बातचीत कर रहे थे। एक ने कहा—"यार! अगर तालाब में आग लग जाय तो मछलियाँ कहाँ जायें ?" दूसरे ने कहा—"पेड पर चढ जायँ।" इस पर तीसरे ने कहा—"क्या वे भी गाय बैल हैं जो पेड पर चढ जायँगी ?"

(२)

एक दफ्तर में बहुत से चपरासी काम करते थे। उनमे से एक रामदीन नामक चपरासी भी था। उसको नौकरी करते अभी एक दो महीना हुआ था कि उसके साहब की बदली हो गई। दूसरे साहब के आने के पहले दफ्तर के एक बाबू ने सब चपरासियों को बुलाया। उनमें रामदीन भी था। बाबू ने रामदीन से कहा—"यदि साहब तुमसे पूछें कि तुम कब से नौकरी करते हो, तो तुम कहना एक महीने से। यदि साहब पूछें कि तुम्हारी उम्र क्या है, तो तुम कहना बीस वर्ष। अगर साहब पूछें कि तुम खाना चाहते हो या तनख्वाह, तो तुम कहना दोनों। इस पर रामदीन अत्यन्त खुश हुआ और रटने लगा। एक महीना बीस साल, दोनों। जब दूसरे साहब आये तो उन्होंने सब चपरासियों को बुलाया। और सब से सवाल किया। किसी से कुछ और किसी से कुछ। जब रामदीन का नम्बर आया, तो साहब ने पूछा—"तुम्हारी उम्र क्या है ?" तो उसने जवाब दिया "एक महीना"। साहब ने पूछा—"तुम कितने दिन से काम करते हो ?" उसने कहा—"बीस साल।" साहब ने पूछा—"तुम आदमी हो कि घनचक्कर ?" तो उसने कहा "दोनों"। इस पर साहब और सब चपरासी हँसने लगे।

—विश्वनाथ गुप्ता, कानपूर

'फैली' प्रभुआ

लेखक—श्री जी० एम० "प्रभात"

हाथ फैलाकर टाँग उठाकर
मुँह बाकर चिल्लाया,
आँख मीचकर 'फैल' किया
पर आँसू एक न आया।

सुबक सुबक फिर 'फैली' प्रभुआ
मुँह को लगा बनाने,
दू! दू! करके अम्मा को फिर
'फैली' चला बुलाने।

'फैल' कर गया काम
हृदय माँ का भर आया,
अम्मा को जब आती देखा
तब 'फैली' मुस्काया।

[५]

लल्लू अँगुली में पट्टी बाँधने की कोशिश कर रहा था। माँ ने पूछा—"लल्लू, तुम्हारी अँगुली में क्या हो गया ?"

लल्लू—"हथौड़े से चोट लग गई।"

माँ को आश्चर्य हुआ। उसने कहा—"मैंने तेरे रोने की आवाज नहीं सुनी।"

लल्लू—"अम्मा, मैं समझा तुम घर में नहीं हो। मासी के यहाँ गई हो।"

[६]

एक मजदूर ने जमादार से कहा—"दो दिन मुझको खेत पर काम करते हो गये, फावडा नहीं मिला।"

जमादार—"तुम्हारा क्या हर्ज है ? कम मेहनत पड़ेगी।"

मजदूर—"और सब फावडे का सहारा लेकर आराम करते हैं। मैं किसका सहारा लूँ ?"

नये चुटकुले।

(१)

एक बार तीन मूर्ख आपस में बातचीत कर रहे थे। एक ने कहा—"यार! अगर तालाब में आग लग जाय तो मछलियाँ कहाँ जायँ ?" दूसरे ने कहा—"पेड़ पर चढ़ जायँ।" इस पर तीसरे ने कहा—"क्या वे भी गाय-बैल हैं जो पेड़ पर चढ़ जायँगी ?"

(२)

एक दफ्तर में बहुत से चपरासी काम करते थे। उनमें से एक रामदीन नामक चपरासी भी था। उसको नौकरी करते अभी एक दो महीना हुआ था कि उसके साहब की बदली हो गई। दूसरे साहब के आने के पहले दफ्तर के एक बाबू ने सब चपरासियों को बुलाया। उनमें रामदीन भी था। बाबू ने रामदीन से कहा—"यदि साहब तुमसे पूछे कि तुम कब से नौकरी करते हो, तो तुम कहना एक महीने से। यदि साहब पूछे कि तुम्हारी उम्र क्या है, तो तुम कहना बीस वर्ष। अगर साहब पूछे कि तुम खाना चाहते हो या तनख्वाह, तो तुम कहना दोनों। इस पर रामदीन अत्यन्त खुश हुआ और रटने लगा। एक महीना, बीस साल, दोनों। जब दूसरे साहब आये तो उन्होंने सब चपरासियों को बुलाया। और सब से सवाल किया। किसी से कुछ और किसी से कुछ। जब रामदीन का नम्बर आया, तो साहब ने पूछा—"तुम्हारी उम्र क्या है ?" तो उसने जवाब दिया "एक महीना"। साहब ने पूछा—"तुम कितने दिन से काम करते हो ?" उसने कहा—"बीस साल।" साहब ने पूछा—"तुम आदमी हो कि घनचक्कर ?" तो उसने कहा "दोनों"। इस पर साहब और सब चपरासी हँसने लगे।

—विश्वनाथ गुप्त, कानपूर।

'फैलो' प्रभुआ

लेखक—श्री पा० एम० "प्रभात"

हाथ फैलाकर टाँग उठाकर
मुँह बाकर चिल्लाया,
आँख मीचकर 'फैल' किया
पर आँसू एक न आया।

सुनक सुनक फिर 'फैली' प्रभुआ
मुँह को लगा बनाने,
दू! दू! करके अम्मा को फिर
'फैली' चला बुलाने।

'फैल' कर गया काम
हृदय माँ का भर आया,
अम्मा को जब आती देखा
तब 'फैली' मुस्काया।

व्यंग-चित्रों का स्कूल

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी के एक मात्र सफल कारटूनिस्ट शिक्षार्थी जी ने हँसी के चित्रों का एक पत्र व्यवहार स्कूल खोल दिया है जिसका नाम शिक्षार्थी चित्रण और पता 'खेल-घर' इलाहाबाद है। यहाँ से पत्र व्यवहार द्वारा शिक्षा दी जाती है। किसी के लिए स्कूल पहुँचना जरूरी नहीं। अपनी सुविधा के अनुसार, फुरसत के समय में, घर बैठे ही यह उपयोगी कला सीखी जा सकती है। जो लोग कारटून बनाना सीखना चाहते हैं, वे श्री शिक्षार्थी को पत्र लिखें।

सिक्के जमा करना

हम इस अङ्क में सिक्के जमा करने पर एक सचित्र लेख छाप रहे हैं। टिकट जमा करने के समान यह भी एक 'हाबी' है। इस लेख में सिक्के जमा करने की आसान तरकीबें बतलाई गई हैं जिन्हें पढ़कर पाठक इस सम्बन्ध में बहुत कुछ जान सकते हैं।

योगी या रोगी

पटने से 'योगी' नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकलता है। 'बाल-सखा' के पिछले अङ्क में एक हँसी की कविता छपी थी जिसमें 'भात' की माँग थी। पर योगी ने 'भात' की जगह 'लात' अधिक पसन्द किया। यह तो रोगी के लक्षण हैं, योगी के नहीं! इस सिलसिले में कुमारी रतन 'तितली' की एक कविता भी पढ़ लीजिए। अन्त की लाइनों में हमने 'योगी' की रुचि के मुताबिक परिवर्तन कर दिये हैं—

हे प्रभो! हम भात खाते, भात हमको दीजिए।
भात खाने से मोटे बनते, पेट बढ़ने दीजिए॥
हे प्रभो! योगी हुआ रोगी, जरा सुन लीजिए।
'भात' योगी क्या करेगा, लात उसको दीजिए॥

"बाल सखा" के उपदेश

श्रीयुत विद्याधर शर्मा सगरिया, बीकानेर ने यह कविता भेजी है। हर लाइन का पहला अक्षर मिलाने से 'बाल-सखा' बनता है—

बा—लकगण! सद्‌शिक्षा पाओ,
ल—ड़ना छोड़ो, प्रेम बढ़ाओ।
स—च्चे 'भारत-वीर' बनो,
खा—दी पहनो, धीर बनो॥

पंडित रामनरेश त्रिपाठी

पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने 'बाल-सखा' के इस विशेषाङ्क के लिए एक बहुत ही मजेदार कहानी भेजी है। खेद है कि वह इस अङ्क में नहीं जा सकी। पाठक उसकी प्रतीक्षा करें।

फरवरी में

श्री भारतीय एम० ए०, श्री बुद्धिसागर वर्मा विशारद, श्री उत्तमचन्द श्रीवास्तव एम० ए० और श्री बलभद्रप्रसाद गुप्त की रचनाएँ भी हम इस विशेषाङ्क में नहीं दे सके। ये सब सुन्दर चीजें फरवरी के 'बाल सखा' में छपेंगी।

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

[व]र्ष २३] फरवरी १९३९—माघ १९९५ [संख्या २

चने के खेत में

लेखक, श्रीयुत रामसिंहासन सहाय श्रीवास्तव 'मधुर'

यहाँ राजलक्ष्मी सोती है।
पत्ती पत्ती पर मोती है।
सूरज की किरनों से चमचम।
है यह ओस, यही है शबनम।

कैसी हरी भरी धरती है।
रानी यहीं घास चरती है।
बलिहारी है, चाँदी सोना।
बच्चो, खा लो साग-सलोना।

फूली सरसों पीली पीली।
फूली तीसी नीली नीली।
है अब लाल, चने की कलियाँ।
घुँघरू सी लटकेंगी फलियाँ।

जब आवेगा माघ महीना।
होला खाना, कचग्स पीना।
फागुन में फिर गाना होली।
[illegible]

———

उत्कलिका नृत्य

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

र्ष २३] फरवरी १९३९—माघ १९९५ [संख्या २

चने के खेत में

लेखक, श्रीयुत रामसिंहासन सहाय श्रीवास्तव 'मधुर'

यहाँ राजलक्ष्मी सोती है।
पत्ती पत्ती पर मोती है।
सूरज की किरनों से चमचम।
है यह ओस, यही है शबनम।

कैसी हरी भरी धरती है।
रानी यही घास चरती है।
बलिहारी है, चाँदी-सोना।
बच्चो, खा लो साग-सलोना।

फूली सरसों पीली पीली।
फूली तीसी नीली नीली।
है अब लाल, चने की कलियाँ।
घुँघरू सी लटकेंगी फलियाँ।

जब आवेगा माघ महीना।
होला खाना, कचरस पीना।
फागुन में फिर गाना होली।
चमकेगी मस्तक पर रोली।

आचार्य द्विवदाना

आचार्य्य द्विवेदीजी
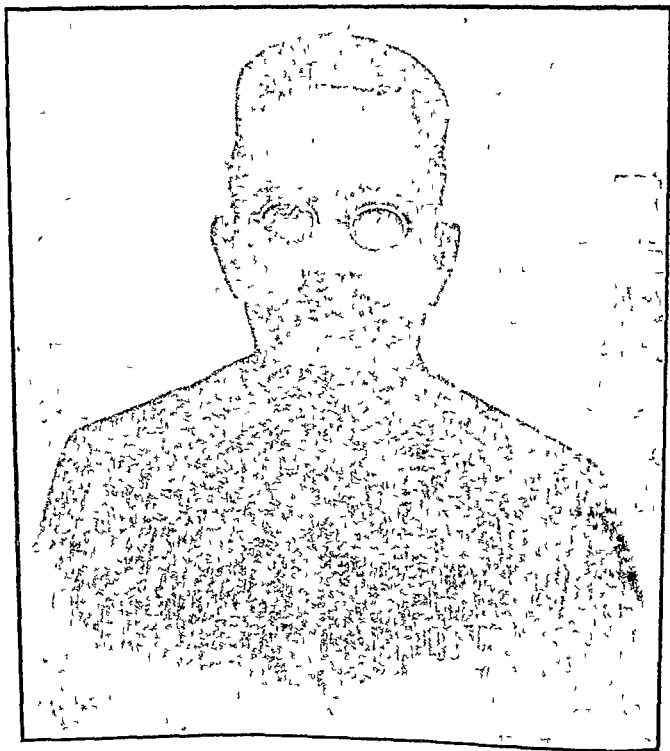
लेखक, पंडित देवीदत्त शुक्ल, सम्पादक 'सरस्वती'

'बाल-सखा' के पाठक 'सरस्वती' को [जा]नते ही है। 'सरस्वती' उनकी हिन्दी की [पु]रानी पत्रिका है। इस पत्रिका का हिन्दी के [संसार] में बड़ा नाम है। उसकी यह प्रसिद्धि [उस]के पुराने सम्पादक पण्डित महावीरप्रसाद [द्वि]वेदीजी की बदौलत हुई थी। द्विवेदीजी ने ['स]रस्वती' के द्वारा हिन्दी को नया रूप दिया [था]। उनके प्रयत्न से हिन्दी की बड़ी उन्नति [हुई] है और वह भारत की उन्नत भाषाओं में [मा]नी जाती हैं। दुःख है कि हिन्दी के ऐसे ही [महा]न् सेवक का गत २१ दिसम्बर १९३८ को [देहा]न्त हो गया। मृत्यु के समय वे ७४ वर्ष [के] थे। यहाँ उनके जीवन का थोड़े में वर्णन [कि]या जाता है।

द्विवेदीजी का जन्म सन् १८६४ में [रा]यबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में हुआ [था]। वे कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। लड़कपन में वे [ठी]क ठीक पढ़-लिख न सके थे। उनके माता-[पि]ता की आर्थिक अवस्था भी ठीक न थी। [इस]लिए वे शुरू शुरू में कुछ हिन्दी, कुछ [सं]स्कृत, कुछ उर्दू और कुछ अँगरेजी सीख [स]के थे। अँगरेजी पढ़ने के लिए उन्हें अपने [गाँ]व से ३६ मील दूर जिले के स्कूल में जाना [पड़]ता था। और जब वे थोड़ी-बहुत काम-[च]लाऊ अँगरेजी जान गये तब उन्हें जाकर [अज]मेर में नौकरी करनी पड़ी। अजमेर से वे अपने पिता के पास बम्बई चले गये। वहाँ उन्होंने तार का काम सीखा, फिर वे रेलवे में तारबाबू हो गये।

परन्तु द्विवेदीजी तारबाबू या और कोई बाबू होने के लिए नहीं पैदा हुए थे। उन्हें तो अपनी मातृभाषा को उन्नत बनाकर अपना नाम अमर कर जाना था। अतएव रेलवे की नौकरी करते हुए उन्होंने अपना पढ़ना लिखना नहीं छोड़ा। वे बुद्धि के तेज और बड़े परिश्रमी थे और कुछ ही दिनों में संस्कृत और अँगरेजी के पंडित हो गये तथा मरहठी, गुजराती और बंगाली आदि भाषाएँ भी जान गये।

द्विवेदीजी को हिन्दी में कविता लिखने का पहले से ही शौक था। उन्होंने सन् १८८७ में 'विनय-विनोद' नाम की एक कविता-पुस्तक छपवाई थी। इधर जब खूब पढ़-लिख गये तब वे अपनी संस्कृत और हिन्दी की कविताएँ उस समय के पत्रों में छपवाने लगे, जिससे उनका नाम हो गया। अब वे लेख लिखने लगे। वे चाहते थे कि हिन्दी की उन्नति हो। उस समय मदरसों में हिन्दी की जो किताबें पढ़ाई जाती थीं वे अच्छी नहीं होती थीं। द्विवेदीजी ने उन किताबों के दोष दिख-लाये। इसके लिए उन्होंने पुस्तकें लिखीं और बताया कि उनमें कैसी कैसी भूलें हैं। उनके

आचार्य द्विवेदीजी की धर्मपत्नी

बाईं ओर से (खड़े) द्विवेदीजी के भानजे श्री कमलाकिशोर त्रिपाठी, (बीच में कुर्सी पर) आचार्य द्विवेदीजी, (गोद में उनकी छोटी भानजी) कुमारी विद्यावती, (किनारे खड़ी) द्विवेदीजी की बड़ी भानजी कुमारी कमलावती (स्वर्गीया)—सन् १९१७ का चित्र ।

पहले उनकी कजूसी की कहानियाँ सुन लो—

अपने नौकरों को वे दियासलाई की तीलियाँ गिनकर देते थे, और महीने के अंत में फिर गिनकर देख लेते थे। अगर एक भी तीली किसी नौकर से बेहिसाब खर्च हुई उनको मालूम हो जाती थी तो उस नौकर के नाम बही में एक पैसा लिखवा देते थे, जो उसके वेतन में कट जाता था।

रईस की गद्दी के पास ही से घर के भीतर जाने का रास्ता था। कोई नौकर बाजार से शाक-सब्जी लेकर अदर जाता, तब वे उसे खोलकर देख लिया करते और दाम पूछ लेते थे। पास बैठे हुए खुशामदी साथियो में से कभी कोई, रईस की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, बोल उठता कि यह तरकारी तो बाजार में एक पैसा कम भाव पर मिल रही है; नौकर को किसी ने ठग लिया है। तब नौकर पर शामत आ जाती। वह नौकर रईस साहब की नजर पर चढ़ जाता और पाँच-सात दिनो में कोई न कोई अपराध लगाकर निकाल दिया जाता था। इस प्रकार जब कई नौकर निकाले गये, तब खुशामदी साथियों को अपनी भूल मालूम हुई। उन्होने रास्ता बदला और यह कहना शुरू किया कि यह तरकारी तुमने बहुत सस्ते दामों पर पाई, हम तो आज ठगे गये। इसका परिणाम यह होने लगा कि तरकारी लानेवाला नौकर रईस को ठीक जॅचने लगा और उसे और भी विश्वासी काम सौंपे जाने लगे।

अब खर्च के क़िस्से सुनो—

रईस साहब के यहाँ तीन-चार दर्जी बीसों बरस तक लगातार कपडे सीते रहे। उनके बनवाये हुए लगभग चार हजार कुर्ते अभी तक बक्सों में भरे पडे है। उनकी स्त्री को कहा जाता है कि गरीबों को बाँट दो, रखकर क्या करोगी? तब वे कहती है—यही तो उनकी यादगार हैं, इन्हें आँखों से ओझल क्यो करूँ!

रईस साहब का मिज़ाज बजाज लोग खूब पहचानते थे। जब वे बजाज में निकलते तब होशियार बजाज कोई बारीक मलमल या कोई नया कपड़ा लेकर सामने आता और अगर वह कपडा रईस साहब को पसन्द आ जाता तो वे उसके सब के सब थान खरीद लेते थे। पूछने पर कहते थे कि जो कपड़ा मै पहनूँ, फिर शहर में भला उसे कोई दूसरा पहने?

घर पर योरापियन ट्यूटर (मास्टर) रख कर रईस साहब को इट्रेंस तक अँगरेजी पढ़ाई गई थी। एक दिन उनके जी में आया कि चलो कलकत्ता देखें। साथियो को खबर लगी। सबका जी हुलसा। कलकत्ते की तारीफों के पुल बाँध दिये गये। रात की ट्रेन से रईस साहब—चार साथियो और एक नौकर को लेकर—कलकत्ते चले। नौकर के लिए तीसरे दर्जे का टिकट और अपने और साथियों के लिए उन्होंने सेकड क्लास के टिकट खरीदे। सेकड क्लास में एक व्यक्ति के जाने-आने का भाडा चालीस

रुपये के लगभग लगता था। दूसरे दिन सवेरे हवड़ा पहुँचे। हाथ-मुँह धोकर सैर करने निकले। पुल पार करते ही, हरीसन रोड पर, एक हलवाई की दूकान में कचौड़ियाँ बनती देखकर रईस साहब वहीं जा बैठे। एक गरम कचौड़ी खाई, हलवाई को दो पैसे दिये और साथियो से कहा—तुम लोग कलकत्ते की सैर करके शाम तक आ जाना। मैं स्टेशन जाता हूँ। साथी लोग दिन भर घूम-घामकर रईस के सौ दो सौ रुपये खर्च करके, शाम को स्टेशन पर आकर मिले तो रईस साहब कहने लगे—वाह, कचौड़ी का क्या कहना! बड़ी ही स्वादिष्ट थी। नौकर ने कहा—आज दिन भर मालिक ने पानी नहीं पिया और बार बार वे कचौड़ी की तारीफ करते रहे। रात की ट्रेन से वह मडली फिर उसी ठाटबाट से लौटी। एक कचौड़ा के पीछे चार-पाँच सौ रुपये खर्च हो गये।

दूसरे-तीसरे महीने, जब जी में आता या साथी लोग याद दिला देते तो वे उन्हीं साथियों को लेकर कचाडी खाने के लिए कलकत्ते चले जाया करते थे। उस हलवाई की दूकान के आगे शहर में कदम नहीं बढ़ाते थे। एक कचौड़ी खाई, हलवाई को दो पैसे दिये, और स्टेशन पर आ बैठे। दिन भर पानी नहीं पीते थे। साथी लोग सैर-सपाटा करके सैकड़ो रुपये फूँक तापकर शाम को वापस आते थे।

मरने के कई बरस पहले रईस साहब को जगन्नाथजी के दर्शनों की सूझी। तैयारी शुरू हो गई। हुक्म हुआ कि महल्ले में जो पुरी चलना चाहे, चले। घर के लोगों के सिवा बीस-पचीस आदमी और तैयार हो गये। रईस साहब ने सबका पूरा खर्च दिया और कलकत्ते में पहुँचकर हुक्म दे दिया कि जिसे जिस दूकान से जो चीज लेनी हो, खरीद ले, दाम वे दे देंगे। पुरी की यात्रा में चालीस हज़ार रुपये खर्च हुए। पर पुरी के पडे को उन्होने सिर्फ ग्यारह ही रुपये दिये। उसने बही दिखलाकर बताया कि उनके पिता ने उसे ग्यारह हज़ार रुपये दिये थे। पर रईस साहब टस से मस नहीं हुए। उन्होने कहा कि इसी से ग्यारह रुपये दे रहा हूँ; नहीं तो एक ही देता।

रईस की स्त्री परदानशीन महिला हैं। कलकत्ते मे पहुँचने पर उन्होने शहर देखने की इच्छा प्रकट की। रईस साहब ने कहा—घूँघट खोलकर शहर देखने जाना हो तो इजाज़त मिल सकती है। साथियो ने जब बहुत कहा-सुना कि फिर आना हो या न हो, मालकिन का मन रख लेना चाहिए, तब रईस साहब ने एक मोटर पकड़ी और मोटर की एक दूकान में जाकर वे छः नई मोटरें साथ लेकर लौटे। मोटरें इस वादे पर लाये थे कि उनमें जो पसद आयेगी, खरीद ली जायगी। मोटरों पर उनकी स्त्री, नौकर-चाकर और सब तीर्थयात्री लादे गये। मोटरें सारा दिन कलकत्ता घूमती रहीं। घूमते घामते रईस साहब 'हाइट वे लेडला' की चमकीली-भड़कीली

श्री सी॰ एफ़॰ ऐण्ड्रयूज के साथ लेखक

कीजिए। उसके हृदय में ऐसी प्रेरणा कीजिए कि वह अपनी भूल समझकर उसपर पश्चात्ताप करे और उत्तम रीति से अपना जीवन व्यतीत करे।'

नौ वर्ष की आयु से लेकर ऐण्ड्रयूज साहब ने पचीस वर्ष की आयु तक स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। आपको विद्यार्थी जीवन में सदैव पारितोषिक और छात्र-वृत्तियाँ मिलती रही है। इसी कारण आपने कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी से, सम्मान के साथ, बी॰ ए॰ की परीक्षा पास की। आज आप एक महान् विचारक, लेखक और समाज-सुधारक बने है। यह एक बहुत मजेदार बात है कि ऐण्ड्रयूज साहब गरीब होते हुए भी [illegible] की परीक्षा पास कर लेने [illegible] सीधे मजदूरों की सेवा करने लगे। अपने खर्च के लिए आप केवल दस शिलिंग लेकर गुजर करते थे। इससे प्रायः आपको भूखा भी रह जाना पड़ता था। देखिए जिस मनुष्य ने कैम्ब्रिज के विश्वविद्यालय से सम्मान के साथ ऊँची डिग्री हासिल की उसे बहुत बढ़िया नौकरी मिल सकती थी, वह आराम से जिन्दगी बिता सकता था, लेकिन ऐण्ड्रयूज साहब को धन के प्रति न तो तब प्रेम था और न अब है। आपने तो मानव-जगत् की सेवा में अपनी विद्या-बुद्धि को लगा देने का निश्चय किया था। जब आप लगातार चार साल तक मजदूरों की सेवा में व्यतीत कर चुके तब धीरे धीरे वहाँ की गन्दगी आदि से आपकी तन्दुरुस्ती खराब होने लगी और अन्त मे बिल्कुल खराब हो गई। आखिर विवश होकर, अपने प्रिय भाइयों की सेवा से वंचित होकर स्वास्थ्य सुधारने के लिए आपको कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर का काम करना पड़ा।

कुछ साल प्रोफेसर रहने के बाद १२ फ़रवरी सन् १९०४ में तेंतीस वर्ष की आयु पूरी करने के बाद, आप पहले पहल भारत आये और आते ही आपने अपने जीवन का नया जन्म घोषित किया, क्योंकि आप बचपन से ही भारत के बड़े प्रेमी बन गये थे। आज अपने रग ढग और कार्य से आप पूरे भारतीय मालूम होते है। महात्मा गाधी ने ठीक ही लिखा है—"श्री सी॰ एफ॰ ऐण्ड्रयूज साहब से ज्यादा सच्चा, उनसे बढ़कर विनीत और उनसे अधिक भारत-भक्त इस

भूमि में कोई दूसरा देश सेवक नहीं। उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण कर भारतीयों को अपनी मातृ-भूमि की अधिक से अधिक भक्ति करने के लिए उत्साहित होना चाहिए। ऐण्ड्र्यूज साहब ख्याति-प्रेमी नहीं हे और न नेता बनने की कभी उन्होंने ख्वाहिश ही की। जहाँ ऐसा मौका आया, वे दूसरों को आगे बढ़ाते रहे।"
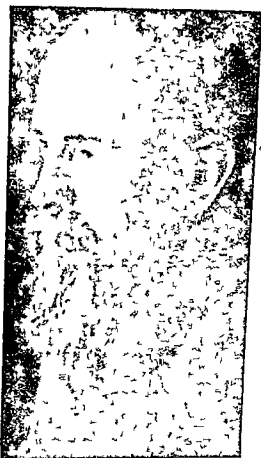
ऐण्ड्र्यूज् साहब जब भारत आये तब आते ही आपको दिल्ली के 'सेन्ट स्टीफेन्स कालेज' में प्रोफेसर का पद मिला। इस कालेज में प्रोफेसर का कर्तव्य करते हुए आपने लड़-झगड़कर पहले-पहल एक हिन्दुस्तानी को उस कालेज का प्रिंसिपल बनवाया। आपका कहना है—"अँगरेज यहा रहकर यदि कुछ काम करना चाहते हे तो उनका फर्ज है कि वे हिन्दुस्तानियो की अधीनता में काम करें। यही उनके लिए सच्चा मार्ग है। भारत की सेवा करने के इच्छुक अँगरेजों का यहाँ के कार्यों में प्रधान बनकर शासन करना बहुत बड़ी भूल है।" इसी लिए आप कभी भी हिन्दुस्तान में प्रधान बनकर काम नहीं करते। ऐण्ड्र्यूज साहब को यहाँ रहनेवाले अँगरेजों के बरताव से बहुत ज्यादा सदमा पहुँचता है। अँगरेजों के बरताव से ही आपने स्टीफेन्स कालेज स त्याग-पत्र देकर भारत-भूमि की सेवा करनी प्रारम्भ कर दी। महाकवि टैगोर के शान्ति-निकेतन में आपने अवैतनिक शिक्षक का काम भी किया।

श्रीयुत सी० एफ० ऐण्ड्र्यूज

ऐण्ड्र्यूज साहब ने विदेशों में रहनेवाले भारतीयो की भलाई के लिए अथक परिश्रम किया है। आपके परिश्रम ही के कारण भारतीय प्रवासियो की बहुत सी तकलीफें दूर हुईं। आपने कई बार भारतीय प्रवासियो की भलाई के लिए दक्षिणी अफ्रिका, उत्तरी अफ्रिका, फिजी, नेटाल, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, चीन, जापान, जावा आदि मुल्कों की यात्रा बीमारी की दशा में भी की हे। भारतीय प्रवासियो की भलाई में लगे रहने के कारण, आप अपने माता-पिता की मृत्यु के समय उनके पास उपस्थित न हो सके थे। भारतीय

बेबी

लेखक, श्रीयुत उत्तमचन्द्र [illegible] एम० ए०

बेबी रानी बेबी रानी,
बेबी रानी बड़ी सयानी।
खूब मजा उस दिन था आया,
बेबी ने भैया को छकाया।
भैया बोले—बेबी आओ,
अपना फोटो जरा खिचाओ।
बाल सखा में छपवाऊँगा,
बढ़िया सा इनाम पाऊँगा।
नया केमरा देखो लाया,
कलकत्ते से है मँगवाया।
बेबी बोली—'आप भले हैं
मैं छोटी हूँ आप बड़े हैं,
फिर क्यों मुझको आप खिजाते,
चपटी मेली नाक बताते।
नई चीन से हूँ मैं आई
नई चीन में मेले भाई,
मुजे नईं खिचवाना फोतो
मुजे नईं छपवाना फोतो'।
हँसकर बेबी भीतर भागी,
खटपट सुनकर अम्मा जागी।
आँखें मलकर अम्मा बोली,
कानों में मिसरी सी घोली।
'मैं हूँ गुड़ियों की महरानी,
सब भरती हैं मेरा पानी।
सबसे लम्बी नाक हमारी,
सबके ऊपर नाक हमारी;
तुम मेरा फोटो खिंचवाओ,
बाल सखा में भी छपवाओ।'

बेबी

इतने में भैया भी आये,
कोडक केमरा बगल दबाये।
बेबी ने देखी लाचारी,
भैया जीते मैं ही हारी।
आँख मीचकर बैठी बेबी,
नाक फुलाकर बैठी बेबी।
भैयाजी ने बटन दबाई,
उतर प्लेट पर फोटो आई।
भैया समझे बेबी हारी,
फोटो सुन्दर आज उतारी।
बाल-सखा में छपवाऊँगा,
बढ़िया सा इनाम पाऊँगा।
पर जब फोटो छप कर आये,
तब तो भैयाजी शरमाये।
आँख मीचकर बैठी बेबी,
नाक फुलाकर बैठी बच्ची,
ध्यान लगाकर बैठी बेबी,
रंग जमाकर बैठी बेबी।
बेबी जीती, भैया हारे,
भाग गये कालेज बिचारे।

———

शान्ता बीबी

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा, विशारद, बी० ए०, एल० टी०

(१)

शान्ता ७ वर्ष की छोटी लड़की थी। वह अपने माता-पिता के साथ एक छोटी झोपड़ी में रहा करती थी। एक दिन उसके पिता ने उससे कहा—"देख तो यह मीठे-मीठे आम हैं। क्या इनमें से दो अपनी दादी को दे आवेगी?"

शान्ता ने उत्तर दिया—"हाँ, हाँ, बड़ी खुशी से।"

उसकी माता ने कहा—"क्या तू रास्ता जानती है?"

"क्यो नहीं अम्माँ? मै खूब जानती हूँ।" शान्ता बोली।

माता ने कहा—"अच्छा, तो फिर ये आम ले जा और बूढ़ी दादी को दे आ। वह बड़ी प्रसन्न होगी। शान्ता बड़ी रानी बेटी है। किन्तु देख, सूर्य अस्त होने के पहले ही लौट आना और रास्ते में किसी से व्यर्थ बातचीत करने के लिए न रुकना।"

शान्ता ने आम लिये और चल दी।

(२)

दादी का घर एक मील दूर था और रास्ता एक बड़े जगल से होकर जाता था। शान्ता बच्ची तो थी ही, धीरे धीरे चल दी। वह अकेली ही थी किन्तु फिर भी प्रसन्न थी। वह गुनगुनाती और इधर-उधर फूल तोड़ती चली जा रही थी। इतने में एक ओर से एक भेड़िया आकर उसके पास खड़ा हो गया और बोला—"शान्ता बीबी, नमस्ते! तुम्हें देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। कहो तो कहाँ जा रही हो। चलो, मै तुम्हे भेज आऊँ।"

दुर्भाग्य से शान्ता अपनी माता का उपदेश भूल गई। उसने भेड़िये से कहा—"धन्यवाद! तुम्हे मेरे साथ जाने की आवश्यकता नहीं। मैं अपनी दादी को आम देने जा रही हूँ। उसका घर वह क्या थोड़ी ही दूर पर तो है।"

चालाक भेड़िये ने कहा—"मै भी तो उधर ही जा रहा हूँ। मै तेज दौड़ सकता हूँ। मैं जाकर तुम्हारी दादी को सूचित किये देता हूँ कि वह घर पर ही मिले।"

(३)

भेड़िये ने यह कहा और रफूचक्कर हो गया। वास्तव में वह शान्ता को मारकर खाना चाहता था।

भेड़िये को घर पहुँचने में देर न लगी। किवाड़ बन्द थे। भेड़िये ने द्वार खटखटाया किन्तु घर में कोई था नहीं। यह जानकर उसे बड़ा सन्तोष हुआ। उसने ज़ोर से धक्का दिया और किवाड़ खुल गये। वह अन्दर चला गया। घर में सन्नाटा था। वह दादी

आशा सर्पराज के सामने सितार बजाने लगी

आशा और सर्पराज की कहानी

लेखक, श्रीयुत निशीथकुमार राय

प्राचीन काल में हिमालय पर्वत की ओर एक पहाड़ी थी। इस पहाड़ी का नाम नागपर्वत था। यह चारों ओर पर्वतों से घिरी हुई थी। इसके बीच में थोड़ी सी नीची जगह थी। वहीं पर एक बड़ा सुन्दर महल था जो पद्मचूड के नाम से प्रसिद्ध था। वहीं पहाड़ों पर हजारों नाग रहा करते थे। महल में एक राजा, अपनी रानी और अनेक मंत्रियों के साथ, रहा करता था। सब लोग प्रसन्नचित्त रहते थे। परन्तु रानी का मुख सदा उदास और उतरा रहता था जैसे आकाश बादलों से घिरा रहता है; क्योंकि अभी तक उसके कोई सन्तान न हुई थी।

एक दिन रानी जब बाग में घूम रही थी तो एक बुढ़िया आई और रानी को हाथ हिला हिलाकर (इशारे से) बुलाने लगी। जब रानी उसके पास गई तो बुढ़िया धीरे धीरे कहने लगी—"मैं तुम्हारे मन का दुःख जानत

हूँ। तुम्हारे एक ही नहीं, दो पुत्र होंगे परन्तु जो कुछ मैं तुमसे कहूँ उसे तुमको करना होगा। यदि तुम इन शर्तों को मान लो तो तुम्हारे मन की कामनाएँ पूरी हो जायँ।" फिर उस बुढ़िया ने कहना शुरू किया—"कल मगलवार है, अमावास्या भी है। जैसे ही सूर्य उदय होगा, तुम तुरन्त फूल तोड़कर सूर्य देवता की पूजा करना। फिर एक ही साँस में पानी में तीन बार डुबकी लगाकर निकलना। भीगे कपड़े तथा खुले बाल हों; पाँव में कोई जूते न पहनकर, सीधे पासवाले आम के पेड़ से एक ढेले से दो आम तोड़कर खा जाना। देखना यह बात किसी को जाहिर न होने पावे।" इतना कहकर बुढ़िया गायब हो गई। रानी ने दूसरे दिन, बुढिया के कहने के अनुसार, सब कुछ किया और दोनो आम तोड़कर एक को बिना छीले खा गई। जब खा लिया तब याद आया कि फल को छीलकर खाना था। तब उसने दूसरा फल छीलकर खाया।

कुछ दिन बाद शहर में हलचल मच गई कि रानीजी गर्भवती हैं। सब लोग खुशियाँ मनाने लगे। जब समय आया तो रानी के पुत्र के बदले एक साँप पैदा हुआ। लोगों ने उसे उसी समय जङ्गल में छोड़ दिया। इसके बाद सब लोग कहने लगे कि अब राजपुत्र आ रहे हैं। और कुछ दिन बाद हुआ भी वही। एक बड़ा सुन्दर राजपुत्र पैदा हुआ। जब राजपुत्र विवाह के योग्य हुआ तो राजा ने कहा—"हे राजकुमार, तुम स्वय जाकर किसी राजकुमारी को अपने लिए चुनो।" राजकुमार निकल पड़ा और रास्ते में थोड़ी ही दूर गया था कि उसने देखा कि एक साँप राह को रोककर पड़ा है। पास पहुँचते ही साँप ने उससे पूछा—"तुम कौन हो, और कहाँ जा रहे हो?" उसकी बातें सुनकर राजकुमार ने उत्तर दिया—"मैं पचचूड़ का युवराज हूँ। ब्याह करने जा रहा हूँ।" यह बात सुनकर साँप कहने लगा-"मैंने तुम्हे इसके पहले कभी नहीं देखा था। पर मैं समझ गया कि तुम मेरे छोटे भाई रणवीर हो। अब तुम जाकर अपने माता पिता से कहो 'जब तक बडे भाई का ब्याह नहीं होता तब तक छोटे भाई का व्याह नहीं हो सकता'।" बेचारा राजकुमार लौट पडा। सब कुछ सुनकर रानी बोली "अच्छा तुम उस तरफ से मत जाओ।" परन्तु उस राह पर भी वही साँप जा पहुँचा और बोला "देखो कुमार, अबकी मैं तुम्हे छोड़ देता हूँ पर तुम समझ रक्खो कि मैं नागराज—नागाधिपति—हूँ। अगर तुम फिर मेरे साथ ऐसा व्यवहार करोगे तो खैर नहीं।"

रणवीर फिर लौटा और माता पिता को सब कह सुनाया। सब बातें सुनकर राजा और रानी ने नागराज को घर लाना ही ठीक समझा। फिर क्या था, नागराज के लिए बगीचे में सुन्दर लताकुज बनाया गया, क्योंकि साधारण घर में तो नागराज नहीं रह सकते। एक दिन नागराज ने अपनी माता

से कहा—"अब अकेले नहीं रहा जा सकता। मेरे ब्याह के लिए लड़की खोजिए।"

"तुमसे कौन ब्याह करेगा? लड़की मिलना तो मुश्किल है।"

"नहीं, दुनिया में मुश्किल कुछ भी नहीं है। आप कोशिश तो कीजिए।"

"अच्छा बेटा, मैं आदमी भेज रही हूँ।"

चारों ओर आदमी भेजे गये। कोई कुमारी साँप के साथ ब्याह करने को राजी न हुई। बहुत दिन बीत गये। एक आदमी एक चिट्ठी लेकर लौटा। उसमें लिखा था—

"तुम्हारे सर्पराज के साथ मैं अपनी लड़की हँसमुखी की शादी कर देना चाहती हूँ। तुम्हारी क्या मंशा है?

पुष्पपुर की रानी–पुष्पा।"

यह पढ़कर रानी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने हँसमुखी को लाने के लिए आदमी भेज दिया। 'हँसमुखी' का असली नाम 'आशा' था। लेकिन रानी पुष्पा उसकी सौतेली माँ थी, इसी लिए उस बेचारी के नाम को बदल दिया था। रानी की खास लड़की 'चम्पा' थी जो देखने में जरा भी सुन्दर न थी। कोई उससे ब्याह करना नहीं चाहता था। इसी लिए उसकी माँ चाहती थी कि किसी तरह आशा को विदा करके अपनी लड़की का ब्याह कर दे। क्योंकि आशा के रहते हुए कोई चम्पा का ब्याह करना नहीं चाहता था। सब सुनकर आशा बहुत रोने लगी। इतने में उसे मालूम हुआ जैसे कोई कह रहा है "आशा, जब तू अपने स्वामी के पास जाना तो उससे कहना 'मेरे स्वामी, अपने ऊपर की केंचुली उतार दो, मैं तुम्हें अच्छी तरह से सजाऊँगी।' जब वह केंचुली उतार दे तो तुम भी अपनी एक सारी उतार देना। इस प्रकार सात बार करना। इसके बाद साँप राजकुमार बन जायगा। तुम उसे अच्छे अच्छे कपड़े पहनाकर पिता माता को प्रणाम करना।" दूसरे दिन जब आशा वहाँ पहुँची तो रानी ने बड़े प्रेम से उसे पालकी से उतारा। कुछ देर बाद जब वह सात सुन्दर और महीन साड़ियाँ पहनकर अपने स्वामी के पास गई तो साँप ने उससे पूछा,—तुम सितार बजाना जानती हो?

"हाँ"।

"जरा सुनाओ तो।"

"तो फिर सुनो।"

आशा जब आलाप करने लगी तो साँप ने कहा, 'मुझे अब नींद आ रही है।' यह सुनकर आशा ने वही कहा और साड़ी खोलने लगी। जब सात बार हो गया तब साँप राजकुमार बन गया। फिर क्या था, चारों ओर धूमधाम से खुशियाँ मनाई गईं और सब लोग खुशी से रहने लगे।*

* एक विदेशी कहानी के आधार पर।

लल्लू और कल्लू

लेखक, श्रीयुत बलभद्रप्रसाद गुप्त, 'रसिक'

लल्लू बोले सुन लो कल्लू।
एक बात बतलाऊँ।
तुम न वहाँ जाना चाहो तो,
कह दो मैं ही जाऊँ ॥१॥

कल्लू बोले—कहाँ मुझे,
जाना होगा बतलाओ।
हम तुम दोनों साथ चलेंगे,
मुझसे कुछ न छिपाओ ॥२॥

लल्लू—माताजी हैं गई नहाने,
तुमसे हम बतलायें।
छीके पर है धरी मिठाई,
आओ हम तुम खायें ॥३॥

कल्लू—कैसे पहुँचोगे छीके पर,
भाई! यह समझाओ।
हम तुम दोनों ही बच्चे हैं,
कुछ उपाय बतलाओ ॥४॥

लल्लू—आओ हम तुम दोनों मिलकर,
वह सन्दूक उठायें।
तुम उस पर हम शीघ्र तुम्हारे,
कन्धे पर डट जायें ॥५॥

इस प्रकार हम तुम दोनों ही,
खाये आज मिठाई।
क्यों न कहोगे कैसी हमने,
बात तुम्हें बतलाई ॥६॥

* * *

अब क्या था, दोनों ने ही,
मिलकर सन्दूक उठाया।
कल्लू के कंधों पर लल्लू ने—
भी पाँव जमाया ॥७॥

पहुँच गया लल्लू छीके पर,
थी भरपूर मिठाई।
इतने ही में कल्लू को,
माताजी पड़ी दिखाई ॥८॥

चौंक उठा कल्लू डरकर,
लल्लू सँभला न सँभाले।
गिरा अचानक उतर गई नस,
कौन उसे बैठाले ॥९॥

बात जरा भी माताजी के,
पर न समझ में आई।
इतने ही में गिरी मिठाई,
उनको पड़ी दिखाई ॥१०॥

तब जाकर समझा, लल्लू के—
गिरने का सब बातें।
छींके पर की धरी मिठाई
के खाने की घातें ॥११॥

अम्माजी ने तब कल्लू को,
क्रोधित होकर डाँटा।
दिया एक भरपूर गाल पर,
पास पहुँचकर चाँटा ॥१२॥

बड़ी देर तक रहे जोर से,
रोते दोनों भाई।
चोट लगी, चाँटे भी खाये,
पाई पर न मिठाई ॥१३॥

भेड़ाघाट की सैर

लेखिका, कुमारी रतन वर्मा "तितली" एन० एम० बी०

पारसाल अप्रैल माह में मुझे भेडाघाट जैसा दर्शनीय स्थान देखने का मौक़ा मिला था। मुझे अपनी सखी लतादेवी की शादी में शरीक होने के लिए जबलपुर जाना पडा। भेडाघाट जबलपुर शहर से तेरह मील की दूरी पर नर्मदा नदी का एक मनोरम घाट है। इसके समान सुहावने और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर स्थान दूसरे प्रान्तों में शायद ही कहीं मिलें। मध्य प्रान्त में विन्ध्याचल और सतपुड़ा के बीच ऐसे अपूर्व दृश्य हैं जो ससार को चकित कर सकते हे। भेडाघाट का महत्त्व इसी कारण छिप गया है कि वह शिमला, नैनीताल जैसे ठढे प्रदेशों में नहीं है। फिर भी भेडाघाट अद्वितीय है। इसे देखने के लिए दूर दूर से लोग यहाँ आते हैं। नर्मदा नदी चट्टानी धरती पर ऊपर से पचास फ़ुट नीचे गड्ढे में गिरती है। चट्टानों की ठोकर से पानी धुँआ-रूप होकर उडता है। इसे ही नर्मदा का 'धुँआधार' कहते है।

धुँआधार से कुछ आगे चलकर नर्मदा के पाट के दोनों तरफ कोई सौ सौ फुट ऊँची सगमरमर की चट्टानें दो मील तक खडी है। यहाँ पर नर्मदा का पाट तिहाई रह जाता है। तग रास्ता होने से नर्मदा का जल क्रोध-पूर्वक इन चट्टानो से लड़ता-भिड़ता, उबलते हुए दूध के समान फेन बनाता हुआ, दूध की तरह उज्ज्वल सफेद चट्टानों पर से तेजी से बहता हुआ आगे निकलता है।

सुबह-शाम के वक्त और गर्मियों की चाँदनी रात में यह दृश्य कुछ और ही रग ले आता है कि वहाँ से हटने को जी ही नहीं चाहता। पॉच बजे सुबह ही मै और लता देवी अपनी अपनी साइकिलों पर भेड़ाघाट जा धमकीं।

घर से हम दोनों नहाने के विचार से चली थीं। इसलिए साथ में एक एक साड़ी और शर्ट लेती गई थीं। भेड़ाघाट पहुँचने पर किनारे पर कपडे रखकर हम दोनो टहलने लगीं।

पूर्वदिशा से उगते हुए बाल सूर्य की सुनहरी किरणें चट्टानों पर बहते हुए सफेद जल पर नाच रही थीं। जहाँ देखो वहीं उज्ज्वलता का वातावरण छिटक रहा था। सुदर पेड़ों पर पक्षियो का मधुर कलरव कुछ अजीब रङ्ग ला रहा था। हम दोनो नर्मदा में कूद पडी और तैरने लगी। मित्रों के साथ नहाने में कितना मजा आता है। फिर पानी इतना सुदर, इतना पतला कि मुँह देख लीजिए। पीयूषवाहिनी नर्मदा का कल-कल निनाद आज भी मेरे कानों में गूँज रहा है और आसपास की वनस्थली के वातावरण की धुँधली सी स्मृति आज भी बनी हुई है।

घाट पर कपड़े रक्खे थे। उनमें कुछ कीमती चीजें—घड़ी, नेकलस, बेल्ट वगैरह—रक्खी थीं। इसी लिए शीघ्र ही नहाकर मैं आ गई। डर था कि कोई सामान उठाकर न चल दे। धूप कड़ी थी। इससे शीघ्र ही जबलपुर लौट आईं। जबलपुर शहर मध्य प्रांत में दूसरे नम्बर का शहर है और यह भी मानों प्रकृति देवी की गोद में खेला पला है। वायुयान में बैठकर देखने से ऐसा मालूम पड़ता है मानों कोई हरा-भरा उद्यान हो, फिर भेड़ाघाट ने तो जबलपुर का महत्त्व बहुत कुछ बढ़ा दिया है।

शाम को शहर घूमने निकली। क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल के सामने मेरी एक दूसरी ईसाई सखी मिल गईं। मुझे देखते ही आप खिल उठीं और कहने लगीं 'कब आईं?' 'कहाँ से आईं?' 'क्यों आईं?' मुझे हँसी छूट पड़ी। मैंने कहा—आपके सारे प्रश्नों का उत्तर एक साथ कैसे दूँ?

जैसे-तैसे उनसे पीछा छुड़ाकर हम दोनों आगे बढ़ीं।

शाम को सात बजे खाना खाकर हम दोनों साइकिल पर फिर भेड़ाघाट चल दीं। उस समय तो नर्मदा की छटा और ही थी। श्वेत चट्टानों पर से पानी की निर्मल धारा कलरव करती हुई, अठखेलियाँ करती बह रही थी। शुक्ल पक्ष की चाँदनी मानों आकाश से दूध की वर्षा कर रही थी।

दुनिया में लंदन, न्यूयार्क जैसे विशाल नगर हैं। पर उनमें इस प्राकृतिक आनन्द की अपूर्व छटा कहाँ मिल सकती है? इसी को देखने के लिए शाम के वक्त जबलपुर शहर के कई धनी-मानी सज्जन भेड़ाघाट जाते हैं।

उस समय चारों ओर उज्ज्वलता का वातावरण था। हम दोनों, झूमती हुई, घाट की ओर बढ़ीं। उस समय की मनोहरता देखकर ही सखी लतादेवी गुनगुना रही थीं—

चोरी कहीं खुले न नसीमे बहार की।
खुशबू उड़ाके लाई है गेसुए बहार की॥

शायद लेखिका को भी सब्र न हुआ, (आजकल का जमाना है कि ऐसे दृश्यों के ऊपर जो एक गाना न गाये वह मनुष्य नीरस समझा जाता है) और लतादेवी के गाने की अवहेलना करती हुई एक गाना गाया—

खिंचे जो दिल में उसको हुस्न की तस्वीर कहते हैं।
कलेजे में जो चुभ जाये, उसी को तीर कहते हैं॥

लता ने एक माँझी से कहकर नाव मँगाई और मैं स्वयं डाँड़ चलाने की कोशिश में थी। माँझी ने समझाया—"आप डाँड़ न चलावें। अगर उलट पड़ी तो ।"

मुझे तैश आ गया—वाह! क्या हम सड़ी सी नाव नहीं चला सकतीं?

माँझी बेचारा चुप हो रहा।

लता नाव में जा बैठी। मैं खड़ी होकर डाँड़ चलाने लगी। आह, आज भी याद आता है चाँदनी रात्रि में नाव चलाना।

मैं केवल दो या तीन दिन के लिए जबलपुर गई थी, पर श्रीमती लतादेवी के हार्दिक प्रेम तथा भेडाघाट के मोहक दृश्य ने मुझे एक हफ्ते तक जबलपुर रोक रक्खा।

दस मार्च को त्रिपुरी-कांग्रेस-अधिवेशन जबलपुर के अतर्गत ही होगा। लेकिन कांग्रेस की स्वयसेविका होने से फिर भी भेड़ाघाट का अवलोकन करेंगी।

राजस्थान

लेखक, श्रीयुत रमेशचन्द्र तापरीवाल, प्रयाग

भारत के पश्चिम की ओर,
बसा हुआ है राजस्थान।
बड़े बड़े शूर वीरों ने,
किया यहीं से प्रस्थान॥
सम्पूर्ण इसकी भूमि में,
बिछे हुए हैं रेगिस्तान।
जगह जगह पर पाये जाते,
बड़े बड़े हे नखलिस्तान॥१॥

इन बड़े बड़े रेगिस्तानों में,
पानी का कुछ नाम नहीं है।
सिवा रेत के इस अचल में,
पेड़ो का कुछ काम नहीं है॥
जिधर निगाह उठाओगे तुम,
देगी रेत ही रेत दिखाई।
इसके सिवा यहाँ पर देगी,
और न कोई वस्तु दिखाई॥२॥

दिन के समय यहाँ पर,
काफी गर्मी पड़ती रहती है।
निशि के समय यहाँ पर,
काफी सर्दी पड़ती रहती है।
अच्छे नखलिस्तानों पर हैं,
छोटे छोटे गाँव बसे।
वर्षा के स्थानो पर हैं,
सुन्दर सुन्दर शहर बसे॥३॥

इन स्थानो के मूल निवासी,
राजपूत कहलाते थे।
सारे भारत मण्डल के वे,
स्वर्ण-मुकुट कहलाते थे॥
समस्त देश के मुकुट रहेंगे,
यह इन सबकी आशा थी।
स्वतन्त्र होकर के जीना,
यह सबकी अभिलाषा थी॥४॥

हम सब उनकी सन्तानें अब,
लोह-जाल में फँसे हुए हैं।
पराधीनता की डोरी से,
अब हम सब कसे हुए है॥
अभी समय है हम सब मिलकर,
कार्य मार्ग में डट जावें।
स्वतन्त्रता का खञ्जर लेकर,
आलस को हम दूर भगावें॥५॥

एक था नाई

लेखक, श्रीयुत 'भारतीय' एम० ए०

एक छोटी सी बहुत पुरानी कहानी है। सुनना चाहो तो सुनो। एक था नाई और वह था बड़ा गरीब। परन्तु वह चतुर और बुद्धिमान् था। जब घर पर खाने-पीने की तगी हुई तो उसने परदेस जाना उचित समझा। उसने सोचा, वहाँ शायद कुछ कमा सके। गाँव में तो उसे भरपेट भोजन भी न मिल पाता था।

एक दिन वह नाई अपना बाल बनाने का सामान किस्बत में रखकर घर से चल पड़ा। जाते जाते वह बहुत दूर निकल गया। शाम आ पहुँची और वह जगल को पार भी न कर सका था। इसलिए वह कुछ चिंतित सा इधर-उधर बचाव की जगह ढूँढने लगा। इतने में उसे सामने से एक शेर आता हुआ दिखाई पडा। नाई पहले तो कुछ डरा पर फिर सँभलकर खड़ा हो गया। शेर ने नाई को देखा तो हँसकर बोला—"वाह दोस्त, अच्छे मिले। बहुत दिनो बाद आज दो-टँग का मास खाने को मिला।" नाई ने इसके उत्तर में हँसकर कहा, "वाह मामा—अच्छे मिले। अब तो मेरा काम बन गया।"

शेर ने पूछा—"क्या कहते हो तुम?" नाई ने कहा—"कहते क्या हे, पाँच शेरों की जरूरत हमारे राजा साहब को थी। तीन तो मे उनके पास पहुँचा आया। एक यह मेरे पास कैद है—पाँचवें तुम मिल गये।" यह कहकर नाई ने चट किस्बत से दर्पण निकालकर शेर को दिखा दिया। उस आईने में अपनी सूरत जो देखी तो शेर के होश हवास उड़ गये। डर के मारे वह थर-थर काँपने लगा।

नाई ने मौका देखा तो चट अपने सिर का साफा लेकर शेर को बाँध लिया। बेचारा शेर अपनी जान के लिए नाई से विनती करने लगा और नाई किसी तरह उसे छोड़ने पर राजी न होता था।

शेर ने बहुत हाथ पैर जोड़े और नाई को बहुत सा धन देने को कहा। इस पर नाई किसी तरह राजी हो गया। पर उसने कहा—"तुमको अपनी दुम भी कटानी होगी।" अपनी जान बचाने के लिए शेर ने अपनी दुम कटा देने में बुराई न समझी। अत में नाई ने शेर की दुम काट ली और उसका दिया हुआ बहुत सा धन लेकर वह अपने घर लौट आया।

नाई को इस तरह अमीर हो जाते देखकर उसके पड़ोस के एक ब्राह्मण देवता को भी लालच हो आया। वे नित्य नाई की खुशामद करने लगे। नाई ने कहा—"अच्छा, अब की बार जब परदेश जाने लगूँगा तो तुम्हे भी साथ ले लूँगा।" कुछ दिनों बाद नाई ने फिर परदेश-यात्रा करने की ठानी। ब्राह्मण देवता भी उसके साथ चले। चलने के पहले ही नाई ने पण्डितजी से कहा—"देखो महाराज, जो मै कहूँ उसके खिलाफ न करना।

नहीं तो मैं तुम्हारा जिम्मा न लूँगा। तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।"

पण्डितजी बोले—"वाह ठाकुर, ऐसी क्या बात? तुम्हारे हुक्म पर हम चलेंगे। जो कहोगे, उसके खिलाफ रत्ती भर न करेंगे।"

दोनो चले परदेस। जाते जाते फिर उसी जगल मे पहुँचे। रात होने को आई। पण्डितजी डरने लगे। कहीं कोई आदमी का वास नहीं। अत में सामने एक बरगद का पेड दिखाई पडा। यही राय ठहरी कि इसी पर चढकर रात काटी जाय। नाई झट उस पर चढ गया। पडितजी से चढा नहीं जाता था। चढते थे, फिसलते थे। इस तरह वे हिम्मत हार गये और उदास होकर बैठ गये। बोले—"नाई ठाकुर, यहीं पड़ा रहूँगा—अगर सवेरे तक जान बची तो अच्छा, नहीं तो घर लौटकर ब्राह्मणी से कह देना, मेरा क्रिया करम कर देगी।" नाई को ब्राह्मण की बात पर हँसी भी आई, दया भी आई। उसने अपना साफा खोलकर लटका दिया। बोला—"इसी को पकडकर चढ आओ।" किसी तरह हाँफते हुए ब्राह्मण देवता पेड़ पर पहुँचे।

नाई ने एक चौड़ी डाल पर अपना आसन जमाया। बोला—"पडितजी, तुम भी कहीं सो जाओ, पर देखो अपने को डाल से बाँध लेना, नहीं तो करवट लेते ही धम से नीचे गिर जाओगे।"

पडितजी ने कहा—"बहुत अच्छा।" पर वे इतने थके थे कि उठँगते ही सो गये। नाई लेटे लेटे कुछ सोचने लगा। बहुत देर तक उसे नींद न आई। रात भीग चुकी थी। चारो ओर सन्नाटा छा रहा था। बीच बीच में जगली जानवरों की भयानक आवाज सुनाई पड़ जाती थी। नाई रह रहकर यही मनाने लगा कि जल्दी सवेरा हो, आगे बढे। इतने में उसने देखा कि पेड़ के नीचे उजाला हो गया है। एक ऊँचे से पत्थर पर एक मणि चमक रही है। उसके चारों ओर रोशनी छिटक रही है। थोड़ी देर में नाई ने देखा कि उसके आसपास जगल के जानवर इकट्ठा हो रहे हैं। भेडिया, गीदड़, भालू, बन्दर, तेंदुआ, बारहसिंगा, चीता, बाघ, वनबिलाव, लकड़बग्घा आदि सभी जानवर आ पहुँचे। कुछ देर में दूर पर सिंह का गरजना सुनाई पडा। सब जानवर अदब से उठ खडे हुए। देखते देखते एक सुन्दर सा सिंह एक शेर पर सवार आ पहुँचा। यह जगल का राजा था। वह एक ऊँची जगह पर जा बैठा।

राजा ने बैठते ही हुक्म दिया—"कहाँ गया वह सरहद का मालिक? हाजिर करो।"

दो शेरों के बीच घिरा हुआ वह बाँडा (दुम-कटा) शेर काँपता हुआ सामने आया। राजा ने कहा—"साल भर की आमदनी हाजिर करो।" जगली भैंसों पर लदी हुई बहुत सी थैलियाँ सामने आईं। राजा के हुक्म से दो बडे बन्दर उसे गिनने लगे। जब वे लोग गिन चुके तो राजा ने पूछा—"पूरी रकम है?"

एक बड़े बन्दर ने हाथ जोड़कर कहा—"धर्मावतार। १०००) रुपये कम हैं।"

राजा ने दुमकटे शेर की ओर इशारा करके पूछा—"क्यों कम हैं १०००) रुपये?"

उसने हाथ जोड़कर उत्तर दिया—"सरकार! एक दो-टॅग (दो टाँगोंवाला) मुझे पकड़े लिये जाता था। अपनी जान छुड़ाने के लिए मैंने १०००) घूस में दे डाले। उसने इस पर भी मेरी दुम काट ली।" यह सुनकर सब जानवरों को हँसी आ गई। पर राजा बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने गरजकर कहा—"तुम शेर के बच्चे होकर आदमी से डरते हो? उसने तुम्हारी दुम काट ली—तुमको पकड़े लिये जाता था। झूठ, झूठ बिल्कुल झूठ!"

दुमकटा शेर रो कलपकर विनती करने लगा—"धर्मावतार! मैं झूठ नहीं बोलता। अगर वह आ जाय तो आपकी भी हिम्मत जाती रहेगी। उसने बड़ी मुश्किल से मुझे छोड़ा था।"

राजा को दुमकटे शेर की बात सरासर झूठी जँची। उसने बड़े क्रोध से गर्जन किया और बोला—"इस बदमाश को हवालात में ले जाओ।" तीन चार शेर उस बाँड़े शेर को पकड़कर कैद करने चले। इतने में पेड़ से किसी के ललकारने की आवाज सुनकर सब चौंक उठे।

"पकड़ना—सब को इस बार—एक भी जाने न पावे।" ऊपर पेड़ पर से पण्डितजी धम से राजा के ऊपर आ गिरे। सिंहराज हड़बड़ाकर भाग खड़े हुए। उनका भागना था कि सभी जानवर भाग निकले। बाँड़ा शेर चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा—यह लो, अब क्यों भागे? मेरी बात पर तो किसी को विश्वास ही नहीं होता था।

पर कौन सुनता था। सब अपनी अपनी जान लेकर भागे।

बात क्या हुई थी? शेर का जोर से गरजना सुनकर पण्डितजी महाराज पेड़ की डाल से खिसक पड़े थे। उन्हें गिरते देख नाई चट अपना साफा फेंककर ललकारने लगा था—"इस बार सबको बाँध लेना। एक भी न जाने पावे।"

पण्डितजी को चोट ज्यादा नहीं लगी पर उनकी समझ में कुछ भी न आया कि क्या हुआ। अभी तक वे नींद में माते ही थे। नाई अब पेड़ पर से उतर आया। उसने पहले सब रुपयों की थैलियाँ इकट्ठी कीं और फिर ब्राह्मण देवता से बोला—"महाराज, मैंने तुमसे कहा था कि अपने को डाल से कसकर बाँध लेना पर तुमने मेरी बात नहीं मानी। बच गये, नहीं तो आज तुम्हारी हड्डी का भी पता न लगता। पण्डितजी नाई को भूरि भूरि आशीर्वाद देने लगे।

नाई ने कहा—"अच्छा, चलो जो हुआ सो अच्छा ही हुआ। यह सब रुपये उठाकर लाद ले चलो। देखो, नीयत बुरी न करना। जितना हिस्सा मैं दूँ उससे ज्यादा न माँगना।"

ब्राह्मण देवता ने कसम खाकर कहा—

के स्कूल से लन्दन के स्कूल में बड़ा अन्तर होगा। मै ऑगरेजी बहुत थोड़ी जानती थी। लेकिन जब मै स्कूल मे गई तो मेरा सारा डर दूर हो गया। पहले ही दिन से स्कूल मुझे बड़ा अच्छा लगने लगा।

स्कूल यहाँ दो वक्त लगता है। दोपहर को खाने की छुट्टी होती है। स्कूल में छोटे लड़के और छोटी लड़कियाँ साथ साथ पढ़ती हैं। पढ़ाने के लिए सब स्त्रियाँ है। वे बड़े प्यार से पढ़ाती है। किसी को मारती नहीं। समझाकर सब कुछ बताती हैं। आज-कल यहाँ जाड़ा बहुत पड़ता है। इसलिए सब ओवरकोट पहनकर जाते है। मास्टरनी सबके ओवरकोट उतरवाकर खूँटी पर टाँगती हैं। छुट्टी के बाद वे सबको कोट व दस्ताने पहनाती हैं और हर तरह देखभाल रखती हैं। मै ऑगरेजी कम जानती हूँ, इसलिए मेरी देख-भाल ज्यादा रखती हैं।

यहाँ फीस बिलकुल नहीं लगती। बल्कि हरएक बालक व बालिका को स्कूल से रोज़ आधी बोतल दूध मिलता है। यह दूध बहुत अच्छा और शुद्ध होता है। बाहर उसकी कीमत छः पैसे होती है। स्कूल में उसके लिए दो पैसे ही देने पड़ते है। कभी कभी चाकलेट व बिस्कुट भी बँटते है। अभी 'बडे दिन' के समय बच्चों का जलसा हुआ था और स्कूल की ओर से सबको उपहार मिले थे। स्कूल की तरफ से सबको डाक्टर देखते है।

बच्चे भी बड़े अच्छे है। मेरे साथ सबका बर्ताव बड़ा अच्छा है और मुझे सब मदद करते रहते है। खेलने में सब भाग लेते है। अभी यहाँ बड़े जोर की बर्फ पड़ी थी। तब सब बर्फ की गेंद बनाकर खूब खेलते थे। जब छुट्टी होती है तो बच्चे बडी तरतीब से बाहर निकलते हैं, इधर-उधर भागते नहीं। सब अपने अपने नम्बर से काम करते हैं। पढ़ने से बहुत कम जी चुराते हैं। स्कूल में सबको इतना अच्छा लगता है कि सब ख़ुशी ख़ुशी स्कूल आते है।

जब छुट्टी होती है और हम घर जाने के लिए बाहर निकलते है तो सडक पर पहले ही से एक पुलिसमैन आकर खडा रहता है। वह दूसरी ओर जानेवाले बच्चों को अपने साथ सड़क पार करा देता है। स्कूल आने पर भी हम उसे वहाँ पाते है। इससे बच्चे मोटर आदि से बचते है।

स्कूल के बच्चों के लिए यहाँ सिनेमाओं में शनिवार को प्रातःकाल बच्चों के लायक फिल्म दिखाये जाते है और फीस बहुत थोड़ी देनी पड़ती है। यहाँ शनिवार को स्कूल बन्द रहते है, इसलिए सिनेमा में बहुत से बच्चे जाते है। जो वहाँ नहीं जाते, वे पार्क में खेलते है या वहाँ लगे हुए झूलों और चर्खों पर झूलते है।

---

(१)

"क्यों जी, कितने बजे हैं ?"

"बारह से कुछ अधिक हुए होंगे।"

"बारह से अधिक तो कभी बजता ही नहीं।"

(२)

किसी नये आगन्तुक ने उस गाँव के एक बूढ़े से पूछा—"यहाँ कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है या नहीं ?"

"नहीं जी, यहाँ तो बच्चे ही बच्चे पैदा होते हैं।"

—लक्ष्मेश्वरदयाल।

(१)

किसी छोटे बच्चे ने एक अँगरेजी स्कूल में अपने मास्टर से पूछा—"मास्टर साहब, 'I' (आई) माने क्या ?" मास्टर साहब ने बताया—'I' (आई) माने "मैं"। बालक रटने लगा—'आई' माने 'मास्टर साहब।' जब बालक घर गया तो वहाँ उसके बड़े भाई ने कहा—'आई' माने 'मास्टर साहब' नहीं, 'मैं'। तब बालक यों रटने लगा—'आई' माने स्कूल में 'मास्टर साहब' और घर पर 'भैया'।

(२)

एक छोटी सी लड़की अपने साथ की लड़कियों के साथ दावत खाकर घर लौटी तो अपनी माँ से बोली—'आज बड़े मजे की बात हुई। सब लड़कियाँ एक लड़की के गिरने पर हँसने लगीं।" माँ ने पूछा—"बेटी, तुम तो खूब हँसी होगी ?" लड़की बोली—"न, माँ। मैं बिलकुल नहीं हँसी।" माँ ने पूछा—"क्यों ?" लड़की बोली—"अरे मैं ही तो थी जो गिरी थी।"

—काशीप्रसाद अग्रवाल।

(१)

मालकिन—"तुमसे कितनी बार कह चुकी कि जब मैं खाट पर बैठूँ, तो तुम जमीन पर बैठा करो।"

नौकरानी—"और जब आप जमीन पर बैठें तो क्या मैं पाताल में चली जाऊँ ?"

(२)

बूढ़ी स्त्री—"भाई, मैं तो हमेशा अपने बाल पाँच छः रोज बाद धो डालती हूँ।"

छोटी लड़की—"तभी तो आपके बाल एकदम सफेद हो गये।"

—कुमारी उर्मिला।

के स्कूल से लन्दन के स्कूल में बड़ा अन्तर होगा। मै अँगरेजी बहुत थोडी जानती थी। लेकिन जब मै स्कूल में गई तो मेरा सारा डर दूर हो गया। पहले ही दिन मे स्कूल मुझे बडा अच्छा लगने लगा।

स्कूल यहाँ दो वक्त लगता है। दोपहर को खाने की छुट्टी होती है। स्कूल में छोटे लडके और छोटी लड़कियाँ साथ साथ पढ़ती हैं। पढ़ाने के लिए सब स्त्रियाँ है। वे बडे प्यार से पढाती है। किसी को मारतीं नहीं। समझाकर सब कुछ बताती है। आज-कल यहाँ जाड़ा बहुत पडता है। इसलिए सब ओवरकोट पहनकर जाते है। मास्टरनी सबके ओवरकोट उतरवाकर खूँटी पर टाँगती है। छुट्टी के बाद वे सबको कोट व दस्ताने पहनाती हैं और हर तरह देखभाल रखती हैं। मै अँगरेजी कम जानती हूँ, इसलिए मेरी देख-भाल ज्यादा रखती है।

यहाँ फीस बिलकुल नहीं लगती। बल्कि हरएक बालक व बालिका को स्कूल से रोज आधी बोतल दूध मिलता है। यह दूध बहुत अच्छा और शुद्ध होता है। बाहर उसकी कीमत छः पैसे होती है। स्कूल में उसके लिए दो पैसे ही देने पड़ते है। कभी कभी चाकलेट व बिस्कुट भी बँटते हैं। अभी 'बडे दिन' के समय बच्चों का जलसा हुआ था और स्कूल की ओर से सबको उपहार मिले थे। स्कूल की तरफ से सबको डाक्टर देखते है।

बच्चे भी बड़े अच्छे हैं। मेरे साथ सबका बर्ताव बडा अच्छा है और मुझे सब मदद करते रहते है। खेलने मे सब भाग लेते है। अभी यहाँ बडे जोर की बर्फ़ पडी थी। तब सब बर्फ की गेंद बनाकर खूब खेलते थे। जब छुट्टी होती है तो बच्चे बडी तरतीब से बाहर निकलते हैं, इधर-उधर भागते नहीं। सब अपने अपने नम्बर से काम करते हैं। पढने से बहुत कम जी चुराते हैं। स्कूल में सबको इतना अच्छा लगता है कि सब खुशी खुशी स्कूल आते है।

जब छुट्टी होती है और हम घर जाने के लिए बाहर निकलते है तो सडक पर पहले ही से एक पुलिसमैन आकर खड़ा रहता है। वह दूसरी ओर जानेवाले बच्चों को अपने साथ सड़क पार करा देता है। स्कूल आने पर भी हम उसे वहाँ पाते है। इससे बच्चे मोटर आदि से बचते है।

स्कूल के बच्चों के लिए यहाँ सिनेमाओं में शनिवार को प्रातःकाल बच्चों के लायक फिल्म दिखाये जाते हैं और फीस बहुत थोड़ी देनी पड़ती है। यहाँ शनिवार को स्कूल बन्द रहते है, इसलिए सिनेमा में बहुत से बच्चे जाते हैं। जो वहाँ नहीं जाते, वे पार्क में खेलते हैं या वहाँ लगे हुए झूलों और चर्खों पर झूलते है।

---

(१)

"क्यों जी, कितने बजे हैं ?"

"बारह से कुछ अधिक हुए होंगे।"

"बारह से अधिक तो कभी बजता ही नहीं।"

(२)

किसी नये आगन्तुक ने उस गाँव के एक बूढ़े से पूछा—"यहाँ कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है या नहीं ?"

"नहीं जी, यहाँ तो बच्चे ही बच्चे पैदा होते हैं।"

—लक्ष्मेश्वरदयाल।

(१)

किसी छोटे बच्चे ने एक अँगरेजी स्कूल में अपने मास्टर से पूछा—"मास्टर साहब, 'I' (आई) माने क्या ?" मास्टर साहब ने बताया—'I' (आई) माने "मैं"। बालक रटने लगा—'आई' माने 'मास्टर साहब।' जब बालक घर गया तो वहाँ उसके बड़े भाई ने कहा—'आई' माने 'मास्टर साहब' नहीं, 'मैं'। तब बालक यों रटने लगा—'आई' माने स्कूल में 'मास्टर साहब' और घर पर 'भैया'।

(२)

एक छोटी सी लड़की अपने साथ की लड़कियों के साथ दावत खाकर घर लौटी तो अपनी माँ से बोली—'आज बड़े मजे की बात हुई। सब लड़कियाँ एक लड़की के गिरने पर हँसने लगीं।" माँ ने पूछा—"बेटी, तुम तो खूब हँसी होगी ?" लड़की बोली—"न, माँ! मैं बिलकुल नहीं हँसी।" माँ ने पूछा—"क्यों ?" लड़की बोली—"अरे मैं ही तो थी जो गिरी थी।"

—काशीप्रसाद अग्रवाल।

(१)

मालकिन—'तुमसे कितनी बार कह चुकी कि जब मैं खाट पर बैठूँ, तो तुम जमीन पर बैठा करो।"

नौकरानी—'और जब आप जमीन पर बैठें तो क्या मैं पाताल में चली जाऊँ ?"

(२)

बूढ़ी स्त्री—"भाई, मैं तो हमेशा अपने बाल पाँच छः रोज बाद धो डालती हूँ।"

छोटी लड़की—"तभी तो आपके बाल एक दम सफेद हो गये।"

—कुमारी मनिंगा।

के स्कूल से लन्दन के स्कूल में बडा अन्तर होगा। मै ऑगरेजी बहुत थोड़ी जानती थी। लेकिन जब मै स्कूल मे गई तो मेरा सारा डर दूर हो गया। पहले ही दिन से स्कूल मुझे बड़ा अच्छा लगने लगा।

स्कूल यहॉ दो वक्त लगता है। दोपहर को खाने की छुट्टी होती है। स्कूल में छोटे लडके और छोटी लडकियॉ साथ साथ पढती है। पढ़ाने के लिए सब स्त्रियॉ हैं। वे बडे प्यार से पढाती हैं। किसी को मारती नहीं। समझाकर सब कुछ बताती है। आज-कल यहॉ जाड़ा बहुत पड़ता है। इसलिए सब ओवरकोट पहनकर जाते है। मास्टरनी सबके ओवरकोट उतरवाकर खूँटी पर टॉगती हैं। छुट्टी के बाद वे सबको कोट व दस्ताने पहनाती हैं और हर तरह देखभाल रखती हैं। मैं ऑगरेजी कम जानती हूँ, इसलिए मेरी देख-भाल ज्यादा रखती है।

यहॉ फीस बिलकुल नहीं लगती। बल्कि हरएक बालक व बालिका को स्कूल से रोज़ आधी बोतल दूध मिलता है। यह दूध बहुत अच्छा और शुद्ध होता है। बाहर उसकी क़ीमत छः पैसे होती है। स्कूल में उसके लिए दो पैसे ही देने पड़ते हैं। कभी कभी चाकलेट व बिस्कुट भी बॅटते है। अभी 'बडे दिन' के समय बच्चो का जलसा हुआ था और स्कूल की ओर से सबको उपहार मिले थे। स्कूल की तरफ से सबको डाक्टर देखते हैं।

बच्चे भी बडे अच्छे हैं। मेरे साथ सबका बर्ताव बडा अच्छा है और मुझे सब मदद करते रहते है। खेलने में सब भाग लेते है। अभी यहॉ बडे जोर की बर्फ पडी थी। तब सब बर्फ की गेंद बनाकर ख़ूब खेलते थे। जब छुट्टी होती है तो बच्चे बड़ी तरतीब से बाहर निकलते है, इधर-उधर भागते नहीं। सब अपने अपने नम्बर से काम करते हैं। पढ़ने से बहुत कम जी चुराते है। स्कूल में सबको इतना अच्छा लगता है कि सब खुशी खुशी स्कूल आते है।

जब छुट्टी होती है और हम घर जाने के लिए बाहर निकलते है तो सड़क पर पहले ही से एक पुलिसमैन आकर खड़ा रहता है। वह दूसरी ओर जानेवाले बच्चों को अपने साथ सडक पार करा देता है। स्कूल आने पर भी हम उसे वहॉ पाते हैं। इससे बच्चे मोटर आदि से बचते हैं।

स्कूल के बच्चों के लिए यहॉ सिनेमाओं में शनिवार को प्रातःकाल बच्चों के लायक फिल्म दिखाये जाते हैं और फीस बहुत थोड़ी देनी पड़ती है। यहॉ शनिवार को स्कूल बन्द रहते है, इसलिए सिनेमा में बहुत से बच्चे जाते है। जो वहॉ नहीं जाते, वे पार्क में खेलते है या वहॉ लगे हुए झूलों और चर्खों पर झूलते है।

---

(१)

"क्यों जी, कितने बजे हैं ?"

"बारह से कुछ अधिक हुए होंगे।"

"बारह से अधिक तो कभी बजता ही नहीं।"

(२)

किसी नये आगन्तुक ने उस गाँव के एक बूढ़े से पूछा—"यहाँ कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है या नहीं ?"

"नहीं जी, यहाँ तो बच्चे ही बच्चे पैदा होते हैं।"

—लक्ष्मेश्वरदयाल।

(१)

किसी छोटे बच्चे ने एक अँगरेजी स्कूल में अपने मास्टर से पूछा—"मास्टर साहब, 'I' (आई) माने क्या ?" मास्टर साहब ने बताया—'I' (आई) माने "मैं"। बालक रटने लगा—'आई' माने 'मास्टर साहब।' जब बालक घर गया तो वहाँ उसके बड़े भाई ने कहा—'आई' माने 'मास्टर साहब' नहीं, 'मैं'। तब बालक यों रटने लगा—'आई' माने स्कूल में 'मास्टर साहब' और घर पर 'भैया'।

(२)

एक छोटी सी लड़की अपने साथ की लड़कियों के साथ दावत खाकर घर लौटी तो अपनी माँ से बोली—"आज बड़े मजे की बात हुई। सब लड़कियाँ एक लड़की के गिरने पर हँसने लगीं।" माँ ने पूछा—"बेटी, तुम तो खूब हँसी होगी ?" लड़की बोली—"न, माँ। मैं बिलकुल नहीं हँसी।" माँ ने पूछा—"क्यों ?" लड़की बोली—"अरे मैं ही तो थी जो गिरी थी।"

—काशीप्रसाद अग्रवाल।

(१)

मालकिन—"तुमसे कितनी बार कह चुकी कि जब मैं खाट पर बैठूँ, तो तुम जमीन पर बैठा करो।"

नौकरानी—"और जब आप जमीन पर बैठे तो क्या मैं पाताल में चली जाऊँ ?"

(२)

बूढ़ी स्त्री—"भाई, मैं तो हमेशा अपने बाल पाँच छः रोज बाद धो डालती हूँ।"

छोटी लड़की—"तभी तो आपके बाल एकदम सफेद हो गये।"

—कुमारी उर्मिला।

के स्कूल से लन्दन के स्कूल में बड़ा अन्तर होगा। मैं अँगरेजी बहुत थोड़ी जानती थी। लेकिन जब मैं स्कूल में गई तो मेरा सारा डर दूर हो गया। पहले ही दिन से स्कूल मुझे बड़ा अच्छा लगने लगा।

स्कूल यहाँ दो वक्त लगता है। दोपहर को खाने की छुट्टी होती है। स्कूल में छोटे लड़के और छोटी लड़कियाँ साथ साथ पढ़ती हैं। पढ़ाने के लिए सब स्त्रियाँ हैं। वे बड़े प्यार से पढ़ाती हैं। किसी को मारतीं नहीं। समझाकर सब कुछ बताती हैं। आज-कल यहाँ जाड़ा बहुत पड़ता है। इसलिए सब ओवरकोट पहनकर जाते हैं। मास्टरनी सबके ओवरकोट उतरवाकर खूँटी पर टाँगती हैं। छुट्टी के बाद वे सबको कोट व दस्ताने पहनाती हैं और हर तरह देखभाल रखती हैं। मैं अँगरेजी कम जानती हूँ, इसलिए मेरी देख-भाल ज्यादा रखती हैं।

यहाँ फीस बिलकुल नहीं लगती। बल्कि हरएक बालक व बालिका को स्कूल से रोज़ आधी बोतल दूध मिलता है। यह दूध बहुत अच्छा और शुद्ध होता है। बाहर उसकी कीमत छः पैसे होती है। स्कूल में उसके लिए दो पैसे ही देने पड़ते हैं। कभी कभी चाकलेट व बिस्कुट भी बँटते हैं। अभी 'बड़े दिन' के समय बच्चों का जलसा हुआ था और स्कूल की ओर से सबको उपहार मिले थे। स्कूल की तरफ से सबको डाक्टर देखते हैं।

बच्चे भी बड़े अच्छे हैं। मेरे साथ सबका बर्ताव बड़ा अच्छा है और मुझे सब मदद करते रहते हैं। खेलने में सब भाग लेते हैं। अभी यहाँ बड़े जोर की बर्फ़ पड़ी थी। तब सब बर्फ की गेंद बनाकर ख़ूब खेलते थे। जब छुट्टी होती है तो बच्चे बड़ी तरतीब से बाहर निकलते हैं, इधर-उधर भागते नहीं। सब अपने अपने नम्बर से काम करते हैं। पढ़ने से बहुत कम जी चुराते हैं। स्कूल में सबको इतना अच्छा लगता है कि सब ख़ुशी ख़ुशी स्कूल आते हैं।

जब छुट्टी होती है और हम घर जाने के लिए बाहर निकलते हैं तो सड़क पर पहले ही से एक पुलिसमैन आकर खड़ा रहता है। वह दूसरी ओर जानेवाले बच्चों को अपने साथ सड़क पार करा देता है। स्कूल आने पर भी हम उसे वहाँ पाते हैं। इससे बच्चे मोटर आदि से बचते हैं।

स्कूल के बच्चों के लिए यहाँ सिनेमाओं में शनिवार को प्रातःकाल बच्चों के लायक फिल्म दिखाये जाते हैं और फीस बहुत थोड़ी देनी पड़ती है। यहाँ शनिवार को स्कूल बन्द रहते हैं, इसलिए सिनेमा में बहुत से बच्चे जाते हैं। जो वहाँ नहीं जाते, वे पार्क में खेलते हैं या वहाँ लगे हुए झूलों और चर्खों पर झूलते हैं।

---

(१)

"क्यों जी, कितने बजे हैं ?"

"बारह से कुछ अधिक हुए होंगे।"

"बारह से अधिक तो कभी बजता ही नहीं।"

(२)

किसी नये आगन्तुक ने उस गाँव के एक बूढ़े से पूछा—"यहाँ कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है या नहीं ?"

"नहीं जी, यहाँ तो बच्चे ही बच्चे पैदा होते हैं।"

—लक्ष्मेश्वरदयाल।

(१)

किसी छोटे बच्चे ने एक अँगरेजी स्कूल में अपने मास्टर से पूछा—"मास्टर साहब, 'I' (आई) माने क्या ?" मास्टर साहब ने बताया—'I' (आई) माने "मैं"। बालक रटने लगा—'आई' माने 'मास्टर साहब।' जब बालक घर गया तो वहाँ उसके बड़े भाई ने कहा—'आई' माने 'मास्टर साहब' नहीं, 'मैं'। तब बालक यों रटने लगा—'आई' माने स्कूल में 'मास्टर साहब' और घर पर 'भैया'।

(२)

एक छोटी सी लड़की अपने साथ की लड़कियों के साथ दावत खाकर घर लौटी तो अपनी माँ से बोली—'आज बड़े मजे की बात हुई। सब लड़कियाँ एक लड़की के गिरने पर हँसने लगीं।" माँ ने पूछा—"बेटी, तुम तो खूब हँसी होगी ?" लड़की बोली—"न, माँ! मैं बिलकुल नहीं हँसी।" माँ ने पूछा—"क्यों ?" लड़की बोली—"अरे मैं ही तो थी जो गिरी थी।"

—काशीप्रसाद अग्रवाल।

(१)

मालकिन—"तुमसे कितनी बार कह चुकी कि जब मैं खाट पर बैठूँ, तो तुम जमीन पर बैठा करो।"

नौकरानी—'और जब आप जमीन पर बैठें तो क्या मैं पाताल में चली जाऊँ ?"

(२)

बूढ़ी स्त्री—"भाई, मैं तो हमेशा अपने बाल पाँच छः रोज बाद धो डालती हूँ।"

छोटी लड़की—"तभी तो आपके दम सफेद हो गये।"

—छ।

बोते मुझको दीन किसान।
खाते मुझको पर धनवान॥
छाती मेरी है छोटी।
पर स्वाद है मेरी ही रोटी॥

उत्तर—गेहूँ।

—हुकुमचन्द जैन।

नन्ही सी डिबिया डब डब करे।
माणिक-मोती गिर गिर परे॥

उत्तर—आँख।

—शंकरलालराम साह।

आदि कटे हर हमने लेखा, म-य कटे नर होय।
तीन अक्षर का नाम मेरा, सबको देता तोय॥

उत्तर—नहर।

पक्षी मे मेरी गिनती है,
पर न फुदकता डाली-डाल।
चार बजे मैं सबको जगाता,
देहातों का हूँ घड़ियाल॥

उत्तर—मुर्गा।

—देवीराम, सिहावा।

१—मै भारत का कौन प्रसिद्ध शहर हूँ, पहचानो। मै चार अक्षरों के मेल से बना हूँ। काशी मे हूँ, पर बनारस में नहीं। हिन्दुस्तान में हूँ, भारत मे नही। पुरी में हूँ, पर जगन्नाथ में नहीं। बिहार में हूँ, बंगाल में नहीं।

(कानपुर)

२—तीन अक्षर का शहर बताओ,
खुद तुम वीर तभी कहलाओ।
है स्वाधीन अभी तक वह,
भारत का है प्यारा वह॥
पहला कटे तो भी वीर,
नहीं कटे तो स्वयं ही वीर॥

(मैसूर)

३—भारत की वह कौन सी प्रसिद्ध नदी है जिसका बीचवाला अक्षर कटने पर मर्द का बोध होता और अन्तिम कटने पर मुलायम बनता है। (नर्मदा)

—भइया भोलानाथ सिनहा।

कलम-सखा

मुझे टिकट संग्रह करने का शौक है। मेरे पास कई देशों के भिन्न भिन्न टिकट हैं। मैं अदला-बदली करना चाहता हूँ। जो मुझसे टिकट बदलना चाहें वे मुझे इस पते पर पत्र लिखें—

देवदत्त झा "दीप"
६, चटर्जी रोड,
लाहौर (पंजाब)।

मुझे टिकट-संग्रह करने का बहुत शौक है। मेरे पास चीन, जापान, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, फ्रांस और इटली आदि देशों के टिकट हैं और सिलवर जुबली के भी। जो पाठक उन्हें बदलना चाहें, मुझसे पत्र व्यवहार करें।

चन्द्रदत्त वशिष्ठ,
C/o नारायणदत्त वशिष्ठ,
रेजिडेन्सी, जोधपुर।

मुझे देश विदेश के टिकट संग्रह करने का शौक है। मैं इन्हें अदल-बदल करना चाहता हूँ। मेरे पास करीब करीब संसार के देशों के टिकट हैं। जो मित्र पत्र व्यवहार करना चाहें, निम्न-लिखित पते पर मुझे पत्र लिखें—

त्रिवेनीप्रसाद तिवारी,
C/o एस० आर० तिवारी,
सुपरिंटेन्डेन्ट,
डी० सी० आफिस,
छिन्दवाडा (सी०पी०)

मुझे टिकट-संग्रह का बहुत शौक है। पाठकों को मैं यह जताना चाहता हूँ कि मैं कुछ टिकट बेचना चाहता हूँ जो फ्रांस, बेलजियम, टुनिशिया, इत्यादि देशों के हैं। पाठक टिकट अदल बदल करना चाहें तो मैं वह भी कर सकता हूँ। जो पाठक चाहें, नीचे दिये पते पर पत्र व्यवहार करें — जी० एल० मित्रा,
१०२०, दुर्गाभवन,
बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा।

क्या टिकट-संग्रह करनेवाले मुझे यह बताने की कृपा करेंगे कि इस्तेमाली टिकटों के पैकट कहाँ से और कैसे प्राप्त हो सकते हैं? वे मुझे इस पते से लिखें — राकेशमोहन जोशी,
ललित-भवन, लैंसडाउन

मुझे सच्चा मित्र चाहिए

मैंने अच्छे मित्रों के चुनाव का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन मुझे कोई भी सच्चा मित्र न मिला। अब मैं बाल-सखा के प्रेमियों का मित्र बनना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि मुझे अवश्य बाल सखा के प्रेमियों में सच्चे मित्र मिल जायँगे और वे निम्नलिखित पते से पत्र व्यवहार करके मेरा मित्र होना पसन्द करेंगे।

ज्योतिप्रसाद टंडन,
C/o बाबू शिवप्रसाद टंडन
फारेस्ट कन्ट्रेक्टर,
२७, लक्ष्मण चौक, देहरादून

हमारी चित्रावली

विद्या, मदन और प्रेमा की स्कूल के लिए तैयारी

आनन्दजीवन वर्मा 'मदन'—श्री भारतीय' के पुत्र

चचा भतीजे

प्रेषक, श्री ना० प्र० अरोड़ा, कानपुर ।

बेबी
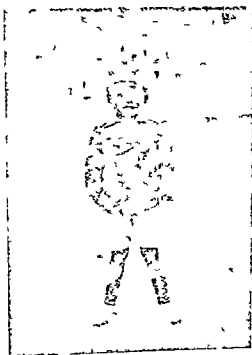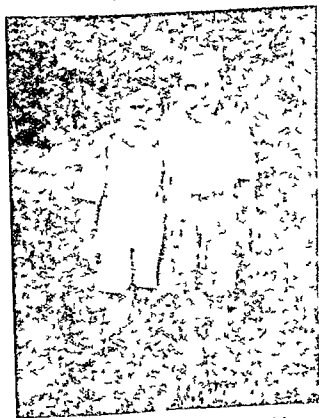
श्री 'भारतीय' की समस

शरीक हुआ है। इस बालक ने हमसे सलाह माँगी थी कि उसे क्या करना चाहिए और हम अलग पत्र में अपनी राय उसके पास भेज चुके हैं। यहाँ हम ऐसे मौकों पर, और लडको की जानकारी के लिए, यह बता देना चाहते हैं कि किसी अन्याय का साहस के साथ विरोध करना हर एक का परम धर्म है, परन्तु विरोध करते हुए भी बडो के प्रति आदर और प्रेम का भाव बनाये रखना चाहिए। हमें पता नहीं कि लखनऊ के उस स्कूल में क्या हुआ, परन्तु हम यह कह सकते हैं कि स्कूलों में हडताल का होना कोई अच्छी बात नहीं। क्योंकि इससे पढाई में हानि पहुँचती है और समझदार लडकों का यह काम होना चाहिए कि ऐसे अवसरो को, जहाँ तक हो सके, बचाने की कोशिश करे।

नहीं छपेंगे

हम यह बता चुके हैं कि हमारे पास इतने अधिक लेख जमा हो गये हैं कि उन सबका छापना मुमकिन नहीं है। कुछ लेख वगैरह, जिनको हम नहीं छाप सकेंगे, नीचे दर्ज हैं। भेजनेवालो को हम धन्यवाद देते हैं और उनकी मिहनत की तारीफ करते हैं। आशा है, वे इससे यह न समझेंगे कि उनके लेख हमें पसन्द नहीं आये। असल बात यह है कि ये लेख चुनाव में नहीं आ सके।

घडियाल का पेट—श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव। मन्त्रि-मडल—श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव 'व्यथित'। भोजन करे और रुपया ले—श्री अनुज। पूँछ रोग—श्री अवु। पहेलियाँ—श्री महेन्द्रकुमार भार्गव। कहानी—श्री लक्ष्मीचन्द्र। चालाक—श्री जगदीशनारायण पाठक। जादू का पलँग—श्री प्रकाशचन्द्र सेनरिक्सा। देशभक्त—श्री भोलानाथ गुप्त। भारत माता—श्री पृथ्वीसिंह 'लघु'। अमावस्या व्रत—कुमारी कृष्णा सौभूति। साइकिल-सवारी—श्री त्रिवेणीप्रसाद तिवारी। अभिलाषा—श्री हनुमानप्रसाद हरिलालका। भाई और बहन—श्री लखोटिया। सुशीलिनी—श्री रामानुग्रह प्र० सिंह। कहानी—श्री शिव भगवान् खाती। लकडहारे के बच्चे—श्री आनन्दनारायण। सौदागर की बेटी—श्री शकुतला देवी। एक स्वप्न—श्री हनतचन्द्र कटारे। अधा और पगु—श्री हनुमानप्रसाद गुप्त। कहानी—श्री शातनु कमलापति शर्मा। लाल खिलौने की कहानी—श्री सतीशचन्द्र चतुर्वेदी। राजपूताना प्रात की एक कहानी इत्यादि—श्री हजारीमल बाँठिया। अतिथि-सत्कार—श्री रामप्रसाद मणि। किसान की मनोकामना—श्री प्यारेलाल गर्ग। कुत्ता प्यारा—श्री शार्दूल मिश्र। तीन चित्रकार—श्री जगदीशशरण। भारत के फकीर—श्री हरवशलाल अरोड़ा। खिलाडी—श्री राजकिशोरप्रसाद। हँसो-हँसाओ—श्री विश्वनाथ गुप्त। लालच—गोपालप्रसाद चनसोलिया। विचित्र कहावत—श्री सुखदेवप्रसाद।

—
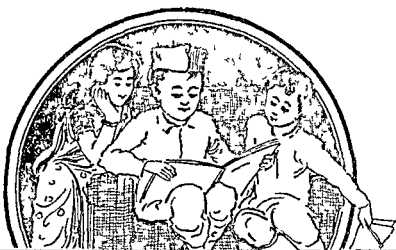
सम्पादक—श्रीनाथसिंह

ार्ष २३] मार्च १९३९—फाल्गुन १९९५ [संख्या ३

सीखो

लेखक, श्रीयुत छत्रपति 'भार'

ारत के तुम वीर बनोगे—
इसके हित तुम मरना सीखो।
दुख में धीरज धरना सीखो॥
गाँधी और जवाहर जैसे,
दुश्मन को वश करना सीखो।
दुखियों के दुख हरना सीखो॥
ारत के तुम वीर बनोगे—
कष्ट सभी तुम सहना सीखो।
आपस में मिल रहना सीखो॥

नानक तुलसी कविरा जैसे,
दीनों का कर गहना सीखो।
सत्य सर्वदा कहना सीखो॥
भारत के शमशीर बनोगे—
काम वीर का करना सीखो।
नहीं शत्रु से डरना सीखो॥
अर्जुन और पितामह जैसे,
वीर बनोगे, धीर बनोगे।
भारत के तुम वीर बनोगे॥
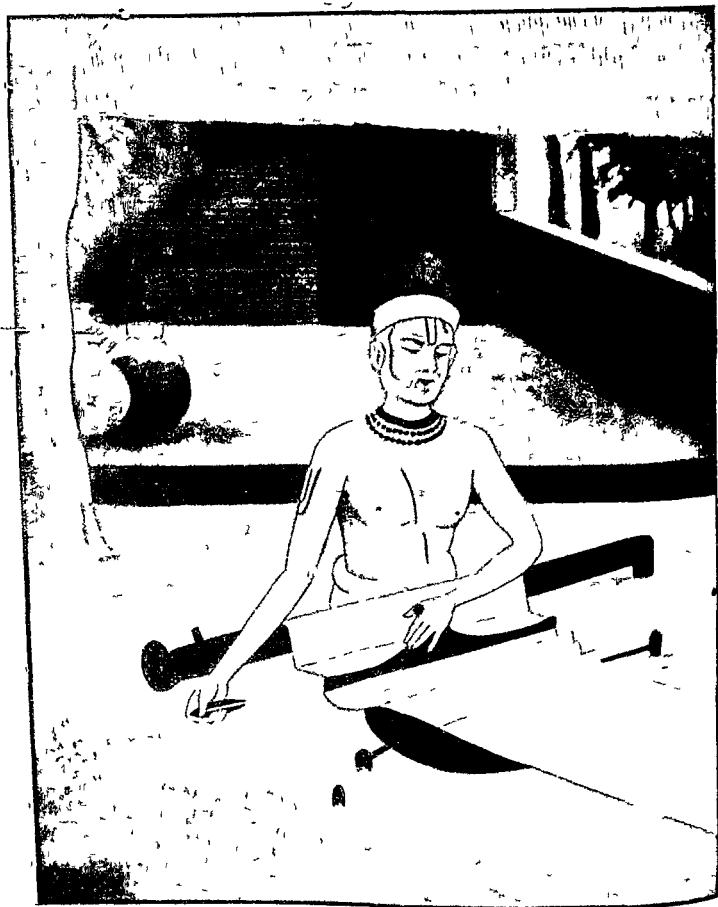
महात्मा कबीर

भर पेट भोजन पा गये तो भाग्य मानो जग गये।

है और गाते भी जाते हैं। सबसे आगे एक लड़की बैठी है। उसके सर की जूँ उसकी बड़ी बहन निकाल रही है। उसके बाद, बड़ी बहन के पीछे, लड़कियों की माँ बैठी हुई है। माँ खुद बड़ी लड़की के सर की जूँ तलाश रही है। माँ के पीछे लड़कियों की चाची बैठी हुई है और वह माँ के सर की जूँ निकाल रही है। इस तरह परिवार का परिवार जूँ की खोज में लगा हुआ है। जब मैं उनके पास आया तो मैंने उनसे पूछा कि आप लोग क्यों नहीं अपने सर को साफ रखतीं? मैंने उनको अपना सर दिखलाया और कहा, देखिए, मैं अपने बालों में बराबर कंघी करता हूँ और सर के बाल धोता हूँ। इसलिए हमारे बालों में जूँ नहीं पड़ी है। अगर आप लोग भी अपने सर के बालों को साफ रक्खें तो आपका जितना वक्त जूँ तलाशने में कटता है उतना किसी दूसरे काम में लग सकता है। लेकिन वे औरतें अपने काम में इस कदर लगी हुई थीं कि उन्होंने मेरी बात का कुछ भी ख्याल न किया।

अब एक दूसरा नज़्ज़ारा लीजिए। मैंने दो औरतों को अपने घर से बाहर खाना पकाते ... । बड़ी बड़ी रोटियाँ बनाकर ... कर रही थीं और ... रही थीं। हवा

परिवार का परिवार जूँ तलाश रहा है।

देहात की सैर

लेखक, श्रीयुत कुजबिहारी चौधरी

जब से महात्मा गाधी ने कहा है कि गाँव की ओर चलो, तब से हमारे स्कूल में बराबर इस बात की कोशिश हो रही है कि हम शहर के लड़के छुट्टी पाने पर गाँवों में जायँ और वहाँवालों की सेवा करें। उनको लिखायें-पढ़ायें, सफाई के तरीके बतायें, उन्हे आपस में मिल-जुलकर रहने के तरीके बतायें और उन्हे यह बतायें कि वे किस तरह अपनी गरीबी मे अच्छा खाना और कपड़ा पा सकते हैं।

इससे पहले मैंने कभी देहात नहीं देखा था। शहर में पैदा हुआ हूँ और जब से होश सँभाला है, शहर ही में रह रहा हूँ। इसी देहात की बातें मैंने न जान पाईं। ... के पढ़नेवालों को यह लेख इसी बात का ... करेगा और अगर इस तरह की बातें हम... और साथियों ने भी देखी हों तो मैं ... निवेदन करूँगा कि वे भी अपना अनुभव ... कर भेजें।

सबसे मजेदार बात जो हमने देखी, यह है कि एक परिवार का परिवार, ... पर बैठा हुआ, एक दूसरे के सर के जूँ मे लगा हुआ था। ये काम भी करते ...

ही वजह क्या है। मे इसी उधेड़-बुन में जा रहा था कि सामने से मुझे एक औरत आती हुई दिखाई पड़ी। उसके सर पर एक बहुत बड़ा बोझ था। वह कुछ चीजें बाजार को बेचने ले जा रही थी। मैंने पूछा "क्यों इतना बड़ा बोझा तकलीफ़ सहकर इस तरह लिये जाती हो? इन चीजों को दो बार म ले जा सकती हो।" उसने भी इसका कोई जवाब न दिया। मुझे ऐसा जान पड़ा कि गाँववाले किसी की बात भी नहीं सुनते और चुपचाप अपने काम में लगे रहते है।

गाँववालों की हालत देखिए। गरज यह कि उन्होंने अपने मुँह से मुझसे कुछ भी न कहा, लेकिन उनके सारे काम और उनकी सारी हालतें मुझसे उनकी कहानी मूक भाषा में कह रही थीं और यह बात साफ जाहिर कर रही थीं कि वे लोग इतने ज्यादा गरीब और बेकार हो गये हैं कि उनकी जिन्दगी में किसी किस्म का लुत्फ ही नहीं रह गया है।

किसी तरह खाना खा लेना, किसी तरह दिन काट लेना यही उनके काम हो गये है। हम शहर के लड़कों का, जिन्हे खाने-पीने और आराम से रहने का सुख मिला हुआ है, यह

भारी बोझ

फर्ज है कि हम गाँव मे जायँ, गाँववालों की गिरी हुई हालत को देखें, उसको सुधारें और इस तरह की जो भी कोशिश हो सकती है, करें।

दुर्बल गाय और बछड़ा

के झोंको के साथ गर्द उड़कर उनके खानों में पड़ रही थी। मगर इसकी उनको जरा भी परवा न थी। उनसे भी मैंने सफ़ाई की बहुत सी बातें बतलाई मगर उन्होंने भी कुछ ख़्याल न किया।

अब तीसरा नज्जारा देखिए। एक बुढ़िया को मैंने एक गाय दुहते हुए देखा। गाय हाल की बिआई हुई थी। वह बहुत दुबली थी। दूध भी बहुत मुश्किल से निकल रहा था। गाय का बछड़ा, जो दूध पीने को बना हुआ है, एक दूसरे आदमी द्वारा पकड़ रक्खा गया था। बेचारा भूख के मारे तड़प रहा था। यह बहुत ही दर्दनाक नज्जारा था। मैंने उस बुढ़िया से पूछा, "माँ, तुम अपनी इस गाय को काफी भूसा क्यों नहीं देती हो? अगर तुम अपने बछड़े को काफी दूध पीने को न दोगी तो तुम्हारा बछड़ा बहुत कमजोर हो जायगा और वह खेती के काम के लायक न रह जायगा।" लेकिन बुढ़िया ने मेरी बात का कुछ भी ख़्याल न किया, और मैं आगे बढ़ा।

मैं रास्ते भर यही सोचता जाता था कि यह गाँव कैसा मनहूस और गंदा है। मैं यह भी सोचता जाता था कि आखिर इन सब बातों

ही वजह क्या है। मैं इसी उधेड़-बुन में जा रहा था कि सामने से मुझे एक औरत आती हुई दिखाई पड़ी। उसके सर पर एक बहुत बड़ा बोझ था। वह कुछ चीजें बाजार में बेचने ले जा रही थी। मैंने पूछा "क्यों इतना बड़ा बोझा तकलीफ सहकर इस तरह लिये जाती हो? इन चीजों को दो बार में ले जा सकती हो।" उसने भी इसका कोई जवाब न दिया। मुझे ऐसा जान पड़ा कि गाँववाले किसी की बात भी नहीं सुनते और चुपचाप अपने काम में लगे रहते हैं।

गाँववालों की हालत देखिए। ग़रज यह कि उन्होंने अपने मुँह से मुझसे कुछ भी न कहा, लेकिन उनके सारे काम और उनकी सारी हालतें मुझसे उनकी कहानी मूक भाषा में कह रही थीं और यह बात साफ जाहिर कर रही थी कि वे लोग इतने ज्यादा गरीब और बेकार हो गये हैं कि उनकी जिन्दगी में किसी किस्म का लुत्फ़ ही नहीं रह गया है।

भारी बोझ

किसी तरह खाना खा लेना, किसी तरह दिन काट लेना यही उनके काम हो गये हैं। हम शहर के लड़कों का, जिन्हें खाने-पीने और आराम से रहने का सुख मिला हुआ है, यह फर्ज है कि हम गाँव में जायँ, गाँववालों की गिरी हुई हालत को देखें, उसको सुधारें और इस तरह की जो भी कोशिश हो सकती है, करें।

एक परी की कहानी

लेखिका, श्रीमती मनोरमा चौधुरी एम० ए०

बहुत दिनों की बात है। स्वर्ग की परियाँ जिस समय पृथ्वी की तरफ चाँदनी रात में एकटक देखा करती थीं उस समय उनको यहाँ उतर आने की इच्छा होती थी। परन्तु वे आकाश की परियाँ ठहरीं—वे भूमि पर किस तरह आ सकेंगी!

जब रात्रि में नदी का जल चाँदनी से चमकता था, वृक्षों के पत्ते चाँदी के बने मालूम होते थे, तब सब परियाँ पृथ्वी की सैर करने के लिए व्यग्र होती थीं। उनकी इस प्रबल इच्छा को देखकर चन्द्रमा ने अपनी किरणों की सीढ़ी बनाई, जो हवा के समान हलकी और पत्थर जैसी कड़ी थी। चन्द्रमा की रश्मियों की सीढ़ी बनाकर परियाँ पृथ्वी पर उतर आईं और नील कमल के एक सरोवर में अपने मूल्यवान् कपड़े, मुकुट और पंख उतारकर उत्साह से कलरव करती हुई नहाने लगीं।

घटना-चक्र से उस रात्रि में एक शिकारी उसी सरोवर के निकट एक वृक्ष के नीचे सो रहा था। परियों का कोलाहल सुनकर वह जाग गया और चुपके से उनकी क्रीड़ा देखने लगा। इतने में उसकी दृष्टि परियों के कपड़ों और मुकुटों पर पड़ी। उनमें से जो पोशाक और मुकुट सर्वश्रेष्ठ थे उनको चुराकर उसने पेड़ की आड़ में छिपाकर रख लिया। उसने सोचा कि इस पोशाक की अधिकारिणी अवश्य ही कोई सुन्दर परी होगी। मैं उस से अपना विवाह करूँगा।

परियाँ जब नहा चुकीं तब अपने अपने कपड़े और मुकुट पहिनकर स्वर्ग जाने को तैयार हुईं। उनमें जो सबसे छोटी परी थी उसको अपना कपड़ा या मुकुट न मिला। बिना मुकुट के वह स्वर्ग में प्रवेश न कर सकती थी। वह खड़ी खड़ी रोने लगी। परियों ने सब जगह ढूँढ डाला, परन्तु छोटी परी की पोशाक किसी को न मिली।

उस समय रात्रि बीत चुकी थी। अब परियाँ छोटी परी के लिए ठहर न सकीं। वे अपनी छोटी बहिन को पृथ्वी पर अकेली छोड़कर स्वर्गलोक को चली गईं।

सूर्योदय के साथ साथ चाँदनी की सीढ़ियाँ अदृश्य हो गईं और छोटी परी, जिसका नाम चन्द्रसेना था, वहीं बैठकर रोने लगी।

प्रभात होते ही शिकारी उसके पास आया और उसको ढाढस बँधा कर उसने अपनी पत्नी बनाने की इच्छा प्रकट की। निरुपाय होकर चन्द्रसेना राजी हो गई। अब दोनों वहीं छोटी सी कुटिया बनाकर रहने लगे। उस कुटिया में एक गुप्त कोठरी बनाकर उसमें शिकारी ने परी के आभूषण छिपाकर रख दिये। उसको यह डर था कि अपने आभू

पण पाते ही चन्द्रसेना मृत्युलोक छोड़कर स्वर्ग चली जायगी।

बहुत दिन बीत गये परन्तु स्वर्ग से निर्वासित होने का दुःख चन्द्रसेना के मन से दूर न हुआ। शिकारी के बहुत समझाने पर भी वह चाँदनी रात में रोया करती थी। उसको अपनी पुरानी याद आती थी।

क्रमशः चन्द्रसेना के चन्द्रकेतु, चन्द्रध्वज और चन्द्रमुख नामक तीन लड़के हुए और एक छोटी सी पुत्री भी हुई, जिसका नाम पद्माक्षी रक्खा गया।

एक दिन शिकारी को खबर मिली कि एक दूर नगर में उसके पिता मृत्युशय्या पर पड़े हैं और उन्हें अपने पुत्र को अंतिम बार देखने की इच्छा है। यह सुनकर शिकारी तुरन्त ही पिता के पास जाने को तैयार हो गया। जंगल में अकेली पड़े रहने की शंका से चन्द्रसेना रोने लगी परन्तु शिकारी उसको अपने तीन पुत्रों के हाथ में सौंपकर चल दिया, क्योंकि वह अपने पिता के प्रति कर्तव्य विमुख होना न चाहता था।

जाते समय शिकारी ने अपने बड़े पुत्र चन्द्रकेतु के हाथ में उस गुप्त कोठरी की चाभी दी और उसको उस कोठरी को खोलने के लिए बारम्बार मनाही कर दी, क्योंकि वहीं पर उसने चन्द्रसेना की शिरोमणि रक्खी थी।

जब शिकारी चला गया, चन्द्रकेतु को यह जानने का बड़ा कौतूहल हुआ कि उस कोठरी में क्या है। बहुत कोशिश करने पर भी वह कोठरी खोलने के लोभ को न रोक सका। जैसे ही उसने कोठरी खोली, मुकुट में जड़े हुए मणिमाणिक्य की प्रभा से चारों ओर का अन्धकार हट गया। चन्द्रकेतु ने मुकुट को हाथ में लेकर सोचा कि एक बार अपनी माता को पहिनाकर देखें कि वह उससे कितनी सुन्दर लगेगी।

चन्द्रसेना इस समय पद्माक्षी को गोद में लेकर उसे सुला रही थी। जैसे ही उसने चन्द्रकेतु के हाथ में मुकुट देखा, उसके हाथ से छीनकर अपने सिर पर रख लिया। अब उसे अत्यन्त आनन्द हुआ।

जब रात्रि हुई और चन्द्रसेना की सब सन्तानें सो गईं, चन्द्र की किरणों से बनी हुई सीढ़ी से उतरकर चन्द्रसेना की परी-सहेलियाँ पृथ्वी पर उतर आईं और अपनी छोटी बहिन को अपने साथ ले जाने को तैयार हुईं। चन्द्रसेना को अपनी सन्तान से बहुत प्रेम था; इस कारण उसने अपनी छोटी सी पुत्री पद्माक्षी को, स्वर्ग जाते समय, साथ ले लिया।

दूसरे दिन जब चन्द्रकेतु, चन्द्रध्वज और चन्द्रमुख की निद्रा टूटी, उन्होंने अपनी माँ और बहिन को न देखकर रोना-पीटना शुरू किया। उन्होंने समझा कि किसी डाकू ने उनको मुकुट के लोभ से हरण कर लिया है। चन्द्रकेतु ने भाइयों को किसी तरह शान्त किया। वह धैर्यपूर्वक पिता के आने की बाट जोहने लगा।

उस रात्रि में जब वे अपनी शय्या पर लेटकर बातें करने लगे, तब परियाँ मुकुट

पहिले चन्द्रमा की किरणों से उतरती हुई दिखाई पड़ी। उनके बीच में अपनी खोई हुई माता को देखकर बच्चों के हर्ष का ठिकाना न रहा। चन्द्रकेतु ने कहा—अम्मा, मुझे वह मुकुट दे दीजिए। पिताजी ने गुप्त कोठरी खोलने को मना कर दिया था। मैंने उनकी आज्ञा नहीं मानी और मुकुट निकाला। बड़ा अन्याय हुआ। मैं मुकुट को जहाँ का तहाँ रख देना चाहता हूँ जिससे पिताजी लौट आने पर मुझसे नाराज न हों।

चन्द्रसेना ने उसको मुकुट न देकर उन सभी को स्वर्ग के स्वादिष्ट फल चखने को दिये। फल खाकर वे अपने शोक को भूल सा गये। चन्द्रसेना तब चन्द्रमुख को लेकर स्वर्ग चली गई, क्योंकि उसके लिए सन्तान से बिछुड़कर जीवन धारण करना असम्भव हो गया था। इसी तरह दूसरी रात में आकर वह चन्द्रध्वज को ले गई, क्योंकि प्रतिदिन एक से अधिक मनुष्य को स्वर्ग में ले जाने का अधिकार उसको न था।

जब चन्द्रकेतु के जाने की बारी आई, उसने किसी तरह अपनी माता के साथ स्वर्ग जाना स्वीकार न किया। वह जानता था कि कुटिया में किसी को न पाकर उसका पिता बहुत ही दुखी होगा। चन्द्रकेतु अकेला उस कुटिया में पिता की बाट जोहने लगा।

कुछ दिनों के बाद जब शिकारी अपने पिता की मृत्यु हो जाने पर जङ्गल में लौट आया तब चन्द्रकेतु ने रोते रोते अपना अपराध स्वीकार किया और अपनी सारी कहानी बताई। चन्द्रकेतु की असामान्य पितृ-भक्ति देखकर शिकारी आश्चर्यान्वित हो गया और उसको क्षमा किया। पिता-पुत्र उसी जङ्गल में जीवन व्यतीत करने लगे।

प्रति चाँदनी रात में चन्द्रसेना उन दोनों से मिलने आती थी परन्तु प्रभात होते ही स्वर्ग को भाग जाती थी। उस शिकारी को मृत्युलोक का निवासी होने के कारण, स्वर्ग जाने का अधिकार न था।

अपनी सुन्दरी पत्नी के विरह से वह सर्वदा मन ही मन शोकार्त्त रहता था। उसका शरीर दुर्बल होता गया। अन्त में एक दिन वह मर गया। अब चन्द्रकेतु संसार में अकेला रह गया। उस रात्रि में जब वह अकेला रो रहा था, उसकी माँ उसके निकट आई और उसको लेकर चाँदनी की सीढ़ियाँ पारकर स्वर्ग पहुँच गई।
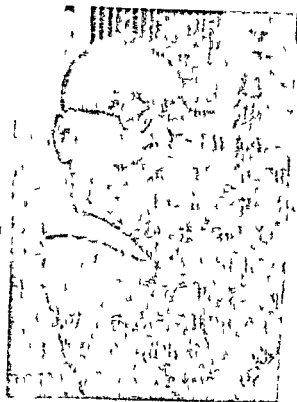
श्रीयुत कृष्ण साइल

यह आप सुनें

जनवरी में छपी कविता "यह आप बतायें" के उत्तर में

लेखक, श्रीयुत कृष्ण साइल

ज्योंही हम कविता पायेंगे
त्योंही प्रेस को भेजवायेंगे
बाल-सखा में छपवायेंगे
पर नहीं सखाओं को दिखलायेंगे
मजा फिर कैसा आयेगा !

यदि बालक रोगी हो जायें
दवा न खायें, फैल मचायें
हरगिज उनको हम न मनायें
बैठ अकेले माल उड़ायें
मन उनका ललचायेगा !

कैमरा हम दौड़कर लायें
बढ़िया उनका चित्र बनायें
बालसखा में उसे छपायें
द्वार पर यदि सखा सब आयें
हृदय हर्ष से भर जायेगा !

फड़क उठे हम, खुशी मनायें
सखा-सखी यदि नाच दिखायें
पर नहीं अकेले नाचने जायें
वर्मा को भी पकड़कर लायें
जोड़ा अनुपम बन जायेगा !

तुम हँसे क्यों

लेखक, श्रीयुत कृष्णमनोहर सिंह गोयल

एक राजा था। एक रानी थी। राजा का स्वभाव सरल और दयालु था। रानी का स्वभाव उग्र और क्रोधी। एक दिन राजा और रानी सग बैठे खा रहे थे। राजा के हाथ से छूटकर एक रोटी का टुकड़ा जमीन पर गिर पड़ा और सयोगवश एक बूँद शहद की भी टपक पडी। एक चींटी ने यह देखा। वह दौड़ी हुई अपने साथियो के पास गई और बोली, "आओ, चलो, आज हमारे भाग्य खुल गये। राजा का शहद का भाडार पृथ्वी पर विखरा पड़ा है और ज्ञात होता है कि राजा का रोटियों भरा छकड़ा भी उलट गया।" राजा ने यह बात सुन ली। उसको हँसी आ गई। उसको अकारण हँसते देखकर रानी को क्रोध आ गया। उसने डपटकर पूछा, "तुम हँसे क्यो?" राजा चुप हो गया। रानी ने मुँह फुला लिया। वह दिन भर राजा से नहीं बोली।

एक दिन राजा नहाकर आया और पलँग पर बैठ गया। वहाँ मक्खी का एक जोड़ा बैठा हुआ था। एक ने कहा, "आओ, घूमने चलें।" दूसरे ने कहा, "नहीं, अभी राजा नहाकर आया है। उसके पर चन्दन तथा अन्य सुगन्धित जावेंगे। उसमें लो, फिर हमारी ओर दे ठाट का जोड़ा है। कैसी बढ़िया सुगन्ध है।" राजा ने यह बात सुनी। उसको हँसी आ गई। उसको अकारण हँसते देखकर रानी को क्रोध आ गया। उसने डपटकर पूछा, "तुम हँसे क्यो?" राजा चुप हो गया। रानी ने मुँह फुला लिया। वह दिन भर राजा से नहीं बोली।

एक दिन राजा और रानी खा रहे थे बूरे का एक दाना पृथ्वी पर गिर पडा। ए छोटे से कीड़े ने उसको देखा। वह चिल्लाक अपने साथियो से बोला, "आओ भाइयो, यह आओ; दावत उड़ाने। राजा के महल शक्कर का छकड़ा उलट गया है।" राजा यह बात सुनी। उसको हँसी आ गई उसको अकारण हँसते देखकर रानी के क्रोध आ गया। उसने डपटकर पूछा, "तु हँसे क्यो?" राजा चुप हो गया। क्रोध के मा रानी का मुँह फूल गया। लेकिन उसने फि प्रश्न किया—तुम हँसे क्यो? क्या तुम मु पर हँसते हो?

राजा ने कहा—नहीं, भला मैं तुम्हा ऊपर क्यों हँसूँगा?

ने क्रोधित होकर कहा—मुझके कारण बताओ।

एक साँप की दुम पर ए वह उससे दबकर छट

...टाने लगा। मैंने पत्थर हटाकर उसको स्वतन्त्र कर दिया। साँप बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मुझको जानवरों की बोली सिखा दी।" यह कहकर राजा ने अपने हँसने के कारण बयान कर दिये।

रानी ने कहा—मुझको भी वह बोली सिखा दो।

राजा ने कहा—यदि मैं तुमको वह बोली सिखाऊँगा तो मुझको अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा, क्योंकि साँप ने कहा था कि यदि तुमने यह भेद किसी को बताया तो फौरन तुमको आग में जलकर प्राण त्यागने होंगे।

लेकिन रानी न मानी। हाथ धोकर राजा के पीछे पड़ गई।

राजा रानी को बहुत प्यार करता था। उसका आग्रह न टाल सका। कहा—बाग में चलो। वहाँ बताऊँगा।

राजा और रानी, दोनों रथ पर बैठकर बाग को चले। रथ में चार सफेद घोड़े जुते थे। रास्ते में बकरों का एक झुण्ड मिला।

एक घोड़े ने कहा—बकरे की जाति बड़ी मूर्ख होती है।

बकरों के सरदार को क्रोध आ गया। उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—क्या कहा? बकरे मूर्ख होते हैं! तुम गदहे हो। बकरे से भी अधिक मूर्ख हो। तुम्हारे मुँह में लगाम डालकर तुमको वश में किया जा सकता है। तुमसे अधिक मूर्ख शायद इस संसार में तुम्हारे राजा के अतिरिक्त और कोई न होगा।

राजा का सिर लज्जा से झुक गया। घोड़े को जोश आ गया। उसने कहा—ऐ मूर्ख, तुझको इतना साहस कि मेरे राजा को अपशब्द कहता है!

बकरे ने कहा—तुम्हारा राजा मूर्ख नहीं तो क्या है! वह एक हठी स्त्री के कारण अपनी विद्या का अपव्यय कर रहा है। विद्या सबसे बड़ा धन है। जो मनुष्य अपने धन की रक्षा नहीं कर सकता वह मूर्ख है।

घोड़ा चुप हो गया। राजा रथ से उतर पड़ा। वह बकरे के पास गया। उसने कहा—मित्र, तुम सच कहते हो। किन्तु मैंने रानी को वचन दे दिया है। मुझको वह पूरा करना पड़ेगा। क्या तुम कुछ सलाह दे सकते हो?

बकरा दाढ़ी खुजाने लगा। फिर उसने राजा के कान में कुछ कहा। राजा खुश हो गया और रथ पर जा बैठा।

राजा रानी बाग में पहुँचे। रानी ने कहा—अब बताओ।

राजा ने कहा—ऐसे नहीं। इसके लिए कुछ कष्ट सहना होगा।

रानी ने कहा—मैं तैयार हूँ।

राजा ने कहा—जानवरों की तरह चारों हाथ-पैरों से खड़ी हो जाओ।

रानी ने वैसा ही किया

बताओ।

राजा ने कहा—अभी नहीं, पहले तुम्हारी पीठ पर सौ कोड़े पड़ेंगे। ये तुमको चुपचाप सहने होंगे। यदि तुमने सह लिया तो तुम इस विद्या को प्राप्त कर सकोगी और यदि तुम न सह सकी तो तुम इस विद्या की अधिकारी नहीं।

कोड़ो का नाम सुनकर रानी काँप उठी पर अपनी जिद पर अटल रही। उसने कहा—मारो, मैं तैयार हूँ।

राजा ने कोड़ा उठाया और सड़ से उसकी पीठ पर दिया। रानी दर्द के मारे तड़प उठी। उसने अपना होठ काटा और चुप रही। दूसरा कोड़ा पड़ते ही उसकी पीठ रक्त से लाल हो गई लेकिन उसके मुख से आह भी नहीं निकली। तीसरा कोड़ा वह न सह सकी। उसके मुँह से चीख निकली और वह अचेत होकर गिर पड़ी।

राजा उसको उठाकर महल में ले गया बड़ी सावधानी और यत्न से रानी की चिकित्सा की। रानी शीघ्र अच्छी हो गई। लेकिन फिर कभी उसने उस विद्या को सीखने का हठ नहीं किया और न प्रश्न किया कि तुम हँसे क्यों।

मातृ-भूमि

लेखक, श्रीयुत देवीराम सिहावा

ऐ मातृ-भूमि! तेरे
चरणों में शिर नवाऊँ।
चलना सिखाया तूने,
चढ़ना सिखाया तूने।
हँसना भी है सिखाया,
कैसे तुझे हँसाऊँ॥
रज-धूल, खेले-खाई,
फीकी है अब मिठाई।
चीजे नही जगत में,
मैं क्या तुझे चढ़ाऊँ॥
खेला था वक्ष-स्थल पर
गुड़िया बना बनाकर।
गुड़ियों से था सजाया,
किससे तुझे सजाऊँ॥
तेरी है शोभा न्यारी,
लगती मुझे हो प्यारी।
है मौन मेरी वाणी,
कैसे गाऊँ॥

वेशी

लेखक, भागुत मथन ज्ञानिमग्रता, साहित्यालङ्कार, जर्नलिस्ट, नरसिंहपुर

पेरिस से कुछ मील की दूरी पर वेशी नामक एक छोटा सा शहर है, जो झरनों के पानी के गुणों से स्वास्थ्यप्रद है। योरप में कई शहर ऐसे हैं जहाँ झरनों के पानी में प्राकृतिक ऐसे गुण हैं जिनसे पेट की बीमारियों और खून के विकार गठिया आदि को लाभ होता है। इसी लिए हजारों आदमी इनमें स्नान करने और इनका पानी पीने के लिए वहाँ जाते हैं। फ्रांस में वेशी, लेवन, नीसल इत्यादि इसी तरह के कई शहर हैं। इसी तरह इंग्लिस्तान में बाथ, हेरूगेट, चेकूलूकिया, कार्लस्बाद और मरीनबाद, कीवर प्रसिद्ध स्थान हैं। इनमें से किसी स्थान का पानी गठिया के लिए, किसी का फोड़े फुंसी के लिए और किसी का पेट-सम्बन्धी विकार के लिए लाभदायक है।

वेशी का पानी हृदय-रोग और गले के लिए उत्तम है। यहाँ के झरनों से हर साल लाखों की आमदनी होती है। वेशी में ११ झरने हैं। इनका वैज्ञानिक अन्वेषण किया जा चुका है। हर एक अलग-अलग विकार के लिए सिद्ध हो चुका है। किसी से दिल, किसी से जठराग्नि और किसी से गठिया को लाभ होता है। यहाँ डाक्टर के परामर्श से तीन हफ्ते इलाज होता है। डाक्टर झरने का निश्चय करके, प्रतिदिन और प्रतिबार पानी इस्तेमाल करने की जब आज्ञा देता है, तब कहीं इलाज प्रारम्भ होता है। डाक्टर दिन और सप्ताह में चढ़ा-उतार-क्रम भी बतलाते हैं। जैसे किसी को पहले सप्ताह में ५० ड्राम पानी बतलाया तो दूसरे सप्ताह में ७५ ड्राम और तीसरे में १०० ड्राम अथवा पहले से क्रम किया जाता है। दिन में भी ४-५ बार या कम पीने के लिए डाक्टर बतलाते हैं। यहाँ पानी का पीना ही मुख्य इलाज है।

वेशी के सब झरने एक दूसरे के पास हैं। सभी शीशे की दीवालों से घिरे हुए हैं। इनका पानी नल के जरिये लिया जाता है। हर एक झरने में ३-४ नल लगे रहते हैं। हर एक नल के सामने पानी देने के लिए लड़कियाँ खड़ी रहती हैं और वहीं खूँटियों पर नम्बरवार गिलास टँगे रहते हैं। बहुत से अपना गिलास खुद खरीद लेते हैं। झरनों के ऊपर शीशे की छत भी रहती है। आने-जाने का रास्ता पक्का बना हुआ रहता है जिससे बरसात में कीचड़ न होने पावे।

पानी पीने के पहले अवस्थानुसार मील दो मील का घूमना बतलाया जाता है, जिससे व्यायाम भी हो जाता है।

के आसपास बगीचे और होटल हर एक के लाभ के लिए बने हैं। बगीचे मे कुर्सियाँ पड़ी रहती है, जहाँ सभी आराम से बैठ सकते है। वहाँ पानी पीने का समय भी निश्चित है। सुबह १० से १२ और शाम को ४ से ७ तक का समय ही मुख्य है।

पानी पीने के अलावा इलाज के दूसरे नियम भी हैं। यदि किसी को जुकाम या गले का दर्द हो तो नाक से पानी डाला जाता है अथवा कुल्ली कराई जाती है। गठिया के लिए स्नान कराये जाते है। स्नानागार भी बने हुए हैं, जिनमें स्त्री-पुरुषों के कमरे अलग अलग हैं। सब कमरों में टब, तौलिया और गर्म पानी का प्रबन्ध तथा स्त्री-पुरुप नौकर रहते हैं। स्नान करने के भेद भी कई है। पहले १० मिनट गरम पानी के टब में बैठे रहना, फिर गरम तौलिया से सारे शरीर को लपेटकर भाप देना जिससे शरीर के छिद्र खुल जावें। फिर पाउडर लगाकर मालिश करना और खुरदरे छल्ले से शरीर रगड़ना जिससे खून का दौरान बढ जाता है। लिटा करके भी स्नान कराया जाता है। जैसे टब में लिटा करके तेज गरम पानी के फव्वारों से पेट पर पानी डाला जाता है। यह पेट-दर्द के लिए लाभदायक होता है।

कभी कभी रबड के गद्दों पर लिटाकर तीन ओर से गरम पानी के फव्वारे खोल जाते है और शरीर की जोर-जोर से मालिश की जाती है। गठिया और जोड़ों के दर्द का इलाज इस तरह और मशीन के जरिये होता है। बहुत पुराने मर्ज का इलाज मशीन द्वारा होता है। स्नानागार और मालिशघर के पास ही मशीनघर है जहाँ बीसों प्रकार की मशीनें रहती है। शरीर के हर एक अवयव को स्फूर्ति देने की अलग अलग मशीनें हैं। इनमें से कई मशीनें खुद चलती हे और कई हाथ से चलाई जाती हैं। इनमे भली भाँति कसरत होती है। वेशी के झरने का पानी बोतलों में भी भरकर बिकने जाते है और उससे हजारों रुपये की आमदनी होती है। लेकिन यहाँ के सिर्फ ४ झरनों का ही पानी बोतलों में भरा जाकर बिकता और सबसे अधिक कैलेस्टाइन (Calestine झरने का ही पानी बिकता है। पानी नल के जरिये फैक्ट्रियों में भी पहुँचाया जाता है हर एक झरने के नल भिन्न भिन्न रङ्ग होते हैं। बोतलें भी रेल से सीधी फैक्ट्रि में आती हैं, मशीनों के जरिये कमरे में धुल हैं और फिर मशीनों के जरिये भाप से सुख जाती हैं। मशीन ही के जरिये उनमें पा भरा जाता है। काग, लेबिल आदि म काम मशीनों के ही जरिये होते हैं।

वेशी में बच्चों का पार्क भी एक अ चीज है। सुबह से १२ बजे तक और २ ७ बजे तक यहाँ साधारण फीस पर बच्चे है। पार्क में खेलने, जी बहलाने का प्रबन्ध किया गया है। भूलभुलैया, ह

फिले आदि सभी उनके लिए मौजूद है। वहां ऊंचे-ऊंचे चबूतरे बने हुए हैं। नीचे की ओर घास है, जिससे गिरनेवालों को चोट नहीं लगती। यहीं पर एक लकड़ी का पिंजरा है, जिससे निकलने में बच्चों का व्यायाम भली भाँति हो जाता है। होटलों में परहेज का और साधारण, दोनों प्रकार का खाना बनता है। यहाँ सिनेमा और जुआ-घर भी है। मुसाफिरों के आराम के लिए यहाँ काफी प्रबन्ध है।

छिपा खजाना
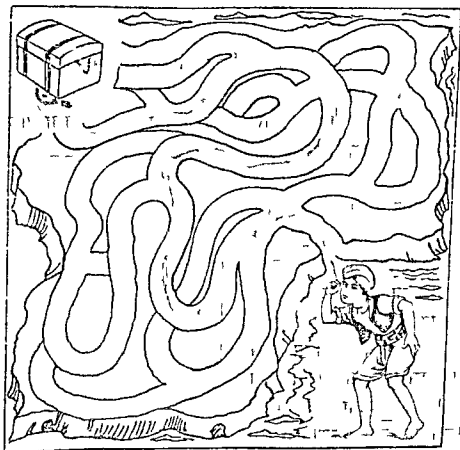
यह लड़का जमीन में गड़े हुए खजाने की खोज में जा रहा है। एक पेचीदा रास्ते पर चलकर उसको खजाना मिल सकता है। क्या आप इस रास्ते पर चलकर खजाने तक पहुँच सकते हैं? चलते हुए रास्ते की किसी लकीर को न काटना चाहिए।
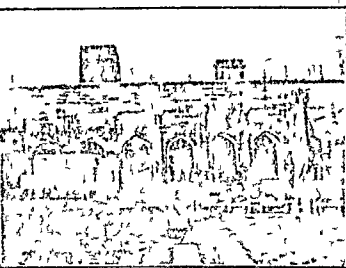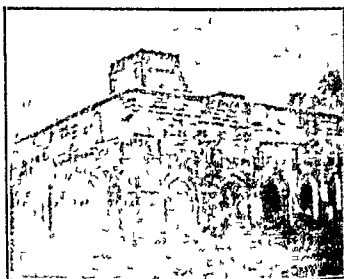
क़िले का एक भाग

चुनार के किले का एक भीतरी दृश्य

चुनार का क़िला

लेखक, देवदत्त द्विवेदी

आप लोगों ने चुनार के मिट्टी के चमकदार खिलौने और बरतन देखे होंगे। यह जगह मिर्जापुर जिले में है। यहाँ एक किला भी है जिसे चुनार का किला कहते हैं। भारत में ऐसे बहुत कम किले मिलेंगे जो चुनार के किले से अधिक प्राचीन हों। इसके चारों ओर का प्राकृतिक दृश्य बहुत सुंदर है। यह किला एक ऊँची पहाडी पर बना हुआ है। इसके दो ओर गगा नदी बहती है और बाकी दो ओर पहाडी घाटियाँ हैं। पहाडी पर स्थित होने की वजह से यहाँ की आबहवा स्वास्थ्यप्रद है। इस किले का इतिहास भी अत्यत रोचक है। कहा जाता है कि पुराने जमाने में इस किले को राजा विक्रमादित्य ने अपने भाई भर्तृहरि के लिए बनवाया था। राजा भर्तृहरि ने राज्य छोडकर चुनार के किले की पहाड़ी में रहकर गङ्गा-स्नान और ईश्वर की प्रार्थना में कई साल बिताये। हिन्दुओं के आखिरी राजा पृथ्वीराज ने इस
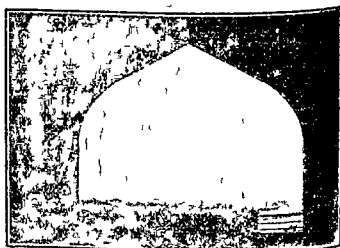
क़िले का एक सुदर महराब

किले को और भी ऊँचा किया और उसे शत्रुओं से बचाने के लिए जगह-जगह पर और भी मजबूत बनवा दिया। पृथ्वीराज को

मारकर शहाबुद्दीन गोरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया। उसके बाद बहुत दिनों तक यह पठानों के हाथ में रहा।

पठानों के बाद हुमायूँ ने इस किले पर कब्जा कर लिया, लेकिन शेरशाह सूरी
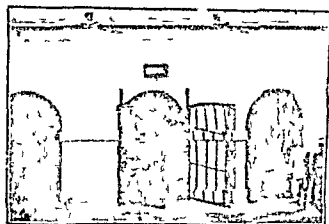
रिफ़ार्मेटरी स्कूल

ने हुमायूँ को हराकर इस किले को अपने अधिकार में रक्खा। सूर वंश के नष्ट हो जाने पर अकबर बादशाह ने इस किले को जीत लिया। तब से कई साल तक यह मुगल बादशाहों के हाथ में रहा। मुगलों का राज्य समाप्त हो जाने पर यह किला अवध के नवाब के मंत्री के कब्जे में आया और सन् १७७२ ई० में यह अँगरेजों के हाथ में आया। इस किले में बहुत दिनों तक फौजी छावनी रही। लगभग ९ साल बाद यहाँ एक रिफार्मेटरी स्कूल खोला गया जो अब तक मौजूद है। इस स्कूल में छोटी अवस्था के, जुर्म करनेवाले, नाबालिग कैदी रक्खे जाते हैं। उन्हें हर
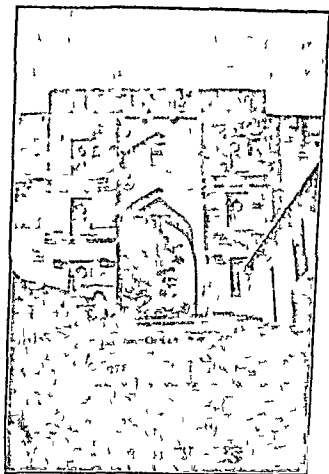
चुनार के किले का दरवाजा

प्रकार की शिक्षा दी जाती है, जिससे वे स्कूल छोड़ने के बाद अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें।

कसरत करने से लाभ

लेखक, श्रीयुत अर्जुन सिंह

प्यारे बच्चो ! तुमने रामायण की कथा तो सुनी होगी, जिसमें हनुमानजी ने समुद्र को लाँघकर लंका में रावण के राक्षस सिपाहियों को मारा और सीताजी की खबर लाये थे। हनुमान्जी की तो अब तक पूजा होती है। महावीर (हनुमान्जी) का प्रसाद तो तुमने सैकड़ों बार (लड्डू और बताशे) खाया होगा। हनुमानजी बड़े बलवान् थे। अब भी पहलवान लोग लड़ते समय महावीरजी का नाम लेकर लड़ते हैं। तुम्हारे स्कूल में भी जब खेल कूद होते है, तो कोई लड़का तो दौड़ में, कोई कूदने में, कोई कुश्ती लड़ने में और कोई गोला फेंकने में अव्वल आता है। जब सालाना जलसे में इन लोगों को सारे स्कूल के सामने इनाम मिलता है तो सब लड़के तालियाँ पीटकर खुशी मनाते है। तब तो तुम्हारे मन में भी यह लालसा होती होगी कि हम भी आज ऐसे ही खेलों मे अव्वल आते तो सब लोग इसी तरह हमारा भी आदर करते और साथी भी कहते कि वाह, आज तो तुमने कमाल कर दिया और खूब इनाम मारे। मगर कुछ "ऐसे भी लड़के होगे जो अपने मन में कहते होगे, क्या करना है, हम तो कमजोर, दुबले-पतले लड़के है। क्या

श्री अर्जुन सिंह

की बात नहीं।" और मन मारकर चुपचाप बैठे रहते हैं। नहीं, ऐसी बात नहीं। आओ, हम तुम्हें एक ऐसी तरकीब बतायें, जिससे तुम भी कहो कि किसी ने ऐसी हिकमत बताई। अब तो हमीं हम नजर आते हैं।

देखो, जब मैं सात या आठ बरस का लड़का था तो बड़े बड़े मजबूत पहलवानों और तगड़े सिपाहियों को और खासकर जब कि पल्टन के जवान सिपाहियों को वर्दी लगाकर कदम मिलाकर बाजे के साथ सड़क पर निकलते देखता तो मुझे बड़ा अचम्भा होता। मैं कहता कि वाह वाह, क्या मैं भी कभी ऐसा हो सकूँगा। पूछने से मालूम हुआ कि कवायद और कसरत से आदमी मजबूत हो जाते हैं। फिर क्या था, मैंने ९ वर्ष की उम्र में ही कसरत शुरू कर दी। स्कूल में जिमनास्टिक मास्टर साहब ने मेरा शौक देखकर मुझे जिमनास्टिक (एक तरह की अँगरेजी कसरत) भी सिखा दी। तब तो मुझे एक तरह का नशा सा हो गया। जब कभी पढ़ने से छुट्टी पाता तो झट कसरत में लग जाता। साल भर के अंदर ही मैं दर्जे के सब लड़कों से मजबूत हो गया और चार साल के बाद तो स्कूल के मजबूत लड़कों में मेरी गिनती होने लगी। और मैं सालाना खेलों में बराबर इनाम पाता रहा। सन् १९११ में इलाहाबाद में बड़ी नुमाइश हुई। उसमें बड़े बड़े पहलवान—किक्कड़सिंह और गामा भी—आये। इनमें सबसे मशहूर राममूर्ति नायडू थे जो अपनी छाती पर हाथी रख लेते थे और चालीस या पचास मन का पत्थर रखवाकर उस पर बड़े बड़े लोहे के घन चलवाते थे और एक साथ ही दौड़ती हुई दो मोटरें (चालीस चालीस घोड़ों की ताकत-वाली) रोक लेते थे। उनको देखने के लिए हमारे स्कूल से कुछ विद्यार्थी गये। उनमें मैं भी था। उन्होंने हम लोगों को बहुत सी कसरतें बताईं जिन्हें करके मैं और मेरे साथी १५ मन तक का पत्थर अपने सीने पर रख लेते थे। अब मैं ४५ वर्ष का हो गया हूँ पर तब भी कसरत करते रहने से काफी तंदुरुस्त हूँ और अब तक खेलों में अव्वल इनाम पा रहा हूँ।

सुनो, बलवान् होने के सरल उपाय बताता हूँ। रात में दस बजे सो जाया करो। सुबह ४ या ५ बजे (जाड़े में ५ या ६ बजे) उठो और पाखाने वगैरह से निपटकर हाथ मुँह धो लो। दाँत साफ करो। अगर गर्मी का मौसम है तो नहा भी सकते हो। बस, लँगोट बाँधकर १५ या २० मिनट दंड-बैठक लगाओ और बाद में फौरन ही कपड़े पहन लो और दस मिनट टहलने के बाद अपने काम में लग जाओ। खाते वक्त खाना खूब चबाकर खाओ। खाने के वक्त जहाँ तक हो सके, पानी न पियो। अगर पीने की बहुत तबीयत हो तो बीच में पियो। खाना खाने के एक घंटे बाद पानी पीना चाहिए। चलते वक्त सीधे तनकर सामने देखकर चलो। जमीन की तरफ सिर झुका-

सदा घात में रहता हौआ कचन कैसे पाऊँ।
ले जाकर चुपके से उसको जगल में छिप जाऊँ॥
सावन की थी रात, घटाएँ छाई थी कारी कारी।
हाथ पसारे नहीं सूझता फैली ऐसी अँधियारी॥
खुश हो तैयार हुआ हौआ चलने की कर तैयारी।
चोर,उचक्कों को होती ह ऐसी ही रातें प्यारी॥
रात अँधेरी महा भयानक पानी बरसे झमझम।
बिजली चमके कौंधा लपके हवा चल रही सनसन॥
चुपके चुपके हौआ दानव महलों में घुस आया।
सोती हुई बिचारी कचन को ले बन को धाया॥

माधो विमला को घसीटते हुए एक तरफ ले जाता है। विमला रोती है। लड़के डर-कर इधर-उधर हट जाते हैं और धीरे धीरे फिर जमा होकर गाने लगते हैं—

बुरी खबर बिजली सी फैली नगर नगर मे।
रहीं बजारें बन्द शोक छाया घर-घर में॥
सोच सोच कचन की हालत डरते थे नर-नारी।
राजा-रानी चीख रहे थे 'मेरी कचन प्यारी'॥

सब लड़के रोने ऐसा मुँह बनाकर आँखों पर हाथ फेरते है जैसे आँसू पोंछ रहे हो। राम तीर-कमान आदि लेकर अकड़ता हुआ उसी ओर जाता दिखाई देता है जिस तरफ माधो और विमला गये है। लड़के उसकी ओर इशारा करके गाते है,—

बड़ा बहादुर एक बहेलिया रहता उसी नगर में।
लगा सोचने जाकर घेरूँ हौआ को जगल में॥
मार उसे कचन ले आऊँ जग में नाम कमाऊँ।
जीवन होवे सफल अगर पर-सेवा में मर जाऊँ॥
...चों हथियार चल दिया पहुँचा जाकर ...

देखा हौआ नाच रहा है खुश हो होकर मन में॥
कचन रोती चीख चीखकर 'कोई मुझे बचाओ'।
कहा बहेलिया ने 'मै आया अब तुम मत घबराओ'॥

राम माधो की तरफ बढ़ता है, माधो भी सम्हलकर खड़ा हो जाता है। लड़के उनकी ओर मुँह करके गाते है,—

बोला—'ओ दानव! चोर ठहर।
आ गया काल तेरे सिर पर'॥
हौआ बोला—'तू कौन बशर?
बढ़ता आता बे खौफ-खतर॥
क्या नहीं जानता तू मुझको?
क्या मौत पकड़ लाई तुझको?
क्या जीत सकेगा तू मुझको?
सारी दुनिया डरती मुझको'?
वह बोला—'बस हो! खबरदार।
हो जा लड़ने को अब तयार'॥
फिर हुई लड़ाई बड़ी ज़ोर।
सारी दुनिया में मचा शोर॥

राम और माधो लड़ने लगते हैं। लड़के गाते जाते हैं,—

तलवार चली बन्दूक चली।
फिर बल्लम भाले छुरी चली॥
दोनो ही वीर बाँकुडे थे।
दोनों ही लडनेवाले थे॥
दिन बीते, राते बीत चली।
पर लडते जाते वीर बली॥
उसने आ गुस्से में,
...आ की छाती में,

मारा कस कर, गिर पड़ा वहीं ।
सो गया सदा को उठा नहीं ॥

आख़िरी लाइन के गाते ही माधो गिर पड़ता है, विमला ख़ुश होकर नाचने लगती है। लड़के उनको घेरकर गाने लगते हैं,—

आओ, सब हिल-मिलकर गायें,
वीर बहलिया की जय जय ।
होआ मार, बचाई कंचन,
हम सबको कर दिया अभय ॥
बहुत दिनों के बाद हुई है,
आज हमारी यह मनमानी ।
कैसी सुन्दर बड़े मजे की,
आज सुनाई तुम्हें कहानी ॥

बन्दर

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण त्रिपाठी 'श्याम', विशारद

अम्मा ! सुनो जरा तुम मेरी, अभी हुई जो तुमको देरी ।
आया यहाँ एक था बन्दर, छत से कूद घुसा वह अन्दर ॥
रोटी थी जो लिये नवीना, उसे लपककर उसने छीना ।
मैंने डंडा मारा बल भर, छत पर वह झट गया उछलकर ॥
पर डंडा जब लगा न मेरा, तब उसने अपना मुँह फेरा ।
खों खों खों खों कर डरवाया, काढ़े दाँत और मुँह बाया ॥
जल्द नवीना को छपटाकर, भगे यहाँ से हम फिर डरकर ।
माँ ने कहा—सुनो तुम प्यारे ! बन्दर जायँगे सब मारे ॥
ये सब बड़े दुष्ट हैं होते, कृषक बिचारे इनसे रोते ।
उनकी खेती ये खा जाते, नहीं एक दाना भी पाते ॥
पकड़ मदारी है ले जाता, तब है इनको चचा बनाता ।
डंडे चार इन्हें है देता, नाच नचाकर पैसे लेता ॥
वहाँ नहीं इनकी कुछ चलती, सभी शरारत वहीं निकलती ।
जब तक दुष्ट न पीटे जाते, तब तक ऊधम खूब मचाते ॥

पाली हुई शहद की मक्खियों का एक छत्ता।

मधुमक्खियों का जीवन

लेखक, श्रीयुत माधव वामन खानखोजे, नागपुर

बालको, तुम लोगों में से शहद तो बहुतों ने चखा होगा परतु ऐसे बहुत कम विद्यार्थी होगे जिन्हें मधुमक्खियो के जीवन की सभी बातें मालूम हो। मै तुम्हें उनकी मनोरजक बातें बता रहा हूँ।

किसी मधुमक्खी के छत्ते को, यदि, हम, गौर से देखें तो हमें उसमें तीन प्रकार ... मक्खियाँ दिखाई देंगी। संपूर्ण छ... एक ही रानी मधुमक्खी होती है ... मक्खियो से बड़ी और तॉबे के रग की होती है। इसके पैर अन्य मक्खियो की अपेक्षा सुदर होते हैं। यह अपना बचाव डको से करती है। रानी का घर अन्य मधुमक्खियो के घरों की अपेक्षा बड़ा और सुदर होता है। मजदूर मक्खियाँ इसे बड़ा ही स्वादिष्ठ भोजन ... इस भोजन को शाही भोजन कहते है। इसे अपनी पूर्ण- ... लिए १६-१७ दिन लगते

है। यह दो या तीन वर्ष तक जीवित रहती है। वसंत ऋतु में छत्ते मे केवल स्त्री मक्खियाँ ही रहती है। रानी एक दिन में १५०० तक अडे देती है। पूर्णावस्था प्राप्त हो जाने के ७ दिन बाद अपने सपूर्ण जीवन मे यह केवल एक ही बार उड़ने जाती है। इस समय उसकी पुरुष मधुमक्खियो से भेंट हो जाती है। यह कार्य समाप्त हो जाने पर पुरुष मक्खियाँ मार डाली जाती है। इसके पश्चात् रानी अडे देना आरभ करती है।

जब छत्ते मे मधुमक्खियो की सख्या बहुत बढ जाती है, तब पुरानी रानी अपने आधे साथियो के साथ नये घर की खोज में निकल पडती है। यह किसी वृक्ष की डाली अथवा खोखले में बैठ जाती है। बाकी मक्खियाँ भी वहाँ रानी के चारों ओर इकट्ठी हो जाती है। इस समय छत्ते का आकार अगूर के गुच्छे की तरह दिखाई देता है। कुछ ही समय मे वहाँ नया छत्ता तैयार हो जाता है। इसी बीच मे पुराने छत्ते में नई रानी का जन्म होता है। यदि एक से ज़्यादा रानियो का जन्म किसी छत्ते में हो जाय तब कोई एक रानी अपने घर से बाहर निकलकर एक प्रकार की आवाज करती है जिससे उसकी उपस्थिति का पता दूसरी रानियो को लग जाता है। ये भी उसी तरह की आवाज मे उत्तर देती है। इनमें अधिकार के लिए आपस में युद्ध होता है जिसमें एक को छोड़कर बाकी सब रानियाँ मारी जाती है।

जाडे म मधुमक्खिया के घरा को पत्ता से ढक देते हैं ताकि उन्हें सर्दी न लगे।

छत्ते में मजदूर मक्खियो की संख्या सबसे ज्यादा रहती है। ये आकार में रानी से छोटी और पीले रग की होती है। ये डक से अपना बचाव शत्रुओं से करती है। एक बार काट चुकने पर ये डक बेकाम हो जाते हैं। इनकी आयु तीन-चार महीने के लगभग होती है। ये बहुत ही चतुर और परिश्रमी होती है। घर और बाहर का सभी काम इन्हे ही करना पड़ता है। कुछ दिन तक ये दाई का काम करती है। छोटी मक्खियों को तथा रानी को खिलाने पिलाने, उनकी सेवा करने और घर को स्वच्छ रखने का भार इन्हीं पर रहता है। छत्ते की भी रक्षा ये ही करती है। बड़ी हो जाने पर ये

किसकी लड़की ?

संकलित, कुमारी शकुन्तला
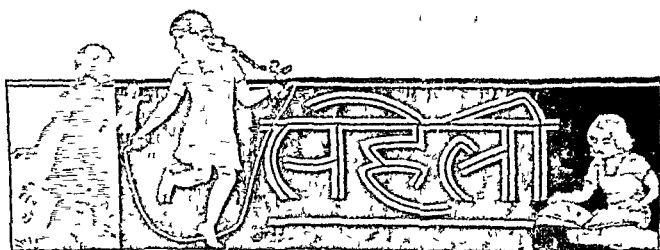
एक नगर में चार मित्र रहते थे। उनमें से एक तो बढ़ई था, एक दर्जी था, एक सुनार का काम करता था, और एक राजपुत्र था।

एक दिन उन लोगों ने सोचा कि किसी काम की खोज में जाना चाहिए। यह सोचकर वे चारों अपने अपने काम की थोड़ी बहुत चीजें और कुछ खाने का सामान लेकर चल पड़े। चलते चलते वे एक जंगल में जा पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही रात हो गई।

जब वे आराम करने लगे तब उन्होंने यह तय किया कि हर एक आदमी बारी बारी से पहरा दे। पहले बढ़ई की बारी आई।

बढ़ई पहरा देने लगा। उसे बैठे-बैठे नींद ने आ घेरा। उसने सोचा कि कुछ काम ही क्यों न करूँ, नहीं तो नींद आ जायगी। यह विचार आते ही वह लकड़ी लेकर कुछ बनाने लगा और अपना वक्त खतम होते होते उसने एक अच्छी-सी गुड़िया बना ली। वक्त आने पर दर्जी को जगाकर वह खुद सो गया।

दर्जी ने गुड़िया देखकर सोचा कि बढ़ई ने तो अपना काम कर दिया। अब मुझे भी कुछ करना चाहिए। यह विचार कर उसने सुन्दर सुन्दर कपड़े बनाये और उसे पहना दिये।

अब सुनार की बारी आई। उसने जगते ही गुड़िया को देखा और मन ही मन कहा कि मैं इसे गहने पहना दूँ तो कितनी सुन्दर लगने लगे! और अपने समय में उसने गुड़िया को गहने पहना दिये, और वह बहुत ही सुन्दर लगने लगी। राजपुत्र को जगाकर सुनार भी सोने लगा।

राजपुत्र सुन्दर गुड़िया देखकर हैरान रह गया। सोचने लगा, इन तीनों ने तो अपना अपना कौशल कर दिखाया। अब मैं इसके लिए क्या बना सकता हूँ! यह ख्याल आते ही उसने ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू की कि इस गुड़िया को सजीव कर दीजिए। और विधाता की करनी से वह गुड़िया एक सुन्दर लड़की में परिवर्तित हो गई।

प्रातःकाल होने पर तीनों मित्र जगे और लड़की को देखकर चकित हो गये। मामला समझ जाने पर वे लड़ने-झगड़ने लगे। एक कहता कि मुझे मिलनी चाहिए और दूसरा कहता कि मुझे।

हालाँ कि यह बात असम्भव सी जान पड़ती है। फिर भी मेरे प्यारे बाल सखाओ, तुम्हीं बताओ कि वह लड़की किसे मिलनी चाहिए। उत्तर बाल-सखा में छपवा देना।
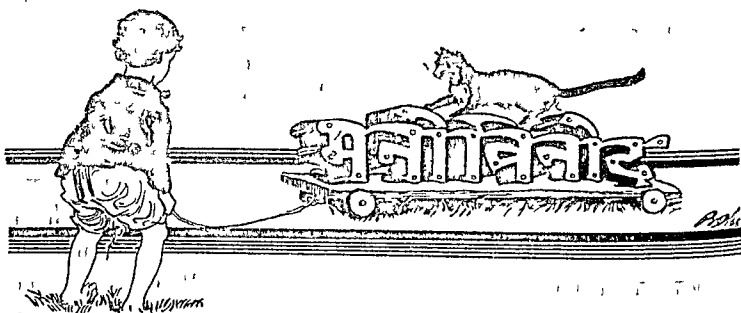
हँसो-हँसाओ

लेखक, श्रीयुत कृष्णमनोहर सिंह सदिल

[१]

अध्यापिका—लाली, तू कितने दिन से नहीं नहाई ? तू घर जा, अपनी माँ से कह, अच्छी तरह नहला दें। तुझमें बड़ी गन्ध आती है।

थोड़ी देर बाद लाली ने एक पर्चा लाकर अध्यापिका जी के हाथ में दिया। माँ ने उत्तर लिखा था, "लाली को सूँघो मत। वह फूल नहीं है, उसको पढ़ाओ।"

यह उत्तर पाकर अध्यापिका जी दंग हो गईं।

[२]

पुलिसमैन—क्या तुमको नहीं मालूम कि मेरा चक्कर काटकर तुमको जाना चाहिए ?

ड्राइवर—मुझको पता नहीं था कि आप यहाँ मौजूद हैं।

पुलिसमैन—इससे तुमको क्या मतलब ? चाहे मैं यहाँ रहूँ या न रहूँ, हमेशा मेरा चक्कर काटकर जाया करो।

[३]

रमेश बहुत दिन बाद विदेश से लौटकर आया। उसे छोटे भाई-बहिनों ने घेर लिया। रमेश अपने विचित्र अनुभवों और वीरता की कहानियाँ सुनाने लगा। "एक दिन मैंने सौ नर-भक्षी जंगलियों को ऐसा छकाया कि वे याद करेंगे।"

सुरेश—(उत्सुकतापूर्वक) कैसे ?

रमेश—मैं आगे आगे दौड़ा और वे सब मेरे पीछे।

[४]

ग्राहक—तुम बड़े धोखेबाज़ हो। इस दवाई से नये बाल तो निकले नहीं। जो थे वह भी झड़ गये।

दूकानदार—आप व्यग्र क्यों होते हैं ? अब साफ खोपड़ी में नये बाल निकलेंगे।

[५]

मास्टर--भक्त किसे कहते हैं ?

लड़का--आदमी को।

मास्टर--यह जवाब ठीक नहीं है। मैं भी आदमी हूँ। लेकिन क्या तुम मुझको भक्त कह सकते हो ?

लड़का--जी नहीं। भक्त अच्छे आदमी को कहते हैं।

[६]

रामू--कल यह पक्षी बेचते समय तुमने कहा था कि यह २५ वर्ष जीवित रहता है। यह तो आज ही मर गया।

विक्रेता--आज वह २५ वर्ष का हो गया होगा।

—

मजेदार चुटकुले

राम इम्तहान देकर घर आया तो उसके पिता ने पूछा--बेटा, कितने सवाल परीक्षा में आये थे ?

राम ने कहा--आठ।

पिता--आठ में से कितने ठीक हैं ?

राम--केवल दो गलत हैं।

पिता--शेष छः तो ठीक हैं ?

राम--नहीं, केवल दो ही किये थे जो कि गलत है।

—राममूर्ति पांडेय

घनश्याम--(पिता से) पिताजी ! आज मुझे गुरुजी ने गुस्से में आकर 'उल्लू' कहा।

पिता--अबे, उल्लू के बच्चे, ऐसी जरा जरा सी बातों की शिकायत की जाती है ?

घनश्याम--तो पिताजी, मैं उल्लू का बच्चा हूँ ? —राजेन्द्रनारायण अग्रवाल

(१) लड़का—पिताजी, क्या आपको चश्मा लगाने से छोटी वस्तु भी बड़ी दिखाई देती है ?

पिता--हाँ, चश्मा लगाने का यही मतलब है।

लड़का—तब पिताजी, जिस समय आप मुझे कोई चीज खाने को दिया करें, उस समय आप चश्मा उतार लिया करें।

(२) माँ—मुन्ना, तेरी बोली बड़ी मीठी है।

मुन्ना—माँ, मैं रोज शक्कर खाया करता हूँ। —चम्पालाल सुराणा

(१) माँ—(लड़के से) रामू, यदि तुम आज अपने हाथ-पैर धो लो तो एक बर्फी दूँगी और यदि मुँह भी धो दो।

रामू--माँ, तब तो मैं आज नहाऊँगा।

(२) सुरेश--बाबूजी, क्या आप एक हाथ से सब काम कर सकते हैं ?

बाबूजी—हाँ हाँ।

सुरेश—क्या आप मोटर भी चला सकते हैं ?

बाबूजी—हाँ।

सुरेश—अच्छा तो लीजिए यह संतरा। इसको एक हाथ से छील दीजिए तो जानूँ।

—नवलकिशोर बाजपेयी
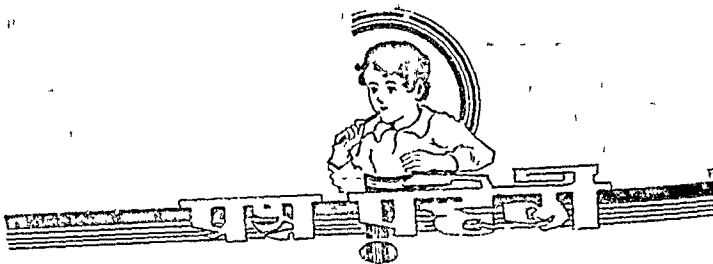
जवाब भेजिए और इनाम लीजिए

(१)

जितना खिलाओ उतना खाय।
आगे बढ़ाओ पीछे जाय॥

—हरिश्चन्द्र

(२)

अगर नाक पर मैं चढ़ जाऊँ,
कान पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊँ।

—लालचन्द जैन

(३)

बाँबी वाकी जल भरी, ऊपर वारी आग।
जबै बजाई बाँसुरी, निकला काला नाग॥

(४)

काला मुख बिल्ली नहिं होय,
जीभें दो, पर साँप न सोय।
पाँच पति, पर नहीं द्रौपदी,
जो बतलावे पंडित वही॥

—हरिश्चन्द्र शर्मा

(५)

राम ने हरि से कहा कि यदि तुम मुझे अपने रुपयों में से १०) दे दो तो मेरे पास तुम्हारे से दोगुने रुपये हो जायँ। और हरि ने राम से कहा कि अगर तुम मुझे अपने में से १०) दे दो तो मेरे पास तुमसे तिगुने रुपये हो जायँ। तो बताओ हर एक के पास कितने कितने रुपये हैं।

—विष्णुप्रसाद व्यास, लश्कर

(६)

एक मनुष्य बाग में चोरी करने ग[...] सिपाही ने उसे रोका। इस पर उसने सि[...] से कहा कि मैं जितने आम लाऊँगा [...] आधे तुमको दे दूँगा और एक आम तुम [...] वापिस दे देना। सिपाही राज़ी हो ग[...] उसने खूब आम खाये तथा जितने आम [...] उसके आधे सिपाही को दे दिये। बाद के अ[...] सिपाही ने उसे एक आम लौटा दिया। [...] आकर उसने देखा तो मालूम हुआ कि [...] पास उतने ही आम हैं जितने वह ब[...] लाया था। बताओ वह कितने आम लाया[...]

—कुँवर किशो[...]

नोट—(१) यहाँ चार पहेलियाँ और दो प्रश्[...] गये हैं। जिनका कम से कम एक प्रश्न और दे[...] लियों का उत्तर ठीक होगा, उनका नाम बाल-स[...] छापा जायगा।

(२) छपे हुए नामों में, जिनका उत्तर सा[...] होगा और जो अपने अभिभावक से यह दस्तखत [...] भेजेंगे कि उन्होंने जवाब निकालने में किसी से म[...] ली उनको एक बढ़िया पुस्तक इनाम मिलेगी।

(३) कुल १० इनाम दिये जायँगे। इ[...] नामों का चुनाव उनमें से किया जायगा जिनके अ[...] अधिक उत्तर ठीक होंगे और जवाब अधिक से अधि[...] लिखे होंगे।

(४) जवाब सम्पादक, बाल सखा, इंडिय[...] लिमिटेड, इलाहाबाद के पते पर २५ दिन [...] भेजना चाहिए।

"लापसी या ल्हापसी"

श्रीमान् सम्पादकजी,

गत मास के 'बालसखा' में जिन बालकों ने आपका 'लापसी' वाला लेख पढ़ा होगा वे यह जानने के लिए जरूर उत्सुक हो उठे होंगे कि लापसी कैसे बनाई जाती है। बहुत से भोजन-प्रेमी पाठक तो मन ही मन उसका स्वाद लेते होंगे और यदि उनको लापसी बनाने की तरकीब बता दी जाय तो एक बार बनाकर खाये बिना कभी न मानें। हम ऐसे भोजन प्रेमियों के लिए लापसी बनाने की तरकीब नीचे लिखे देते हैं।

संयुक्त प्रान्त में गुड़ के हलुवे को लपसी कहते हैं। मगर लापसी दूसरी चीज है। लपसी गेहूँ के आटे या मैदे की बनती है। लापसी में आटा नहीं डालते बल्कि मोटे दलिये की बनाई जाती है। यों तो यह भोजन राजपूताने में सभी जगह बहुत प्रेम से खाया जाता है परन्तु मेवाड, मारवाड तथा जेसलमेर की रियासतों में इसका अधिक प्रचार है। कोई त्योहार ऐसा न होगा जिसमें लापसी न बनती हो। शादी ब्याह तथा दूसरे सस्कारों मे इसका बनाया जाना अति आवश्यक है। कोई मेहमान आवे तो उसके लिए चाहे कैसे ही बढ़िया बढ़िया भोजन क्यों न बनाये जायँ, सबसे पहिले उसको लापसी ही खिलाई जाती है। राजपूताने की भाषा में इसको लापसी नहीं बल्कि 'ल्हापसी' कहते हैं।

लापसी के लिए कठिया (लाल) गेहूँ का दलिया सर्वोत्तम होता है। सफेद गेहूँ की अच्छी नहीं बनती। दलिया इतना मोटा होना चाहिए कि एक गेहूँ के चार चार पाँच-पाँच टुकडे हो जावें। यह कहना ठीक नहीं है कि लापसी बिना घी के भी बनाई जाती है। जिस गरीब पर भगवान् इतने रुष्ट हों कि बेचारे को भर पेट अन्न भी नहीं मिलता हो वह तो लापसी बनाने ही क्यों लगा। परन्तु जो लापसी बनाने की इच्छा करते हैं वे चाहे अमीर हों या गरीब, अपनी हैसियत के अनुसार थोडा-बहुत घी अवश्य डालते हैं। बिना घी के दलिया अच्छा भुन नहीं सकता। अगर बिना घी के बनाई भी जाय तो वह लापसी नहीं कहलायेगी बल्कि उसको लेई कहना उचित होगा। राजपूताने मे भील लोग बहुत गरीब होते हैं परन्तु वे भी जब लापसी बनाते हैं तो एक सेर दलिये में आध पाव घी जरूर डालते हैं। अमीरों की लापसी मे डेढ पाव से लेकर तीन पाव तक घी पडता है।

जवाब भेजिए और इनाम लीजिए

(१)

जितना खिलाओ उतना गाय।
आगे बढ़ाओ पीछे जाय॥

—हरिश्चन्द्र

(२)

अगर नाक पर मैं चढ़ जाऊँ,
कान पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊँ।

—लालचन्द जैन

(३)

बाँबी बाकी जल भरी, ऊपर बारी आग।
जबै बजाई बाँसुरी, निकला काला नाग॥

(४)

काला मुख बिल्ली नहिं होय,
जीभें दो, पर साँप न सोय।
पाँच पति, पर नहीं द्रौपदी,
जो बतलावे पडित वही॥

—हरिश्चन्द्र शर्मा

(५)

राम ने हरि से कहा कि यदि तुम मुझे अपने रुपयो में से १०) दे दो तो मेरे पास तुम्हारे से दोगुने रुपये हो जायँ। और हरि ने राम से कहा कि अगर तुम मुझे अपने में से १०) दे दो तो मेरे पास तुमसे तिगुने रुपये हो जायँ। तो बताओ हर एक के पास कितने कितने रुपये है। —विष्णुप्रसाद व्यास, लश्कर

(६)

एक मनुष्य बाग में चोरी करने गया। सिपाही ने उसे रोका। इस पर उसने सिपाही से कहा कि मैं जितने आम लाऊँगा उसके आधे तुमको दे दूँगा और एक आम तुम मुझे वापिस दे देना। सिपाही राजी हो गया। उसने खूब आम खाये तथा जितने आम लाया उसके आधे सिपाही को दे दिये। वादे के अनुसार सिपाही ने उसे एक आम लौटा दिया। घर आकर उसने देखा तो मालूम हुआ कि उसके पास उतने ही आम है जितने वह बाग से लाया था। बताओ वह कितने आम लाया था।

—कुँवर किशोरसिंह

नोट—(१) यहाँ चार पहेलियाँ और दो प्रश्न छापे गये हैं। जिसका कम से कम एक प्रश्न और दो पहेलियों का उत्तर ठीक होगा, उसका नाम बालसखा में छापा जायगा।

(२) छपे हुए नामों में, जिनका उत्तर साफ लिखा होगा और जो अपने अभिभावक से यह दस्तखत कराकर भेजेंगे कि उन्होंने जवाब निकालने में किसी से मदद नहीं ली उनको एक बढ़िया पुस्तक इनाम मिलेगी।

(३) कुल १० इनाम दिये जायँगे। इन दसों नामों का चुनाव उनमें से किया जायगा जिनके अधिक से अधिक उत्तर ठीक होंगे और जवाब अधिक से अधिक साफ लिखे होंगे।

(४) जवाब सम्पादक, बालसखा, इडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद के पते पर १५ दिन के अन्दर भेजना चाहिए।

सीमांत प्रदेश के दौरे से लौटने के बाद महात्मा गाँधी अपने मित्र डेरा के नवाब सर अहमद नवाब ख़ाँ छद्दोजइ से मिलकर प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं।

हाँ, तो लापसी इस तरह बनानी चाहिए कि एक सेर मोटे दलिये को आध सेर या डेढ़ पाव घी में मन्दी आँच पर भून डाले। जब दलिये का रंग बादामी हो जाय और उसमें सुगंध आने लगे तो उसको किसी बरतन में निकाल ले। इसके बाद कढ़ाई में इतना पानी चूल्हे पर चढ़ाना चाहिए कि दलिया अच्छी तरह गल जाय और पानी भी न बचे। जब पानी खूब खौलने लगे तो भुना हुआ दलिया पानी में डाल दिया जाय और चमचे से चलाकर रकाबी से ढक दे। जब दलिया गल जाय तो एक सेर साफ गुड़ कुटा हुआ दलिये में मिलाकर आँच मन्दी कर दे और चलाता रहे। गुड़ दलिये में मिल जाय तब अंगारों पर रखकर दम कर दिया जाय। दलिया खिला हुआ हो जाय तब मेवा, इलायची मिला देनी चाहिए। बड़ी स्वादिष्ट बनेगी।

लापसी में स्वादिष्ट होने के अलावा यह भी गुण है कि पेट साफ करती है और जल्दी पचती है। सीने के दर्द को फायदा पहुँचाती है और बल बढ़ाती है।

—जगदीशकुमार माथुर
[बी० एस-सी०, एल् एल० बी०
जज सलूम्बर (मेवाड़)]

पुस्तकालय

हमने एक पुस्तकालय खोला है जिसमें अब तक ३८० पुस्तकें जमा हो गई हैं और जमा होती जाती हैं। मुझे पुस्तकों का बड़ा शौक है। जिन भाइयों को पुस्तकों का शौक हो वे हमें अच्छी-अच्छी पुस्तकों के नाम और उनके पते लिखें। हम भी उनको इसी तरह लिखकर भेजेंगे।

दिनेशचन्द्र द्विवेदी,
बाल-हिन्दी पुस्तकालय (आनन्द प्रेस के पास),
खिन्नीबाग, शाहजहाँपुर

कलम-सखा

मुझे टिकट संग्रह करने का बहुत शौक है और मेरे पास करीब करीब तमाम दुनिया के टिकट हैं। मैंने अभी अभी टिकटों की एक एलबम मुकम्मल की है। मेरे पास पुराने सिक्कों और दियासलाइयों के लेबिल भी हैं। जो सज्जन मुझसे टिकट अदल-बदल करना चाहें या टिकटों के बारे में कुछ पूछ ताछ करना चाहें वे निम्न लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें—

सुरेन्द्रकुमार बहल,
S/o डा० चुन्नीलाल बहल
सिविल अस्पताल, खुशाब
जिला सरगोधा (पंजाब)

मुझे इन दिनों टिकट-संग्रह करने का शौक बहुत हो गया है। जर्मनी, आस्ट्रेलिया, इंगलैंड, हिन्दुस्तान, फ्रान्स, अमेरिका और आठवें एडवर्ड के भी टिकट मेरे अलबम में मौजूद हैं। मुझे "फ्रेट वर्क" का भी बड़ा शौक है। यह भी एक तरह की हाबी ही है। इन बातों में दिलचस्पी रखनेवाले पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

धीरज भाई रांका
C/o एफ० बी० छगनमल रांका
२१ अरुनाचलम नायकन स्ट्रीट
चिन्ताधरीपेट (मद्रास)

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वर्ष २३] अप्रैल १९३९—चैत्र १९९६ [संख्या ४

मातृ-भूमि

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी

ऊँचा खड़ा हिमालय, आकाश चूमता है
नीचे चरण तले पड़, नित सिन्धु झूमता है
गंगा यमुन त्रिवेणी, नदियाँ लहर रही हैं,
पग पग मधुर छटाएँ, प्रतिपल छहर रही हैं,
वह पुण्य-भूमि मेरी,
वह स्वर्ण-भूमि मेरी,
वह जन्म-भूमि मेरी,
वह मातृ-भूमि मेरी।

झरने अनेक झरते, जिसकी पहाड़ियों में
चिड़ियाँ चहक रही हैं, हो मस्त झाड़ियों में
अमराइयाँ घनी हैं, कोयल पुकारती है
बहती मलय पवन है, तन-मन सँवारती है
वह धर्म-भूमि मेरी,
वह कर्म-भूमि मेरी,
वह जन्म-भूमि मेरी,
वह मातृ-भूमि मेरी।

जन्में जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थी सीता,
श्रीकृष्ण ने बजाई, वंशी, पुनीत गीता;
गौतम ने जन्म लेकर, जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को दया सिखाई, जग को दिया दिखाया,
वह युद्ध-भूमि मेरी,
वह बुद्धि भूमि मेरी
वह जन्म-भूमिमेरी,
वह मातृ-भूमि मेरी।

मिट्टी के बरतनों पर रँगाई

त्रिपुरी कांग्रेस का एक फाटक।

यहाँ, संतरे काफी सस्ते बिक रहे थे और देखने में भी अच्छे मालूम पड़ते थे इसी लिए हम लोगों ने कुछ संतरे खरीदे और उन्हे खाते हुए आगे बढ़े। कांग्रेस के इस मेले का इन्तजाम जिन लोगों के सुपुर्द था उन्होंने त्रिपुरी से स्टेशन तक काफी अच्छी सड़क बनवाई थी। गर्द का कहीं नाम-निशान न था और सड़क के दोनों ओर लाखों का आलम बिखरा पड़ा था। कुछ लोग चल-फिर रहे थे और कुछ पेड़ो के नीचे आराम कर रहे थे। बीच बीच में ऊँची चट्टानें रास्ते को और भी सुन्दर बना रही थीं।

त्रिपुरी पहुँचने पर हमारी लारी एक बहुत बडे फाटक के अन्दर से निकली और एक बडे मैदान में आकर खडी हो गई। उस समय काफी धूप थी और मैदान में कहीं नाम के। भी पेड न थे। लोग चटाइयों की छाया में इधर-उधर बैठे थे और जिन्हे यह छाया भी नहीं मिल सकती थी वे इधर-उधर चल फिर रहे थे। एक बड़े ऊँचे चबूतरे पर कांग्रेस का ऊँचा झंडा फहरा रहा था। उसके पास खड़े होकर कुछ लोग मनमाने तरीक़े से लेक्चर झाड रहे थे और लाउड स्पीकर द्वारा उनकी आवाज सारे मैदान में गूंज रही थी।

हम लोगों ने स्टेशन ही पर नहा धो लिया था इसलिए सामान के।, यात्रियो के लिए बने, चटाइयो के कमरों में रखकर हम होटलों की तलाश में निकले। क्योंकि हमें काफी भूख लगी हुई थी और करीब १ बज गया था। यद्यपि होटलों का एक मुहल्ला ही बसा हुआ था किंतु खानेवाले इस कदर टूटे पड रहे थे कि किसी होटल में चींटी के भी प्रवेश करने की जगह न थी। बहुत भटकने के बाद और बहुत इन्तजार के बाद एक होटल में हम लोगों ने खाना खाया और मेला देखने निकल पड़े।

उस समय कांग्रेस की विषय-समिति की बैठक हो रही थी। यह वह समिति है जिसमें प्रस्तावों पर विचार हो चुकता है तब वे कांग्रेस के बड़े जलस के सामने रक्खे जाते है। हमारे सूबे के प्रधान मंत्री माननीय

त्रिपुरी का मेला

लेखक, श्रीनाथसिंह

बावन हाथियों के रथ का जुलूस।

'बालसखा' के पाठकों में से कितने ही त्रिपुरी गये होंगे और वहाँ की चहल-पहल देखी होगी। यह कहानी मैं उनके लिए लिख रहा हूँ जो त्रिपुरी नहीं पहुँच सके।

त्रिपुरी नर्मदा नदी के किनारे एक छोटा सा गाँव है। थोड़े से किसानों के झोंपड़े हैं और पास ही एक बड़ा मैदान है। मैदान के चारों तरफ छोटी छोटी पहाड़ियाँ और काली चट्टानें हैं, जो देखने में बहुत अच्छी मालूम होती हैं। त्रिपुरी जाने के लिए मैं इलाहाबाद में रात को सवार हुआ। गाड़ी काफी लम्बी थी मगर इलाहाबाद में ही खचाखच भर गई थी। कटनी पहुँचते पहुँचते इतने आदमी चढ़ गये कि किसी को बैठने की भी जगह न मिलती थी। जबलपुर से एक स्टेशन आगे हम सब गाड़ी से उतर गये। उस वक्त ऐसा जान पड़ा मानों सारी गाड़ी वहीं खाली हो गई हो। स्टेशन से बाहर निकलने के कई रास्ते थे, फिर भी इतनी भीड़ थी कि सब लोगों को बाहर आने में क़रीब १५ मिनट लगे।

उस समय क़रीब ७॥ बजे थे और स्टेशन से त्रिपुरी जाने के लिए सैकड़ों मोटर लारियाँ तैयार खड़ी थीं। हम लोगों ने एक लारी पर कब्जा किया और ड्राइवर से कहा "जल्दी चलाओ।" मगर ड्राइवर टस से मस न हुआ और जितनी लारियाँ थीं सब जहाँ की तहाँ खड़ी रहीं। दरियाफ्त करने से मालूम हुआ कि कांग्रेस के सभापति का जलूस निकल रहा है। और एक ऐसे रथ में जिसमें ५२ हाथी जुते हुए हैं। जब तक यह जलूस त्रिपुरी न पहुँच जायगा तब तक कोई लारी रवाना नहीं हो सकती। हम लोगों में कितने ही जलूस देखने के शौकीन थे। वे सब आगे बढ़ गये, और जलूस देखा।

११ बजे दिन में लारियाँ एक के बाद दूसरी रवाना हुईं। क़रीब २४ लारियाँ छूट चुकीं तब मेरी लारी की बारी आई।

त्रिपुरी कांग्रेस का एक फाटक।

यहाँ संतरे काफी सस्ते बिक रहे थे और देखने में भी अच्छे मालूम पड़ते थे इसी लिए हम लोगों ने कुछ संतरे खरीदे और उन्हें खाते हुए आगे बढ़े। कांग्रेस के इस मेले का इन्तज़ाम जिन लोगों के सुपुर्द था उन्होंने त्रिपुरी से स्टेशन तक काफी अच्छी सड़क बनवाई थी। गर्द का कहीं नाम-निशान न था और सड़क के दोनों ओर लाखों का आलम बिखरा पड़ा था। कुछ लोग चल-फिर रहे थे और कुछ पेड़ों के नीचे आराम कर रहे थे। बीच बीच में ऊँची चट्टानें रास्ते को और भी सुन्दर बना रही थीं।

त्रिपुरी पहुँचने पर हमारी लारी एक बहुत बड़े फाटक के अन्दर से निकली और एक बड़े मैदान में आकर खड़ी हो गई। उस समय काफी धूप थी और मैदान में कहीं नाम को भी पेड न थे। लोग चटाइयों की छाया में इधर-उधर बैठे थे और जिन्हें यह छाया भी नहीं मिल सकती थी वे इधर-उधर चल फिर रहे थे। एक बड़े ऊँचे चबूतरे पर कांग्रेस का ऊँचा झंडा फहरा रहा था। उसके पास खड़े होकर कुछ लोग मनमाने तरीके से लेक्चर झाड रहे थे और लाउड स्पीकर द्वारा उनकी आवाज सारे मैदान में गूंज रही थी।

हम लोगों ने स्टेशन ही पर नहा धो लिया था इसलिए सामान को, यात्रियों के लिए बने, चटाइयों के कमरों में रखकर हम होटलों की तलाश में निकले। क्योंकि हमें काफी भूख लगी हुई थी और करीब १ बज गया था। यद्यपि होटलों का एक मुहल्ला ही बसा हुआ था किंतु खानेवाले इस कदर टूटे पड रहे थे कि किसी होटल में चींटी के भी प्रवेश करने की जगह न थी। बहुत भटकने के बाद और बहुत इन्तजार के बाद एक होटल में हम लोगों ने खाना खाया और मेला देखने निकल पड़े।

उस समय कांग्रेस की विषय-समिति की बैठक हो रही थी। यह वह समिति है जिसमें प्रस्तावों पर विचार हो चुकता है तब वे कांग्रेस के बड़े जलसे के सामने रक्खे जाते हैं। हमारे सूबे के प्रधान मंत्री माननीय

त्रिपुरी-कांग्रेस का मंच, जिसपर से नेता लोग भाषण देते थे।

जी के दल के सब लोग कांग्रेस की सबसे बड़ी समिति से अलग हो गये थे। इस प्रस्ताव पर बड़ी बहस हुई। अन्त में यह प्रस्ताव पास हो गया।

दूसरे दिन कांग्रेस का बड़ा जलसा शुरू हुआ। एक पहाड़ी के नीचे मैदान में आद मियों के बैठने का इन्तजाम किया गया था। एक रुपये से लेकर हजार रुपये तक के टिकट थे। बैठनेवाले कायदे से अपनी जगह पर बैठे हुए थे। इन्तजाम करनेवाले वालन्टियर अपनी अपनी जगह पर तैनात थे। जब शाम हुई और बिजली की बत्तियाँ जलाई गईं तो वह जगह बहुत सुन्दर मालूम पड़ने लगी। मैदान में नेताओं के बैठने के लिए एक ऊँचा सा मंच बना हुआ था। उस पर खड़े होकर नेता लोग बोलते थे और लाउड स्पीकर द्वारा उनकी आवाज चारों तरफ पहुँचती ... चूँकि कांग्रेस के सभापति श्री ... थे इसलिए वे वहाँ ... भाषण अँगरेजी में ... अनुवाद आचार्य ... । ... इस

पं० गोविन्दवल्लभ पन्त का प्रस्ताव उस दिन समिति में पेश था और इस पर काफी चक-चक मची हुई थी। इसलिए मैंने तुरन्त अपना 'पास' लिया और समिति के अन्दर पहुँचा। उस समय माननीय पं० गोविन्द-वल्लभ पन्त भाषण दे रहे थे। उनके भाषण का आशय यह था कि महात्मा गान्धी ही हिन्दुस्तान की नाव को किनारे पर लगा सकते हैं। इसलिए कांग्रेस को वही करना चाहिए जो गान्धीजी कहें। यानी सब काम उनकी राय से होना चाहिए। इस प्रस्ताव की जरूरत इसलिए थी कि ... कांग्रेस के सभापति का चुन... तब, चूँकि चुनाव गान्धीजी ... खिलाफ हुआ था, इसलिए ... हार समझी थी और कांग्रेस ... बात सोची थी। इतना ही

: करीब दो तीन सौ आदमी
ठकर खड़े हो गये, पैर पटकने
गे, जोर जोर से चिल्लाने
ौर घूँसे दिखाने लगे।
स समय प० जवाहरलाल
हरू बोल रहे थे और इन
ोगों ने तय कर लिया था
क वे पंडितजी को बोलने
 देंगे। इस तरह १॥ घंटे
क हल्ला मचता रहा लेकिन
हाँ जितने आदमी जमा थे
नको यह बात नागवार
ालूम हुई और उन्होंने यह तय किया
क चाहे जैसे हो, वे वहाँ गड़बड़ी न होने
गे। नतीजा यह हुआ कि सब लोग जहाँ
: तहाँ प० जवाहरलाल के कहने से खामोश
ठे रहे और हल्ला करनेवाले अपने आप
ककर बैठ गये। उसके बाद प० जवाहर-
ाल ने उन लोगों को बहुत फटकारा और
हा कि जब आप लोग सभा की कार्यवाही
ाने में इतनी गड़बड़ी करते हैं तब हिन्दुस्तान
: स्वराज्य की लड़ाई लड़ने का धीरज और
ल कैसे ला सकते हैं।

ख़ैर, किसी तरह पन्तजी का प्रस्ताव पास
आ और महात्मा गान्धी एक बार फिर हिन्दु-
ान भर के नेता घोषित किये गये और यह
य हुआ कि अब जो गान्धीजी कहें वही हो।

दूसरे दिन हम लोगों ने धुवाँधार
ौर भेड़ाघाट देखने का इरादा किया।

त्रिपुरी कांग्रेस में स्वयंसेवकों का एक दल।

यह जगह त्रिपुरी से थोड़ी ही दूर पर है। हम लोग वहाँ मोटर लारी से गये। भेड़ाघाट उस जगह का नाम है जहाँ नर्मदा नदी संगमरमर की चट्टानों के बीच से बहती है। पहले हम लोगों ने सोचा था कि घाट कोई इस तरह का होगा जैसे बनारस में गंगाजी के किनारे घाट हैं। लेकिन बात दूसरी ही थी। चट्टानें देखने के लिए नाव पर से जाना होता है। हमें फी आदमी ८ आने के हिसाब से नाव का किराया देना पड़ा। नाव जब चट्टानों के बीच में पहुँची तब हम लोगों ने एक अभूतपूर्व नज़ारा देखा। जेल की दीवारों से भी दूनी ऊँची संगमरमर की चट्टानें खड़ी थीं। उन पर पानी के बहाव के चिह्न थे। ऊबड़-खाबड़ होने पर भी वे काफी चिकनी थीं। जहाँ हम लोग नाव में बैठे हुए थे वहाँ से ऊपर
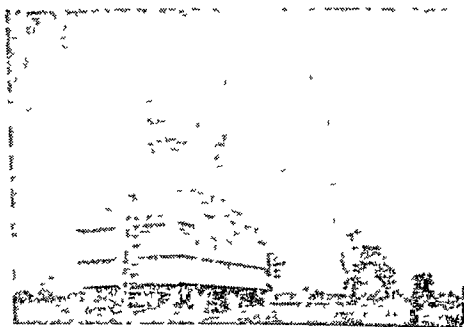
राष्ट्रपति के जुलूस का रथ।

देखने से ऐसा जान पड़ता था जैसे किसी गहरे कुएँ में बैठे हों और ऊपर की ओर देख रहे हों। चूँकि यह कुआँ लम्बा था, दोनों तरफ क्षितिज दिखाई पड़ती थी, साथ ही चट्टानें बड़ी सफेद थीं और पानी पर अद्भुत छाया डाल रही थीं अतः यह दृश्य बड़ा ही मजेदार मालूम पड़ा।

हमने किताबों में पढ़ा है कि संसार में सात आश्चर्य हैं। जिन लोगों ने इन चट्टानों को देखा उन सबों ने यह कहा कि नर्मदा की यह संगमरमर की चट्टानें संसार की आठवीं आश्चर्य जरूर है। चट्टानों के देखने के बाद, यहाँ से थोड़े फासले पर, हम लोग धुँवाधार देखने गये। यह असल में एक ऊँची जगह है जहाँ से नर्मदा की धारा नीचे को गिरती है और गिरने से पानी में इतने ...र या छींटे उठते हैं कि वह धुवाँ की तरह दिखाई पड़ता है इसलिए इस जगह का नाम धुँवाधार है। इस दृश्य को देखकर हम भूख प्यास सब भूल गये। वहाँ घंटों बैठकर हमने प्रकृति के सौन्दर्य को देखा और स्नान किया। रास्ते में ६४ योगिनियों के मन्दिर को देखते हुए हम वापस लौटे। यह एक पुराना मन्दिर है जिसमें बड़े बड़े पत्थरों की ६४ मूर्तियाँ है। वे टूटी फूटी पड़ी हुई हैं। शायद किसी जमाने में मुसलमानों ने उस तरफ़ चढ़ाई की थी और इन मूर्तियों को तोड़ा था। लेकिन टूटी होते हुए भी इन मूर्तियों से यह साफ जाहिर होता था कि किसी समय हिन्दुस्तान में भी पत्थर पर मूर्ति आदि बनाने की कला कितनी उन्नति पर थी। मेरा खयाल है कि "बाल सखा" के जो पाठक त्रिपुरी नहीं पहुँच सके हैं, उन्हें बड़े होने पर या जब कभी मौक़ा मिले, अगर जबलपुर जायँ और भेड़ाघाट, उसके पास की संगमरमर की चट्टाने, धुँवाधार और ६४ योगिनियों के मन्दिर आदि को देखें तो वे बहुत घाटे में नहीं रहेंगे। मैंने सुना है कि चाँदनी रात में और पूर्णमासी के दिन उन चट्टानों के दृश्य और भी सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। वहाँ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की ओर से इस तरह का इन्तजाम है कि देखनेवाले चाँदनी रात में भी चट्टानें देख सकते हैं।
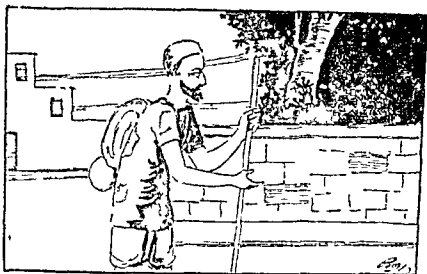
अंधा भिखारी

लेखिका, श्रीमती विद्वत्तमा मिश्र

यह देखो अंधा आता है।

धीरे धीरे पैर उठाकर,
बार बार लाठी से ठोकर,
रुक रुककर फिर आहट पाकर
चला सड़क पर जाता है।

सुन लेता चलने की आहट,
इक्के-गाड़ी की भी खटपट,
एक ओर हट जाता झटपट
अपनी जान बचाता है।

सुन प्यारी चिड़ियों का गाना,
कितना मन होगा ललचाता,
देख नहीं पर उनको पाता
इसी लिए घबराता है।

हरी-भरी लहराती खेती,
थालों में मोती भर लेती,
क्या यह उसको भी सुख देती?
देख उसे कब पाता है।

रंग फूलों के न्यारे न्यारे,
नीले, हरे, श्वेत, रतनारे,
काले लगते इसको सारे
इसी लिए सतराता है।

हम सबको दोपहर-सबेरा,
पर उसको अधरात-अँधेरा,
सड़क किनारे रैन बसेरा
करके जन्म बिताता है।

बच्चो, हाथ पकड़ ले जाओ,
इसको सीधी राह दिखाओ,
जहाँ जा रहा हो पहुँचाओ,
यह उपकार कहाता है।

दो इसको सब भाँति सहारा,
हाल सुनाओ जग का सारा,
करो कृपा यह है बेचारा,
भीख माँगकर खाता है।

बोलता झोला

लेखक, श्रीयुत बाबूनन्दन लाल 'मनमौजी'

किसी समय इँगलैण्ड में हैलर्ड नामक एक राजा रहता था। उसे चार्ल्स नामक एक लड़का था। राजा चार्ल्स को बहुत प्यार करता था और हर समय अपने पास रखने की कोशिश करता था।

एक दिन शाम को राजा अपने कमरे में बैठा हुआ मन्त्री से बात-चीत कर रहा था कि इसी समय एक नौकर ने आकर कहा कि महाराज राजकुमार चार्ल्स आज दोपहर से लापता हो गये है। नौकर की बात सुनकर राजा बहुत दुखी हुआ। मन्त्री ने तुरत सेनापति को बुलाकर राजकुमार के लापता होने की बात कही और आज्ञा दी कि तुम अपनी सारी सेना के साथ जाओ और राजकुमार को बहुत जल्द ढूँढ़ लाओ। सेनापति मन्त्री की बातों को सुनकर शीश झुकाते हुए बाहर चला गया।

× × × ×

राजकुमार को लापता हुए एक महीना हो गया, किन्तु अभी तक उसका कुछ पता नहीं चला। राजा राजकुमार के शोक के कारण चारपाई पर पड़ा हुआ छटपटा रहा था कि इसी समय दरबान चिल्ला उठा "सेनापति आ रहे हैं। सेनापति आ रहे है।" उसकी यह आवाज महल भर में गूँज उठी। राजा सेनापति के आने का समाचार सुनकर कमरे के बाहर चला आया। उसने सेनापति की ओर देखते हुए पूछा, "क्या सेना के साथ राजकुमार भी है?" किन्तु राजा की इस बात का उत्तर किसी ने न दिया, क्योंकि सेना निकट आ गई थी और राजा का इकलौता बेटा चार्ल्स उसमें नहीं दिखलाई पड़ता था।

देखते ही देखते सारी सेना महल के पास आ गई और सेनापति ने घोड़े पर से उतरकर राजा को शीश झुकाते हुए कहा, "गत चार सप्ताह से राजकुमार को ढूँढ़ने में हम लोगों ने नगर का कोना-कोना छान डाला है। किन्तु हम लोगों ने न तो राजकुमार की कोई वस्तु ही देखी और न कहीं उनकी चर्चा ही सुनी।"

राजा सेनापति की बातें सुनकर क्षोभ के मारे मत्था पीटते हुए महल की ओर मुड़ा और कहने लगा "जब हमारी सारी सेना राजकुमार को नहीं ढूँढ़ सकी तो अब उसके मिलने की कोई आशा नहीं है।"

राजा की बातें सुनकर सब लोग निराश हो गये किन्तु राजकुमार का एक हमजोली, जो कि कद में इतना छोटा था कि लोग उसको टाइनी कहते थे, नहीं निराश हुआ। वह मन में कहने लगा कि मै राजकुमार का पता अवश्य लगाऊँगा और यदि न लगा पाऊँगा तो फिर कभी घर न लौटूँगा।

ऐसा निश्चय कर वह भोजनालय से एक पावरोटी और थोड़ा सा मक्खन लेकर, बिना किसी से कुछ कहे हुए, नगर के किनारेवाली पहाड़ियों की ओर चल पड़ा।

टाइनी एक पहाड़ी पर चढ़ने लगा। चढ़ते चढ़ते वह अचानक खड़ा हो गया; क्योंकि उसने पास की ही एक घाटी में पड़ा हुआ एक मनुष्य देखा जो घबराया हुआ मालूम पड़ता था। टाइनी कौतूहल-वश उसके पास चला गया और नमस्ते करके पूछने लगा "क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

मनुष्य ने कहा "नहीं"। किन्तु इतने ही में दूसरी आवाज आई "तुम उसकी सहायता कर सकते हो।" टाइनी यह आवाज सुनकर बड़ा चकित हुआ, क्योंकि वहाँ पर और दूसरा कोई न था। फिर टाइनी ने पूछा—"यह आवाज कहाँ से आई है?" मनुष्य ने कहा "यह झोले में से आई है। पर इसे मैं तुम्हें न दूँगा।" इतने में फिर आवाज आई "सब तुम्हारी ही भलाई के लिए है। इसलिए मेरी आज्ञा मानकर मुझे तुम इस लड़के को दे दो।"

मनुष्य ने फिर कहा—"मैं नहीं दूँगा।" परन्तु क्षण भर में ही उसने अपने इस विचार को बदल दिया और झोले को टाइनी के हाथ में थमाते हुए कहा—"लो, हमेशा इसकी आज्ञा का पालन करना, क्योंकि इसी ने मुझे अमीर बना दिया था। लेकिन इसकी आज्ञा न मानने की वजह से मैं आज गरीब बन गया हूँ।"

टाइनी झोले को लिये हुए आश्चर्य से सोचने लगा कि अब क्या करें। इतने ही में फिर एक आवाज आई—"मुझे कुर्ते के अन्दर छिपा लो और तब इस मूर्ख को भोजन दो। इसके लिए तुम्हें काली चट्टान के पीछे भोजन मिलेगा।"

टाइनी ने झोले को अपने कुर्ते के नीचे छिपा लिया। वह काली चट्टान के पास चला गया और उसके पीछे भोजन देखकर बड़ा चकित हुआ। किन्तु भूखा होने की वजह से वह भोजन उठाकर उस आदमी के पास चला गया और चुपचाप उसके साथ बैठकर भोजन करने लगा।

जब दोनों खा चुके तब फिर आवाज आई कि टाइनी, अकेले जाओ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम किस लिए पहाड़ियों पर घूम रहे हो। पहले तो टाइनी हिचकिचाया परन्तु मनुष्य के समझाने पर वह झोला लेकर एक ओर चल पड़ा।

टाइनी बहुत दूर नहीं गया था कि इसी समय फिर आवाज आई "छिप जाओ" और टाइनी जल्द ही एक बड़ी चट्टान के पीछे छिप गया। टाइनी जहाँ छिपा था उससे कुछ दूरी पर एक चट्टान फटकर दरवाजे के रूप में बदल गई और एक बड़ी भारी गुफा दिखाई देने लगी।

उसी समय उस गुफा में से घुड़सवारों का एक बड़ा भारी दल निकला जिसमें से एक मनुष्य हँसता-हुआ कह रहा था, "हाः ! हाः ! राजा की सेना यहाँ तक आकर भी राजकुमार का पता न पा सकी ।" किन्तु क्षण भर में ही चट्टान फिर पहिले की तरह हो गई और घुड़सवारों का दल भी एक ओर चला गया ।

जब घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई पड़ना बन्द हो गया तब फिर आवाज आई "उठो और उस चट्टान तक चलो ।" टाइनी उठकर चला और जब वह उस चट्टान के पास पहुँचा तो फिर आवाज आई "रुको और इस निकले हुए पत्थर को दबाओ ।"

पत्थर के दबते ही फिर वही दरवाजा बन गया और गुफा दिखलाई पड़ी । टाइनी गुफा देखते ही बड़ा चकित हुआ और झोले की आज्ञा की प्रतीक्षा न कर वह पागलों की भाँति "राजकुमार, मेरे राजकुमार" कहता हुआ उसमें घुस पड़ा । क्योंकि राजकुमार चार्ल्स उसी में बँधे पड़े थे । इसी समय फिर आवाज आई "चुप रहो । पहले बचाओ ।"

टाइनी ने झोले की आज्ञा का पालन बड़ी खुशी से किया और राजकुमार का बन्धन काट डाला । तब राजकुमार और टाइनी बहुत जल्द ही अपने नगर की ओर चल पड़े । साथ में झोला यह भी बतलाता गया कि कहाँ कहाँ रुकना चाहिए और कहाँ खतरा है ।

जब टाइनी और राजकुमार राजमहल में पहुँच गये और सब नगर-निवासी राजकुमार के पास आ आकर मिलने लगे तब फिर आवाज आई "मुझे छोड़ दो ।" राजकुमार ने कहा "नहीं, मत छोड़ो । यह बड़ा विचित्र है ।" किन्तु टाइनी ने कहा "नहीं, मैं अवश्य इसकी आज्ञा मानूँगा ।" उसने झोला छोड़ दिया । झोला छोड़ते ही महल के बगल में से रोने की आवाज आई किन्तु राजकुमार के आने की खुशी में उस पर किसी ने खयाल नहीं किया ।

नटखट मुन्ना

लेखिका, कुमारी आशा देवी त्रिवेदी

मेरा "मुन्ना" इतना नटखट,
दिन भर करता रहता खटपट ।
सुनता नहीं किसी का कहना,
अपने मन की ही बस करना ।
कभी तोड़ता है वह मेज,
कभी फाड़ता 'बुक' के पेज ।

कभी तोड़ता है वह "चेयर",
फिर कहता "प्लीज डोन्ट केयर" ।
रोज खेलता है मन भरकर,
कभी लोट जाता है भू पर ।
रोना दिन भर उसका काम,
इसी लिए है "नटखट" नाम ।

जेकी कूपर और कोरा स्यू कालिस।
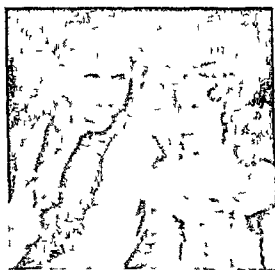
शर्ले पियानो पर नाच रही है।

चिट चिपका दी जाती है जिसपर उनका नाम लिखा रहता है।

हालीउड की फिल्म-कम्पनियो में पार्ट करनेवाले बच्चों में शर्ले टेम्पुल नाम की एक बालिका अधिक प्रसिद्ध है। शुरू शुरू में उसे एक सप्ताह में केवल ३० पौंड मिलता था। अब उसे एक सप्ताह में ३ हजार पौंड मिलता है। इसकी खास वजह यह है कि शर्ले टेम्पुल गभीर और हलके दोनो प्रकार के पार्ट बड़ी खूबी से करती है और नाचने-गाने में अद्वितीय है। वह जो कुछ पार्ट करती है उसमें स्वाभाविकता की मात्रा अधिक रहती है। इसी से उसका पार्ट लोगों को मत्र-मुग्ध कर देता है।

इस समय शर्ले टेम्पुल के कई प्रतिद्वद्वी है जिनमें डेविड होल्ट, कोरा स्यू कालिस, डिकी मूर, बेबी ले राय आदि के नाम विशेष रूप उल्लेखनीय हैं। बेबी ले राय के नौकर होने की कहानी बड़ी ही मनोरञ्जक है। जिस समय उसकी माँ उसके लिए नौकरी ढूँढ़ने के लिए एक फिल्म-कम्पनी में गई उस समय उसके साथ एक और लड़का था। उस लडके ने बेबी ले राय की नाक पर एक घूँसा मारा। इससे वह रोया नहीं बल्कि घूँसा मारनेवाले साथी को कई चपतें लगाकर खुद हसने और चिढाने लगा। उसकी यह बात डाइरेक्टर को अच्छी लगी और वह नौकर रख लिया गया। शर्ले टेम्पुल की तरह बेबी ले राय ने भी काफी पूँजी इकट्ठी कर ली है। वह डाक्टरी पढना चाहता है। इसके लिए अब उसे दूसरे से द्रव्य माँगने की आवश्यकता न पड़ेगी।

बेबी ले राय की भाँति जैकी कूपर भी एक प्रसिद्ध अभिनेता है। उसे एक हफ्ते में २ हजार पौंड मिलता है। वह अपना काम खुद [illegible] है [illegible] नौकरों से बहुत कम [illegible] हमेशा शातिपूर्वक

टिका मूर।

शर्ले एक शानदार आदमी का पार्ट कर रही है।

विर्जीनिया वाल्डर।

शर्ले नाच रही है।

रहने की कोशिश करता है; क्योंकि शरारत करने पर उसका जेब-खर्च रोक दिया जाता है।

डिकी मूर भी एक कुशल अभिनेता है। जब वह ११ महीने का था तभी से फ़िल्म में पार्ट कर रहा है। इस समय उसकी उम्र ९ वर्ष है। अब उसे केवल एक साल तक पार्ट करने का और मौका दिया जायगा, क्योंकि १० वर्ष की उम्र के बाद के बच्चे बाल-अभिनेता नहीं माने जाते। डिकी मूर को अभी तक ऐसी एक भी फिल्म नहीं दिखलाई गई जिसमें उसने स्वयं पार्ट किया हो।

बाल-अभिनेताओं में फ्रेडी बार्थोलोमिउ भी एक प्रसिद्ध अभिनेता है। 'डैविड कापरफील्ड' नामक फिल्म में पार्ट करने की वजह से ही वह प्रसिद्ध हुआ। वह इँगलैण्ड का रहनेवाला है। उसकी रुचि सिनेमा की ओर अधिक थी। परंतु हालीउड पहुँचने के लिए उसके पास द्रव्य नहीं था। उसका एक मित्र उसे अपने साथ अमेरिका ले आया और वहाँ उसने कई फिल्मों में पार्ट किये।

विर्जीनिया वीलडर भी फिल्मों में पार्ट करती है। दो फिल्मों में अच्छा पार्ट करने की वजह से उसकी शोहरत बढ़ गई। जब वह ७ साल की थी, उसका दूध का दाँत गिर गया। इससे शब्दों का उच्चारण गलत होने लगा। ४ हजार पौण्ड बचाने के लिए उसे नक़ली दाँत लगवाना पड़ा।

बाल-संसार

लेखिका, श्री कल्पना देवी, काशी

नित्य सुनहरी सूर्य-रश्मियाँ खेला करतीं मेरे संग।
चाँद सदा मुसकाया करता बदल बदलकर अपने रंग॥
तारे मुसकाते हैं नभ में, पुष्प विहँसते उपवन में।
मुझको बहलाने को सजती रहती दुनिया पल पल में॥
तितली मुझको नित्य ढूँढ़ने फूल फूल पर जाती है।
कभी कभी कोयल गा गा कर पंचम राग सुनाती है॥
मेरी नन्ही सी दुनिया के हैं अशोक थलपद्म अनूप।
मधुमय गान हुआ करता है, है वसंत का नया स्वरूप॥
यह संसार हमारा छोटा इसमें सुख, इसमें आनन्द।
भोलेपन का राज्य यहाँ है, पवन सुगन्धित शीतल मन्द॥
सतत अगर रहते ऐसे ही धरती से वह जाता शूल।
पकड़ा करता राजा तितली राजगुरू तब चुनते फूल॥

उपहार

लेखिका, कुमारी इंदिरा मेहरा

कुमारी इंदिरा मेहरा

रात का सुहावना समय था। आकाश में तारे छिटके हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था मानों किसी ने काले पर्दे पर दही के इतने छोटे छोटे बुन्दे डाल दिये हैं जिससे काला पर्दा एकदम सफेद हो गया है। कहीं कहीं तारों के नजदीक दिखलाई देने से ऐसा ज्ञात होता था कि मानों स्वर्ग का एक रास्ता बन गया है। उत्तर की ओर बिजली क्षण क्षण में चमक उठती थी मानों कोई वीर युवक की तलवार की धार युद्ध-क्षेत्र में शत्रु पर वार करते समय चमक उठी है। साथ ही पूरब की ओर चन्द्रमा बादलों से अचानक निकल आया और कभी कभी किसी बादल के टुकड़े में समा जाता पर फौरन् ही फिर निकल आता। ऐसा लगता कि पृथ्वी माता से वह आँखमिचौनी खेल रहा है। सहसा एक बहुत घने बादल ने चन्द्रमा को अपने भीतर छिपा लिया।

अचानक राजकुमार मणिकान्त चन्द्रमा को बादल में लीन होते देख सिहर उठा। सामने ही उसने देखा कि एक तारा आकाश टूटकर बड़ी शीघ्रता से पृथ्वी की ओर रहा है, पर कुछ क्षण में वह विलीन राजकुमार मणिकान्त ने झट हाथों से ढँक लीं। वह एक शल सर्कस पर न जाने क्यों आज एक तारे के टूटने से उसका कोमल हृदय काँप उठा। इसके बाद उसकी इतनी भी हिम्मत न हुई कि आकाश में देख ले कि फिर चन्द्रमा आँख-मिचौनी खेलने के लिए बादलों में से निकल आया है। राजकुमार एक क्षण भी बाहर न रह सका और उठकर कमरे में, बिजली का पंखा खोलकर, सो गया।
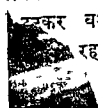
धीरे धीरे पूर्व दिशा में लाली फैलने लगी। सारी दिशा स्वर्ण के समान चमक उठी। इतने ही में राजकुमार के मन्त्री ने फाटक में कदम रक्खा। उसका चेहरा एकदम मलिन हो गया था। आँखें लाल थीं। आते ही चपरासी से [illegible] कि अभी जाकर

राजकुमार मणिकान्त को जगा दे। राजकुमार के आते ही मन्त्री की आँखों में पानी आ गया। फिर उसने झुककर सलाम किया। वह कहने लगा "राजकुमार, आपके पिताजी का कल रात हार्टफेल होने से स्वर्गवास हो गया और आपको महारानीजी ने शीघ्र बुलाया है।" यह सुनते ही राजकुमार की आँखों से आँसू बहने लगे। वह संसार में सबसे अधिक अपने पिता को प्यार करता था। वह बहुत आज्ञाकारी पुत्र था।

राजकुमार इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी० ए० में पढ़ता था। उसके पिता की मृत्यु का हाल सुनकर बोर्डिंग के सब लड़के बहुत दुखी हुए। वह १० बजे की गाड़ी से रवाना हो गया। चलते समय सभी लड़के स्टेशन तक साथ साथ आये थे।

घर पहुँच कर, पिता की क्रिया आदि करने के बाद, मणिकान्त राजगद्दी पर बैठा। राज्य भर में ख़ुशियाँ मनाई जाने लगीं। राज्य के छोटे-बड़े सभी लोगों ने नये राजा को भेंट दी। उस राज्य में एक मछुआ नदी के किनारे रहता था। घर में केवल दो प्राणी थे, वह और उसका पोता, जिसकी उम्र १२ वर्ष की थी। मछुआ बहुत सवेरे मछली मारने निकल जाता था। उसे राजकुमार के राजा होने की कुछ भी खबर न थी। वह सवेरे ही मछली मारने घर से निकल गया। पर जब उसके पोते मोहन को पता चला कि आज उन्हें उपहार देना है, तब वह बड़े सोच में पड़ा; क्योंकि उसके घर में ऐसी कोई चीज न थी जिसे वह राजा को उपहार के रूप में देता। अन्त में बहुत सोच समझकर उसने नदी के किनारे से सफेद कंकड़ बीनकर एक थैली में रख लिये और सीधा राजा के पास पहुँचा। राजा को उसने थैली भेंट की। वहां पर बैठे हुए लोग हँसने लगे। मोहन उन लोगों को हँसते देख रो पड़ा और फौरन वहाँ से भाग खड़ा हुआ। नया राजा उसके इस भोलेपन से बड़ा खुश हुआ तथा अपने महरी को आज्ञा दी कि उसके कंकड़ों की थैली सोनेवाले कमरे में रख आये। जब वह थैली लेकर सीढ़ियों पर चढ़ रहा था तो उसमें से एक छोटा सा कंकड़ निकल कर सीढ़ी पर ही गिर गया, पर उसने कंकड़ की ओर कुछ ध्यान न दिया।

उसी रात जब सारा राज्य निद्रा देवी की गोद में सो रहा था, महाराज के महल पर वैरी ने चढ़ाई कर दी। वैरी का सेनापति सबसे आगे सीढ़ी पर चढ़ रहा था। उसका पैर अचानक छोटे सफेद कंकड़ पर पड़ने के कारण वह लुढ़क गया। पीछे जो और सिपाही थे वे भी गिरने लगे। इनके गिरने की आवाज से सारा महल जाग गया तथा राजा ने सिपाहियों की सहायता से सेनापति आदि को कैद कर लिया। सवेरे जब दरबार लगा तब सेनापति द्वारा ज्ञात हुआ कि वह राजा को मारने आया था पर रास्ते में एक कंकड़ के आ जाने के कारण

उसे कैदी बनना पड़ा। राजा ने यह सुन फौरन उस कङ्कड़ को मँगाकर देखा तो छोटे लड़के की थैली का ही सफेद कङ्कड़ निकला। राजा इसे देख बहुत खुश हुआ तथा लड़के को बुलाने की आज्ञा दी। वह फौरन ही उपस्थित किया गया। राजा ने उसे देखते ही सिंहासन से उठकर गले लगा लिया तथा अपने पास ही उसको गद्दी पर बैठाया। राजा के आग्रह से बुड्ढा मछुआ तथा मोहन दोनों साथ साथ राजा के महल में रहने लगे। अब हमेशा राजा जो काम करता वह लड़के से सलाह करके ही करता था। राजा ने मरते समय मोहन को ही गद्दी का मालिक भी बनाया।

सच है, किसी की गरीबी पर कभी हँसना न चाहिए।

मटरवाली

लेखक, श्रीयुत शिवदत्त शर्मा

आई आज मटरवाली,
लेकर हरी भरी डाली।

बेर बेर यह बेच रही है,
टका सेर यह बेच रही है!
टकाटुकी से टुक टुक कितने,
टुकड़े दिल के खींच रही है
बनी हुई भोली भाली।
आई आज मटरवाली,
लेकर हरी भरी डाली।

पैसा लाओ मजा उड़ाओ,
बिन पैसे के पास न आओ।
आध सेर में भरो पेट तुम
पूरा खा खा आज अघाओ,
ले लो भरी न लो खाली!
आई आज मटरवाली,
लेकर हरी भरी डाली।

यहाँ वहाँ मत हाथ चलाओ,
ताक झाँक मत मटर चुराओ।
तोल रही काँटे पर देखो,
जी चाहे जितना तुलवाओ
क्या दिखलाते कंगाली!
आई आज मटरवाली,
लेकर हरी भरी डाली।

मटर ले चुके फौरन खिसको,
यहाँ करो अब मत घिस घिस को!
मुँह में ठूँस रहे हो नाहक,
छील छीलकर खाओ इसको।
क्या तुम भूखे बंगाली?
आई आज मटरवाली,
लेकर हरी भरी डाली।

कहीं काले और कहीं गोरे क्यों ?

लेखक, श्रीयुत बद्रीप्रसाद तापनीवाल, अजमेर

प्राचीन काल में जमीन भी काफ़ी ऊबड़-खाबड़ थी, जिससे आने जाने में बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। जब एक प्रान्त के लोग ही आपस में मिल न पाते थे, तब एक देशवालों का दूसरे देशवालों से मिलना बहुत दूर था। उस समय रास्तों में चोर-डाकुओं का भय बराबर लगा रहता था। ऐसे समय में यदि कोई योरप-निवासी हिन्दुस्तान में या कोई भारतवासी योरप में साहस करके पहुँचता था, तो उसे देखकर लोगों को बड़ा अचम्भा होता था। एक गोरे रंग का था तो दूसरा काले रंग का। आँख, कान, नाक, मुँह, हाथ, पैर आदि दोनों के एक से थे, लेकिन रंग अलग अलग होने से लोग आश्चर्य में पड़ जाते थे। योरपवाले सोचते थे कि हम लोग तो इतने गोरे हैं, फिर ये भारतवासी काले क्यों? यही धारणा भारतवासियों की भी योरपवालों के प्रति थी। प्रत्येक देश के लोग इस भेदभाव के प्रति अपनी अलग अलग राय देते थे। कुछ भारतवासी तो सोचते थे कि योरपवाले अपने शरीर पर पाउडर लगाकर कृत्रिम रीति से गोरे बन जाते हैं। कुछ लोगों का खयाल था कि ईश्वर इन लोगों पर अधिक प्रसन्न हैं, इसलिए इनको गोरा बना दिया है।

उधर यूनानवालों का अजीब हाल था। इन लोगों ने भी इस प्रश्न को हल करने के लिए एक दिलचस्प कहानी गढ़ ली थी जो इस प्रकार है।

गर्मी के स्वामी सूर्य के पुत्र का नाम पीथियन था। जब वह कुछ सयाना हुआ तो वह अपने साथियों के साथ प्रायः खेलने जाने लगा। ये साथी कभी कभी अपने घर की भी चर्चा छेड़ देते थे। कभी कभी लड़कों में अपने अपने पिता के नाम बताने की ठहरती। जब पीथियन की बारी आती तो वह बड़े गर्व से अपने पिता का नाम हीलियस (सूर्य) बतलाता। लड़के चूँकि नासमझ थे और पीथियन के बारे में ज्यादा वाक़िफ़ भी नहीं थे, अतएव उसकी बात का विश्वास नहीं करते थे। उसको पागल तथा झूठा घमण्डी समझकर उसके पास से भाग जाते थे। पीथियन को यह सब बड़ा बुरा लगा। उसने निश्चय कर लिया कि किसी न किसी तरह मैं इन लड़कों की बुद्धि अवश्य ठीक करूँगा।

एक दिन प्रातःकाल पीथियन एक पेड़ के नीचे बैठकर इस प्रश्न पर विचार करने लगा। यकायक उसे एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि अगर मैं अपने पिता के सोने के रथ में बैठकर उन लड़कों के सामने
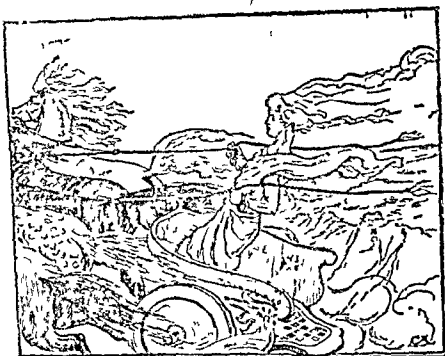
पीथियन रथ चलाने लगा।

निकलूँ तो उनको मेरे पिता का नाम अच्छी तरह मालूम हो जायगा।

बस, वह तुरन्त अपने घर की ओर चल पड़ा। वहाँ जाकर उसने देखा कि उसका पिता एक सिंहासन पर बैठा हुआ है और हीरों से सुसज्जित एक सुन्दर ताज पहने हुए है। उस ताज से बड़ा तेज प्रकाश इधर-उधर फैल रहा था। वह चुपके से अपने पिता के पास पहुँच गया और सिसक सिसककर उसने अपने अपमानित होने की बात कह डाली। पिता ने पुत्र को हृदय से लगा लिया और उन लड़कों के मन का शक दूर करने का भी वचन दिया। बस फिर क्या था? पीथियन अपने पिता से सोने का रथ, चढ़ने के लिए, माँग बैठा। हीलियस बड़ी परेशानी में पड़ा, क्योंकि जानता था कि उसके छोटे से पुत्र से उस रथ के घोड़े सँभल न सकेंगे। अन्त में जब पीथियन ने बहुत ही ज्यादा जिद पकड़ ली तो हीलियस उसकी बात मान गया।

अब पीथियन के हर्ष का क्या ठिकाना? वह अस्तबल से रथ के सातों घोड़े निकाल लाया और उन्हें रथ में जोतकर आप लगाम खींचकर रथ पर सवार हो गया। कुछ दूर तक तो घोड़े उसकी लगाम के इशारों पर चलते रहे, लेकिन फिर बिगड़ खड़े हुए। वे अब बड़ी बेढङ्गी चाल से जाने लगे। कभी नीचे जाते तो कभी ऊपर और कभी इधर दौड़ते थे तो कभी उधर। यूनानी लोगों का कहना है कि जहाँ पर घोड़े नीचे की ओर चले वहाँ के मनुष्य रथ की भारी गर्मी के कारण काले पड़ गये और जहाँ पर रथ ठीक ऊँचाई पर चला, वहाँ के मनुष्य गोरे ही रह गये।

टिल्ली बिल्ली
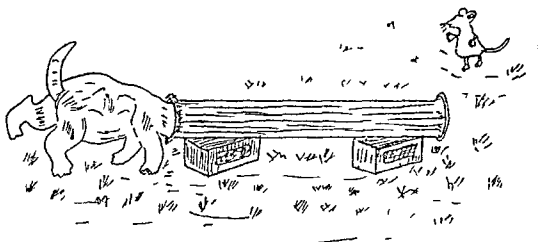
लेखक और चित्रकार, श्रीयुत सत्यप्रकाश गर्ग

आओ तुमको कथा सुनाऊँ,
एक मजे की बात बताऊँ।

शाला बड़ी अनोखी एक,
थीं जिसमें बिल्लियाँ अनेक।
एक बिल्ली कहलाती टिल्ली,
जो थी सबसे अधिक चिबिल्ली।
एक सुबह वह शाला आई,
पड़ी एक चुहिया दिखलाई।
देख सामने उस चुहिया को,
रोक सकी नहिं निज लालच को।
चुपके से वह आई पास,
चुहिया पाने की थी आस।
मोटा नल रक्खा था पास,
चुहिया आई उसके पास।

तब वह उस नल में से निकली,
और निकलकर बिल में सटकी।
टिल्ली भागी उसके पीछे,
तुरत रुकी नल बीच अटक के।
चुहिया ने जब देखा उसको,
लगी चिढ़ाने मन भर उसको।
अध्यापिका पाठशाला की,
थी बड़े क्रोधी स्वभाव की।
उसने टिल्ली को खिंचवाया,
और एक डंडा मँगवाया।
तब उसकी की खूब पिटाई,
टिल्ली बहुत बहुत पछताई॥

स्रावस्ती के खँडहर में

लेखक, श्री लौटूसिंह गौतम एम० ए०, एल० टी०

प्यारे बच्चो! तुमने महात्मा गौतम बुद्ध का नाम अवश्य सुना होगा। इनको हम लोग संसार का श्रेष्ठ महापुरुष मानते हैं। इनके कारण हमारे भारत देश का मस्तक ऊँचा है। संसार के एक तिहाई पुरुषों से अधिक इनके अनुयायी हैं। हमें आशा है कि तुम लोग भी इनके पदानुगामी बनकर अपना जीवन सफल करोगे।

महात्मा गौतम बुद्ध कब हुए, कहाँ हुए, उन्होंने क्या क्या कार्य किये, उनकी किन सेवाओं से भारत का मस्तक ऊँचा हुआ, उसकी रामकहानी —जरूरत हुई तो—फिर कभी सुनाऊँगा। आज मैं तुम्हें "स्रावस्ती के खँडहर" में ले चलूँगा और उसी की राम-कहानी तुम्हे सुनाऊँगा।

१४ मई १९३३ को बहराइच में एक सभा थी। पयागपुर के राजा साहब राजा वीरेन्द्र विक्रम सिंह जू देव ने मुझे खास तौर से निमन्त्रण दिया। गर्मी का समय था। बाहर निकलना बड़ा कठिन था। सूर्य नारायण अपने उग्र ताप से सारे संसार को ऐसा जला रहे थे जैसे आज हर हिटलर जर्मनी के यहूदियों को जला रहा है। घर से बाहर निकलना मुश्किल था। बड़ा साहस करके मैं काशी से चल पड़ा। १४ मई १९३३ को सभा का कार्य समाप्त हो गया। मित्रों ने १२५ के पास ही "स्रावस्ती" नगरी का ज़िक्र किया। मैंने विचारा कि इस स्रावस्ती नगरी का दर्शन जरूर कर लेना चाहिए जहाँ संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष ने पचीस वर्षों के बरसाती चौमास बिताये थे। बस, दूसरे प्रातःकाल हम लोग स्रावस्ती के लिए चल पड़े। बघेलों ने गुजरात से आकर अपने कई छोटे छोटे राज्य स्थापित कर लिये थे। उन सबको देखते हुए हमारी "कार" स्रावस्ती के पड़ोस में वहाँ पहुँच गई जिसको "सुहेलदेव का टीला" कहते हैं। मेरी बड़ी उत्कट इच्छा थी कि स्रावस्ती की सैर करूँ। इसलिए तपते हुए सूर्य की किरणों का खयाल न करके हम लोग स्रावस्ती की ओर चल पड़े।

आजकल स्रावस्ती को सहेठ महेठ कहते हैं। वास्तव में महेठ ही कोशल देश के राजा की राजधानी थी जिसको स्रावस्ती कहते हैं। महेठ के पास जो आजकल का सहेठ है उसे उस समय "जितवन" कहते थे और महाराजा प्रसेनजित ने यह स्थान गौतम बुद्ध और उनके शिष्यों के लिए बनवा दिया था। इस स्थान पर आजकल एक बौद्ध भिक्षु रहते हैं जो सिंहलद्वीप निवासी हैं। ये बड़े ही आस्तिक बौद्ध है। हम लोगों ने २½ बजे दिन से ६ बजे तक "जितवन के खँडहर" का दर्शन किया और प्रत्येक स्थान को बड़े ध्यान और उत्सुकता से देखा। यहाँ पर इस एक ‾ लम्बे और आध मील चौड़े

जितवन का अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन पर्याप्त होगा।

हाँ, तो इस जितवन में सबसे आदरणीय स्मारक है "गन्ध कुटीर"। इसी कुटी में गौतम बुद्ध अपने बरसात के चौमास बिताते थे और २५ वर्षों तक यही उनका बरसाती निवास-स्थान था। श्रीयुत महेन्द्र भिक्षु ने बड़े ही भक्तिभाव से बतलाया कि इसी गन्ध कुटीर में भगवान् नित्य शुद्ध सम्यक् सम्बुद्ध महात्मा गौतम के उपदेशों को सुनने के लिए इन्द्र वरुण तक आया करते थे। कुटी तो गिर गई थी, केवल स्थान मात्र था। वह करीब करीब विद्यालयों के साधारण छात्रावास के एक कमरे की तरह लम्बी चौड़ी है। मेरा खयाल है कि उसमें चार-पाँच साधु धूनी रमा सकते थे। इस गन्ध कुटीर को देखकर अनेक सदियों का इतिहास मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उस समय के भारत और इस समय के भारत में आकाश-पाताल का अन्तर मालूम पड़ने लगा। मन में बहुत कुछ बातें आईं किन्तु उन्हें लिखना अनावश्यक है। हम लोग इस महापुरुष के स्मारक के सामने मन्त्र-मुग्ध की तरह मिनटों खड़े रहे। श्रीयुत महेन्द्र भिक्षु ने भक्ति के आवेश में यहाँ तक कह डाला, "जब कभी मेरे ऊपर संकट आते हैं तो मैं यहीं आकर प्रार्थना करता हूँ और मेरे संकट दूर हो जाते हैं।" हम लोगों ने इस गन्ध-कुटीर को श्रद्धा से प्रणाम किया और आगे बढ़े तो अशोक स्तम्भ मिला। कहा जाता है कि सब से प्रभावशाली बौद्ध महासम्राट् अशोक यहाँ भी आया था और उसका स्मारक भी यहाँ है। ठीक गन्ध-कुटीर के ईशानकोण पर उसका स्मारक है। हमने बहुत प्रयत्न किया कि अशोक का शिलालेख देखा जाय परन्तु वह शिलालेख न मिला। इसके पश्चात् हमने बहुत से ऐसे स्थान देखे जिनका सम्बन्ध गौतम बुद्ध के व्यक्तिगत जीवन से है। उदाहरणतः सल्लाका कुटीर, करेरी, अंगुलि-मालामठ, पूतिगातमठ आदि आदि।

पूतिगात मठ—यह मठ एक ऐसे साधु के स्मारक में बनवाया गया था जिसका सारा शरीर कुष्ठ रोग से पीड़ित था। वह अत्यन्त लाचार होकर गौतम बुद्ध के यहाँ आया। उसके करुण क्रन्दन से महात्मा बुद्ध का हृदय पिघल गया। भगवान् बुद्ध ने उसे स्पर्श किया। उसका सारा शरीर ठीक हो गया और जिस स्थान में वह रहता था उसका नाम पड़ा "पूतिगात मठ"।

एक दूसरा स्थान था "अंगुलिमाला मठ"। यह ऐसे संत का मठ है जो पहले नर-पिशाच था। वह साधुओं की अंगुलियाँ काट लिया करता था। वह भगवान् बुद्ध की अँगुलियों को भी काटना चाहता था किन्तु उनके प्रभाव से प्रभावित होकर उनका शिष्य हो गया। इसी प्रकार सल्लाका कुटीर, करेरी कुटीर आदि बहुत से स्मारक हैं जिनका विशेष विवरण बच्चों के लिए अनावश्यक है। सबसे विचित्र वस्तु

वहाँ है आनन्दबोधि वृक्ष। कहा जाता है कि सावस्ती के महाराज प्रसेनजित ने गया के बोधिवृक्ष की एक डाली स्रावस्ती में लगा दी थी जो आज तक ढाई हजार वर्षों से खड़ा है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह वृक्ष इतना पुराना नहीं हो सकता। सम्भव है यह वृक्ष उसी की सन्तान हो। अस्तु, इस आनन्दबोधि वृक्ष के नीचे बैठकर अब भी बौद्ध लोग महाबोधि का प्रकाश या ज्ञान प्राप्त करने के लिए ध्यान किया करते हैं। गया के बोधिवृक्ष के पश्चात् इसी पीपल वृक्ष की पूजा होती है। मालूम पड़ता है, हम सनातनी हिन्दुओं का हर शनिवार को पीपल वृक्ष की पूजा करना इन्हीं विरुदावलियों से सम्बन्धित है।

इस "जितवन" को देखकर हम लोग महेठ में गये जो आज भी राप्ती नदी की गोद में खेलती हुई सुन्दर स्रावस्ती नगरी है। एक बहुत पुराना मन्दिर, जो सुमेरी ढंग का है और दो-एक भग्नावशिष्ट गृह; बस इसके अतिरिक्त कोई डेढ़ मील में झाड़ियाँ और पेड़ है। बारहवीं शताब्दी के चन्द्रवंशी राजा सुहेलदेव की भी यही राजधानी थी। पश्चिमी विद्वानों ने राजा सुहेलदेव को "भर" माना है किन्तु वे थे चन्द्रवंशी क्षत्रिय और कहा जाता है कि इन्हीं के हाथों सैयद सालार मारा गया जिसकी क़ब्र बहराइच में है, जहाँ बालार्क कुण्ड था और वहीं पर भगवान् सूर्य का एक मन्दिर। इसी बालार्क मन्दिर के स्थान पर आज सैयद सालार की क़ब्र है। फ़िरोज तुगलक ने चौदहवीं शताब्दी में यहाँ पर बहुत बड़ी बड़ी मस्जिदें बनवाईं और आज ६०० वर्षों तक उसी की क़ब्र की पूजा होती है। महाराजा सुहेलदेव का कीर्ति-स्तम्भ स्रावस्ती के पास एक टीलामात्र है। इसको सुहेलदेव का टीला कहते हैं। हमें आश्चर्य हुआ कि आज तक महाराजा सुहेल के नाम पर कोई बढ़िया स्मारक न बना। अस्तु, सायंकाल का सूर्य अस्त हो रहा था। हमें तो ऐसा मालूम पड़ रहा था कि १२वीं शताब्दी में प्रातःस्मरणीय महाराज सुहेलदेव के निधन के साथ-साथ हिन्दुओं का कल्याण सूर्य अस्त हो रहा था। इस स्रावस्ती नगरी को देखकर मेरे मन में हर्ष और विषाद आदि भावों की लड़ाई होने लगी। मेरा हृदय बड़ा दुखी हुआ। अगर हिन्दुओं ने १२वीं शताब्दी में अपना पारस्परिक विद्वेष और मनोमालिन्य छोड़कर विदेशी मुहम्मद गोरी का सामना किया होता तो आज हमारा देश पराधीन न होता। अस्तु, हम लोग गोधूलि वेला में अपने मोटर पर आ धमके। मेरे मन में वही ऐतिहासिक झंझावात था।

प्यारे बच्चो! जब तुम लोग बड़े होना तो एक बार स्रावस्ती देखने का प्रयत्न अवश्य करना और उससे यह उपदेश लेना कि हिन्दुस्तान के रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सब भारतमाता के बच्चे हैं और भारत माता का गौरव रखना प्रत्येक बच्चे का

कर्त्तव्य है। जैसे भगवान् गौतम बुद्ध ने "स्रावस्ती" को अपना निवासस्थान बनाकर संसार-प्रसिद्ध कर दिया वैसे तुम भी अपनी सेवाओं, आत्मत्याग और सुन्दर कार्यों से अपने ग्राम, प्रान्त और देश का मुख उज्ज्वल करो। बस, यही एकान्त अनुरोध है।

लो, उसका मैं नाम बताऊँ।

(श्री सोहनलाल द्विवेदी की कौन ?" शीर्षक कविता का उत्तर)

लेखिका, कु० निमला 'कमलिनी', चन्दोसा

[१]

जिसने बटन आपका काटा,
जिसने स्याही को बिखराया।
जिसने सन्दूक कुतर करके
घर भर में अनाज फैलाया॥
लो, उसका मैं नाम बताऊँ,
और आपका प्रश्न सुझाऊँ॥
हरदम करता जो मनमानी।
उस चूहे की यह शैतानी॥

[२]

भरा मिठाई दोना लाये,
सोची थी खाने की मन में।
किन्तु देखते आप रह गये
गायब हुई मिठाई क्षण में॥
घर भर में उत्पात मचाता।
हाथ बड़ी मुश्किल से आता।
हरदम करता जो मनमानी।
उस चूहे की यह शैतानी॥

[३]

ले आये तसवीर हाट से,
बैठक में उसको टँगवाया।
हुआ सवेरा, जाकर देखा
उसको टूटी-फूटी पाया॥
कैसा अचरज, कैसी माया!
नहीं समझ में कुछ भी आया॥
हरदम करता जो मनमानी।
उस चूहे की यह शैतानी॥

[४]

चप्पल काटी, जूते काटे,
कोई चीज नहीं बच पाई।
जिल्द किताबों की भी काटी,
कुल्हड़ की रबड़ी भी चाटी॥
जब देखो तब लूट मचाता।
आहट पाते ही छिप जाता॥
हरदम करता जो मनमानी।
उस चूहे की यह शैतानी॥

[५]

आटे की वह मटकी फोड़ी,
बर्तन में से दही गिराया।
जब तक कोई पहुँचे जाकर
हुआ दही का वहाँ सफाया
कैसा है यह निडर लुटेरा!
घर में बैठा डाले डेरा॥
हरदम करता जो मनमानी।
उस चूहे की यह शैतानी॥

गणित का चमत्कार

लेखक, साहित्यरत्न प० वंशीधर मिश्र, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एम० एल० ए०

'बालसखा' के पाठकों के विनोद के लिए गणित के कुछ मनोरंजक चुटकुले यहाँ दिये जाते हैं। गणित-प्रेमी पाठकों की ज्ञानवृद्धि होने की पूरी सम्भावना है। जादू का सुगम वर्ग देखिए। चाहे जिधर से जोड़िए, जोड़ १५ होगा।
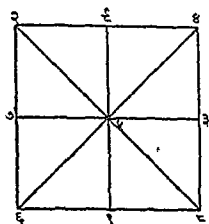
अब जादू का अष्ट वर्ग देखिए। इससे भी जोड़ एक ही आवेगा।

१	७	५९	६०	६१	६२	२	८
१६	१०	५४	५३	५२	५१	१५	९
४८	४७	५९	२१	२०	२२	४२	४१
३३	३४	३०	२८	२१	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३६	३७	३५	३१	३२
२४	२३	४३	४५	४४	४६	१८	१७
५६	५०	१४	१३	१२	११	५५	४९
५७	६३	३	४	५	६	५८	६४

३३, ३३३, ३३३३, ३३३३३ वगैरह का वर्ग निकालने की सरल रीति यह है—एक शून्य लिखो। संख्या में जितने तीन हों, उससे एक कम बार ८ दाहिने और उतने ही १ बाईं ओर लिखो। फिर दाहिनी ओर ९ और लिख दो, वर्ग निकल आया। ३३३३ का वर्ग निकालना है। इस संख्या में चार बार ३ है अतः शून्य लिखकर दाहिनी ओर तीन बार ८ और बाईं ओर ३ बार १ लिखो और ९ लिखो तो ३३३३ का वर्ग मालूम हो जायगा $३३३३^२$ = ११११०८८८९। यकीन न आये तो ३३३३ × ३३३३ गुणा करके देख लो।

६६, ६६६, ६६६६, ६६६६६ वगैरह के वर्ग निकालने की रीति भी सरल है। ३ लिखो। संख्या में जितने बार ६ हो, उससे एक कम बार दाहिनी ओर ५ लिखो और उतने ही बार बाईं ओर ४ लिखो। फिर दाहिनी ओर ६ लिख दो।

६६६६६ का वर्ग मालूम करना है। ३ लिखो। इस संख्या में ६ पाँच बार है। अतः ३ के दाहिनी ओर चार बार ५ लिखा जायगा और बाईं ओर चार बार ४ लिखा जायगा। फिर दाहिनी ओर ६ लिखा जायगा।

$६६६६६^२$ = ४४४४३५५५५६

इसी प्रकार ९९, ९९९, ९९९९ वगैरह का वर्ग भी सरल रीति से मालूम किया जा सकता है।

पहिले ८ लिखो। संख्या में जितनी बार ९ हो उससे एक कम बार दाहिनी ओर शून्य लिखो और बाईं ओर उतने ही बार ९ लिखो। फिर दाहिनी ओर एक लिख दो।

९९९ का वर्ग मालूम करना है। ८ लिखो। इस संख्या में ९ तीन बार है। इसलिए ८ के दाहिनी ओर दो बार शून्य लिखो और बाईं ओर दो बार ९ लिखो। फिर दाहिनी ओर १ लिखो।

$९९९^२$=९९८००१।

थोड़ा सा अभ्यास करने से आनन फानन में वर्ग निकाला जा सकेगा।

कागज की नैया

लेखक श्रीयुत 'मुकुल'

यह कागज की नैया,
मेरी यह कागज की नैया।

[१]

छोटी लहरों में लहराती,
हिलती डुलती बहती जाती।
टब में भरे हुए पानी को—
देखो कैसे चीरे
जाये धीरे धीरे,
बैठ इसी पर सैर करेंगे मैं और मेरा भैया
यह कागज की नैया,
मेरी यह कागज़ की नैया।

[२]

हवा बही यह हिली जोर से,
उस डठल से मिली जोर से।
उलट गई पानी भर आया
नाव लुट गई सारी,
छोटी प्यारी प्यारी।
सैर करें कैसे ? नैया तो गली हाय रे दैया !
यह कागज की नैया,
मेरी यह कागज की नैया।
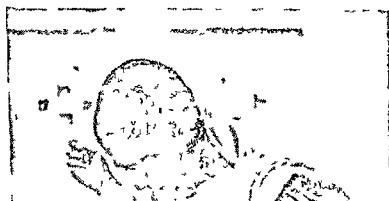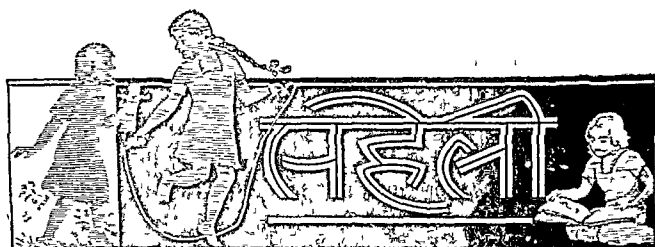
चमेली

लेखक, श्रीयुत श्याममनोहर सिंह सायडल

चमेली नामक एक बालिका थी। उसके माँ बाप की मृत्यु हो गई थी। उसके पास न तो रहने को कोई घर था और न कोई उसकी देख भाल करनेवाला ही था। अन्त में निराश होकर उसने जंगल की राह ली। इस समय उसके पास सिर्फ एक रोटी का टुकड़ा था, और उसके बदन पर कुछ कपड़े थे।

राह में उसको एक भिखारी मिला। वह बहुत भूखा था। उसने चमेली से रोटी माँगी। चमेली ने उसे रोटी का पूरा टुकड़ा दे दिया। भिखारी उसे दुआ देता हुआ चला गया। आगे चलकर उसको एक लड़का मिला। वह शीत के मारे काँप रहा था। उसने चमेली से जूते माँगे। चमेली ने उसको अपनी टोपी और जूते दोनों दे दिये।

आगे रास्ते में उसको एक लड़की मिली। उसके बदन पर सिर्फ एक लँगोटी थी। उसके माँगने पर चमेली ने उसे अपनी लम्बी कुर्त्ती उतार कर दे दी। अब चमेली के बदन पर सिर्फ फलालेन का साया रह गया। वह जल्दी जल्दी जंगल की ओर बढ़ी। जब वह जंगल में पहुँची, अँधेरा हो चला था। कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी थी। वह सोच ही रही थी कि क्या करे कि पास ही किसी के सिसकने की आवाज आई। वह उस ओर बढ़ी। उसने देखा कि एक लड़की मारे जाड़े के सिसक रही है। चमेली को डर लगा कि कहीं सबेरे तक यह मारे जाड़े के मर न जाय। उसने फौरन् अपना साया उतारकर उसको पहना दिया। उसने यह सोचा कि अँधेरे में इस सूनसान जंगल में मुझको कोई इस दशा में न देख सकेगा।

अब उसके पास ऐसी कोई वस्तु न रह गई जिसको वह अपनी कह सके। एकाएक आसमान में बड़े जोर से गड़गड़ाने की आवाज हुई। चमेली ने ऊपर सिर उठाकर देखा। उसको चमकते सितारे गिरते हुए दिखाई दिये। थोड़ी देर में उसने देखा कि बहुत से सोने के सिक्के उसके पास पड़े हुए हैं और एक बढ़ी अच्छी पोशाक उसके पहनने के लिए है।

बत्तीसी की बानगी
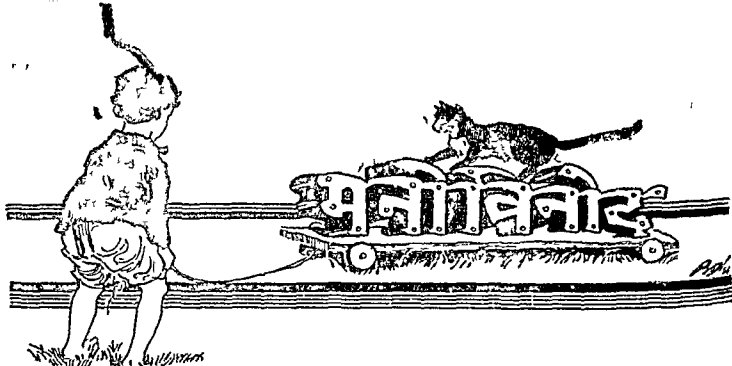
लेखिका, कुमारी रतन वर्मा 'तितली', एच० एम० बी०

(१)

डाक्टर—"किस जगह चोट लगी है ?"

मरीज—"स्टेशन के पास ।"

डाक्टर—"नहीं भाई, मैं यह नहीं पूछता। यह बताओ कि किस स्थान पर तुम्हें चोट लगी है।"

मरीज़—"स्टेशन के कुछ उत्तर तरफ बिजलीघर के सामने।"

(२)

छोटा बच्चा—"माँ ! बाबूजी के सिर में बाल क्यों नहीं हैं ?"

माँ—"बेटा, विद्वानों के सिर में बाल नहीं रहते।"

बच्चा—"लेकिन माँ, तुम्हारे सिर में क्यों अधिक बाल हैं ?"

(३)

राजा साहब—"क्यों जी, तुम्हारा क्या है ?"

भाँड़—"हरामजादा एड सुअरप्रसाद।"

राजा—(हँसते हुए) "वाह नाम तो बहुत बढ़िया है !"

भाँड़—"हुजूर, यदि आपको यह नाम पसन्द है, तो आप ही इसे रख लीजिए। मैं अपने लिए कोई और नाम ढूँढ़ लूँगा।"

(४)

पत्नी—"सास की निंदा मत करो। सभी सास खराब नहीं होतीं।"

पति—"तुम्हारी सास की निंदा नहीं करता। मैं अपनी सास की निंदा कर रहा हूँ।"

कोट के ऊपर वास्कट

लेखक, श्रीयुत दिनेशचन्द्र द्विवेदी

मेरे पिताजी वैद्य हैं और एक गाँव में रहते हैं। उसी गाँव में एक बहुत बड़े जमींदार हैं जो पहले एक ऐसे रोग में फँसे हुए थे कि अगर उस रोग में हँसी आ जाय तो रोग चला जाय। मेरे पिताजी उन्हें हँसाने की

कोशिश कर रहे थे। और लोगों ने भी बहुत कोशिशें कीं पर वे हँस न सके। आखिरकार सब लोग हारकर बैठे हुए थे कि इतने में मेरे पिताजी के पास एक संस्कृत के विद्वान् आये। वे कोट के ऊपर वास्कट पहने हुए थे। उन्हें देखकर वे जमींदार साहब हँसते हँसते लोट-पोट हो गये और सब लोग हँस पड़े। तब पंडितजी बहुत नाराज हुए और बोले—'हैं, हमें बेवकूफ बना रक्खा है।' तब लोग और भी हँसे। मैं तो हँसते हँसते बेहोश हो गया। इस पर वह आँखें लाल करके बोले—"देखिए, आप लोगों का खुले गले का कोट है और अन्दर वास्कट पहिनने पर बाहर से दिखलाई देती है। पर मेरा बन्द गले का कोट है, मैं अपनी वास्कट कैसे दिखाऊँ? इसलिए मैंने कोट के ऊपर वास्कट पहन ली है। इसमें हँसने की क्या बात है?" यह बात सुनकर सब लोग और भी हँसने लगे। इसके बाद जमींदार साहब को फिर कभी वह रोग नहीं हुआ।

—

गप्पी का लड़का

लेखक, श्रीयुत राममूर्ति पाँडे

हरिहर और रघुवर नामक दो मशहूर गप्पी थे। जब कभी दोनों में गप्पें होतीं तो हरिहर बढ़कर निकलता और रघुवर हार जाता था। एक दिन हरिहर घर के बाहर कहीं गया हुआ था। उसका बेटा मदन घर पर था। रघुवर ने अच्छा मौका देखा और सोचा कि इस समय चलकर मदन को झेंपाना चाहिए। वह हरिहर के घर गया। हरिहर के घर के सामने ताड़ के कई पेड़ लगे हुए थे। रघुवर ने मदन से कहा, "ये ताड़ के पेड़ हमें दे दो।"

मदन ने पूछा, "क्या करोगे?"

रघुवर ने कहा, "मैं इसकी लाठी बाँधूँगा।"

मदन उसकी बात भाँप गया और कोई उचित उत्तर न देने के कारण मन ही मन बहुत लज्जित हुआ।

हरिहर जब लौटकर घर आया तो मदन ने सारा किस्सा उससे कह सुनाया। मदन की बात सुनकर हरिहर ने बिगड़कर कहा, तू बड़ा मूर्ख है। 'तूने यह क्यों नहीं कह दिया कि हमारे पिताजी इन ताड़ के पेड़ों से रोज दातौन करते हैं। और खाना खाने के पश्चात् इसके पत्तों से दाँत खोदते हैं।

यह कहकर वह मदन को मारने उठा। मदन ने क्षमा माँगी पर हरिहर ने न माना और उसके हाथ पाँव बाँधकर उसे कुएँ में लटकाना प्रारम्भ किया। ज्यों ही मदन का शरीर पानी से छू गया, वह चिल्ला उठा, "बाप रे बाप! मैंने बहुत बड़ी मछली पकड़ी है। मुझे बहुत जल्दी बाहर खींचो।"

हरिहर ने उसे ऊपर खींचना शुरू किया। जब मदन बाहर निकल आया तो हरिहर

बेटे के हाथ में मछली न देखकर कहा, "क्यों रे, मछली कहाँ गई ?"

मदन बोला, "ऊपर आते आते मैंने उसे खा डाला। इतनी सुन्दर मछली देखकर मैं कब तक अपना लालच रोक सकता था !"

हरिहर उसकी बात सुनकर खुश हुआ और बोला, "अब तू ठीक हुआ है।"

मजेदार चुटकुले

एक जाट का लड़का किसी कालेज में पढ़ता था। उसने अपने पिता को पत्र लिखा कि मेरे लिए जूता बनवाकर पार्सल द्वारा भेज दीजिए। जाट ने जूता बनवा लिया और सोचा कि पारसल पहुँचने में तो देर लगती है, यदि तार के रास्ते जूता भेजें तो शीघ्र पहुँच जायगा क्योंकि तार चिट्ठी से पहले पहुँचता है। यह सोचकर उसने टेलीग्राफ के तार से जूता बाँध दिया और आप घर चला गया। उधर से एक राही जा रहा था। उसने देखा कि नया जूता तार पर लटक रहा है। उसने अपना पुराना जूता वहीं बाँध दिया और नया जूता पहिन कर चला गया। दूसरे दिन जाट ने विचारा कि मैं जाकर देख आऊँ जूता चला गया कि नहीं। वहाँ पहुँचकर देखता है कि नये जूते की जगह पुराना जूता बँधा हुआ है। जाट बहुत खुश हुआ कि बेटा तो बड़ा बुद्धिमान हो गया, क्योंकि नया जूता आप पहिन लिया और पुराना मेरे पास भेज दिया कि वह हमारे पिता के काम आयेगा।

—कुमारी निर्मला देवी।

*

एक बार काली देवी ने कालिदास को डराने की इच्छा से हजार शिरवाला भयंकर रूप धारण करके दर्शन दिया। देवी का ऐसा स्वरूप देखकर कालिदास ने हँसकर प्रणाम किया और फिर खिन्न हो गये। देवी ने कालिदास से पूछा—"क्यों बेटा, तेरे हँसने और उदास होने का क्या कारण है ?" इस पर कालिदास बोले, "हे माता ! तुम क्षमा करना। मैंने सोचा कि मेरे दो हाथ और दो कान है। पर फिर भी जब जुकाम होता है तब मैं नाक साफ करते करते थक जाता हूँ। और आपके एक हजार तो नाक और दो हाथ हैं ! आपको जब जुकाम होता होगा, तो आप इतनी नाक कैसे पोंछती होंगी।"

—भगवतीप्रसाद जोशी।

*

"जब मैं सातवें दर्जे में था तो बहुत बलवान् तथा पढ़ने में तेज था, परन्तु अब बहुत सुस्त हो गया हूँ। मेरा किसी काम में मन नहीं लगता।"—मैंने अपने मित्र से कहा। मित्र ने गम्भीर होकर उत्तर दिया—'इससे तो तुम सातवें दर्जे में ही हमेशा पढ़ने का ठेका ले लेते तो अच्छा था।'

—महेशकुमार 'रेकरीवाल'।

※

किसी आम के बाग में दो सुस्त आदमी लेटे थे। उनके पास से एक आदमी जा रहा था। उसको देखकर एक आलसी बोला, "हे आदमी! दया कर मेरे सीने पर पड़े हुए आम को मेरे मुँह में निचोड़ दो।" यह सुन वह आदमी अचम्भे में होकर बोला, "अरे कैसा तुम्हारा आलस्य है, जो सीने पर पड़े हुए आम को अपने मुख में नहीं निचोड़ सकते? तब दूसरा आलसी बोला, सचमुच ही यह बड़ा आलसी है। गत रात को एक कुत्ता मेरे मुँह को चाटने लगा, लेकिन इसने कुत्ते को नहीं हटाया।

—शान्ता सांडल

(१)

एक दिन एक चोर घोड़ा चुराने के लिए गया परन्तु संयोग से पकड़ लिया गया। घोड़े के मालिक ने कहा "ऐ चोर, अगर तू मुझे घोड़े की चोरी करना सिखा दे तो मैं तुझे छोड़ दूँ।" चोर ने शर्त मान ली। वह घोड़े के पास जा, लगाम काठी कस, उछलकर उस पर सवार हो गया। उसने एक कस के एड़ लगाई और यह कहता हुआ चम्पत हो गया "देखो, घोड़े की चोरी इस प्रकार की जाती है।" घोड़े का मालिक हाथ मलता रह गया।

(२)

एक राजा ने एक विद्वान् को बुलाया और यह भी कहला दिया कि अगर वे न आ सकें तो अपने एक विद्यार्थी ही को भेज दें। समय न होने के कारण विद्वान् ने अपना विद्यार्थी भेज दिया और उससे कहा कि राजा से मीठे और नम्र वचन बोलना। विद्यार्थी दरबार में पहुँचा। राजा ने पूछा, तुमने कौन सी विद्याएँ पढ़ी हैं? विद्यार्थी ने उत्तर दिया 'रूई, रेशम और मखमल।' फिर पूछा, जीविका किस प्रकार चलती है? विद्यार्थी ने उत्तर दिया कि लड्डू पेड़ा बर्फी पर। राजा ने चकित होकर ये सब बातें विद्वान् को लिख भेजीं और विद्यार्थी को वापस भेज दिया। विद्वान् ने ऐसी बातें करने का कारण पूछा। विद्यार्थी ने कहा कि आपने नम्र और मीठे वचन बोलने की आज्ञा जो दी थी। मैंने रूई, रेशम और मखमल से अधिक नम्रता और लड्डू पेड़ा बर्फी से अधिक मिठास और किसी वस्तु में नहीं पाई। इसी कारण मैंने ऐसा कहा।

—श्याममनोहर सिंह सांडल

※

एक लड़के ने मास्टर साहब को अर्जी लिखी कि मेरी टाँग में दर्द है। अब उसने सोचा, किसके हाथ भेजूँ। उसे आप ही ले गया। मास्टर साहब ने अर्जी पढ़कर कहा कि दोस्त, अब आ तो गये हो, पढ़ कर जाना।

—योगेन्द्रसिंह

सोचो और बताओ

एक लड़के के पास कुछ रुपये थे। उसके मित्र ने रुपये माँगे। उसने कहा कि यदि ईश्वर की कृपा से मेरे पास दूने हो जायँ तो मैं १६ रुपये तुम्हें दे दूँ। प्रार्थना करने पर रुपये दूने हो गये। उसने १६ रुपये दे दिये। दूसरे दिन एक दूसरा मित्र रुपया माँगने लगा। उस दिन भी प्रार्थना करने पर रुपये दूने हो गये। उसने १६ रुपये अपने मित्र को दे दिये। तीसरे दिन तीसरा मित्र ने रुपये माँगे। उस दिन भी प्रार्थना करने पर रुपये दूने हो गये और उसने १६ रुपये तीसरे मित्र को भी दे दिये। इस प्रकार उसके पास कुछ न बचा। बताओ उसके पास पहले दिन कितने रुपये थे।

उत्तर—१४ रुपये।

—भगवानदास शिवहरे वैश्य।

पहेली-पुञ्ज

(१)

एक सींग की बकरी, छूने से चिल्लाती है।
बगल से पागुर करती, पर मुँह से चारा खाती है॥

उत्तर—चक्की

(२)

आदि कटे में गज बनता हूँ, काज बना धड़-
पढ़े लिखे पास रखते हैं, अक्षर केन

उत्त

(३)

मुझे काट झाड़ों से लाते, रोज चबाई जाती हूँ।
रखते तक मैं एक रहती हूँ, छोड़ते दो हो जाती हूँ॥

उत्तर—दातौन

(४)

एक ह मेरा, पचास हाथ है पैर।
करता हूँ मैं नभ की सैर॥

उत्तर—पतंग

सिद्दावा

(१)

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता मैं पूजा के काम।
मेरी रगत है सुखदाई,
करते प्यार मुझे सब भाई॥
पहला अक्षर दूँगा छोड़,
लोगे अपनी नाक सिकोड़।
मध्यम अक्षर काट निकालूँ,
मित्रों से सब काम निकालूँ॥
अन्त अक्षर को देऊँ निकाल,
तौलत समय बचाऊँ माल॥
बोलो भाई मेरा नाम।
फिर तुम सबको करो प्रणाम॥

उत्तर—कमल

(२)

बड़ा पेट और मुँह है तग।
उलटो तो यह उगले रग॥
पढे लिखे के आवे काम।
जो बूझे तो लिख दूँ नाम॥

उत्तर—दावात

(३)

अन्त कटे सीता बने, आदि कटे ते यार।
हम बनवासी जीव है, अक्षर तीन हमार॥

उत्तर—सियार

—भगवानदास शिवहरे वैश्य

(१)

नदी भरी थी, खड़ा था हिरन।
नदी सूख गई, मरा हिरन॥

उत्तर—कन्दील

(२)

सफेद धरती नीला बीज।
बोनेवाला गावे गीत॥

उत्तर—चिट्ठी

(३)

पाँच अक्षर नाम मेरा मैं तीर्थ हूँ।
जाते है हिन्दू पर मुसलमान न हूँ॥
दो गाँव मिलकर बनता हूँ।
उलटा पढ़ो सीधा पढ़ो एक ही हूँ॥

उत्तर—गया प्रयाग

—जुग्गालाल जी गणेश नारायण

*

किसी में एक किसी में दो,
किसी में आप अकेला है।
दुम पकड़कर डाले घर में,
इसका नाम पहेला है॥

उत्तर—चने का फल

—राजकिशोरप्रसाद

(१)

ऐसा फूल गुलाब का, चटक न मैला होय।
न राजा के बाग में, न माली घर होय॥

उत्तर—चन्द्रमा

(२)

रात को भरी, दिन को खाली।

उत्तर—गोशाला

(३)

रींग-रींगा, तीन सींगा।
गाय काली, दूध मीठा॥

उत्तर—सिंघाड़ा

—केदारनाथ रुसिया

——

बहनों का प्यार

हमारी चित्रावली

कुमारी कमला चतुर्वेदी और कुमारी करुणा चतुर्वेदी
ननद भौजाई

श्री शैलनाथ चतुर्वेदी (अवस्था ६ वर्ष)।

प्रेषक—श्रीश्याममनोहरसिंह
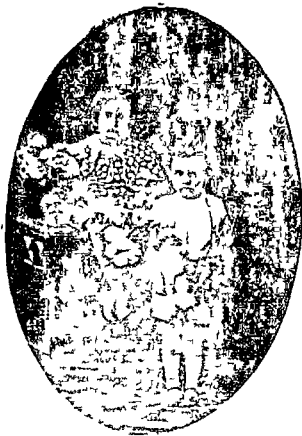
मजु सन्तोष बहन और भाई,
करते हैं दिन-रात लड़ाई।
पर फोटो में सीधे रहते,
मानो कभी न दंगा करते।

प्रेषिका—श्री सरोजकुमारी

विद्यारंभ
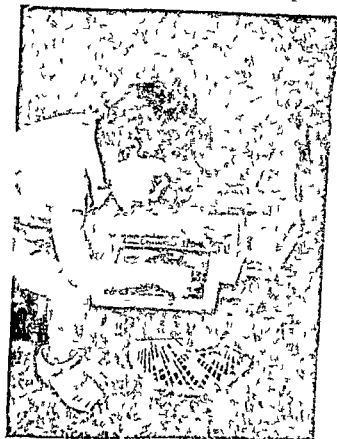
प्रेषक—श्री कृष्णगोपाल माहेश्वरी

हर एक्सलेंसी लेडी लिनलिथगो ने हाल ही में उमरपाड़ा शिशु भवन का निरीक्षण किया। आपके साथ आपकी लड़कियाँ, आनरेबुल लेडी लमले और आनरेबुल के० एम० मुंशी थे।

सिटी। लक्ष्मीदत्त मालवीय, इलाहाबाद। महेन्द्रपाल सिंह यादव, कानपुर। दुर्गाप्रसाद खेतान, पडरौना। कृष्णकांत तिवारी, आगरा। जगदीशचन्द्र लाल साह, बहराइच। गुलाबचंद माहेश्वरी, खापरखेडा। नरेन्द्रकुमार रामेश्वर दयाल, इन्दौर। हरिराम गुप्त, बिसाऊ। विष्णुप्रसाद शर्मा, शिवपुर। बलदेव, मनासा। शंकरसहाय, मेवाडी। कुमारी चन्द्रलेखा शर्मा, नई दिल्ली। कुमारी इन्दुबाई पांडे सीतापुर। रामशङ्कर पांडे, लखनऊ। लाल चित्तरंजन सिंह, भटगाँव। चन्द्रलता कुमारी, ताजपुर रियासत। राजवती रघुवंशी, राजपीपला स्टेट। कृष्णमुरारी, बरेली। अम्बिकाप्रसाद, इन्दौर सिटी। मनोहरलाल, चूरू। राजेन्द्र-प्रसाद, चुनार। महावीर पाण्डेय, बम्बई। राधाबाई जैन, बडवानी। बलभद्र राव, मकती स्टेट। सरयूप्रसाद त्रिपाठी खुशरूपुर। प्रेमकृष्ण चौबे, काशीपुर। मुरलीधर, जैतो मंडी। प्रयागनारायण अवस्थी, फतेहगढ। केशव-नारायण चोबे, फतेहगढ। विनोदविहारी नरसिंहपुर। सत्यनारायण शर्मा तापडिया, बम्बई। जितेन्द्रकुमार जैन, अम्बाला। सावित्री देवी, बनारस। मोहन, चुनार।

नहीं छपेंगे

खेद है कि स्थानाभाव के कारण निम्न-लिखित लेख आदि नहीं छप सकेंगे। आशा है प्रेषकगण क्षमा करेंगे—

गरमी—श्री महावीरप्रसाद। चारों लड़के इत्यादि—श्री श्रीकृष्ण बागला। भगवान—श्री बिन्द्राप्रसाद चौबे। सूर्य और राजकुमारी—श्री हरिदेव पन्नालाल जोशी। भिंडिया—श्री रामावतार राम कनोडिया। मोहन चनावाला—श्री सत्यनारायण तापडिया। भाग्य का फेर—श्री शांतिकुमार। समय परिवर्तनशील है—श्री प्रफुल्लकुमार जायसवाल। हाथी राजा इत्यादि—श्री चुन्नालाल जी गणेशनारायण। सत्य की दाढी—श्री शारदा श्रीवास्तव। आदर्श बाल-दिनचर्या इत्यादि—श्री भगवानदीन मिश्र। प्रभात का समय इत्यादि—श्री केदारनाथ अग्रवाल। मेरी माता—श्री सुरेश शर्मा। विद्यार्थी की कल्पना—श्री विष्णुप्रसाद तिवारी। चार अंधों की कहानी इत्यादि—लाल विन्ध्य बहादुर सिंह। कविता—श्री शम्भूनारायण सिंह। विद्यार्थी—श्री प्रबोधकुमार मजुमदार। भारत की पताका—श्री शांति उपाध्याय। उषा—श्रीमती श्यामा देवी 'सौरभ'। वसंत पंचमी—श्री जगदीशचन्द्र 'आजाद'। डाकिया—श्री बालमुकुन्द श्रीवास्तव।

इनामी पहेलियाँ

"बालसखा" के इस अंक में दूसरी जगह कुछ अन्य पहेलियाँ छापी जा रही हैं। पाठकों को उनका उत्तर भेजने की कोई जरूरत नहीं है। इनामी पहेलियाँ हम मई के "बालसखा" में छापेंगे और उनका उत्तर पाठकों से माँगेंगे।

Printed and published by K Mittra at The Indian Press Ltd A

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

र्ष २३] मई १९३९—वैशाख १९९६ [संख्या ५

खो गया सोंटा हमारा

लेखक, पंडित रामनरेश त्रिपाठी

देखकर जिसकी निराली
धज, शकल सूरत गठिली;
बन गये थे बाघ बिल्ली,
कँप रहे थे शेखचिल्ली;
कनखियों से घूरता था
नटखटों का झुंड सारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥१॥

देखकर पिल्ले चिबिल्ले
थे नहीं कोई उछलते;
जब कभी हम राह चलते,
हाथ में लेकर निकलते।
वे बिना 'पक-पक' किये ही
नाप लेते थे किनारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥२॥

तब शरारत की न थे कुछ
सोचते शीया न सुन्नी।
खोलते थे मुँह न मुन्नी,
चीं-चपड़ करते न चुन्नी,
अब नहीं मुँह बन्द करने का
रहा कोई सहारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥३॥

आज ही से बक रहे हैं
दुष्ट सब वाही-तबाही,
मिट गई सब शान शाही,
लुट गई सब वाहवाही,
मान का रक्षक हमारे
शानदारों का दुलारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥४॥

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

र्ष २३] मई १९३९—वैशाख १९९६ [संख्या ५

खो गया सोंटा हमारा

लेखक, पंडित रामनरेश त्रिपाठी

देखकर जिसकी निराली
धज, शकल सूरत गठिल्ली;
बन गये थे बाघ बिल्ली,
कँप रहे थे शेखचिल्ली,
खियों से घूरता था
नटखटों का झुंड सारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥१॥

वकर पिल्ले चिबिल्ले
नहीं कोई उछलते,
जब कभी हम राह चलते,
हाथ में लेकर निकलते।
(बिना 'पक-पक' किये ही
नाप लेते थे किनारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥२॥

तब शरारत की न थे कुछ
सोचते शीया न सुन्नी।
खोलते थे मुँह न मुन्नी,
चीं-चपड़ करते न चुन्नी,
अब नहीं मुँह बन्द करने का
रहा कोई सहारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥३॥

आज ही से बक रहे हैं
दुष्ट सब वाही-तबाही,
मिट गई सब शान शाही,
लुट गई सब वाहवाही,
मान का रक्षक हमारे
शानदारों का दुलारा।
खो गया सोंटा हमारा ॥४॥

सुनो, दुनिया कैसे बनी

लेखक, श्रीयुत शम्भूदयाल सक्सेना, साहित्यरत्न

एक समय था। पृथ्वी तब पूरी तरह नहीं बनी थी। जल, थल और वायु आपस में घुले मिले थे। धरती जम नहीं पाई थी। समुद्र बहने लायक़ नहीं हुआ था। हवा चलने योग्य नहीं हुई थी। दुनिया की कोई शक्ल-सूरत न थी। केवल अँधेरा था। उजाले का नाम नहीं था। निशा रानी थी। काली उसकी साड़ी थी। काला ही साज बाज था। काले महल में वह रहती थी। अन्धकार उसका प्यारा था। वही राजा था। उसी का हुक्म चलता था।

दुनिया के उस राज में तरतीब का काम नहीं था। सब में गड़बड़घोटाला था। सुन्दरता को कोई जानता कैसे? किसी ने किसी को देखा तो था ही नहीं। ख़ुद निशा रानी भी अपने राजा की सूरत न पहचानती थी। राजा ने भी रानी का मुख न देखा था, पर उनका राज बड़े मज़े से चलता था।

हज़ारों बरस, लाखों बरस, बीत गये। गड़बड़ की उस दुनिया में सब तत्त्व एक साथ रल रहे थे। सूरज में किरण फूटने में देर थी। चाँद में चाँदनी अभी पैदा नहीं हुई थी। तारों की दुनिया का सपना भी नहीं देखा गया था। निशा और अन्धकार को अपनी इस दुनिया से बड़ा प्रेम था। उसे उन्नत देखने को वे तरसते थे।

बहुत दिन बाद उनके एक लड़की हुई—उषा। उषा बड़ी सुहावनी थी, बड़ी ख़ूबसूरत। उषा के पैदा होते ही पहली बार प्रकाश का आभास मिला। उषा ने अपनी आँखें खोलकर चारों ओर निहारा। दुनिया की दशा देखकर उसके जी में आया कि यह तो कुछ ठीक नहीं है। इसमें कुछ सुधार होना चाहिए। एक सुन्दर संसार बनना चाहिए। उसने सुन-सान धरती की ओर देखकर कहा—सखी, तुम इस तरह क्यों पड़ी हो, चुपचाप, उदास और मुरझाई सी? तुम भी मेरी तरह हँसो, खेलो और आनन्द मनाओ।

धरती को उषा की बातें बड़ी प्यारी लगीं। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। धरती के हँसते ही उस पर हरी हरी घास जम आई। उस पर लम्बे लम्बे सघन वृक्ष और लताएँ छा गईं। पहाड़ों की घाटियाँ रङ्ग-बिरङ्गे फूलों से भर गईं। नाना प्रकार की चिड़ियाँ हवा में उड़ने लगीं। लहराती हुई नदियाँ बह निकलीं। झीलों और तालाबों में छोटी छोटी मछलियाँ तैरने लगीं। भाँति भाँति के जीव जन्तुओं का कोलाहल होने लगा। भौंरे गुञ्जारने लगे। तितलियाँ फूलों पर घूमने लगीं।

यह देखकर आकाश के मन में गुदगुदी हुई। उसने उषा को उठाकर चूम लिया।

उषा का मुँह उसके मुँह से लगते ही चारों ओर उजाला हो गया। दसों दिशाएँ किरणों से भर गईं। उसी दिन से उषा आकाश को प्यार करने लगी। यहाँ तक कि साँझ को जब वह सोने चली जाती, तो तारों के दीपक आकाश में लटका जाती। धीरे धीरे उषा और आकाश में इतना प्यार बढ़ा कि उनका ब्याह हो गया।

शीघ्र ही उषा और आकाश के एक लड़का और एक लड़की पैदा हुए। लड़के का नाम सूर्य और लड़की का नाम शशि हुआ। सूर्य में अपनी माँ की सारी प्रभा थी और शशि में उसकी सारी सुन्दरता। आकाश के आँगन में जब एक के पीछे एक क्रीडा करता हुआ आता तो उषा लाज से मुँह छिपा लेती। आकाश के ये बेटा बेटी बड़े सुहावने थे। उनके आने से सारा संसार खिल उठता था। जब कभी शशि न होती थी तो आकाश को बड़ा बुरा लगता। वह तब तक के लिए उसके मोतियों के हार को तोड़कर तारों के रूप में चारों ओर छिटका लेता। इस प्रकार शशि की याद भुला देता पर जब वह आ जाती तो उसी के साथ खेलने में सारी दुनिया को भूल जाता।

नदी के तीर

लेखक, श्रीयुत रामसिंहासन सहाय 'मधुर'

(१)

नदी-किनारे नदी किनारे।
आओ मेरे राजदुलारे।
कैसी अजब बहार यहाँ है।
एक नया संसार यहाँ है।

(२)

ककड़ी और करैली फूली।
मधुमक्खी अपना घर भूली।
तरबूजों का खेत यहाँ है।
सोना चाँदी रेत यहाँ है।

(३)

कलकल कलकल कलकल कलकल।
बहता ही जाता निर्मल जल।
लहरें लहराती जाती हैं।
नावें इठलाती जाती हैं।

(४)

डुबुक डुबुक कर खूब नहा लो।
चुभुक चुभुक कर मौज उड़ा लो।
निकल रहा सूरज का गोला।
हर हर हर हर बम बम भोला।
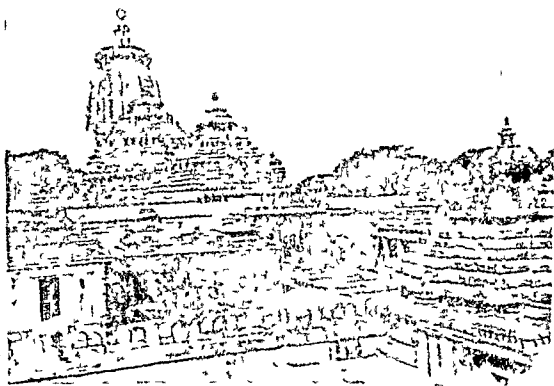
जगन्नाथजी का मंदिर। सिंहद्वार के भीतर २२ सीढ़ियों का चढ़ाव। मुख्य मंदिर, जगमोहन, भोगमण्डप आदि के शिखर साफ देख पड़ते हैं।

पुरी-यात्रा

लेखक, पं० लल्लीप्रसाद पाण्डेय

हिन्दुओं के तीर्थ बहुत हैं और हिन्दुस्तान भर में फैले हुए हैं; किन्तु चार धाम बहुत प्रसिद्ध हैं। ये हैं द्वारका, रामेश्वर, पुरी और बदरी-केदार। ये भारत के चारों छोरों पर हैं। इनकी यात्रा करने से हिन्दुस्तान के प्रायः सभी हिस्सों की सैर हो जाती है। तीर्थयात्रा बहुत कुछ है भी इसी लिए।

पुरी उड़ीसा में है। वहाँ का पहनावा, बोल-चाल, रहन-सहन सभी हम लोगों से कुछ भिन्न है। वहाँ का भोजन दाल-भात, तरकारी-भाजी, मछली आदि है। वहाँ रोटी खाने का रिवाज नहीं। बंगाल, बिहार और मद्रास की तरह वहाँ भात का ही राज्य है। पुरी में और उसके पास के अन्य तीर्थों में दूकानदार, पण्डे और उनके नौकर हिन्दी समझते और बोलते हैं। जिस प्रदेश के यात्री होते हैं वहाँ की भाषा पंडों को सीखनी पड़ती है। सभी तीर्थों का यह हाल है। यात्री की बोली न समझें तो काम कैसे चले?

जिस प्रकार काशी के मुख्य देवता विश्वनाथजी हैं उसी प्रकार पुरी के जगन्नाथजी हैं।

गन्नाथजी की यात्रा हुत दिनों से प्रसिद्ध । जब रेल नहीं थी न भी वहाँ खासी ीड़भाड़ होती थी और शायद उन दिनो ण्डों को भेट-पूजा भी खासी मिलती थी। अब तो रेल को ही यात्री से अधिक आमदनी होती है।
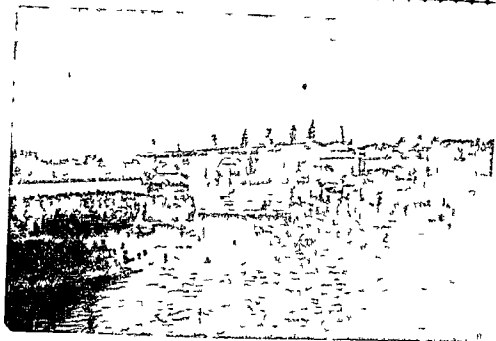
जगन्नाथजी के वार उत्सव बहुत प्रसिद्ध हैं—चन्दनयात्रा, स्नानयात्रा, रथयात्रा और दोलयात्रा।

चन्दन तालाब म जल विहार का दृश्य

चन्दनयात्रा वैशाख में होती है। इसमें जगन्नाथजी के प्रतिनिधि मदनमोहनजी का जुलूस धूमधाम से नरेन्द्र सरोवर पर पहुँचाया जाता है। यह मन्दिर से कोई आध मील की दूरी पर, बस्ती से बाहर, उत्तर-पश्चिम कोने पर है। यहाँ नाव पर सवार कराकर मूर्तियाँ सरोवर के बीच में बने मन्दिर में ले जाते ह जहाँ पूजा होती, भोग लगता और गाना-बजाना होता है। बहुत रात बीते ठाकुरजी फिर बस्ती के मन्दिर में लाये जाते हैं। चन्दनयात्रा के कारण उक्त सरोवर का नाम चन्दनतालाब हो गया है। यह उत्सव इसी तरह ३ हफ्ते तक होता है।

ज्येष्ठ की पूर्णिमा को स्नानयात्रा होती है। मुख्य मन्दिर के बाहर, किन्तु परकोटे के भीतर बनी, स्नानवेदी पर लाकर बलदेवजी, जगन्नाथजी और सुभद्राजी को १०८ कलशे जल से स्नान कराया जाता है। भीतर काफी जगह न होने से दर्शक बाहर सड़क से ही दर्शन करते हैं। भीतर बड़ी भीड़ रहती है।

इसके दूसरे दिन से जगन्नाथजी के पट बन्द हो जाते हैं। कहा जाता है कि जगन्नाथजी बीमार हैं। मन्दिर में अन्य मूर्तियों के दर्शन होते हैं और भोग लगता है। इन पन्द्रह दिनों तक मुख्य तीनों मूर्तियों पर रङ्ग इत्यादि होता रहता है। १५ दिन के बाद जगन्नाथजी के नवयौवन वेश के दर्शन होते हैं। उस दिन, रात से ही, बड़ी भीड़ होती है। जो लोग भीड़भाड़ से बचकर दर्शन करना चाहते हैं वे १) का टिकिट लेकर जाते हैं।

असाढ़ सुदी २ को रथयात्रा होती है। कोई १० बजे से ही सड़क पर रथ्यमें हुए रथों

जगन्नाथजी का मंदिर। सिंहद्वार के भीतर २२ सीढियों का चढाव। मुख्य मंदिर, जगमोहन, भोगमण्डप आदि के शिखर साफ देख पड़ते हैं।

पुरी-यात्रा

लेखक, प० लल्लीप्रसाद पाण्डेय

हिन्दुओं के तीर्थ बहुत है और हिन्दुस्तान भर में फैले हुए हैं; किन्तु चार धाम बहुत प्रसिद्ध है। ये है द्वारका, रामेश्वर, पुरी और बदरी-केदार। ये भारत के चारों छोरों पर है। इनकी यात्रा करने मे हिन्दुस्तान के प्रायः सभी हिस्सों की सैर हो जाती है। तीर्थयात्रा बहुत कुछ है भी इसी लिए।

पुरी उड़ीसा मे है। वहाँ का पहनावा, बोल-चाल, रहन-सहन सभी हम लोगों स कुछ भिन्न है। वहाँ का भोजन दाल-भात, तरकारी-भाजी, मछली आदि है। वहाँ रोटी खाने का रिवाज नहीं। बगाल, बिहार और मद्रास की तरह वहाँ भात का ही राज्य है। पुरी में और उसके पास के अन्य तीर्थों में दूकानदार, पण्डे और उनके नौकर हिन्दी समझते और बोलते है। जिस प्रदेश के यात्री होते है वहाँ की भाषा पडों को सीखनी पडती है। सभी तीर्थों का यह हाल है। यात्री की बोली न समझें तो काम कैसे चले?

जिस प्रकार काशी के मुख्य देवता विश्वनाथजी है उसी प्रकार पुरी के जगन्नाथजी है।

[ज]गन्नाथजी की यात्रा [ब]हुत दिनों से प्रसिद्ध [है]। जब रेल नहीं थी [त]ब भी वहाँ खासी भीड़भाड़ होती थी और शायद उन दिनों [प]ण्डों को भेट-पूजा भी खासी मिलती थी। अब तो रेल को ही यात्री से अधिक आमदनी होती है।

चन्दन तालाब में जल विहार का दृश्य
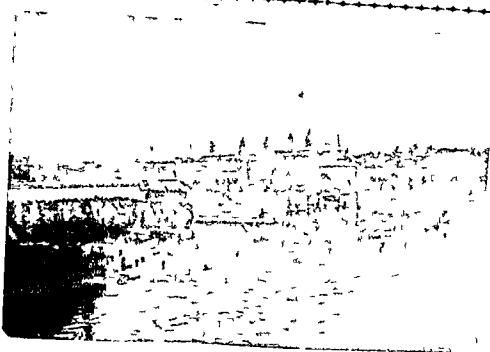
जगन्नाथजी के चार उत्सव बहुत प्रसिद्ध हैं—चन्दनयात्रा, स्नानयात्रा, रथयात्रा और दोलयात्रा।

चन्दनयात्रा वैशाख में होती है। इसमें जगन्नाथजी के प्रतिनिधि मदनमोहनजी का जुलूस धूमधाम से नरेन्द्र सरोवर पर पहुँचाया जाता है। यह मन्दिर से कोई आध मील की दूरी पर, बस्ती से बाहर, उत्तर-पश्चिम कोने पर है। यहाँ नाव पर सवार कराकर मूर्तियाँ सरोवर के बीच में बने मन्दिर मे ले जाते हैं जहाँ पूजा होती, भोग लगता और गाना-बजाना होता है। बहुत रात बीते ठाकुरजी फिर बस्ती के मन्दिर में लाये जाते हैं। चन्दनयात्रा के कारण उक्त सरोवर का नाम चन्दनतालाब हो गया है। यह उत्सव इसी तरह ३ हफ्ते तक होता है।

ज्येष्ठ की पूर्णिमा को स्नानयात्रा होती है। मुख्य मन्दिर के बाहर, किन्तु परकोटे के भीतर बनी, स्नानवेदी पर लाकर बलदेवजी, जगन्नाथजी और सुभद्राजी को १०८ कलशे जल से स्नान कराया जाता है। भीतर काफी जगह न होने से दर्शक बाहर सड़क से ही दर्शन करते हैं। भीतर बड़ी भीड़ रहती है।

इसके दूसरे दिन से जगन्नाथजी के पट बन्द हो जाते हैं। कहा जाता है कि जगन्नाथजी बीमार हैं। मन्दिर में अन्य मूर्तियो के दर्शन होते हैं और भोग लगता है। इन पन्द्रह दिनों तक मुख्य तीनों मूर्तियो पर रङ्ग इत्यादि होता रहता है। १५ दिन के बाद जगन्नाथजी के नवयौवन वेश के दर्शन होते हैं। उस दिन, रात से ही, बड़ी भीड़ होती है। जो लोग भीड़भाड़ से बचकर दर्शन करना चाहते हैं वे १) का टिकिट लेकर जाते हैं।

असाढ़ सुदी २ को रथयात्रा होती है। कोई १० बजे से ही सड़क पर रथ

मकानों पर और नीचे दर्शक हैं। रथ रस्सों से खींचा जा रहा है। सिपाहियों ने बीच में इसलिए जगह ख़ाली करवा ली है कि कोई नीचे कुचलकर मर न जाय और रथ के चलने को जगह भी रहे।

पर मूर्तियाँ लाने की तैयारी हो जाती है। मन्दिर से, सीढ़ियों पर होकर, मूर्तियों का लाया जाना बड़े जोखिम का काम है। इसमें बहुत समय लगता है। सड़क पर चारों ओर यात्रियों की बेहद भीड़ रहती है। आस-पास के मकानों पर, किराया दे देकर, लोग उत्सव देखने को बैठ जाते हैं। पुलिस का और स्वयंसेवकों का इन्तजाम न रहे तो न जाने कितने आदमी कुचलकर मर जायँ। तीनों रथों पर अलग अलग मूर्तियाँ आ जाने पर एक एक रथ रवाना होता है। तसवीर में देखिए कि रथ किस तरह रस्सियों से खींचे जा रहे हैं। शाम तक रथ गुडिचाबाड़ी पहुँच जाते हैं जो शहर से बाहर कोई १॥ मील पर है। यहाँ जगन्नाथजी एक हफ़्ते तक रहते हैं। ख़ासी चहल पहल रहती है। शहरवाले मन्दिर में सन्नाटा रहता है। मेले-ठेले के समय दर्शन करने में बड़ी कठिनाई होती है, धक्के भी लगते हैं और पैसे भी ख़र्च करने पड़ते हैं।

रथयात्रा ही प्रधान उत्सव है। दूर दूर से यात्री पहुँचते हैं। दो-तीन दिन में भीड़ छट जाती है। मेले के समय अक्सर हैजे का डर रहता है। दशमी को रथ बस्ती के मदिर में आ जाते हैं। रात भर मूर्तियाँ रथों पर ही, मन्दिर के दरवाजे पर, रहती हैं। एकादशी की शाम को मन्दिर में यथा स्थान पहुँचती हैं।

जगन्नाथजी का मुख्य प्रसाद दाल भात है जो सैकड़ों हाँड़ियों में बनता है। इसको महाप्रसाद कहते हैं। यह मन्दिर के 'आनन्द बाजार' में मोल मिल जाता है। महाप्रसाद में छूतछात का भेद नहीं माना जाता। रसोई ब्राह्मण लोग बड़ी सफाई से बनाते हैं। कोई देखने तक नहीं पाता। भोग लग जाने पर फिर भेदभाव नहीं रहता। टोकरों में हाँड़ियाँ रखकर मजदूर यथास्थान पहुँचाते हैं। अब्राह्मण ब्राह्मणों को बेधड़क परोसते हैं। दाल या कढ़ी की हाँड़ी में उँगली डालकर चख लेने से भी जूठा नहीं माना जाता। यह वहाँ की बड़ी विचित्रता है। बस्ती के बाहर

फिर चूल्हे-चौके और छूतछात का बन्धन लग जाता है। वैसे भोग तो न जाने कितनी तरह का और कितनी बार लगता है, किन्तु माहात्म्य है महाप्रसाद का।

समुद्र का दृश्य। सफेद सफेद ऊँची लहरें हैं। स्नानार्थी स्नान कर रहे हैं।

पुरी में समुद्र को देखकर, उसकी गम्भीर गर्जना को सुनकर और उसमें स्नान कर यात्री बड़ा प्रसन्न होता है। सामने जहाँ तक नज़र जाती है, पानी ही पानी नजर आता है। बहुत ही ऊँची, एक के बाद दूसरी, लहर थल की ओर दौड़ी चली आती और लौट जाती हैं। और समुद्र-किनारे हवा का क्या कहना है। हवाखोरी के लिए सैकड़ों नर-नारी समुद्र-तट पर पहुँच जाते हैं। वहाँ कुछ लोगों ने, बैठने के लिए, सीमेंट के सीढ़ियेदार चबूतरे से बनवा दिये हैं। उन पर भी लोग बैठ जाते हैं और वहाँ का सुख पाते हैं। इनमें उड़िया लोग कम होते हैं, बाहरवालों की ही भीड़ होती है।

समुद्र में नहाना हिम्मत का काम है। पहले तो डर सा लगता है। यात्री जब दूसरों को नहाते देख लेता है तब पानी में घुसता है, लेकिन तरकीब न जानने से लहरों की थपेड़ खाकर औंधा-सीधा गिर पड़ता और चोट खा जाता है। एक-आध दिन में नहाने की कला आ जाती है। धोती को खूब कसकर बाँध लेना पड़ता है, नहीं तो लहरें या तो धोती छीन लेती है या फिर अध नगा कर देती है। नहानेवाला अगर तैरना जानता है तो वह कमर से ऊपर तक पानी में रहता है और बहुत ऊँची लहर के आते ही उछलता है। यों लहर किनारे की ओर चली जाती है और नहानेवाला तैरने लगता है। इतने में ही दूसरी लहर आ जाती है। यही सिलसिला लगा रहता है। क्या स्त्री और क्या पुरुष, सभी इसी रीति से नहाते हैं। पहले दो एक दिन आँखों में जलन सी होती है, मुँह भी खारी हो जाता है। लेकिन

फिर अभ्यास हो जाता है। नमकीन पानी से धुलने पर आँखें साफ हो जाती हैं।

समुद्र में नहाना खासी कसरत है। कुछ दिन घंटे भर तक रोज समुद्र में नहाने से तन्दुरुस्ती सुधर जाती है। समुद्र में नहाकर फिर साफ पानी में नहा लेने से बदन की चिपचिपाहट दूर हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं कि अगर समुद्र में नहाने के बाद साफ पानी से न नहाया जावे तो और भी अच्छा। धोती के बदले जाँघिया पहनकर नहाने में सुबीता रहता है। जो लोग डर के मारे घुटने भर पानी में नहाते हैं उन्हें गिर पड़ने पर बालू की चोट लग जाती है, आँखों में और बालों में बालू ही बालू भर जाती है; लेकिन गहरे पानी में ऐसा नहीं होता। लहर जब किनारे की ओर से लौटती है तब बालू साथ लेती जाती है। वह नहानेवाले को धक्के देती हुई आगे की ओर ठेल ले जाती है। भीतर भी लहरें आदमी को औंधा सीधा कर देतीं और कलइयाँ खिला देती हैं—एक को उठाकर दूसरे पर पटक देती हैं। नीचे को सिर हो जाता है और ऊपर को पैर।

समुद्र-किनारे नूलिया लोगों की बस्ती है। ये मद्रासी मनुष्य हैं। काले काले गठीले बदन के होते हैं। ये लोग दो-चार पैसे मिलने पर नहानेवाले को, हाथ पकड़कर, पानी में ले जाकर नहलाते रहते हैं। इनकी सहायता पाकर नया आदमी आराम से नहाता है। किन्तु किसी किसी का डर तो किसी तरह छूटता ही नहीं। वह उथले पानी में बार बार गिरता-पड़ता और बालू में सनता रहता है, लेकिन आगे नहीं जाता।

बालसखा के पाठकों को जब कभी अवसर मिले तो पुरी जरूर जावें। दर्शन करें, घूमें फिरें लेकिन समुद्रस्नान अवश्य करें।

खटमल

प्रेषक, श्रीयुत प्रभा-महेश, रानीखेत

हे! हे! महाराज खटकीरा।
आप न जानें पर की पीरा॥

हमें दुखी कर जीते हो तुम।
खून चूसकर पीते हो तुम॥
रावण का सा है परिवार।
नाती, पोते, पूत अपार॥
एक एक से बढ़कर शूर।
लका बना खाट का चूर॥

कभी हाथ में आ जाते हो।
तब थोड़ा सा घबराते हो॥
पलँग पीटना, धूप दिखाना।
तुम पर पानी गरम गिराना॥
सब कुछ हो जाता बेकार।
अकल न चलती तुमसे यार॥

हाथी का सवार

लेखक, श्रीयुत नरसिंहराम शुक्ल

हमारे कुटुम्ब में एक अद्भुत बालक ने जन्म लिया था। उसकी लीला को देखकर ही हम सब ने समझ लिया था कि वह धोखा देगा। वह विश्वास सत्य निकला और वह होनहार बालक केवल तीन बरस में अपनी स्मृति के लिए काफी बातें छोड़कर चलता बना।

जब वह दो वर्ष आठ महीने का हुआ, गाँव की पाठशाला में अपनी बड़ी बहन जयन्ती के साथ जाने लगा। प्रातःकाल जाता, दोपहर तक 'माता' तथा 'दूध' की सुध भूलकर सरस्वती की गोद में खेलता रहता। दोपहर को आता। काँख में छोटी सी पटरी दबाये, दुधिया और पीताड़ा पोते उस नन्हे शिशु की शोभा निराली लगती। जिस समय वह मेरी माता (अर्थात् अपनी दादी) को दीदी सम्बोधित कर कहता "दीदी हम पढ़ आये" उस समय उसकी तोतली बोली को सुनकर सारा घर निहाल हो जाता।

उसके लिए हर एक सवारी 'हाथी' थी। भला हम गरीबों को हाथी कहाँ मिल सकता था? पर वह घर की बैलगाड़ी और साइकिल को ही हाथी कहा करता था। सड़क पर मोटर जाती देख कर उसे 'हाथी'-'हाथी' कह किलकारी मारते देखकर मैं अपनी सारी समस्या भूल जाता था।

जब कोई उससे पूछता, "लाल! तुम जयन्ती (उसकी बहिन) के घर जाओगे?" तब वह सिर मटकाकर कहता, "हाँ, जाब"। "क्या क्या ले जाओगे"? पूछने पर वह कहता—"गट्टा।" किस पर चढ़कर जाओगे?—"हाथी पर"। "उसके यहाँ क्या खाओगे?" और वह जयन्ती की ओर मुँह कर कहता—"दा भात" (दाल भात)। तब जयन्ती आँख चमकाती हुई कहती "हाँ, हम इन्हे दा भात देब—हम त इन्ह सुक्खिन (रूखी) रोटी देब। काहे से कि ई हमें मारे लें (ये हमें मारते हैं)।"

आज अभागिनी और अबोध जयन्ती हाथी पर चढ़कर जानेवाले अपने 'बीरन' को न पाकर दिन भर उदास रहा करती है। दिन में कई बार रह रह कर रो पड़ती है। पूछने पर कुछ स्पष्ट कह नहीं पाती। पर हर एक उसके रोने का कारण समझता है। उस वह लाल कहती थी। लाल उसे दिन भर पीटता रहता था और वह उससे दो वर्ष अधिक होती हुई भी मारती नहीं थी। विधाता भाई-बहिन का यह प्रेम न देख सका!

वह बालक विलक्षण था। घर से ४ फर्लांग दूर पके आमों की दूकान थी। पैसा लेकर जाता, और आम ले आता था। नहाने के लिए झगड़ा करता था। खूब

चुभक चुभक कर नहाता था। फल अधिक खाता था। सैकड़ों वस्त्रों के ढेर में अपनी माता का वस्त्र पहचान लेता था। डाकिया को देखते ही "दादा चिट्ठी दे"—कहकर डाकिया का कुरता पकड़ लेता था। मुझे दादा कहता था और मेरी चिट्ठी डाकिया से माँगता था। उसे भुलवाने के लिए लोग चिट्ठी के बहाने हरे हरे पत्ते पकड़ा देते थे। तब वह समझ जाता था और शरारत भरी हँसी हँसने लगता था। हाँ, जब कोई कागज का टुकड़ा दे देता, तब वह 'चिट्ठी' समझता था।

एक दिन की बात है। मै एक उपन्यास लिख रहा था। वह बार-बार तग करता और लिखने नही देता था। डाँटने से मानता न था। गोदी में आ आ बैठ जाता। जब दूसरा कोई लेने आता, मचल पड़ता, रोने लगता। किस तरह उससे छुटकारा पावें? सोचते सोचते 'चिट्ठी' की याद आई। दो पन्ने कागज के आठ टुकडे किये। एक चिट्ठी देकर कहता, जाओ दीदी को दे आओ। तब वह कहता "दीदी चिट्ठी"। "हाँ, दीदी की चिट्ठी। जाओ, ले जाओ"। इस तरह 'चिट्ठी' के खेल में उसे लगातार दौड़ाता रहा। उस दिन उस नन्हें से शिशु को ८ बार दौड़ने में कितनी तकलीफ हुई होगी, यह अब याद आती है। उसके छोटे-छोटे पैरों का उठना, चिट्ठी का नाम सुनते ही मुसकुराकर 'डाकिया' का नाटक करना आदि बातें आज एक अजीब टीस उत्पन्न कर रही हैं!

उसकी एक एक बात स्मरण कर चित्त पागल हो उठता है। हम निर्धनों का जब से वह अमूल्य 'लाल' छीन लिया गया तब से हम सब नरक का कष्ट भोग रहे है। विचार किया था कि उसका फोटो उतरवा कर पत्रों में छपा दें। पर वह विचार, विचार ही रह गया। उसका कपडे का हाथी आज भी घर में छिपा कर रक्खा हुआ है। क्योकि उसे देखते ही सारा घर रो पड़ता है, परन्तु वह हाथी का सवार न जाने कहाँ चला गया।

जयन्ती से जब पूछा जाता है—"तेरा लाल कहाँ गया है?" तब वह बड़े कष्ट से उत्तर देती है "हेरा गये है।" अर्थात् खो गये हैं।

बालसखा* के उपदेश

लेखक, श्रीयुत विद्याधर शर्मा सर्गरिया, बीकानेर

बा द-विवाद कभी न करो,
ल ड़ना तज, प्रेम पुनीत वरो।
स मझो तुम जीव समान सभी,
खा ओ मत निन्दित वस्तु कभी ॥१॥

बा-जा, वशी, बीन बजाओ,
ल ट्टू, चकरी, रेल चलाओ।
स-ब मिलकर आनद मनाओ,
खा जा खाओ मौज उडाओ ॥२॥

* हर लाइन का पहला अक्षर मिलाने से बाल सखा बनता है।

धुएँ के बादल उड़ाऊँगा

लेखक, डाक्टर रविप्रतापसिंह श्रीनेत

कमाल दस साल का था। बहन फातिमा आठ साल की। दोनों घर के आँगन में खेल रहे थे। सुबह का वक्त था। बूढ़े अलीरजा ने खाँसते हुए पुकारा—"कमाल! ओ कमाल! कहाँ गया? बोलता तक नहीं है!" पुकारने की आवाज बच्चों तक पहुँची; पर दोनों चुप्पी साध गये। फातिमा पानी पीने भाग गई और कमाल मुर्गी के दड़बे के पीछे जा छिपा। अलीरजा ने फिर आवाज दी, लेकिन जवाब नदारद। कारण यह था कि दोनों बच्चे अपने बाप से बहुत डरते थे। अलीरजा का स्वभाव चिड़चिड़ा था। बच्चे अक्सर पिट जाते थे। कमाल गजब का ऊधमी था। पिटता जाता और ऊधम करता जाता!

जुबैदा ने .गुस्से में आकर बुलाया—"कमाल! ओ कमाल के बच्चे! अब्बा बुला रहे हैं, बोलता क्यों नहीं? क्या गूँगा हो गया है?" कमाल धीरे से खिसका और माँ के सामने जा खड़ा हुआ। माँ ने उसे तम्बाकू भरकर हुक्का ले जाने को कहा। कमाल ने डब्बे में से तम्बाकू निकाली। चिलम में, तवे को ठीक करके, रक्खी। कोयले के जिन्दा अंगारे रक्खे। निगाली में मुँह लगाकर गुड़गुड़ाया। फिर अब्बा जान के सामने रख आया। उसे देखते ही अलीरजा नाराज हो गये। चिल्लाकर बोले—"कहाँ गया था बे? दिन-रात खेल ही खेल सूझता है? कुछ काम भी करता है?" कमाल चुपचाप सुन रहा था। इतने ही में अलीरजा ने हुक्का पटक दिया। निगाली निकालकर कमाल की पीठ पर दो-चार हाथ जमा दिये। कमाल समझ ही न सका कि अब्बा मियाँ क्यों चिढ़ गये। मार पड़ते ही वह तिलमिला उठा। बड़ी जोर की चीख़ मारी। जुबैदा, बावर्चीखाने से हाँफती हुई, दौड़ी आई। उसने देखा कि कमाल रो रहा है और अलीरजा दाँत पीस रहा है। वह समझ गई कि कमाल पर बुरी मार पड़ी है।

माँ का दिल ममता से पिघल गया। कमाल को उसने छाती से चिपका लिया। कमाल, माँ के साये में, सिसकियाँ ले रहा था। जुबैदा ने अलीरजा का सामना किया। बोली—"लड़का है या कसाई का बैल? वह क्या जाने तम्बाकू भरना? ज़रा भी रहम नहीं आता।" कमाल अब तक आँसुओं से माँ का दामन भिगो चुका था। आँखें अब भी अब्बा के बर्ताव की शिकायत कर रही थीं, लेकिन दिल माँ की तरफदारी पर हँस रहा था। अलीरजा का चिड़चिड़ापन बेटे के आँसुओं से धुल चुका था। उसे अपने किये पर पछतावा हो रहा था। अलीरजा

कमाल अतातुर्क

से न रहा गया। वह उठा और ज़ुबैदा की तरफ बढ़ा। माँ-बेटे समझे कि वह मारने के लिए ही बढ़ा है। ज़ुबैदा ने बच्चे को अपनी गोद में छिपा लिया। इसी वक्त फातिमा आ गई। वह सीधी अलीरजा के पास जा पहुँची। कुछ तुतलाकर बोलती थी। बोली—"अब्बा! भाई छाब को क्यों मालते हो?" अलीरजा को मालूम हुआ जैसे सभी की आँखों में वह गुनहगार है। फातिमा को उसने गोद में उठा लिया। प्यारी बच्ची को दो-तीन बार चूमा। इतने में कमाल भी आ गया। बोला—"अब्बाजान, मार तो मैं खाऊँ और प्यार मिले फातिमा को?" ...रजा ने कमाल को छाती से लगा लिया। ज़ुबैदा खुश हो गई। माँ का दिल उछल पड़ा। मुस्कराती हुई वह बावर्चीख़ाने की तरफ चली गई।

अलीरजा को लड़के पर रहम आया, लेकिन हुक्के की तलब तो लगी थी। उसका गला सरस रहा था। प्यार से दिल तो भर गया; पर नशे को राहत न मिली। उसने फिर धीरे से कहा—"बेटा! ज़रा हुक्का तो भर लाओ। पानी बदल देना। देखो, तम्बाकू न जले।" कमाल उठा। उसके साथ फातिमा भी हो ली। दोनों ने हुक्का और निगाली को उठाया। बावर्चीखाने के पास ही एक छोटा-सा अलाव था। कमाल ने हुक्के का पानी फेंका। ताजा पानी डाला। निगाली साफ की। फातिमा को हुक्का थमा दिया। आप चिलम में तम्बाकू भरने लगा। फातिमा निगाली से मुँह लगाये हुए, 'गुड़-गुड़, गुड़-गुड़' कर रही थी। कमाल डाँट रहा था, फातिमा और भी ज़ोर लगा रही थी। कमाल का दिल गुड़गुड़ाने के लिए ललच रहा था। वह कह रहा था—"गुड़गुड़ाने से क्या होता है? धुएँ के बादल निकालो, तब जानूँ?" थोड़ी ही देर में चिलम भरकर कमाल आ पहुँचा। फातिमा अलग हो गई। कमाल ने हुक्का सम्हाला। चिलम लगाई। पास ही के चबूतरे पर जा बैठा। हुक्का शान से पकड़े हुए था। कश पर कश खींचने लगा। गुड़गुड़ाहट होने लगी। धुएँ को 'फक-फक' करके ऊपर

छोड़ता जाता। फातिमा अपने भाई साहब के करतब देख रही थी। कमाल कहता—"फातिमा! देखती हो धुएँ के बादल! बादल अपने बरामदे में कैसे घुम रहे हैं?" इसी तरह काफी देर हो गई।

अलीरजा कब तक ठहरता? आवाज आई—"कमाल! हुक्का जल्दी लाओ बेटा। कितनी देर लगा रहे हो?" अब की आवाज में नरमी थी, प्यार था और था अपनापन।

कमाल की सुने बला। वह तो अपने खेल में मस्त था। पाँच-सात मिनट बाद हुक्के की फिर माँग आई, लेकिन जवाब नदारद। अबकी आवाज में कुछ कड़ापन था, हुक्म की दहशत थी। जुबैदा समझ गई कि यदि अब भी हुक्का न पहुँचा तब तो बुरी बनेगी। बावर्चीखाने में से निकली। उसे देखते ही फातिमा तो भाग गई। परन्तु कमाल मियाँ तो अब भी बादल में उड़ रहे थे। जुबैदा देखकर आग हो गई। कमाल के पास आ गई और उसके दोनों कान पकड़ लिये। बोली—"क्यों रे! क्या तुझे भी तलब लगी है?" इतने में अलीरज़ा भी आ गया। जुबैदा अब भी कान पकड़े थी, कमाल के हाथ में हुक्का और निगाली थे। पीछे की तरफ अलीरजा चुपचाप खड़ा था। जुबैदा ने एक थप्पड़ लगाया और पूछा—"क्या कर रहा था? हुक्का क्यों नहीं ले गया?" कमाल ने कहा—"कान छोड़ दो। बतलाता तो हूँ।" जुबैदा ने कान छोड़ दिये। कमाल उठा और थोड़ी दूर जाकर बोला—"अब्बाजान, धुएँ के बादल बनाते हैं। क्या मैं बादल न उड़ाऊँ?"

जुबैदा ने पीछे फिरकर देखा—अलीरजा खड़ा हुआ मुस्करा रहा था। वह भी मुस्करा दी। कमाल भाग चुका था। फातिमा के पास पहुँचा। बादल बनाने और हुक्का गुड़-गुड़ाने की बातें हो रही थीं। इधर अलीरजा हुक्के की जली तम्बाकू फेंक रहा था। जुबैदा ने धीरे से कहा—देखा? बादल उड़ाये जा रहे थे।

चाँदनी में

लेखिका, कुमारी प्रकाश ठाकुर

आज दूध सी रात सखी री लगती है कितनी प्यारी।
चन्दा मामा नभ में हँसकर दिखलाते है छवि न्यारी॥
हँस रही चाँदनी आँगन में आकर चन्दा के घर से।
तारे घर को चले गये है देखो आली अम्बर से॥
आओ हम सब मिलकर खेलें इस सुन्दर उजियाली में।
चन्दा मामा दो अमृत अब हमको भरकर प्याली में॥
आँख-मिचौनी खेलेंगी हम आओ तुम चन्दा मामा।
यदि खेलोगे आँख-मिचौनी आवेगी रजनी श्यामा॥

दादी का शाप

लेखक, श्रीनाथ सिंह

एक चौधरी साहब थे। उनका नाम मार्यो ...ा था। वे हाईकोर्ट के जज रह चुके थे और ...त मशहूर थे। उन्होंने बहुत रुपया इकट्ठा ...ा था, देश विदेश की सैर भी की थी। ...के पास कई मोटरें भी थीं और उन्होंने अपने ...ने के लिए एक बड़े शहर में एक सुन्दर महल ...वाया था। तमाम लोग उनकी अक्ल की ...रीफ करते थे और उन्हें बहुत बुद्धिमान् सम... थे। लेकिन सबसे मुसीबत की बात यह ... कि चौधरी साहब के घरवाले उन्हें सनकी ...हा करते थे। चौधरी साहब के सनकी होने ... एक कहानी मैं "बालसखा" के पाठकों के ...नोरञ्जन के लिए यहाँ लिखता हूँ।

यह उस समय की बात है जब चौधरी ...ाहब ७० वर्ष के हो गये थे और एकाएक बहुत ...मार पड़ गये थे। डाक्टरों का, वैद्यों का, ...कीमों का सबका इलाज किया गया, लेकिन कोई ...ायदा न हुआ और यह जान पड़ता था कि ...ौधरी साहब की मौत अब बहुत करीब है। ...ब उनके दोस्तों और डाक्टरों ने सलाह ...ी कि उनको आबहवा बदलनी चाहिए। किसी ...ने कहा कि चौधरी साहब काश्मीर जायँ तो ...अच्छे हो जायँगे। किसी ने शिमला और मसूरी ...का नाम लिया तो किसी ने दार्जिलिंग का और ...बहुतों ने विलायत जाने की सलाह दी। लेकिन चौधरी साहब ये सब जगहें कई बार देख चुके ...थे। इसलिए उन्हें कहीं जाने की इच्छा न हुई।

रात का वक्त था। चौधरी साहब अपने पलँग पर पड़े सोच रहे थे कि अब मैं अच्छा न होऊँगा। इसलिए मरने के पहले एक गाँव भी देख लेना चाहिए। चौधरी साहब को हिन्दुस्तान में रहते हुए इतने दिन हो गये थे। पर वे हिन्दुस्तान के किसी गाँव से वाकिफ न थे। शहर में पैदा हुए थे, शहर ही में खेले थे, और शहर ही में बड़े हुए थे। अमीर आदमी थे। किसी चीज की कमी न थी। फिर गाँव क्यों जायँ? चौधरी साहब का ख्याल था कि गाँव में सिर्फ गरीब लोग ही रहते हैं। लेकिन जब चौधरी साहब के पास तन्दुरुस्ती न रह गई तब उन्होंने सोचा कि आदमी का सबसे बड़ा धन तन्दुरुस्ती है और वह तन्दुरुस्ती गाँववालों में शहरवालों के मुकाबिले में ज़्यादा पाई जाती है। इसलिए चौधरी साहब को भी सनक सूझी कि गाँव में चलकर रहना चाहिए।

चारपाई पर पड़े हुए वे सोच रहे थे कि किस गाँव में चलकर रहा जाय। उन्होंने हिन्दुस्तान का नकशा उठाया और एक गाँव की तलाश की। उस नक्शे में उन्हें कोई गाँव न मिला। उन्होंने सूबे का नकशा देखा और फिर अपने जिले का नकशा निकाला। नकशे को देखकर उन्होंने गाँव तय किया और अपने घर में एलान कर दिया कि मैं फलाँ गाँव में जाकर बसूँगा और वहाँ से या तो तन्दुरुस्त लौटूँगा या वहीं मर जाऊँगा।

चौधरी साहब के एक नाती था। उसे वे मोहन कहा करते थे। यह मोहन वृन्दावनवाले मोहन की तरह ऐसा वैसा नटखट न था। वह बगल में बन्दूक दाबे पेड पर बैठी हुई चिडियो का शिकार किया करता था। माँ और दादी बहुत समझातीं मगर किसी तरह न मानता था।

जब किसी तरह न माना तब मोहन की दादी ने एक दिन गुस्से में आकर लडके को शाप दिया, "अगर किसी तरह नहीं मानता तो जा, तेरी शादी गाँव की गँवार लडकी से होगी।"

मगर चौधरी साहब का नाती इस पर भी नहीं डरा। वह बन्दूक लिये घूमता रहा और चिडियो का शिकार करता रहा। खैर, अब आगे की कहानी सुनिए। जब चौधरी साहब गाँव को जाने के लिए तैयार हुए, तब उनका यह नाती भी गाँव जाने के लिए तैयार हो गया। बात यह थी कि चौधरी साहब के इस नाती ने भी कभी गाँव नहीं देखा था। इस तरह जब नाती न माना तब चौधरी साहब को नाती को भी अपने साथ लेना पडा।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि चौधरी साहब बहुत धनी आदमी थे और उनको किसी बात की कमी न थी। जिस गाँव मे उनको जाना था उस गाँव में उनके नौकर पहले ही से पहुँचकर डेरे लगा आये। चौधरी साहब के रहने के लिए, पढने के लिए तथा गाँववालों के बैठने के लिए अलग अलग तम्बू ताने गये। खाना बनाने के लिए अलग रसोईघर बनाया गया। करीब के रेलवे स्टेशन से गाँव तक सडक बनवाई गई, ताकि चौधरी साहब आसानी से गाँव में पहुँच सकें। जब सब इन्तजाम हो गया तब चौधरी साहब अपनी पत्नी तथा अपने नाती के साथ उस गाँव मे पहुँचे।

गाँव में हल्ला मच गया कि चौधरी गोपीनाथ गाँव म आ रहे हैं। तमाम गाँववाले उनके डेरे के पास, उनको देखने के लिए, जमा हो गये। ठीक वक्त पर चौधरी साहब की मोटर गाँव म पहुँची। शामियाने के अन्दर गाँववालो को जमा करके चौधरी साहब ने सबसे कहा—"भाइयो, मैंने अभी तक गाँव नहीं देखा था। मैंने सोचा कि मरने के पहले गाँव भी देख लूँ और शायद गाँव में रहने से मेरी तन्दुरुस्ती ठीक हो जाय और मैं कुछ दिन तक और जिन्दा रह सकूँ। इसी लिए मैं गाँव में आया हूँ। अब मेरे पास कोई काम नहीं है। इसमें भी कुछ शक नहीं है कि मैं बहुत अक्लमन्द आदमी हूँ। हाईकोर्ट का जज रह चुका हूँ। मैं सब गाँव के भाइयों को सब तरह की सलाह देने के लिए तैयार हूँ। मुझे सब लोग अपना सेवक समझो और अपना सुख दुख मुझसे कहो।"

दूसरे ही दिन से सब गाँववाले अपनी अपनी शिकायत लेकर चौधरी साहब के पास जाने लगे। कोई कर्ज में दबा था तो चौधरी साहब ने उसे रुपया देकर उसको कर्ज से छुड़ाया, किसी के पास बैल न था तो चौधरी साहब ने बैल खरीद दिया, किसी का मकान ढह गया था तो चौधरी साहब ने नया मकान बनवा दिया। कोई बीमार था तो चौधरी साहब ने डाक्टर बुलाकर उसका इलाज करवाया। गर्ज कि।

जिन चीजों की जरूरत थी, उसको चौधरी साहब ने वे चीजें दीं।

उस गाँव के सभी लोग चौधरी साहब के यहाँ हो आये थे और चौधरी साहब से कुछ न कुछ उपहार पाकर खुश हो रहे थे। अगर कोई चौधरी के पास नहीं गया था तो सिर्फ उस गाँव की एक विधवा और उसकी लड़की। इन दोनों माँ बेटियों के दिन बहुत तकलीफ मे बीत रहे थे। एक दिन माँ ने अपनी बेटी से कहा, "राधा।" राधा उस लड़की का नाम था—"देख, एक रोज तू चौधरी साहब के पास जा और उनसे कोई चीज माँग। चौधरी साहब गाँववालों की मदद करने ही के लिए आये हुए हैं। अगर इस बीच में मेरी और तेरी मदद कुछ भी न हुई तो फिर कभी न होगी।"

लड़की ने कहा—"अम्माँ, तू कहती तो ठीक है, पर मैं जाऊँ कैसे? मेरे पास साबूत धोती भी तो पहनने के लिए नहीं है और फिर क्या खाली हाथ किसी के पास जाना चाहिए? जो अपने गाँव में आये, उसकी खातिरदारी करना तो अपना फर्ज है। मेरे पास क्या है जो मैं जाकर उनको दूँ?"

माँ ने कहा—"बेटी, तू इसकी कुछ भी फिकर मत कर। चैत का महीना है। महुआ पड़ रहे हैं। मैं अभी एक दोना ताजा महुआ भर लाऊँगी। वही चौधरी साहब को दे देना। मेरे-तेरे सामने महुआ कुछ नहीं है, लेकिन वे इसे अंगूर से बढ़कर समझेंगे, क्योंकि उन्होंने यह फल देखा ही न होगा। अब रही बात —ड़े की, सो सुन। मेरे पास मेरा लँहगा और चुँदरी है। यह मुझको तब मिला था, जब मेरी शादी हुई थी। मैंने उनको तहाकर सन्दूक में रख दिया था और वे रक्खे ही रह गये। मैंने सोचा था कि मैं अब इन चीजों को पहनकर क्या करूँगी। मेरी बेटी यानी तू जब बड़ी होगी तब पहनेगी। इसलिए उस कपड़े को निकाले देती हूँ। तू उसे पहनकर जा और जरूर जा।" राधा ने तुरन्त नहाया धोया और अपनी माँ के कपड़े पहने फिर वह माँ से एक दोना महुए लेकर चल पड़ी।

जब लड़की चौधरी साहब के डेरे के पास पहुँची तब वे अपने तम्बू के बाहर एक पेड़ के नीचे बैठे हुए हुक्का पी रहे थे। लड़की को देखकर चौधरी साहब ने पूछा "यह क्या है?"

इतने बड़े आदमी के सामने राधा पहली ही बार गई थी। बड़े जोर से हाँफने लगी और उसके मुँह से, कोशिश करने पर भी, आवाज न निकली। उसे जान पड़ा जैसे वह बोलना ही भूल गई है। चौधरी साहब ने उसको बहुत दुलारा और पुचकारा। बड़ी मुश्किल से उसकी हिम्मत बँधी और उसने काँपती हुई आवाज में कहा—"माँ ने आपके लिए ताजे रसदार महुए भेजे हैं।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा" कहते हुए चौधरी साहब उठ खड़े हुए। उन्होंने लड़की के हाथ से महुओं का दोना ले लिया और कैम्प के अन्दर पहुँचे। वहाँ उन्होंने लड़की को एक [illegible] पर बिठलाकर उसे शहर की बढ़ि[illegible] खिलाईं और उसकी माँ [illegible] ही बात में चौ[illegible]

"आप के लिए
ताज़े रसदार महुए"

लाल मुर्गी

लेखक, श्रीयुत श्याममनोहर सिंह गोंडल

एक गाँव में एक लाल मुर्गी रहती थी। वह बड़ी मेहनती थी। उसके पड़ोसी चूहा, बिल्ली, कुत्ता और बतक थे। ये सभी बड़े आलसी थे। अपना काम अपने हाथ से न करते थे। कहीं कुछ मिला तो खा लिया। मेहनत करके खाना न जानते थे। इसी लिए अकसर उनको भूखा रहना पड़ता था। मुर्गी को यह बात पसन्द न थी। उसके छः बच्चे थे। उनको वह बहुत प्यार करती थी और उनके खाने पहिनने का सदा ध्यान रखती थी।

जब गेहूँ बोने का समय आया तो उसने अपने पड़ोसियों को बुलाकर कहा कि आओ गेहूँ बो लें, जिससे समय पर सबको खाने को मिल जाय। पर चूहा, बिल्ली, कुत्ता और बतक सब ने मना कर दिया। वह अकेली ही काम करने चली, और बड़ी कठिनता से, घूम-घाम-कर कुछ गेहूँ के दाने जमा किये। उसने फिर अपने दोस्तों को बुलाया कि आपस में मिलकर उन गेहूँ के दानों को बो लें। परन्तु उस समय भी उन आलसियों ने मुर्गी को मदद न दी।

मेहनती लाल मुर्गी अकेली खेत पर गई। अपने पञ्जों से उसने जमीन को खोदा और गेहूँ के दानों को बो दिया। इसके बाद जमीन बराबर करके खेत के चारों ओर काँटे लगाये, जिसमें कोई खराब न कर जाय। और तब वह घर लौट आई।

धीरे धीरे पौधे निकलने लगे, ऊपर से उनको सूरज की गर्मी और पानी मिला। पौधे हरे-भरे और खूब बड़े हो गये। मुर्गी उनकी बड़ी रखवाली करती। सुबह-शाम वह अपने बच्चों को लेकर खेत पर घूमने जाती। अपनी मेहनत से उगाये हुए हरे भरे पौधों को देखकर उसका हृदय खुशी से खिल उठता। कुछ समय में बालियाँ निकल आईं। होली आई। सुन्दर, सुहावनी और सलोनी हरी बालियाँ सोने सी हो गईं। जिस दिन होली जली, लाल मुर्गी कुछ बालियाँ खेत से ले आई और उनको भूना। उसने और उसके बच्चों ने खूब मौज से खाया।

कुछ दिन बाद मुर्गी ने सोचा, कि अपने दोस्तों से मदद लेकर गेहूँ के खेत को काट लें। उसमें से कुछ हिस्सा उनको भी दे दूँगी। मुर्गी ने उन सबको बुलाया और कहा, "चलो दोस्तो, खेत काट लें।" परन्तु उन काहिलों की बुद्धि ने अब भी साथ न दिया और मदद देने से मना कर दिया। मुर्गी उनकी मन्द बुद्धि पर हँसी और हँसिया लेकर खुद खेत पर पहुँची, और सारा खेत काट, एक जगह पर जमा किया। फिर उसने अपने पखों की फटकार से गेहूँ के दाने निकाल लिये।

मुर्गी बहुत भली थी। उसने सोचा कि अगर एक दफ़े भी मेरे दोस्त मेरी मदद कर देंगे तो मैं उनको इसमें से कुछ भाग दे दूँगी। उसने एक दफे फिर अपने दोस्तों को बुलाया और कहा कि जरा इन गेहुँओं को चक्की पर पहुँचवा दो तो आटा पिस आये। परन्तु उनकी मोटी अक्ल और आलसी आदतों ने उनको कुछ भी न करने दिया। और मुर्गी को मदद देने से मना कर दिया।

मुर्गी ने अपने हाथों से एक थैला बनाया, उसमें गेहूँ भरे और थैले को लेकर वह चक्की पर गई। गेहूँ पिसवाकर लौटी। अब वह बहुत थक गई थी। रात भर वह खूब मीठी नींद सोई। दूसरे दिन उसने स्वादिष्ट रोटियाँ बनाई।

अब उसने अपने दोस्तो को फिर बुलाया और पूछा कि इन रोटियो को कौन कौन खायेगा। सब, "हम खायेंगे, हम खायेंगे", चिल्लाते हुए आगे बढे। मुर्गी ने कहा, "जो मेहनत करता है वह खाता है। अब मैं और मेरे बच्चे खायेंगे।"

यह कहकर मुर्गी ने अपने बच्चों को बुलाया और उनके साथ बैठकर खूब भर पेट आनन्द से खाया। चूहा, बिल्ली, कुत्ता और बतक सब ताकते रह गये।

मेहनत का फल मीठा होता है

नाई की चतुराई

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण त्रिपाठी, 'श्याम', विशारद

घर जाता था वन से नाई, उसे पड़ा इक शेर दिखाई।
सिंह देखकर उसको लपका, नाई इतने में कुछ दबका॥
झटपट अपना दर्पण लेकर, उसे दिखाया चकमा देकर।
और डाटकर नाई बोला— भाग जल्द तू भाग बघोला॥
नहीं अभी मुँह बाऊँगा मैं, तुझे साफ कर जाऊँगा मैं।
दर्पण में देखी निज सूरत, समझा अन्य सिंह की मूरत॥
जाना यह मुझको खा लेगा, जीता मुझे न जाने देगा।
यही सोचकर वह बेचारा, जल्द हो गया नौ दो ग्यारा॥
बच्चो! कभी नहीं घबराओ, विपत्काल में बुद्धि लड़ाओ।
देखो नाई की चतुराई, कैसे अपनी जान बचाई॥

गणित का चमत्कार

लेखक, साहित्यरत्न प० वशीधर मिश्र, एम० ए०, एल् एल० बी०, एम० एल० ए०

राम से उसके पिता ने एक हजार रुपयों को १० थैलियो में इस प्रकार रखने के लिए कहा कि जितने रुपयों की जरूरत हो उतने रुपये तो बगैर थैलियों के खोले ही थैली उठाकर दे दिये जा सकें। क्या तुम इस प्रकार रुपयो को थैलियों में रख सकते हो? नहीं, तो सुनो। पहली थैली में १ रुपया रखा जायगा, दूसरी में २, तीसरी में ४, चौथी में ८, पाँचवीं में १६, छठी में ३२, सातवीं में ६३, आठवीं में १२७, नवीं में २५४, और दसवी मे ४९३। एक हजार रुपये १० थैलियो में रखे गये। तुम्हे ३५५ रुपये चाहिएँ। तो नवी थैली, सातवीं थैली, छठी थैली, तीसरी और दूसरी थैली उठा लो। ३५५ रुपये हो गये। इस प्रकार जितने चाहो, उतने रुपये उठा लो और थैलियो के खोलना न पडे।

एक पाठशाला के गुरुजी आँखों के अंधे थे। वे रोज सुबह आँगन में खडे हो जाते थे और हर दिशा में लड़के कमरे के सामने खड़े होते थे। चारों दिशाओं की हाजिरी लड़के अपने आप बोल देते थे। पाठशाला में ३६ लडके थे और हाजिरी इस प्रकार होती थी—

०	६	०
६	गुरुजी	६
०	६	०

गुरुजी छुट्टियाँ कम दिया करते थे। ४ लडकों ने घर जाने की ठानी और गुरुजी से बिना पूछे वे चल दिये। बाक़ी ३२ लड़के इस प्रकार दूसरे दिन खड़े हुए कि हर दिशा से नौ नौ की गिनती की आवाज आई पर लडके ३२ ही थे और गुरुजी को कुछ पता न चला। क्या बता सकते हो कि लड़के किस प्रकार खड़े हुए थे?

दूसरे दिन और चार लड़के गुरुजी से बिना पूछे चल दिये। बाकी २८ लडके इस प्रकार खडे हुए कि हर दिशा से नौ नौ की गिनती की आवाज आई और लड़के २८ ही थे पर गुरुजी को पता न चला।

तीसरे दिन और चार लड़के चले गये। बाकी २४ लडके इस होशियारी से खड़े हुए कि हर दिशा से नौ नौ की गिनती की आवाज आई पर लड़के २४ ही थे।

चौथे दिन और चार लड़के चले गये। २० लड़के रह गये पर गुरुजी को न मालूम हो सका। लड़के परेशान थे कि कहीं भंडा फोड़ न हो जाय। गये हुए लड़के वापस नहीं आये थे। पाँचवें दिन दो लड़के गये हुए लड़को को बुलाने गये। बाकी १८ लड़को ने इस तरह हाजिरी दी कि हर दिशा से नौ नौ की गिनती की आवाज आई। शाम तक सब गये हुए । आ गये और छठे दिन प

पनिहा अजगर इसे ७ आदमी उठाये हुए हैं

पनिहा अजगर का खाल (पीछे आठ वर्ष की लड़की खड़ी है)
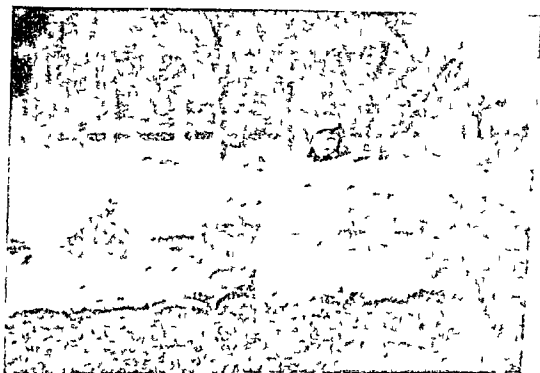
चित्तीदार या 'रीगल' अजगर

अजगरों की कहानी

लेखक, श्री देवदत्त द्विवेदी बी० ए०

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि दुनिया के बड़े बड़े सॉप विषैले नही होते। अब तक ३३ फीट लम्बाई तक के सॉप पाये गये है। कुछ दिन पहले देहरादून में एक सॉप मारा गया था जिसकी लंबाई २२ फीट थी। हिन्दुस्तान में उससे बड़ा सॉप अभी तक नहीं पाया गया। इन बडे सॉपो को अजगर कहते हैं। ये अजगर कई किस्म के होते है। इनमें सबसे बडे अजगर को चित्तीदार अजगर या 'रीगल'-अजगर कहते हैं। ये ब्रह्मा, इडोचाइना, मलाया प्रायद्वीप, फिलीपाइन्स आदि देशों में पाये जाते है। औसत तरीक़े पर ये २२ फीट लम्बे होते हैं। इनका शरीर चित्तीदार होने से देखने में बहुत सुदर लगता है। इनका सिर भूरे रग का होता है और बीच में एक काली लकीर भी रहती है। हमारे देश के पहाडी तथा अन्य अजगर चित्तीदार अजगर से भिन्न होते हैं। यहाँ के अजगर उतने लबे नहीं होते जितने चित्तीदार अजगर हुआ करते है। ये मलाया प्रायद्वीप और जावा मे भी पाये जाते है। ये अक्सर घने जंगलों में रहना पसंद करते है।

अजगर पेड़ों पर चढ सकता है और नीचे लटकती हुई डालियों पर बैठे हुए शिकार को पकड़ सकता है। यह चूहे से लेकर हिरन तक के आकार के जन्तुओं का शिकार कर सकता है। यह देखा गया है कि २० फीट लंबा अजगर १ मन वजन के सुअर को
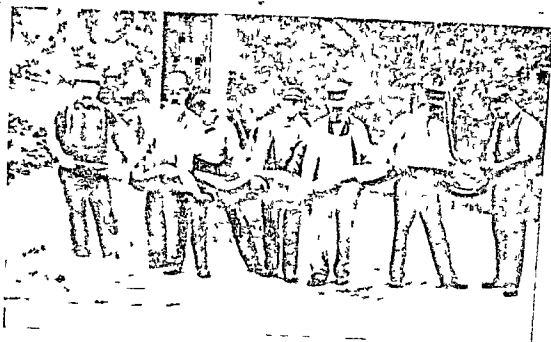
पनिहा अजगर इसे ७ आदमी उठाये हुए हैं
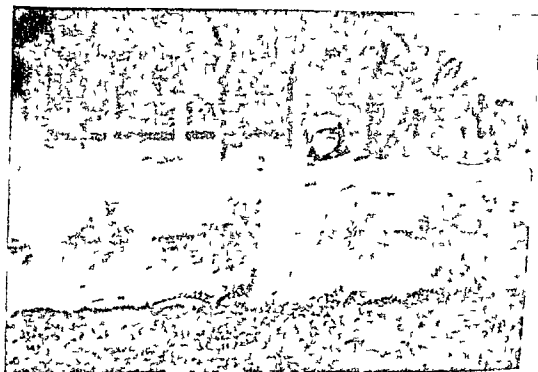
पनिहा अजगर की खाल (पीछे आठ वर्ष की लड़की खड़ी है)

अजगर के जबडे और उसके नुकीले दाँत

आसानी से निगल लेता है। ३० फीट लम्बा अजगर बडे आकार के हिरन को भी खा सकता है।

अपने से मोटी चीजों को अजगर किस प्रकार निगल जाता है, यह आश्चर्य की बात है। लेकिन उसे इस काम में कुछ भी कठिनाई नहीं पड़ती। उसके जबडे काफी चौडे होते हैं और उन्हीं की सहायता से वह बड़े से बड़े शिकार को आसानी से निगल लेता है। यदि हम लोग बहुत बड़ी चीज को एक ही बार में निगलना चाहे तो निगलने और साँस लेने का काम एक साथ नहीं हो सकता अर्थात् निगलते समय साँस रोक लेनी पड़ेगी। परंतु अजगर इन दोनों कार्यों को एक ही साथ करेगा और उसे कुछ भी कठिनाई न होगी।

अजगर अपने शिकार को स्वयं मारना पसंद करता है। वह ऐसे जीव-जंतुओं को मारना चाहता है जिनका ख़ून गरम होता है। कबूतर, गिलहरी, मुर्गी, चूहा, बकरा, हिरन आदि सभी पक्षियों और जानवरों का शिकार अजगर करता है। वह घास से ढँके हुए जंगल के रास्ते में पड़ा रहता है और आने जानेवाले पशुओं और पक्षियों को पकड़ लेता है और उन्हें अच्छी तरह रस्सी सा लपेटकर, दम घोंटकर, मार डालता है और समूचा निगल जाता है। शिकार न मिलने पर अजगर ६ महीने तक जिंदा रह सकता है। औसत तरीके पर अजगर ३० साल तक जीवित रहता है।

अजगर के बारे में ब्रह्मा में एक दंत-कथा प्रसिद्ध है। यह कहा जाता है कि
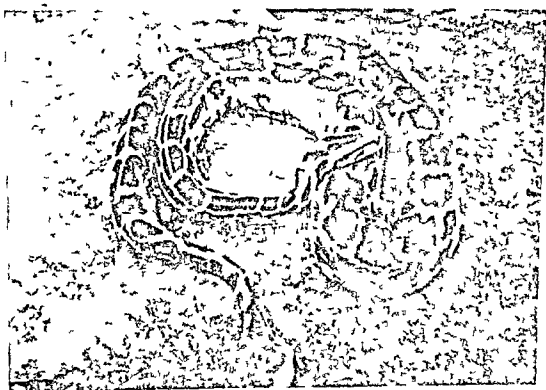
भारतीय अजगर

अजगर पहले जहरीला हुआ करता था। उसे ज़हरीला होने का बहुत घमड था। एक बार वह जगल में अपने मित्रों के सामने डींग मार रहा था कि म इतना ज़हरीला हूँ कि अगर मैं किसी आदमी के पदचिह्न को भी काट लूँ तो वह मर जायगा। उसने दिख-लाने के लिए एक पद-चिह्न पर अपने जहरीले दाँत लगा दिये। और जानवरों और पक्षियो के कहने पर एक कौआ उस आदमी के घर गया जिसके पद-चिह्न पर अजगर ने दाँत लगाये थे। उसने लाटकर अजगर को सूचना दी कि वह आदमी नहीं मरा। यह सुनकर अजगर का गुस्सा बढ़ गया और उसने अपने भीतर का सभी जहर उगल दिया और विष के दाँत भी तोड़ डाले। तभी से वह विषहीन है।

दक्षिणी और मध्य अफ्रीका में पहाड़ी अजगर पाये जाते हे जो २० फीट लम्बे होते है। उत्तरी आस्ट्रेलिया मे भी इतने ही लबे अजगर पाये जाते है। पश्चिमी अफ्रीका मे सबसे सुदर अजगर पाये जाते ह। ये केवल ६ फीट लबे होते है परतु इनके शरीर का रग बहुत सुदर आर आकर्षक होता है। ये अजगर डरने पर गेंद के आकार क हा जाते है और एक बार हाथ से ढकेल देने पर १०-१२ फीट लुढक जाते है।

कुछ अजगर अडे देते है और कुछ अडे न देकर बच्चे ही जनते है। अजगर
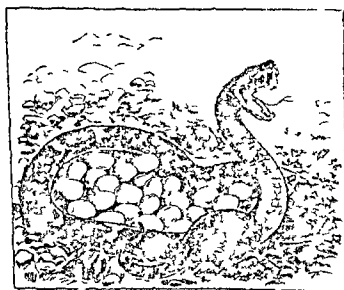
अजगर अपने अडों की रक्षा कर रहा है

बार १०० अंडे दे सकता है। वह अंडों को अपने शरीर से घेरकर तब तक बैठा रहता है जब तक वे फूट नहीं जाते। अजगर का सबसे छोटा बच्चा १ गज से कम लंबा होता है।

कुछ अजगर पानी में भी रहते हैं। ऐसे पनिहा अजगर काफी वजनदार होते हैं और दक्षिणी अमेरिका की दलदली घाटियों में पाये जाते हैं। ये पानी के अन्य जानवरों की तरह पानी में शिकार नहीं कर सकते। ये पानी के भीतर बग़ैर साँस लिये हुए १ मिनिट से अधिक नहीं रह सकते। ये [illegible] और पीले रंग के होते हैं। अजगरों की खाल से थैले, औरतों के जूते, सिगार रखने के डिब्बे तथा अन्य चीज़ें बनाई जाती हैं।

हिन्दुस्तान में एक प्रकार का और [illegible] अजगर पाया जाता है जिसे नामन या [illegible] जतिया कहते हैं। यह भी ज़हरीला नहीं होता। यह १० फीट लंबा होता है और भारतवर्ष के अधिकांश भाग में पाया जाता है। प्रायः सभी लोग इसे जानते हैं क्योंकि यह अक्सर बगीचों और खेतों में अपने प्रिय शिकार—चूहे—की खोज में बैठा रहता है। यह किसानों के लिए लाभदायक है। क्योंकि यह फसल को नुक़सान पहुँचानेवाले चूहों को खा डालता है। यह आसानी से पाला जा सकता है।

जन्म-भूमि

लेखक, श्रीयुत मनमोहनलाल श्रीवास्तव, एम० ए०

जिसकी विमल विभूति विश्व में फैली सुधा समान,
जिसके अतुल प्रेम में जग को मिला अभय वरदान,
जिसकी प्रबल शक्ति धारा का नहीं आदि अवसान,
उस स्वर्गादपि गुरुतर जननी की हम हैं सन्तान ॥१॥
विषम यातनाओं का करके नित सहर्ष आह्वान,
जननी जन्मभूमि सेवा में कभी न होना [illegible]

वीर पुरुष के जीवन का है यह उत्कर्ष महान,
हँसते हँसते निज प्राणों का कर देना बलिदान ॥२॥
रहे देश गौरव का अपने मन में निशिदिन ध्यान,
देश-प्रेम विद्युत् धारा हो नस नस में गतिमान।
हृदयान्तर से उठे निरन्तर यही अलौकिक गान,
जननी जन्मभूमि को अर्पित हैं तन मन धन प्रान ॥३॥

इस हब्शी स्त्री ने माँग काढ ली है। अब यह सींग बनायेगा।

इस स्त्री ने एक सींग बना लिया है। अब दूसरा बनायेगी।
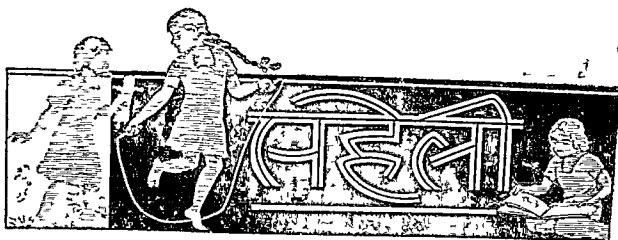
हब्शी केश-कलाप

लेखिका, श्रीमती जयदेवी

बाल सँवारने की प्रथा संसार में सर्वत्र ही है और रहे क्यों न ? बालों ही से सिर और मुख की शोभा है और स्त्रियाँ, जिन्हें अपने सिर और मुख की सुन्दरता का सदा ख्याल रहता है, जरूर बाल सँवारती हैं। शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ लड़कियों को बाल सँवारना न सिखाया जाता हो।

चीन में, जापान में, विलायत में, सभी जगह बाल सँवारने के तरीके अलग अलग हैं। किसी को चीनियों के तरीके बहुत अच्छे मालूम होते हैं और किसी को विलायत-वालों के। हमारे देश में भी, अलग अलग सूबों में, बाल सँवारने के अलग अलग तरीके हैं। बढ़िया नमूना दक्षिण में पाया जाता है।
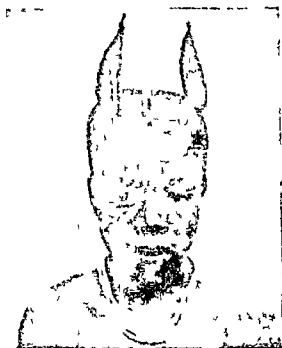
इस हबशी-स्त्री ने बालों के दो सींग बना लिये हैं।

इस हबशी स्त्री ने बालों को सुन्दर बनाने के लिए हाथीदाँत की कई पिनें लगा ली हैं।

इस स्त्री ने सींग न निकालकर नये तरीक़े पर बालों को बाँध दिया है। इसने हाथीदाँत की एक पिन भी लगा ली है।

हब्शी-स्त्रियों के बाल बहुत बड़े नहीं होते—छोटे और घने तथा चुर्रे मुर्रे होते हैं। इन छोटे बालों को ही वे इस तरीके से सँवारती हैं कि देखनेवाले दंग रहते हैं। वे बालों को दो हिस्सों में करके आगे इस तरह मरोड़ती हैं कि आगे दो सींग से जान पड़ते हैं। पहले वे बालों में खूब कंघी करतीं और उन्हें खड़ा करती हैं। फिर कंघी से सिर के बीच से बाल निकाल कर दो हिस्सों में बाँटती हैं; फिर एक को इस कदर मरोड़ती और बटती हैं, कि वह सींग सा हो जाता है। इसी तरह वे दूसरे हिस्से को भी मरोड़ती और बटती हैं। यहाँ इस सम्बन्ध में तीन चित्र दिये जाते हैं। इन तीनों से उनके [illegible] बनाने [illegible] "बाल-सखा"

पढ़नेवाली लड़कियों की समझ में अच्छी तरह आ जायगी। हब्शी लड़कियाँ भी बालों में पिन खोंसने का शौक रखती हैं और कभी कभी तो इतना पिन खोंस लेती हैं कि उनका सिर भीष्म पितामह की बाण-शय्या का नमूना बन जाता है। पिन के अलावा ये बालों में फीते भी बांधती हैं। रहुतेगी स्त्रियाँ अपने सिर में, कतार में, सात सात माँग काढ़ती हैं।

करती कघी बड़े प्रेम से कर चिन्ता। बदनापा दोनों में देखा है वैसा भरपूर
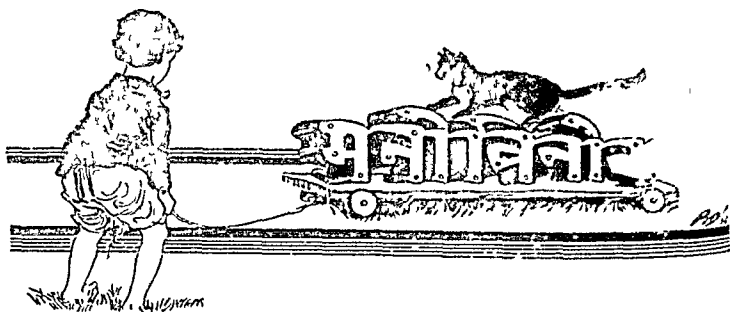
चुटकुले

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, हिन्दी रत्न, करसियाग

(१)

हमारे स्कूल के पुराने चपरासी को अपनी बेटी के विवाह में एकाएक छुट्टी लेकर घर जाना पड़ा और अपने एवज में एक नया देहाती रंगरूट रखना पड़ा। दूसरे दिन करीब ११ बजे हमारे हेड मास्टर साहब ने---जो बंगाली थे--डाकखाने से स्कूल की चिट्ठियाँ मँगवाने की गरज से नये चपरासी को इस तरह हुक्म दे डाला--

हेड मास्टर—चपरासी !

चपरासी—जी सरकार !

हेड मास्टर—जाओ, डाक देखो।

'बहुत अच्छा, सरकार' कह कर बेचारा चपरासी बेतहाशा दौड़ा गया रेलवे-स्टेशन को, जहाँ डाकगाड़ी दारजिलिंग से आकर खड़ी थी। चपरासी प्लेटफार्म के उस पार खड़ा होकर मुँह बाये डाक-गाड़ी देखता रहा। कोई १५ मिनटों के बाद घंटी बजी और गाड़ी चल पड़ी। डाक देखते रहकर चपरासी ने हेड मास्टर के हुक्म की तामील अच्छी तरह कर ही डाली थी। अब वह स्कूल को लौटा और दफ़्र में बैठे हेड मास्टर को झुक कर सलाम किया।

हेड मास्टर नाक और उस पर रक्खा ऐनक, दोनों ऊपर को उठाते बोले—चपरासी !

चपरासी—जी सरकार !

हेड मास्टर—डाक लाया ?

चपरासी—सरकार, डाक त चल गल! (यानी हुज़ूर, डाक तो चली गई।) आप का हुक्म था कि डाक देखो। मैंने उसे शुरू से अंत तक देख लिया। फिर वह चल पड़ी। भला मैं उसे कैसे लाता ?

चपरासी के इस जवाब से हेड मास्टर साहब को जो गुस्सा चढ़ा उसका पार नापने में सारे थर्मामेटर फेल कर गये।*

(२)

श्याम के पिता ने एक दिन फ़ुर्सत के वक्त बैठे बैठे, अपने बचपन की एक तुक

* एक सच्ची घटना के आधार पर, जो यहाँ घटी है।

बन्दी, पास-रक्खी श्याम की कापी पर यों ही लिख दी—

"मास्टर की टर, तेरा घर गया पानी से भर।
जहाँ मेंडकों का टर, वे कर रहे टर टर।"

दूसरे ही दिन, संयोग से, स्कूल में मास्टर ने श्याम की कापी के पन्ने पलटते समय उसे देख लिया और रुखाई के लहजे में बोले—"श्याम, तुम अपनी कापी में बहुत गलत-सलत ऊट-पटांग लिखते हो। मैं तुम्हारी कापी तुम्हारे पिता को दिखाऊँगा।"

श्याम बोला, ऐसा न करें मास्टर साहब। पिताजी आप पर नाराज होंगे।

मास्टर—क्यों ? मुझ पर नाराज़ क्यों होंगे ?

श्याम—यह "मास्टर की टर" उन्हीं की लिखी हुई है।

(३)

बड़े दिन की छुट्टियों में एक देहाती बुढ़िया भी अजायबघर देखने कलकत्ते गई। दोपहर को फकत दो ही पैसे में ट्राम ३ मील का सफर कराकर जादूघर पहुँचाती थी। इससे सस्ती दूसरी सवारी न पाकर, बुढ़िया ने ट्राम ही में जाना तय किया। बस, चलती ट्राम को रुकवाकर बुढ़िया उसमें दाखिल हुई। ट्राम चलने ही वाली थी कि बुढ़िया ने कंडक्टर से कहा, "रोकना बेटा इसे, मैं उतरूँगी।" कंडक्टर जरा तैश में आकर बोला, "क्यों माई, कहाँ जाओगी ?" बुढ़िया बोली—"बेटा, जादूघर देखने के लिए जाना था, पर वहाँ कल जाऊँगी। आज तो सिर्फ यही देख लेती हूँ कि ट्राम से उतरने, और चढ़ने में कोई जोखिम तो नहीं है।"

(४)

एक छोटे लड़के को बुखार चढ़ा करता था। उसका पिता डाकखाने से कुनैन की टिकियाँ लाया। वह जानता था कि लड़का कड़वी टिकिया हर्गिज नहीं खायेगा। सो खोये की एक बर्फी के बीचोबीच टिकिया छिपा दी। और उसे खाने को देकर दफ़्तर चला गया।

शाम को लौट कर पुत्र से पूछा, "क्यों बेटा, वह बर्फी खा ली थी न ? मीठा स्वाद था न ?"

लड़का बोला, "हाँ, मैंने सारी की सारी खा ली थी और पिताजी उसमें एक कड़ी-सी खारी टिक्की भी हलवाई की बे-खबरी से आ मिली थी। उसे मैंने निकालकर फेंक दिया था।"
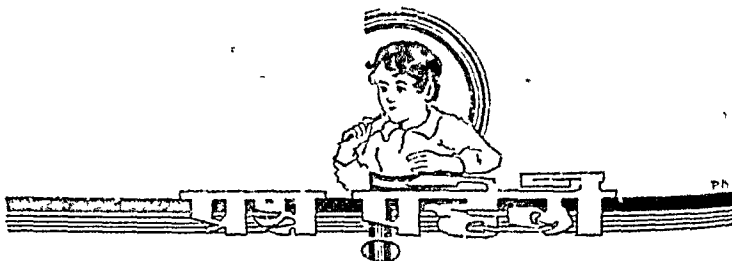
नई पहेलियाँ

(१)

काला घोड़ा, सफेद सवार।

(उत्तर—रोटी और तवा)

—कुमारी रमणबाई

(२)

रोज चले पर, हटे न तिल भर।

(उत्तर—दरवाजे का किवाड़)

(३)

टूटा हाथ देख घर आती।

(उत्तर—सिगनल)

—रामनारायण महेश्वरी

(१)

एक कुआँ बत्तीस किनारे,
उस पर बैठे दो बनजारे।

(उत्तर—मुँह, दाँत और होंठ)

(२)

एक जानवर असली,
उसमें हड्डी न पसली।

(उत्तर—जोंक)

—प्रभामहेश

एक गोरी एक काली नार,
एक ही नाम धरा करतार।
एक छोटी एक बड़ी कहाये,
एक थोड़ी एक बहुत बिकाये।

(उत्तर—इलायची)

—अशोकलता देवी

एक देश में ऐसा हुआ,
आधा बगुला आधा सुआ।

(उत्तर—मूली)

—विरजाबाई

बुझौवल

मैं बिहार का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान हूँ। प्रथम दो अक्षरों के मिटाने में पर, अंतिम दो अक्षरों के मिटाने से राज्य और बीच के दो अक्षरों के मिटाने से मार्ग का बोध होता है। मेरा नाम क्या है?

(उत्तर—राजगृह)

—रामनन्दन शर्मा

मेरा नाम तीन अक्षरों का है, जिसका दूसरा अक्षर मिटा देने से लोहार के एक औजार का बोध होता है और तीसरा अक्षर मिटा देने से आग का बोध होता है।

(उत्तर—आगरा)

—लक्ष्मीनारायण लाल

—

प्रिय श्रीनाथसिंह जी,

बाल-सखा के उत्तर पढ़कर, हुआ न जी कुछ तुष्ट,
पर इस बार आपने लिखकर किया मुझे सन्तुष्ट।
यदि ऐसे विनोद की कविता छपता रहीं बराबर,
तो फिर मैं भी कई बार लिखने को हूँगा तत्पर।
और भूलकर वय-मर्यादा, मैं बालक फिर बनकर,
खेलूँ-कूदूँ मौज उड़ाऊँ चिन्ताएँ सब तजकर।
होगा यही काम फिर अपना मैं नित हँसूँ-हँसाऊँ।
बालसखाओं में घुल मिलकर 'बालसखा' बन जाऊँ।

आपका
शालिग्राम वर्मा।
२८-४-३६

शिकायतें

'बालसखा' के फरवरी १६३६ के अङ्क में पृष्ठ ७० पर एक कविता "छड़ी का मेरा घोड़ा" शीर्षक से प्रकाशित हुई है जिसके रचयिता नारायणदास नामक कोई सज्जन हैं। यह सम्पूर्ण कविता उक्त सज्जन ने एक पाठ्य पुस्तक से चोरी करके बाल सखा में प्रकाशित कराई है। क्योंकि यह कविता शिक्षा विभाग, मध्य-प्रदेश की हिन्दी-प्रवेशिका में भी कई वर्ष तक "मेरा घोडा" शीर्षक से प्रकाशित होती रही है। ऐसी चोरी करना शर्म की बात है।

'बालसखा' के जनवरी के अंक में व्यंग चित्रों के स्कूल की सूचना छपी थी। मैंने व्यंग चित्र वालों को 'खेल-घर' इलाहाबाद के पते पर पत्र लिखा कि नमूना भेजें और सीखने के कायदे भी लिख भेजें लेकिन कोई जवाब नहीं आया। इस खेलघर ने अभी काम शुरू किया या नहीं?

सरदारमल,
डीडवाना, मारवाड़।

कलम-सखा

मुझे टिकट संग्रह करने का बहुत शौक है। मेरे पास इँगलैंड, अमेरिका, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों के टिकट हैं। जो पाठक उन्हें बदलना चाहें वे मुझसे पत्र व्यवहार करें।

—किशनदयाल माथुर,
C/O देवीदयाल जी माथुर
हेडक्लर्क, रेजीडेन्सी जोधपुर।

मुझे टिकट संग्रह का बहुत शौक है। मैं पाठकों को यह बताना चाहता हूँ कि मैं कुछ टिकट बेचना चाहता हूँ जो फ्रांस, बेलजियम इत्यादि देशों के हैं।

यदि पाठक टिकट अदल बदल करना चाहें तो मैं उसके लिए भी तैयार हूँ। जो पाठक चाहें, नीचे दिये पते पर पत्र व्यवहार करें—

जी० एल० मिश्रा,
१०२०, दुर्गाभवन,
बाग मुजफ्फर खाँ आगरा।

मुझे सिक्के जमा करने का बहुत शौक है और मेरे पास योरप और एशिया के करीब

करीब सभी सिक्के हैं। जो सज्जन मुझसे सिक्के अदल-बदल करना चाहें या सिक्कों के बारे में पूछ ताछ करना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें—

आशिष प्रिय राजकुमार,
C/o मि० जी० गैब्रियल,
सदर बाजार, मथुरा।

मुझे टिकट संग्रह करने का कुछ दिनों से शौक है। मेरे पास अभी थोड़े ही विदेशी टिकट हैं, पर हिन्दुस्तान के टिकट मेरे पास काफी हैं जिनमें विक्टोरिया और सप्तम एडवर्ड के टिकट भी हैं। जो सज्जन मुझसे टिकट खरीदना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें —

कमलप्रकाश
C/o चिन्तामणि शिवचरनलाल
बुकसेलर, फर्रुखाबाद।

मुझे देश-विदेश के टिकट संग्रह की अत्यन्त प्रबल इच्छा है। मेरे पास इँगलैंड, जर्मनी, जापान, चीन, अमेरिका, अबिसीनिया और आस्ट्रेलिया इत्यादि के टिकट मौजूद हैं। जो 'बालसखा' के पाठक मुझसे टिकट अदल-बदल करना चाहें वे नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार कर सकते हैं —

राधेश्याम पोद्दार
C/o नन्दलाल भुरामल पोद्दार
सम्बलपुर।

मुझे टिकट जमा करने का बहुत शौक है। मेरे पास देश-विदेश के टिकट मौजूद हैं। जो सज्जन टिकट बेचना चाहते हों वे इस पते पर पत्र व्यवहार करें—

प्रेमचन्द सुचन्ती
'कोठी' बिहार शरीफ
(पटना)

मुझे फोटोग्राफी से बहुत शौक है। मेरे पास सैकड़ों निगेटिव व प्रिंट रक्खे हैं। मेरे पास फोटोग्राफी का हर सामान मौजूद है और अपने घर ही में फोटो का सब काम करता हूँ। जिन भाइयों को शौक हो वे नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें। मैं पत्र द्वारा धोना, छापना सब बता सकता हूँ।

दिनेशचन्द्र द्विवेदी,
C/o रामपाल सिंह एण्ड ब्रादर्स,
शाहजहाँपुर।

मेरे पास कई जगह के टिकट हैं, विदेशी, देशी और रियासतों के भी। आप मुझसे जिस विषय के बारे में पूछेंगे, उसका मैं आपको उत्तर दूँगा। पत्र-व्यवहार इस पते से करें—

विष्णुप्रसाद व्यास विद्यार्थी,
C/o ठाकुरप्रसाद शर्मा
सेकन्ड मास्टर सर्राफ स्कूल,
लश्कर (ग्वालियर स्टेट)
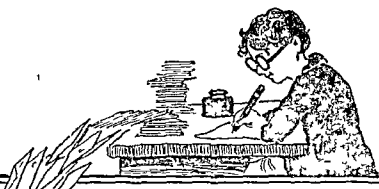
इनाम जीतनेवाले

मार्च की प्रश्न पहेली की प्रतियोगिता में जीतनेवालों के नाम "बालसखा" के अगले अङ्क में प्रकाशित होंगे। इनाम कुल १० को दिया जायगा। प्रत्येक के पास एक बढ़िया पुस्तक भेजी जायगी। आशा है प्रतियोगियों का इससे विशेष उत्साह होगा।

अन्य उत्तर-प्रेषक

मार्च के "बालसखा" में जो पहेलियाँ छपी थीं उनके उत्तरदाताओं की एक लम्बी सूची हम अप्रैल के बालसखा में छाप चुके हैं। वह सूची सिर्फ ३० मार्च तक आये हुए जवाबों की थी। ३० मार्च के बाद जो जवाब आये हैं उनके भेजनेवालों के नाम हम यहाँ सधन्यवाद छापते हैं —

सर्व श्री सरजूदीन वर्णवाल, गोरखपुर। हिलारियन बेनारदो, चुहरी चम्पारन। शैलेन्द्र कुमार, बदायूँ। रामनारायण आभीर, हैदराबाद। अनुरागलता, नजीबाबाद। प्रेमचन्द जैन, सरधना। कचनलाल भगवानदास जैन, राहिरा। गिरिवरप्रसाद शर्मा, ग्वालियर स्टेट। पूनमचन्द चोपड़ा, बीकानेर। विमला भार्गव, सिउनी। हीरामन शङ्कर राव सोनावने, इटारसी। रामकिशोर बैजल, दिल्ली। रामनारायणलाल गोयन्दका, इँडलौद। सर्वशक्ति स्वरूप, जलालाबाद। कुन्दनमल शाह, सिरोही। राजनाथ गुप्ता, कानपुर। प्रभारानी श्रीवास्तव, इलाहाबाद। सुशीला कुमारी यादव, खुशाब। रामप्रवेश सिंह, आरा। शारदा देवी, सीतापुर। मदनलाल छगाणी, नेडा। मदनमोहन पाठक, चरखारी स्टेट। इन्द्रप्रकाश मित्तल, मथुरा। चन्द्रप्रभाकर दुबे, बम्बई। पुरुषोत्तम सटगे, मकड़ाई स्टेट। श्रीमान् राजा साहब बहादुर, उनवल राज्य। महाशा चिरंजीलाल, पटियाला। सुरेशचन्द्र शुक्ल, कानपुर। वेंकटरावनि लोगटल, मिरियाल गूडा। राजकुमारी सज्जन कुँवरि, भाडर। विजयदत्त मिश्र, अलीगढ़। विजयकुमार जैन, सरधना। नन्दलाल सारडा, दार्जिलिंग। सावित्री देवी, मुजफ्फरपुर। सुरेशकुमार, बरली। रामस्वरूप पाटोदिया, कलकत्ता। पन्नालाल, बिलासपुर। अरविंद राव योगी, रायगढ़ राज्य। शरदचन्द्र चतुर्वेदी, आगरा। कुमारी सुशीला पचौली, प्रफुल्ल, उरई। आनन्द सागर, उरई। कुँवर माधोप्रसाद, देहरादून। रमादेवी गुप्ता,

बुरी आदतें और उनके कुपरिणाम, तदुरुस्ती किस तरह खराब होती है, रेलयात्रियों की जानकारी की कुछ विशेष बातें, नेक सलाह इत्यादि उपयोगी बातों का समावेश है। इसमें "श्री पार्वती की तपस्या" शीर्षक एक रंगीन चित्र तथा शिव-पार्वती कथा सम्बन्धी चार सादे चित्र भी हैं। पञ्चाङ्ग का आवरण-पृष्ठ आकर्षक है और उसके अन्त में शिव-पार्वती की सचित्र कथा भी दी गई है। ऐसा सुंदर तथा उपयोगी पञ्चाङ्ग निकालने के लिए हम प्रकाशक को बधाई देते हैं।

नहीं छपेंगी

खेद है कि स्थानाभाव के कारण नीचे लिखे हुए लेख आदि नहीं छप सकेंगे। आशा है, प्रेषकगण क्षमा करेंगे—

कविता—श्री जगदीशनारायण शर्म्मा। मालती व सरस्वती—श्री आर० यस० पंडित। प्रेम-पत्र—श्री रामकृपाल खनीजे। पहेलियाँ—श्री रामस्वरूप पाटोदिया। भजन—श्री वासुदेव-प्रसाद लक्ष्मीनारायण लाल। मेरा अछूत होना इत्यादि—श्री गिरिजाशंकर मिश्र। पहेलियाँ इत्यादि—श्री राजकिशोरप्रसाद। आजकल के ढोंगियों की दशा—श्री आनन्दप्रकाश सिंह। मेरा डाइू—श्री विनायकप्रसाद। समर-परीक्षा—श्री रवीशचन्द्र अग्रवाल। गान्धी क्या लाया—श्री बेलराम कुमार। कहानी—भीम-राज चंद। सोने की बात—श्री महेन्द्रप्रकाश माथुर। अप्रैल फूल—श्री राकेशमोहन जोशी। पहेलियाँ—श्री देवीप्रसाद साबू। वीर सैनिक बनेंगे—रमेश बाबू भोइन्दा। कमाल अता-तुर्क—श्री प्रेमचन्द सुचन्ती। आह्वान—श्री घनश्यामस्वरूप अस्थाना। एक घोड़े की आत्म-कहानी—श्री भगवानचन्द्र शुक्ल। मेज की आत्मकथा—श्री विष्णुप्रसाद व्यास। जापान में शिक्षा-प्रचार—श्री भगवान सिंह किहना। चोटी या हैट या दोनों—श्री योगेन्द्र प्रकाश। मनोविनोद इत्यादि—श्री माणिकलाल चौधरी। तावीज—श्रीकृष्णचन्द्र शर्मा। फूट का दुश्मन—श्रीमती मामी 'प्रत्यश्वा'। गोपाला बनिया—श्री अजयकुमार। लालच बुरी बला है—श्री जे० यस० वकटावासी। उनमें से एक इत्यादि—श्री ओंकारनाथ। राजा और मंत्री—श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र। लोभी सेठ—श्री कमला देवी। कवि की वीरतापूर्ण कृति—श्री राय बहादुर। बालचर गीत—श्री जागेश्वर-प्रसाद उपेन्द्र। सत्याग्रही की कविता—श्री बाबूलाल शोनकर जी। खटमल—कुमारी शाता मीलक। पहेली—श्री रतनलाल सुरा रका। कविता—श्री जागीर सिंह। खलिहान की ओर—श्री हनुमानप्रसाद सिंह। पहेली—श्री शिवकुमार माथुर।

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press Ltd., ALLAHABAD

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वर्ष २३] जून १९३९—ज्येष्ठ १९९६ [संख्या ६

उत्साह

लेखिका, श्रीमती विद्वत्तमा मिश्र

क्या डरने की बात न अब तक पूरी हुई पढ़ाई है ?
क्यों घबड़ाते हो मन में क्या पास परीक्षा आई है ?
जो मेहनत से पेड़ सींचता वही मधुर फल खाता है,
जो पढ़ने में श्रम करता वह अच्छे नम्बर पाता है।
मत मुख मोड़ो, हिम्मत छोड़ो, समर-भूमि में अड़े रहो,
विजय मिलेगी, कीर्ति मिलेगी, पैर जमाये खड़े रहो।
हँस हँसकर बाधाएँ झेलो, दुख को गले लगाओ तुम,
जो आगे बढ़ गया कदम मत पीछे उसे हटाओ तुम।
फूल बनेंगे यही शूल सब, साहस अगर दिखाओ तुम,
पिछड़ रहा हो उस साथी को फिर फिर याद दिलाओ तुम।
मत मुख, मोड़ो हिम्मत छोड़ो, समर-भूमि में अड़े रहो,
विजय मिलेगी, कीर्ति मिलेगी, पैर जमाये खड़े रहो।

बापू-भक्त मीराबाई

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी मगनवाडी, वर्धा

बापू भक्त मीराबाई

आज ऐसा कौन पढ़ा-लिखा हिन्दुस्तानी होगा जो श्रीमती मीरा बेन के नाम से कुछ जानकारी न रखता हो? श्रीमती मीरा बेन का अँगरेजी नाम "मेडलीन स्लेड" है। उनके पिता का नाम "सर एडमंड" है जो ब्रिटिश जङ्गी बेड़ों के सेनापति थे। आज वही अँगरेज महिला (श्रीमती मीरा बेन) महात्मा गांधी के साथ एक ग्रामीण महिला बन गई हैं। उनको देखकर सभी लोग ताज्जुब करते हैं।

मीरा बेन के बचपन की कहानी उन्हीं के शब्दों में सुनना ठीक होगा—"मैं उन अँगरेज बालिकाओं की तरह पली हूँ जो खाने-पीने, मौज उड़ाने का जीवन व्यतीत करती हैं। मैं उनके साथ थियेटरों में गई, घोड़ों की सवारी की, भोज और दावतों में शरीक हुई, फूलों और फलों का सौन्दर्य लिया।" उन्हीं सुखों में पली हुई मीरा बेन आज एक देहात में महात्माजी के साथ ग्रामीण-जीवन व्यतीत कर रही है। उन्होंने अपने सिर के बाल कटा डाले हैं, और हिन्दुस्तानी ढङ्ग की धोती तथा चप्पल पहन-कर वे काम करती रहती हैं। मीरा बेन में किसी तरह का फैशन नहीं है।

श्रीमती मीरा बेन १९२६ ई० में महात्मा गांधी के पास इँगलैण्ड से हिन्दुस्तान आ गईं। तब से उन्होंने अपना रहन सहन, खान-पान आदि हिन्दुस्तानियों की तरह बना लिया है। मैं तो यह भी लिखूँगा कि वे हिन्दुस्तानियों से भी एक कदम आगे बढ़ गई हैं।

मीरा बेन का हृदय बहुत सरल है। आप महात्मा गांधी के खादी-प्रचार, हरि-जन उद्धार और ग्राम-उद्योग के काम में बहुत भाग लेती हैं, विशेषकर आपको यही काम अच्छे लगते हैं। महात्माजी की आज्ञानुसार हिन्दुस्तान की भलाई के लिए आपने अपना तन, मन, धन सब कुछ महात्माजी को अर्पित कर दिया है। महात्माजी आप पर बहुत स्नेह रखते हैं और वैसे ही आप महात्माजी की [illegible] करती हैं।

महात्मा गांधी और चार्ल्स सेल्डेन के साथ मीराबाई एक दावत में भाग ले रही हैं।

दोनों में पिता पुत्री का नाता स्थापित हो गया है। छोटे से छोटा काम करने के पहिले मीरा बेन महात्माजी से आज्ञा ले लिया करती हैं।

मीरा बेन हिन्दुस्तान के ग्रामों की गदगी को देखकर आश्चर्य करती है। इस गदगी को दूर कराने के लिए कुछ समय पूर्व उन्होंने अपना निवासस्थान सिंधी नामक एक ग्राम को बनाया था। जो मीरा बेन महलों में रहा करती थीं वही एक छोटी सी झोंपड़ी में रहती थीं जिसके आस-पास से बहुत दुर्गन्ध आती थी। एक दिन मीरा बेन ने स्वय पूज्य बापूजी से हँसते हुए कहा, "बापूजी, तीन-चार बजे रात के बाद से गदगी के मारे नींद नहीं आती।" बापूजी ने कहा, "हमें यहाँ धीरज रखकर काम करना होगा। गदगी आती है यह तो मुझे भी मालूम है, लेकिन इसे दूर करना तुम्हारा काम है।"

मीरा बेन के हर एक काम में ग्रामीणता दिखलाई देती है। किसी चीज के टुकड़ों को किस तरह इस्तेमाल करना चाहिए, यह बात हमें मीरा बेन के कामों को देखने से मालूम होगी। इधर-उधर पड़े हुए पत्थरों और ईंटों के टुकड़ों को इकट्ठा करके सुदर से सुदर चबूतरा तैयार कर लेना उनके लिए बहुत आसान काम है। जब मीरा बेन पानी इस्तेमाल करती हैं, तब वे ध्यान रखती हैं कि जो पानी मैं अपने इस्तेमाल में ला रही हूँ इसका क्या कुछ और भी इस्तेमाल हो सकता है। वह ऐसी जगहों पर बैठकर हाथ-पाँव और बर्तन धोयेंगी जहाँ से वह पानी बहकर फूलों की जड़ों या साग-भाजी की क्यारियों में चला जाय। मीरा बेन मजदूरों की सहायता से अपने लिए झोपड़ी भी तैयार कर लेती हैं। इस तरह की झोपड़ी बनाने की सब चीजें गाँव की ही होती हैं और इस तरह तैयार की गई झोपड़ी की सुदरता देखकर सभी लोग आश्चर्य करते हैं। गाँवों में [illegible] पर मीरा बेन अपने काम से सभी

मीरा बहन पेशावर के नार्मल स्कूल की लड़कियों को चरखा चलाना सिखा रही हैं।

के रखता है। उन्हीं बर्तनों में वह अपना भोजन खुद पका लिया करती हैं। मीरा बेन अपने लिए सूत कातने आदि की पोनी खुद धुनकर बना लिया करती है। आश्रम के छोटे-बड़े सभी कामों को वे अपने हाथ से करती रहती हैं।

आश्रम के काम से छुट्टी पाकर मीरा बेन गाँवों में निकल जाती है। वहाँ की तमाम स्त्रियाँ, बच्चे और पुरुष मीरा बेन से बहुत हिल-मिल जाते हैं। गाँवों की बहुत सी स्त्रियाँ अपनी घर-गृहस्थी की कितनी ही बातें उनसे दिल खोलकर बतलातीं और समझ हैं। मीरा बेन गाँवों के रोगियों की बड़ी ... रखती हैं, घबराये हुए लोगों को धीरज बँधाती है और उन्हें संकटों से बचने के तरीक़े बताती हैं। मीरा बेन की सलाह सबको धीरज और तसल्ली देनेवाली होती है। गाँवों के बच्चों के साथ मीरा बेन बहुत प्रेम करती है। उनको अपने साथ बैठाकर चरखा चलाना, तकली घुमाना, कपास साफ करना सिखाती हैं। बीच-बीच में मौक़ा मिलने पर उन्हें सफाई की शिक्षा भी देती है। थक जाने पर उन्हें खेल खेलने की ओर उत्साह बँधाती है। जब गाँवों में से मीरा बेन आश्रम को आने लगती हैं, उनके पीछे कुछ बच्चे "मीराबाई" "मीराबाई" कहते हुए चले ... हैं। मीरा बेन को गाँवों के छोटे

छोटे भोले-भाले बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। वे आकर कभी-कभी आश्रम में ऊधम भी मचा देते हैं, परतु मीराबाई उन्हे प्यार करती है।

मीरा बेन आश्रम की चीजों को बहुत सफाई से रखती हैं, अपने खाने-पीने और पहनने का सामान बहुत कम इस्तेमाल करती हैं। अपने रहने आदि के कमरों की सफाई स्वय करती है। मीरा बेन कुएँ से पानी भी भर लिया करती हैं। उनका कहना है कि सबको अपने अपने कामों के लिए स्वावलम्बी बन जाना चाहिए और जब तक शरीर में बल हो तब तक किसी से सेवा नहीं लेनी चाहिए; क्योंकि अपना काम अपने हाथ से कर लेने में स्वाभिमान पैदा होता है।

मीरा बेन हिन्दी बहुत अच्छी तरह पढ़ती और बोलती है। उनके रामायण और गीता के शुद्ध उच्चारण को सुनकर यह कोई अनुमान नहीं लगा सकता कि इनका जन्म इँगलैण्ड मे हुआ होगा।

मीरा बेन बापू के पास क्यों आई? इसका भी थोड़ा हाल उन्हीं के शब्दों में पढ़ना अच्छा होगा। "इँगलैण्ड के सुख-भोग मुझे आन्तरिक शान्ति नहीं देते थे। मेरे आस पास की चीजें मुझे कष्ट देती थी। मेरी आत्मा किसी दूसरी चीज की भूखी रहती थी और मै इधर-उधर उसकी तलाश करती थी। उस आन्तरिक आनन्द की तलाश मैने चित्रकारी में की, कविता में उसका अनुभव किया और सङ्गीत के स्वरों में उसकी झङ्कार सुनी; पर कुछ समय बाद फिर मुझे उसी दुःख का अनुभव होने लगा। मै सन्तुष्ट नहीं हुई। मैंने समझा कि जीवन की शान्ति कहीं दूसरी जगह है। वह मुझे इँगलैंड में नहीं मिलेगी। आखिरकार मुझे रोशनी मिली। एक दिन फ्रांस के जगत्-प्रसिद्ध विद्वान् रोमियाँ रोला की गाधी पर लिखी हुई एक किताब पढ रही थी। जिस दिन, जिस घड़ी, मैने उसे पढा तभी समझ लिया कि मै जिस चीज की तलाश में थी वह मुझे मिल गई। पुस्तक के लेखक से मै मिली। उनकी सलाह से मैं भारत आने को तैयार हुई, लेकिन इसके पूर्व अपने देश में घर पर ही मैने साल भर तक तपस्या की। अमीरी खान पान छोड कर सादे जीवन और उच्च विचार का पाठ पढ़ा, स्वाध्याय किया और कातना-बुनना भी सीखा। इस तरह के जीवन में मुझे अधिक स्फूर्ति-शान्ति मिली। जब मैने समझ लिया कि मै भारत के योग्य हो गई तब मै महात्माजी के पास साबरमती आश्रम में आ गई

मीरा बेन आज सचमुच बापू की भक्त मीराबाई है, अर्थात् वह वर्तमान भारत की मीराबाई है। पूज्य महात्माजी में आपकी अटूट श्रद्धा और भक्ति है।

रुपयों की थैली। साया लेने का प्रबन्ध मैं स्वय कर लूँगा।" यह कहकर उसने जमीन पर से साये को समेटना शुरू किया, जैसे कोई बिखरी हुई चीज को समेटता है। अपना काम पूरा करके हरी पोशाकवाला चलता बना।

(७)

लैली धीरे धीरे अपने घर की ओर चला। अभी तक वह पेड़ों के नीचे होकर जा रहा था। जब वह बाहर मैदान में पहुँचा तो उसने देखा कि वास्तव में उसका साया कहीं भी नहीं पड़ रहा है। घर पहुँचकर जब थैली खोली और रुपयो को जमीन पर उड़ेला, तो थैली में उतने ही रुपये और भर गये। अब क्या था! इधर वह थैली को खाली करता उधर वह फिर भर जाती। मानों वह थैली खाली रहना जानती ही न थी। लैली ने अपने मन में कहा "बला से, साया नहीं तो न सही, सदा के लिए अमीर तो बन गये।"

(८)

अब आगे का हाल सुनो। लैली जब कभी बाजार जाता तो बहुत सँभल कर दीवालों और पेड़ों के नीचे नीचे छाया में होकर निकलता, ताकि उसका भेद न खुल जाये, मगर 'ताड़ जाते हैं [illegible]।' ताड़[illegible] वाले तो भगवान् को [illegible] । औ[illegible] [illegible] बात से वह [illegible] [illegible] एक दिन [illegible] वह बाजार गया। आदमियों में एकदम शोर मचने लगा "अरे! देखो एक विचित्र आदमी! छायाहीन पुरुष!" फिर क्या था, चारों ओर से उँगलियाँ उठने लगीं। बेचारे को निकलना कठिन हो गया। जैसे तैसे जान छुड़ाकर वह घर पहुँचा। उसका बाजार आना-जाना बिलकुल छूट गया। यदि कभी आवश्यकता पड़ने पर जाना पड़ता तो वह सूर्यास्त के बाद या रात में निकलता। ऐसे समय कभी भूलकर भी घर से बाहर पैर न रखता जब स्कूल के लड़कों की छुट्टी हुआ करती, क्योंकि इस शैतानी पल्टन से भूत भी भागते हैं। लैली बेचारा किस खेत की मूली था। वह तो साया बेचकर जञ्जाल में पड गया।

(९)

जब लैली बहुत परेशान किया गया तो एक दिन उसने अपने नोकर को वही रुपयों की थैली दी और उसी हरी पोशाकवाले आदमी का हुलिया अच्छी तरह समझाकर कहा—"यह रुपयों की थैली उसके पास ले जाओ और उससे कहना कि जिससे तुमने साया मोल लिया है उसने अपना वापस माँगा है, कृपा कर दे दीजिए। और यह भी कहना कि अगर तुम ऐसा न करोगे तो वह आत्म[illegible] [illegible] लेगा।"

नौकर बताये हुए पते पर हरी [illegible] के यहाँ पहुँचा तो उसे बताया [illegible] [illegible], घण्टा भर हुआ

होगा, अपने मुल्क के लिए रवाना हो गया। जब नौकर समुद्र के किनारे पहुँचा तो मालूम हुआ कि जहाज एक मील निकल गया है। नौकर वापस आया और लैली का साथ फिर न मिला। उस बेचारे का जीवन भारू हो गया। अन्त में उसे नगर छोड़ना पड़ा। वह रात में सब कुछ छोड़कर घर से निकल गया और जीवन का शेष भाग दुनिया से छिपकर चोरों की तरह बिताया।

बच्चो, केवल धन से मनुष्य की आत्मा तृप्त नहीं होती। उसे ससार में सम्मान, आदर और मेल-जोल की भी आवश्यकता पड़ती है।

उलटी नगरी

लेखक, श्रीयुत राधेश्याम पोद्दार

उलटी नगरी एक अनोखी, वस्तु जहाँ की उलटी-पुलटी।
उलटी दुनिया, उलटा पर्वत, उलटे पेड़ चिमनियाँ उलटी॥
देतीं दूध चींटियाँ, खरहे हल खींचें, चूहे हलवाहे।
पैसा दुर्लभ, सुलभ अशर्फी, भोजन सबरो खाना चाहे॥
दाढ़ी-मूँछें रखें औरतें, मर्द खिलाते घर में बच्चे।
रहते लोगों में मकान ही, झूठे जीते मरते सच्चे॥
सर पर जूता, पगड़ी पग में, मच्छड़ की है बनी सवारी।
दिन में चाँद चमकता, सूरज सारी रात करे उजियारी॥
जलता पानी, आग बुझाती, चलते सर के बल नर-नारी।
छप्पर तो जमीन पर रहता, घोड़ा पीछे, आगे गाड़ी॥
नाव चलाते मरुस्थला में, साँझ जागते, सोते तड़के।
पाँच बरस तक रहते बूढ़े, साठ बरस में बनते लड़के॥
सुनती आँखें, कान देखते, नीचे बाबू कुर्सी ऊपर।
चढ़ जातीं पहाड़ पर नदियाँ, सिन्धु-झील से निकल निकलकर॥
एक बात का वहाँ बड़ा सुख, पढ़ते गुरु, पढ़ाते चेले।
मौज उड़ाते बैठ भिखारी, शाहंशाह चलाते ठेले॥
राही ज्यों के त्यों रह जाते, और चला करती है डगरी।
उलटी सारी वस्तु जहाँ की, देखी ऐसी उलटी नगरी॥

मध्य अफ्रीका के घने जंगलों में मनुष्य की आकृति का एक प्रकार का बदर पाया जाता है जिसे चिंपाञ्जी कहते है। वह जगलों में ऊँचे पेड़ों पर, डालों और लकडियो की सहायता से, रहने के लिए जगह बनाता है। यहीं वह गर्मी की दोपहरी बिताता है। उस समय वह बिलकुल शांत रहता है। शाम होते ही वह पेड की डालियो पर इधर से उधर घूमता, मित्रों के साथ खेलता और फल खाता है। चिंपाञ्जी को आवाज बहुत पसंद है। वह ऐसी चीजें बहुत पसंद करता है जिन्हे पीटने पर आवाज पैदा हो। इँगलैंड के एक लेखक ने एक चिंपाञ्जी पाल रक्खा था। वह घर मे रक्खे हुए एक टिन के डिब्बे को दिन में कई बार बजाता और खुश होता था। इसी प्रकार एक बार एक चिंपाञ्जी एक गॉव से ढोलक चुरा ले गया और उसे कई दिनों तक पेड़ पर बजाता रहा।

बदरों में चिंपाञ्जी ही सबसे अधिक होशियार माना जाता है। इँगलैंड के एक लेखक ने दो चिंपाञ्जी पाल रक्खे थे। उनमें से एक का नाम टोटो और दूसरे (बँदरिया) का मेरी था। इन्हे देखने के लिए इँगलैंड म प्रति दिन काफी भीड इकट्ठी होती थी। मेरी लडकपन से ही पाली गई थी और उसे इस प्रकार का अभ्यास कराया गया था कि वह अपना नाम आसानी से लिख लेती थी। उसे जो कुछ काम तीन-चार बार दिखला दिया जाता था उसे वह आसानी से कर लेती थी। वह लोगों के साथ चाय और सिगरेट पीती। सिगरेट जलाने में वह किसी की मदद नहीं लेती थी। वह नाव में बैठकर नदी में घूमती और डॉड चलाती। मेरी के कई साथी थे—एक जावा का बंदर, एक सफेद चूहा और एक कुत्ता। नाव में अधिकतर कुत्ता ही जाया करता था। एक दिन कुत्ता नाव में से गिर पडा। मेरी ने उसे डूबने से बचाया और नाव में बैठाने पर उसकी लापरवाही दूर करने के लिए उसे कई चपत दिये। बाद में उसका मुँह चूमकर प्रेम दिखलाने लगी। एक बार दांत दर्द करने पर वह अपने मालिक के पास गई। उसने मेरी के हिलते हुए दॉत उखाड़ दिये और मेरी कुछ नहीं बोली। उसे मोटर की सवारी बहुत पसद थी और वह मीलों तक मोटर की सवारी करती थी।

सत्तूराम लपट्टूराम

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी

सत्तूराम, लपट्टूराम,
इनका किस्सा सुनो तमाम।
घोल घोल कर सत्तू खाते,
पानी पी पी तोंद फुलाते।
सत्तूराम लपट्टूराम,
हैं कंजूसों में सरनाम।
थोड़ा थोड़ा सत्तू चखते,
जोड़ जोड़ कर सत्तू रखते।
गोल गोल ले मटकी मोल,
उसमें सत्तू रखते तोल।
सुनो एक दिन का तुम हाल,
हँस लो बिना फुलाये गाल।
सत्तूराम लपट्टूराम,
करते थे घर पर आराम।
उनके दिल में आया ख्याल,
'अगर कहीं पड़ जाय अकाल,
बेचूँ ये सत्तू तत्काल,
बन जाऊँ मैं मालामाल।
ले के दाम चलूँ बाजार,
तुरत खरीदूँ बकरी चार;'
'बकरी दे जब बच्चे चार,
जाकर बेचूँ उन्हें बजार।
बकरी बेच खरीदूँ गाय,
तो फिर सभी काम बन जाय।'
'अगर गाय दे बछड़े चार,
हो मेरा सौदा तैयार।

बछड़े बेच खरीदूँ घोड़ी,
जिसकी कहीं न जग में जोड़ी।
घोड़ी जनै बछेड़े चार!
काम बनेगा खासा यार।
बेचूँ घोड़ा घोड़ी सब,
दाम बहुत आयेंगे तब,
तब फिर महल बनाऊँ एक,
नौकर-चाकर रखूँ अनेक।

रहे निराली मेरी शान,
रहे निराला मेरा नाम।
नया निराला रक्खूँ ठाट,
मैं फटकारूँ सबको डाँट।
नौकर करे न सीधे बात,
तो मैं मारूँ उसके लात!'
सत्तूराम लपट्टूराम,
करते थे घर पर आराम।
मटकी देख देख उस रात,
सोच रहे थे सारी बात।
होश न रहा मार दी लात,
मटकी फूटी बातों बात।
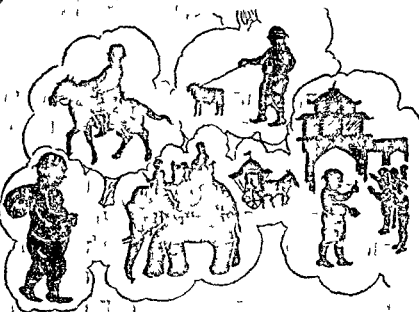
सत्तू फैल गये क्षण भर में
सत्तू फैल गये तन भर में,
आँख-नाक पर सत्तू आये,
सत्तूराम पड़े मुँह बाये।
जब देखा यह अपना हाल,
तब फिर आया उनको ख्याल,
तब तो रोये सत्तूराम,
'बिगड़ गया हा! सारा काम।
घर का भी धन खोया हाय!
जग में लालच बुरी बलाय'!

कुछ समय बाद नन्नू की इच्छा हुई कि अब अलग रहूँ और अपना पेट पालूँ। खरादी ने नन्नू की इच्छा समझ छुट्टी दी और कहा, 'तुमने इतने दिन मेरी सेवा की है, कुछ मेरी भेंट लेते जाओ।' ऐसा कहकर उसने उसे एक थैला दिया। उसमें एक डण्डा—मोटा—कुडौल-सा रख दिया। उसे देख नन्नू सोचने लगा, यह क्या बला है। खरादी बोला, 'बेटा, यह तुम्हारे दुश्मन को सीधा कर देगा। जो कोई तुम्हें सतावे या ठगने की चेष्टा करे, उसे इस 'कुतकमन' से सीधा कर देना। वह फिर कभी जन्म भर तुम्हारे पास न आयेगा। इतना भर कहने की देर है "झपट कुतकमन, दपट ये दुश्मन", कि यह डण्डा उचट उचट कर तुम्हारे दुश्मन की हड्डी-पसली ऐसी ढीली करेगा कि वह भी जन्म भर याद करेगा।'

नन्नू ने कहा, यह तो बड़े काम की चीज है। फिर वह खरादी को प्रणाम कर थैला लेकर चला। उसने भी पहले माता-पिता के पास जाने का निश्चय किया। रास्ता वही था। चलते-चलते उसी सराय में आ टिका। भूख लगी थी। कारबारी से भोजन माँगा। भोजन करते समय वह अपने ... जाँघ के नीचे दबाये रहा। ... कहा, "लाओ, मैं ... न तुम्हारे ... में पहुँचा दूँ।" न... ऐसी चीज है जिसे ... को ... लायक चीज

आधी रात के सन्नाटे में जब सब लोग सो गये, तब कारबारी धीरे से नन्नू के कमरे में घुसा। देखा, वह सो रहा है और डंडे का थैला सिरहाने रक्खा है। उसने उसे धीरे से खींचा। नन्नू तो सोने का ढोंग कर रहा था। चट उठ बैठा और चिल्लाया—अरे, चोर, चोर, बदमाश, तू ऐसे ही सामान चुराया करता होगा! "झपट कुतकमन, दपट ये दुश्मन।" थैले में से डण्डा चट बाहर उछला और कारबारी के सिर, कंधे, पसली, पीठ तड़ातड़ तोड़ने लगा। वह इधर-उधर भागता फिरा और डण्डा पीछे पीछे लगा पीटता गया। पिटते पिटते वह मलीदा बन गया, आखिर गिर पड़ा। अब तो वह गिड़गिड़ाकर, हाथ जोड़कर, नन्नू से प्रार्थना करने लगा—"भैया मेरी जान बचाओ। मेरे बाल बच्चों पर दया करो। मैं तुम्हारा बड़ा अहसान मानूँगा। अब कभी ऐसा न करूँगा। अपने डण्डे को रोककर मेरी जान बचाओ। मैं तुम्हारी सब चीजें दे दूँगा। तुम्हारी मेज़, तुम्हारा गधा, सब लौटा दूँगा। मेरे प्राण बचाओ।" नन्नू ने कहा—"बस ...।" ... आ बैठा। तब उसने ... कहा—"याद रक्खो, ... फाटक पर तैयार ...।" ... भी

नन्नू भूल जायगा तो मैं दौलतमंद बना रहूँगा। नन्नू के आते ही उसने झुककर सलाम किया और उसे मेज दे दी। नन्नू बोला, 'मैं कैसे जानूँ, यह वही चीज है?' कारबारी ने झट उसी रीति से परीक्षा कर दिखाई। मेज भोजन के थालों से भर गई। सबेरे का समय था। नन्नू ने खूब डटकर भोजन किया। फिर पूछा, "और वह गधा?" कारबारी के प्राण सूख गये। उसने बात बनाकर कहा 'उसे बहुत ढूँढ़ा, पर पता न लगा, क्या करूँ, लाचार हूँ।' नन्नू ने कहा—'अच्छा, मैं पता लगवाये देता हूँ। "झपट कुतकमन, दपट ये दुश्मन।"' 'कुतकमन' कूदा और कारबारी को पीटने लगा। वह फिर गिड़गिड़ाया, क्षमा माँगी और गधा खोज लाने का वचन देकर पिंड छुड़ाया। थोड़ी देर में लँगड़ाते कराहते हुए वह गधा ले आया। नन्नू ने उसकी भी जाँच की और तब तीनों चीजें—मेज, गधा और कुतकमन—लेकर वह घर को चला।

पिता-माता ने अपने घर के द्वार से दूर से नन्नू को आते देखा। झट दौड़कर उसे गले लगाया और चूम लिया। उसने अपनी यात्रा की सारी कहानी उन्हें सुनाई। और अन्त में खरादी के दिये हुए डण्डे की करामात से जादू की टेबिल और गधे का लाभ भी सुनाया। टेबिल और गधे की चर्चा सुनकर पिता ने कहा कि हो न हो, ये दोनों चीजें तुम्हारे बड़े भाइयों की हैं। उन दोनों ने इनके पाने का हाल कहा था। दुष्ट कारबारी ने उन्हीं के पास से ये चीजें चुरा ली होंगी। नन्नू ने पिता से कहकर दोनों भाइयों को बुलवाया। छोटे भाई के आने का समाचार पाकर दोनों बड़ी खुशी से दौड़े आये। दोनों ने अपनी अपनी चीजें पहचान लीं और भाई से मिल कर बड़े खुश हुए।

अब धन्नू ने पिता से कहकर अपने पड़ोसियों को फिर न्योता दिया। उसने मेज सामने रखकर चद्दर से ढककर कहा 'भर भर थाली दे पकवान।' मेज पर उत्तम उत्तम सुगन्धित स्वादिष्ट भोजन के थाल आने लगे। पड़ोसी मस्त होकर भोजन करने और धन्नू की बड़ाई करने लगे। भोजन हो चुकने पर मन्नू अपना गधा सामने लाया और उसके सामने चद्दर बिछाकर बोला, 'ढेर लगा दे नगद खनाखन।' गधे ने रुपयों के ढेर लगा दिये। किसान ने लोगों से कहा, जितना चाहो उतना रुपया अपने जेबों में भर लो।

पर नन्नू ने अपने 'कुतकमन' की करामात फिर कभी मौके से दिखाने का वचन दिया। सब लोग उनकी बड़ाई करते हुए अपने अपने घर गये। किसान अब अपने तीनों बेटों के साथ बड़ा सुखी और सम्पन्न है।

कुछ समय बाद नन्नू की इच्छा हुई कि अब अलग रहूँ और अपना पेट पालूँ। खरादी ने नन्नू की इच्छा समझ छुट्टी दी और कहा, 'तुमने इतने दिन मेरी सेवा की है, कुछ मेरी भेंट लेते जाओ।' ऐसा कहकर उसने उसे एक थैला दिया। उसमें एक डण्डा—मोटा—कुडौल सा रख दिया। उसे देख नन्नू सोचने लगा, यह क्या बला है। खरादी बोला, 'बेटा, यह तुम्हारे दुश्मन को सीधा कर देगा। जो कोई तुम्हे सतावे या ठगने की चेष्टा करे, उसे इस 'कुतकमन' से सीधा कर देना। वह फिर कभी जन्म भर तुम्हारे पास न आयेगा। इतना भर कहने की देर है "झपट कुतकमन, दपट ये दुश्मन" कि यह डण्डा उचट उचट कर तुम्हारे दुश्मन की हड्डी-पसली ऐसी ढीली करेगा कि वह भी जन्म भर याद करेगा।'

नन्नू ने कहा, यह तो बडे काम की चीज है। फिर वह खरादी को प्रणाम कर थैला लेकर चला। उसने भी पहले माता-पिता के पास जाने का निश्चय किया। रास्ता वही था। चलते-चलते उसी सराय मे आ टिका। भूख लगी थी। कारबारी से भोजन माँगा। भोजन करते समय वह अपने 'कुतकमन' को जाँघ के नीचे दबाये रहा। कारबारी ने कहा, "लाओ, मै तुम्हारा सामान तुम्हारे कमरे में पहुँचा दूँ।" नन्नू बोला, 'नहीं, इसमें तो ऐसी चीज है जिसे मै जुदा नहीं कर सकता।' [illegible] को निश्चय हो गया कि इसमें कोई [illegible] लायक चीज है।

आधी रात के सन्नाटे में जब सब लोग सो गये, तब कारबारी धीरे से नन्नू के कमरे में घुसा। देखा, वह सो रहा है और डंडे का थैला सिरहाने रक्खा है। उसने उसे धीरे से खींचा। नन्नू तो सोने का ढोंग कर रहा था। चट उठ बैठा और चिल्लाया—अरे, चोर, चोर, बदमाश, तू ऐसे ही सामान चुराया करता होगा। "झपट कुतकमन, दपट ये दुश्मन।" थैले मे से डण्डा चट बाहर उछला और कारबारी के सिर, कधे, पसली, पीठ, तडातड़ तोड़ने लगा। वह इधर-उधर भागता फिरा और डण्डा पीछे पीछे लगा पीटता गया। पिटते पिटते वह मलीदा बन गया, आखिर गिर पड़ा। अब तो वह गिड़ गिड़ाकर, हाथ जोड़कर, नन्नू से प्रार्थना करने लगा—"भैया मेरी जान बचाओ। मेरे बाल बच्चों पर दया करो। मै तुम्हारा बड़ा अहसान मानूँगा। अब कभी ऐसा न करूँगा। अपने डण्डे को रोककर मेरी जान बचाओ। मै तुम्हारी सब चीजें दे दूँगा। तुम्हारी मेज़, तुम्हारा गधा, सब लौटा दूँगा। मेरे प्राण बचाओ।" नन्नू ने कहा—"बस करो।" डण्डा थैले में आ बैठा। तब उसने कारबारी को सचेत कर कहा—"याद रक्खो, सवेरे सब चीजों के साथ फाटक पर तैयार मिलो, नहीं तो यह 'कुतकमन' देख लो।"

सवेरा हुआ। कारबारी ने अब भी छल न छोड़ा। वह केवल मेज लेकर फाटक पर आ बैठा। उसने सोचा कि गधे की याद

नन्नू भूल जायगा तो मैं दौलतमंद बना रहूँगा। नन्नू के आते ही उसने झुककर सलाम किया और उसे मेज दे दी। नन्नू बोला, 'मैं कैसे जानूँ, यह वही चीज है?' कारबारी ने झट उसी रीति से परीक्षा कर दिखाई। मेज भोजन के थालों से भर गई। सबेरे का समय था। नन्नू ने खूब डटकर भोजन किया। फिर पूछा, "और वह गधा?" कारबारी के प्राण सूख गये। उसने बात बनाकर कहा 'उसे बहुत ढूँढ़ा, पर पता न लगा, क्या करूँ, लाचार हूँ।' नन्नू ने कहा—'अच्छा, मैं पता लगवाये देता हूँ। "झपट कुतकमन, दपट ये दुश्मन।' 'कुतकमन' कूदा और कारबारी को पीटने लगा। वह फिर गिड़गिड़ाया, क्षमा माँगी और गधा खोज लाने का वचन देकर पिंड छुड़ाया। थोड़ी देर में लँगड़ाते कराहते हुए वह गधा ले आया। नन्नू ने उसकी भी जाँच की और तब तीनों चीजें—मेज, गधा और कुतकमन—लेकर वह घर को चला।

पिता-माता ने अपने घर के द्वार से दूर से नन्नू को आते देखा। झट दौड़कर उसे गले लगाया और चूम लिया। उसने अपनी यात्रा की सारी कहानी उन्हें सुनाई। और अन्त में खरादी के दिये हुए डण्डे की करामात से जादू की टेबिल और गधे का लाभ भी सुनाया। टेबिल और गधे की चर्चा सुनकर पिता ने कहा कि हो न हो, ये दोनों चीजें तुम्हारे बड़े भाइयों की हैं। उन दोनों ने इनके पाने का हाल कहा था। दुष्ट कारबारी ने उन्हीं के पास से ये चीजें चुरा ली होंगी। नन्नू ने पिता से कहकर दोनों भाइयों को बुलवाया। छोटे भाई के आने का समाचार पाकर दोनों बड़ी खुशी से दौड़े आये। दोनों ने अपनी अपनी चीजें पहचान लीं और भाई से मिल कर बड़े खुश हुए।

अब नन्नू ने पिता से कहकर अपने पड़ोसियों को फिर न्योता दिया। उसने मेज सामने रखकर चद्दर से ढककर कहा 'भर भर थाली दे पकवान।' मेज पर उत्तम उत्तम सुगन्धित स्वादिष्ठ भोजन के थाल आने लगे। पड़ोसी मस्त होकर भोजन करने और नन्नू की बड़ाई करने लगे। भोजन हो चुकने पर नन्नू अपना गधा सामने लाया और उसके सामने चद्दर बिछाकर बोला, 'ढेर लगा दे नगद खनाखन्।' गधे ने रुपयों के ढेर लगा दिये। किसान ने लोगों से कहा, जितना चाहो उतना रुपया अपने जेबों में भर लो।

पर नन्नू ने अपने 'कुतकमन' की करामात फिर कभी मौके से दिखाने का वचन दिया। सब लोग उनकी बड़ाई करते हुए अपने अपने घर गये। किसान अब अपने तीनों बेटों के साथ बड़ा सुखी और सम्पन्न है।

———

अलाउद्दीन और चिराग़

अलाउद्दीन चिराग की तलाश में जा रहा है। बताओ वह किस रास्ते से जाय।
रास्ते में कोई लकीर न कटनी चाहिए।
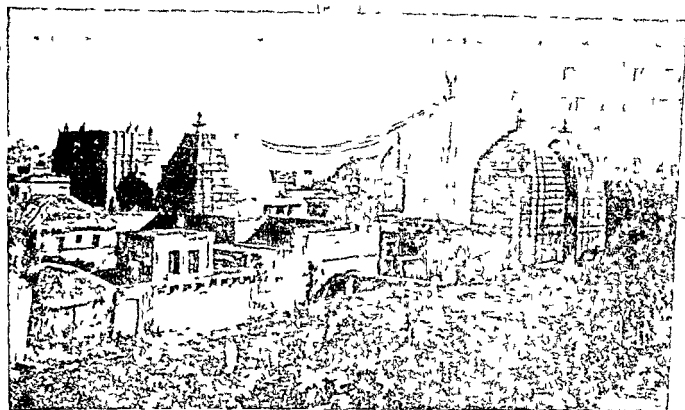
श्री वैद्यनाथ जी का मंदिर
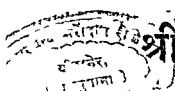
श्री वैद्यनाथ धाम की यात्रा

लेखिका, श्रीमती कमलादेवी, गया

बचपन में एक-दो बार वैद्यनाथ धाम गई थी। परंतु वह बात अब बहुत पुरानी हो गई। इधर मुझे बड़ी इच्छा होने लगी कि एक बार फिर वैद्यनाथ धाम जाऊँ। परंतु कई अड़चनों से जाना नहीं होता था। कुछ दिनों से मेरे पति का स्वास्थ्य कुछ खराब रहने लगा, और उन्होंने वैद्यनाथ धाम जाना निश्चित किया, क्योंकि वहाँ का जलवायु बहुत ही अच्छा है। दशहरे की छुट्टी में यात्रा करने की तैयारियाँ होने लगीं। परन्तु इतने ही में मालूम हुआ कि वैद्यनाथ धाम की गाड़ी बन्द है। सारी आशाओं पर पानी फिर गया। मैं मन ही मन बहुत निराश हुई। पर आशा को मैंने हाथ से नहीं छोड़ा। कुछ ही दिन बाद, यह जानकर कि अब गाड़ी जाती है, और रास्ता बिल्कुल साफ है, मेरा मन प्रसन्नता से नाच उठा।

एक शुभ समय निश्चित करके हम लोग वैद्यनाथ धाम के लिए रवाना हो गये। क्यूल स्टेशन तक यात्रा बड़े आनन्द से कटी। परन्तु क्यूल में दूसरी ट्रेन में चढ़ते समय यात्रियों का धक्कम-धुक्का सहना पड़ा। किसी तरह हम

लोग गाड़ी में चढ़ तो गये, परंतु गाड़ी की बेंचों पर तिल धरने को भी जगह नहीं थी। यात्रियों से गाड़ी खचाखच भरी थी। कितने महाशय तो मुंह से बिस्तर लगाकर पैर पसारे यात्रा का आनन्द ले रहे थे। और कोई खड़ा ही खड़ा अपना रास्ता काट रहा था। मजाल नहीं कि उनके बिस्तर को कोई जरा भी छू ले।

शिवगङ्ग तालाब

हम लोगों ने सारा रास्ता पैरों पर काटा। पहले जो गाड़ी बन्द होने का हाल सुनते थे उसका कारण उसी जगह ज्ञात हुआ। गाड़ी धीरे-धीरे चलने लगी। इतने ही में गाड़ी के सभी यात्रियों में खलबली मच गई। पूछने पर ज्ञात हुआ कि इस जगह का पुल टूटा है। परंतु हम लोग आँखों से नहीं देख सके कि किस जगह पर पुल टूटा है। क्योंकि हमें तिल भर भी टसकने की जगह न थी। जसीडीह में गाड़ी लगते ही सब लोग उतरने लगे। हम लोग भी किसी तरह उतर गये। भीड़ के मारे पता नहीं चलता था कि कौन यात्री उतरनेवाला है और कौन चढ़नेवाला।

यहीं से पंडों ने दिक करना शुरू किया। "कहाँ मकान है?" "कहाँ से आते है?" इत्यादि प्रश्नों की बौछार होने लगी। हम लोग रास्ते की थकावट से खुद परेशान थे। झट दूसरी ट्रेन में जा चढ़े। इस ट्रेन से हम लोग अच्छी तरह वैद्यनाथ धाम पहुँच गये। उस समय १२ बज रहे थे।

अभी हम लोग सँभलने भी न पाये थे कि पंडों की एक फौज ने आ घेरा। "माई, कहाँ मकान है?" "बाबू, कहाँ से आते हैं?" "अपने पंडा का नाम बतलाइए।" "कहाँ ... ", कहाँ ... तर वाली धर्मशाला ... लगे। कई पंडे ... करने लगे ... बतलाने ... में न आ ... गाड़ीवान ... मन्दिर ... एक ...

तपोवन

भीड़ न थी। अच्छी तरह से दर्शन किया।

मन्दिर में अधिक भीड रहने का कारण यह है कि एक ही दरवाजे से आना और जाना होता है। हमारे गया के विष्णुपद-मन्दिर में चार दरवाजे है। वहाँ भी भीड खूब होती है। परन्तु चार दरवाजे रहने से यात्रियो को सुविधा होती है।

चार दिन तक हम लोग वहाँ रहे। प्रतिदिन शिवगङ्ग स्नान और वैद्यनाथ जी का दर्शन किया। मेरे साथ आनेवाले यात्रियो को इन कामों में दिलचस्पी नहीं मालूम होती थी। परन्तु मै तो दोपहर के भोजन के बाद भी माता जी के साथ सैर-सपाटा करती थी।

"कबूतरवाली धर्मशाला" को देखने की मुझे बडी उत्कठा थी। इस उत्कठा का कारण इसका विचित्र नाम ही है। एक रोज बाजार में अचानक मालूम हुआ कि "कबूतर-वाली धर्मशाला" यहीं पर है। धर्मशाला के अन्दर जाकर देखा तो ज्ञात हुआ कि "कबूतर की धर्मशाला" नाम बहुत ही उचित है। इतना बड़ा मकान कबूतरों से भरा था। आँगन में केवल कबूतर ही कबूतर दिखाई देते थे। उस धर्मशाला के मालिक को कबूतरों से कुछ विशेष प्रेम मालूम होता था।

धर्मशाला मे उतरकर हम लोग अपना सामान ठीक करने लगे। धर्मशाला के आँगन में कई पडे हाथ में मोटी मोटी बहियाँ लिये प्रश्न पर प्रश्न करने लगे। परन्तु हमारा पडा वही रहा जो गाडी पर साथ आया था।

धर्मशाला में जिस समय पहुँचे उस समय १ बज रहा था। इसलिए उस समय कहीं पूजा आदि करने न जा सके।

सन्ध्या समय पडा के साथ आरती देखने गये। मन्दिर की भीड भी देखने ही योग्य थी। किसी तरह मन्दिर में प्रवेश तो किया, मगर सिवा यात्रियों के सिर के वैद्यनाथ बाबा दिखाई न दिये।

दूसरे दिन हम लोग शिवगङ्ग में स्नान करने के लिए गये। वहाँ का निर्मल जल देखकर जी बहुत ही प्रसन्न हुआ।

शाम को मैं अपनी माता जी के साथ फिर आरती देखने गई। उस दिन अधिक

वैद्यनाथ धाम में मुझे दो चीजें बहुत ही पसन्द आईं। एक तो शिवगग का स्वच्छ जल, और दूसरा "सरदार पडा" का निवास-भवन। इस भवन में बहुत सी चिडियॉ पाली हुई थीं। यहॉ सफेद मोर भी देखा, जिसे मैंने कलकत्ते के चिड़ियाखाने में भी नहीं देखा था।

वहॉ कुछ दिन और ठहरने की मेरी इच्छा थी। परतु कई कारणों से चार ही दिन मे लौट आना पड़ा। और आस-पास के बहुत से रमणीक स्थानो के देखने का भी अवसर न मिल सका। तपोवन नामक ऐसे ही एक स्थान का चित्र भी सौभाग्यवश मिल गया, जो पाठकों के मनोविनोद के लिए प्रकाशित किया जा रहा है।

हमारे पंडा बहुत ही सज्जन पुरुष थे। एक दिन उनके घर भी गई थी। उनकी स्त्री भी बड़ी सुशीला थीं।

× × ×

वैद्यनाथ धाम से गया आने के लिए हम सात बजे प्रातःकाल गाड़ी पर सवार हुए जसीडीह उतरकर आठ बजे किउल के लिए गाडी मिली। इस गाड़ी में अपनी कई सहेलियों से भी मेरी मुलाकात हुई जो पटना जा रही थीं।

दो-चार स्टेशनों के बाद गाड़ी फिर धीरे धीरे चलने लगी। गाड़ी से सिर निकाल कर देखा तो टूटे हुए पुल का दृश्य दिखाई दिया। ऐसी दशा में, मेरे विचार से, गाड़ी रोक देना ही उचित है। अगर कोई दुर्घटना हो जाय तो कितने प्राणियो की जानें मुफ्त में जायॅ। परन्तु रेलवे के कर्मचारियों को इन बातों का ध्यान कहॉ? ईश्वर की कृपा से ११ बजे रात हम गया, अपने घर, पहुँच गये।

× × ×

थोडे दिन के बाद समाचार मिला कि उसी पुल पर गाड़ी गिर गई। परतु ईश्वर को धन्यवाद है कि अधिक मृत्यु नहीं हुई।

नहर

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण त्रिपाठी "श्याम" विशारद

आते हैं हम नहर नहाने,
घर से करके रोज बहाने।
हमको नहर बहुत है भाती,
यही पैरना है सिखलाती।
गिरे झाल से घल घल घल घल
देखो पानी कल कल कल कल।

कभी दूर तक हम बह जावें,
पुल के नीचे जावें आवें।
पुल से कूदें धम धम, धम धम,
नीचे बोलें हर हर बम बम।
इसमें डुबकी खूब लगावें,
जी भर कर हम नहर-नहावें।

वक्त की बरबादी का एक नमूना।

जरा शान्ति से कटे बाल देखिए। इनको इतना परेशान होने की जरूरत नहीं है।

बालों की सफ़ाई

छोटी लड़कियों को अपने बालों की सफाई का बराबर ध्यान रखना पड़ता है। बालों में तेल लगाना, उनमें कंघी करना और उन्हें बाँधना उनका रोज का ही काम है। जो लड़कियाँ ऐसा नहीं करतीं उनके सिर में मैल जम जाती है, जुयें पड़ जाती हैं और उससे उन्हें बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। बालों में तेल लगाना, कंघी करना, उन्हें

वैद्यनाथ धाम में मुझे दो चीजें बहुत ही पसन्द आईं। एक तो शिवगग का स्वच्छ जल, और दूसरा "सरदार पडा" का निवास-भवन। इस भवन में बहुत सी चिडियाँ पाली हुई थीं। यहाँ सफेद मोर भी देखा, जिसे मैंने कलकत्ते के चिडियाखाने में भी नहीं देखा था।

वहाँ कुछ दिन और ठहरने की मेरी इच्छा थी। परतु कई कारणों से चार ही दिन मे लौट आना पड़ा। और आस-पास के बहुत से रमणीक स्थानो के देखने का भी अवसर न मिल सका। तपोवन नामक ऐसे ही एक स्थान का चित्र भी सौभाग्यवश मिल गया, जो पाठकों के मनोविनोद के लिए प्रकाशित किया जा रहा है।

हमारे पंडा बहुत ही सज्जन पुरुष थे। एक दिन उनके घर भी गई थी। उनकी स्त्री भी बड़ी सुशीला थीं।

× × ×

वैद्यनाथ धाम से गया आने के लिए हम सात बजे प्रातःकाल गाड़ी पर सवार हुए। जसीडीह उतरकर आठ बजे किउल के लिए गाडी मिली। इस गाड़ी में अपनी कई सहेलियों से भी मेरी मुलाकात हुई जो पटना जा रही थीं।

दो-चार स्टेशनों के बाद गाड़ी फिर धीरे धीरे चलने लगी। गाड़ी से सिर निकाल कर देखा तो टूटे हुए पुल का दृश्य दिखाई दिया। ऐसी दशा में, मेरे विचार से, गाड़ी रोक देना ही उचित है। अगर कोई दुर्घटना हो जाय-तो कितने प्राणियों की जानें मुफ्त में जायँ। परन्तु रेलवे के कर्मचारियों का इन बातों का ध्यान कहाँ? ईश्वर की कृपा से ११ बजे रात हम गया, अपने घर, पहुँच गये।

× × ×

थोडे दिन के बाद समाचार मिला कि उसी पुल पर गाड़ी गिर गई। परतु ईश्वर को धन्यवाद है कि अधिक मृत्यु नहीं हुई।

नहर

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण त्रिपाठी "श्याम" विशारद

आते हैं हम नहर नहाने,
घर से करके रोज बहाने।
हमको नहर बहुत है भाती,
यही पैरना है सिखलाती।
गिरे झाल से घल घल घल घल
देखो पानी कल कल कल कल।

कभी दूर तक हम बह जावें,
पुल के नीचे जावें आवें।
पुल से कूदें धम धम, धम धम,
नीचे बोलें हर हर बम बम।
इसमें डुबकी - खूब लगावें,
जी भर कर हम नहर-नहावें।

वक्त की बरबादी का एक नमूना।

ज़रा शान्ति से कटे बाल देखिए। इसको इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है।

बालों की सफ़ाई

छोटी लड़कियों को अपने बालों की सफ़ाई का बराबर ध्यान रखना पड़ता है। बालों में तेल लगाना, उनमें कंघी करना और उन्हें बाँधना उनका रोज का ही काम है। जो लड़कियाँ ऐसा नहीं करतीं उनके सिर में मैल जम जाती है, जुयें पड़ जाती हैं और उससे उन्हें बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। बालों में तेल लगाना, कंघी करना, उन्हें

वैद्यनाथ धाम में मुझे दो चीजें बहुत ही पसन्द आईं। एक तो शिवगंगा का स्वच्छ जल, और दूसरा "सरदार पडा" का निवास-भवन। इस भवन में बहुत सी चिड़ियाँ पाली हुई थीं। यहाँ सफेद मोर भी देखा, जिसे मैंने कलकत्ते के चिड़ियाखाने में भी नहीं देखा था।

वहाँ कुछ दिन और ठहरने की मेरी इच्छा थी। परंतु कई कारणों से चार ही दिन में लौट आना पड़ा। और आस-पास के बहुत से रमणीक स्थानों के देखने का भी अवसर न मिल सका। तपोवन नामक ऐसे ही एक स्थान का चित्र भी सौभाग्यवश मिल गया, जो पाठकों के मनोविनोद के लिए प्रकाशित किया जा रहा है।

हमारे पडा बहुत ही सज्जन पुरुष थे। एक दिन उनके घर भी गई थी। उनकी स्त्री भी बड़ी सुशीला थीं।

× × ×

वैद्यनाथ धाम से गया आने के लिए हम सात बजे प्रातःकाल गाड़ी पर सवार हुए। जसीडीह उतरकर आठ बजे किउल के लिए गाडी मिली। इस गाडी में अपनी कई सहेलियों से भी मेरी मुलाकात हुई जो पटना जा रही थीं।

दो-चार स्टेशनों के बाद गाड़ी फिर धीरे धीरे चलने लगी। गाडी से सिर निकाल कर देखा तो टूटे हुए पुल का दृश्य दिखाई दिया। ऐसी दशा में, मेरे विचार से, गाड़ी रोक देना ही उचित है। अगर कोई दुर्घटना हो जाय-तो कितने प्राणियों की जानें मुफ्त में जायँ। परन्तु रेलवे के कर्मचारियों को इन बातों का ध्यान कहाँ? ईश्वर की कृपा से ११ बजे रात हम गया, अपने घर, पहुँच गये।

× × ×

थोड़े दिन के बाद समाचार मिला कि उसी पुल पर गाड़ी गिर गई। परंतु ईश्वर को धन्यवाद है कि अधिक मृत्यु नहीं हुई।

नहर

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण त्रिपाठी "श्याम" विशारद

आते हैं हम नहर नहाने,
घर से करके रोज बहाने।
हमको नहर बहुत है भाती,
यही पैरना है सिखलाती।
गिरे झाल से घल घल घल घल
देखो पानी कल कल कल कल।

कभी दूर तक हम बह जावें,
पुल के नीचे जावें, आवें।
पुल से कूदें धम धम धम-धम,
नीचे बोलें हर हर बम बम।
इसमें डुबकी खूब लगावें,
जी भर कर हम नहर-नहावें।

बच्चे की परेशानी का एक नमूना।

ज़रा शांति से कटे बाल देखिए। इसमें इतना परेशान होने की जरूरत नहीं है।

बालों की सफ़ाई

छोटी लड़कियों को अपने बालों की फाई का बराबर ध्यान रखना पड़ता है। लों में तेल लगाना, उनमें कंघी करना और हें बाँधना उनका रोज का ही काम है। जो लड़कियाँ ऐसा नहीं करतीं उनके सिर में मैल जम जाती है, जुयें पड़ जाती हैं और उससे उन्हें बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। बालों में तेल लगाना, कंघी करना, उन्हें

टमाटर की चटनी

लेखिका, कुमारी शकुन्तला

पिछले अंकों में 'बालसखा' में टमाटर की विविध चीजें छपती रही है। और नये तरीके पूछे भी गये थे। मैं यहाँ टमाटर की चटनी तैयार करने की तरकीब बता रही हूँ।

टमाटर पाँच सेर, एक सेर शक्कर, एक बोतल सिरका, एक छटाँक लहसुन, एक छटाँक अदरक, एक छटाँक गरम मसाला, आध पाव नमक, आध पाव (या इससे कम जितनी आपको पसन्द हो) लाल मिर्च और एक पाव किशमिश मँगवा लो। सब मसाला पीस कर रख लो और टमाटर आधे आधे काटकर बिना पानी डाले उबलने के लिए रख दो। फिर जरा खुले छेदोंवाली छलनी में छान लो। निचोड़ कर ऊपर के छिलके वगैरह फेंक दो। और रस में सिरका और शक्कर डाल कर खौला लो। जब तक रस गाढा न हो जाय, उसे आग पर रहने दो। रख लो। बाकी सब मसाले टमाटर के साथ कर उतार कर ठंढी करके बोतल में भरके ही डाल दो।

जर्मन लड़कियाँ गर्मी के दिनों में समुद्र में घंटों तैरती हैं। इसी से वे स्वस्थ रहती हैं। इस चित्र में ३ जर्मन लड़कियाँ तैरने के लिए समुद्र के किनारे खड़ी हैं।

सँवार कर बाँधना और खोलना इत्यादि कामों में काफी समय भी लगता है।

बहुत सी लड़कियाँ, जो स्कूल में पढ़ती है, बालों के शृङ्गार में इतना वक्त खराब करना फजूल समझती है। इनमें से कितनी ही अपने बालों को कैंची से काटकर इतना छोटा कर लेती है कि उनका सिर लड़कों के सिर की तरह भी न जान पड़े और उन्हें बाल-सँवारने और बाल बाँधने की तकलीफ भी न उठानी पड़े। ऐसा करना बुरा नहीं है। अँगरेजी पढ़ी-लिखी लड़कियों में इस तरह बाल रखाना एक फैशन सा हो गया है।

आजकल हमारे देश में शौकीनी बढ़ रही है और हिन्दुस्तान की लड़कियाँ भी विलायत की लड़कियों की नकल कर रही है। लेकिन बालों को काटकर छोटा कर लेना विलायत की लड़कियों की नकल भले ही हो और शौकीनी भले ही समझी जाय, फिर भी हम यह कहेंगे कि यह एक उचित काम है। इससे समय की बचत होती है, परेशानी कम हो जाती है और सिर की सफाई भी अच्छी तरह हो जाती है। इसी लिए इस प्रकार के चलन की जरूरत है।

महात्मा गांधी तो एक कदम और आगे बढ़े हुए हैं। अपने आश्रम की लड़कियों के बाल वे खुद ही जड़ से काट देते हैं ताकि उनको परेशानियाँ न उठानी पड़े। पुरानी परम्परा के कारण जो लड़कियाँ महात्मा के उपदेशानुसार लड़कों की तरह जड़ से बाल नहीं कटा सकतीं वे इतना तो कर ही सकती है कि आधी दूर से बालों को कटायें। इस तरह से उनका शृङ्गार भी बना रहेगा और वे बालों के सँवारने की रोज रोज की झंझटों से भी बच जायँगी।

तैरना

"बालसखा" की पढ़नेवाली एक छोटी लड़की ने पत्र लिखकर हमसे पूछा है कि उसे नदी में तैरना चाहिए कि नहीं। वह अपने भाई के साथ रोज नहाने जाती है। उसका भाई खुद तो नदी में खूब तैरता है और कुलेल करता है लेकिन जब लड़की तैरने की कोशिश करती है तब वह डाटकर कहता है— "तुम लड़की हो। तुम्हें तैरना न चाहिए।"

गर्मियों में नहाने और तैरने का जैसे छोटे लड़कों को हक है वैसे ही लड़कियों का भी। तैरना एक तरह का व्यायाम है और यह व्यायाम स्वास्थ्य और सुन्दरता के लिए बहुत उत्तम होता है। प्रत्येक लड़की, जो अपने शरीर को सुडौल बनाना चाहती है, तैरने का अभ्यास कर सकती है। वक्त जरूरत पर तैरना काम भी दे सकता है। आज की लड़की कल माँ होगी। अगर वह तैरना जानती है तो कभी जरूरत पड़ने पर वह अपने डूबते लड़कों को पानी से बचा भी सकती है। "बालसखा" पढ़नेवाली छोटी लड़कियों को हमारी सलाह है तैरने का अभ्यास जरूर करना चाहिए।

टमाटर की चटनी

लेखिका, कुमारी शकुन्तला

पिछले अंकोंमें 'बालसखा' टमाटर की विविध चीजें छपती रही हैं। और नये तरीके छे भी गये थे। मैं यहाँ टमाटर की चटनी तैयार करने की तरकीब बता रही हूँ।

टमाटर पाँच सेर, एक सेर शक्कर, एक बोतल सिरका, एक छटाँक लहसुन, एक छटाँक अदरक, एक छटाँक गरम मसाला, आध पाव नमक, आध पाव (या इससे कम जितनी आपको पसन्द हो) लाल मिर्च और एक पाव किशमिश मँगवा लो। सब मसाला पीस कर रख लो और टमाटर आधे आधे काटकर बिना पानी डाले उबलने के लिए रख दो। फिर जरा खुले छेदोंवाली छलनी में छान लो। निचोड़ कर ऊपर के छिलके वगैरह फेंक दो। और रस में सिरका और शक्कर डाल कर उबाल लो। जब तक रस गाढ़ा न हो जाय, उसे आग पर रहने दो। फिर उतार कर ठंढी करके बोतल में भरके रख लो। बाकी सब मसाले टमाटर के साथ ही डाल दो।

जर्मन लड़कियाँ गर्मी के दिनों में समुद्र में घंटों तैरती हैं। इसी से वे स्वस्थ रहती हैं। इस चित्र में ३ जर्मन लड़कियाँ तैरने के लिए समुद्र के किनारे खड़ी हैं।
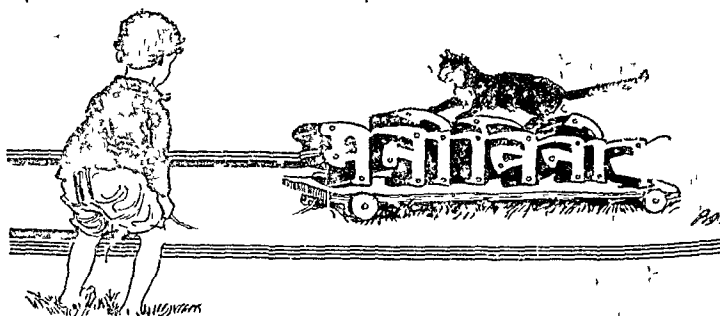
हँसो-हँसाओ

लेखक, श्रीयुत कृष्ण मनोहर सिंह सोंडल

[१]

एक लड़का रोज स्कूल लेट (देर में) आता था। एक दिन मास्टर ने कहा—तुम रोज लेट आते हो। इसका क्या कारण है?

लड़का—मैं क्या जानूँ?

मास्टर—तुम अपने बाप से लिखाकर लाओ।

लड़का—वे क्या कारण लिख सकेंगे? अपने लेट आने का कारण तो अम्मा को बता ही नहीं पाते।

[२]

कल्लू पर चोरी का मुकदमा चल रहा था। मैजिस्ट्रेट ने कहा—तुम अपना जुर्म कबूल करते हो?

कल्लू—जी नहीं।

मैजिस्ट्रेट—क्या तुम पहले कभी जेल गये हो?

कल्लू—(क्रोधित होकर) प्रथम बार तो मैंने चोरी करने की कोशिश की। इससे पहले जेल क्यों जाता?

[३]

पंडितजी ज्योंही अपने घर से बाहर निकले, बुड्ढा हिरवा उनको दिखाई पड़ा। पंडितजी ने कहा—क्यों रे हिरवा, मन्दिर से इतने सुन्दर घंटों की आवाज आ रही है, तू कभी दर्शन करने नहीं जाता?

हिरवा—(कान पर हाथ धरकर) आपने क्या कहा?

पंडितजी ने अपना वाक्य दुहरा दिया।

हिरवा—कुछ सुनाई नहीं पड़ता। साफ साफ कहो।

पंडितजी—(जोर से) मन्दिर से इतने सुन्दर घंटों की आवाज आ रही है। तुम कभी दर्शन करने क्यों नहीं जाते?

हिरवा—कुछ सुनाई नहीं पड़ता आप क्या कह रहे हैं। इन कम्बख्त घंटों की आवाज से तो मैं परेशान आ गया।

यह सुनकर पंडितजी ने चुपचाप आगे की ओर पाँव बढाया।

[४]

"क्यों कैलाश, क्या तुम्हारी चेचक प्रकाश की चेचक से अधिक दुःखदायी थी?"

"जी हाँ, उसे स्कूल के दिनों में निकली थी और मुझे छुट्टियों में।"

[५]

"क्या तुम किसी आदमी को इस समय भूखा मरते देख रहे हो?"

"जी नहीं, मेरा चश्मा खो गया है।"

पढो और हँसो

लेखक, श्रीयुत प्यारेलाल गर्ग

[१]

"अरे बुधुआ, सवेरे पूजा के लिए गेंदे के फूल लाया?"

"बाबूजी, मुझे पेड़ पर चढना तो आता नहीं।"

[२]

"रामू, हाथी कहाँ पाया जाता है?"

"मास्टर साहब, हाथी तो इतना बड़ा जानवर होता है कि वह खोता ही नहीं।"

[३]

मुनीमजी ने एक दिन लालाजी से कहा कि मैं विवाह करने का विचार कर रहा हूँ। कृपा करके मेरी तनख्वाह बढ़ा दीजिए।

मालिक ने मंजूरी दे दी।

कुछ दिन के बाद मालिक ने मुनीमजी से पूछा--भाई, अब तो तुमने शादी करके घर-बार बसा लिया होगा?

"नहीं सरकार, मैंने तो विवाह करने का विचार ही छोड़ दिया।"

[४]

कर्नल साहब ने अपनी फौज को दावत दी और कहा—जवानो, भोजन पर दुश्मनो की तरह टूट पड़ो और दया न दिखलाओ।

भोजन के अन्त में कर्नल साहब ने देखा कि एक हवलदार दो शराब की बोतलें छिपाये लिये जाता है। पूछने पर हवलदार ने कहा—हुजूर, आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हूँ। मैंने दुश्मन को मारा नहीं, कैद कर लिया है।

[५]

लछमन और हिम्मत अस्पताल में पड़े हुए थे। दोनों की टाँगों में तकलीफ थी। डाक्टर साहब ने आकर लछमन की टाँग टटोली तो वह रोने और चिल्लाने लगा। जब हिम्मत की टाँग देखी तो वह शान्तिपूर्वक पड़ा रहा। डाक्टर साहब के चले जाने के बाद लछमन कहने लगा कि भाई हिम्मत, तुम बड़े बहादुर हो। हिम्मत ने कहा कि इसमें बहादुरी की कौन सी बात है। जब मैंने देखा कि तुमको टाँग दिखलाने में इतनी तकलीफ हुई तो मैंने डाक्टर साहब को अपनी अच्छी टाँग दिखला दी।

नई पहेलियाँ

१—मुँह बिन मैं हूँ शोर मचाता।
बिना परों के मै उड़ जाता॥
सबको जीवन मै देता हूँ।
लखते-लखते चल देता हूँ॥
उत्तर—बादल

२—लकडी पर लोहा। लोहे पर लोहा॥
उत्तर—होल्डर

—कुदनमल शाह, सिरोही

१—तीन अक्षर का वह कौन,
पूरी रूप में रहता जौन।
मुँह के भीतर जाता मैं,
हल्ला शोर मचाता मैं।
पहला अक्षर मिटता जब,
बन जाता चिड़िया का पर।
(पापर

२—वर्ण तीन का नाम हमारा,
शहर गाँव मे रहता
पहले अक्षर
हाथ पसा
अन्ताक्षर को
पठाने

चाचक मेरा, नाम बताओ,
विमल बुद्धि निज शीघ्र ज
(मै

—भइया भोलानाथ

बुझौवल

(१)

वह कौन सा देश है जिसका सि से 'पान' बन जाता है और पेट जिन्दगी का बोध होता है ?

(उत्तर—जा

(२)

हिन्दुओं का वह कौन सा प्रसिद्ध है, जिसका सिर कटने से जगल क होता है और पेट कटने से सान बन ज

उत्तर—सा

(

भारतवर्ष का व प्रसिद्ध
का पेट का ज
काटने से जा

चित्र-संग्रह

माँ और बच्चे

मछली और उसका बच्चा ।
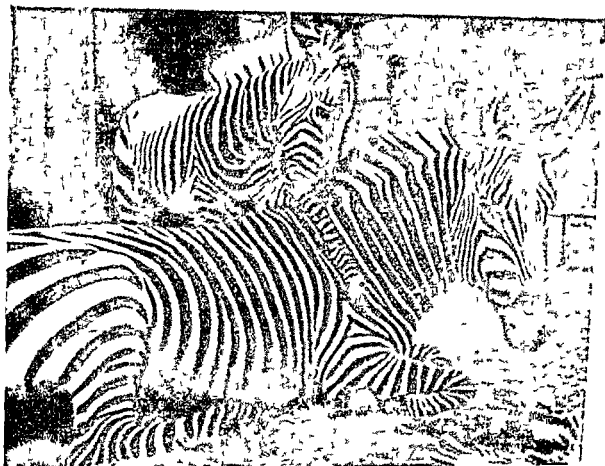
जिराफ का बच्चा अपनी माँ के पास ।

हथिनी का बच्चा अपनी माँ से सफाई सीख रहा है।

शेरनी का बच्चा अपनी माँ से खेल रहा है।

बँदरिया और उसका बच्चा।

माँ का प्रेम

हथिनी का बच्चा अपनी माँ से नहाना सीख रहा है ।

मुर्गी के बच्चे अपनी माँ के पास खेल रहे हैं।

माननीय टटन जी अशिक्षा-निवारण के जोरदार नेता हैं। चित्र में आप एक अपढ को पढा रहे हैं।

बेपढ़ों का पढ़ाना

संयुक्त प्रान्त में बे-पढों को पढाने का काम बहुत जोर से शुरू हो गया है। हर मर्द, औरत और बच्चा जो जरा भी पढा-लिखा है, उससे कहा जाता है कि वह किसी न किसी अपढ को पढावे। पढना-लिखना सीखने के लिए कोई भी उम्र ज्यादा नहीं है। बिहार का किस्सा है कि एक छोटे से लडके ने अपनी बुढिया नानी को पढाने की जिद की। नानी ने कहा कि मैं तो अब मरने के क़रीब हूँ। मैं अब पढक क्या करूँगी ? लडके ने जवाब दिया कि मा लो मरने के बाद स्वर्ग लोक मे जाने पर भगवा के नौकर ने तुम्हारा दरवाजा रोका और रजिस्ट पर दस्तख़त करने के लिए कहा तब तुम क करोगी ? नाती की यह दलील नानी की सम में आ गई और उसने उसी दिन से पढना शु कर दिया।

डाक्टर बेनीप्रसाद एक बूढे को अक्षर ज्ञान करा रहे हैं।

यहाँ हम दो चित्र छाप रहे हैं। इस तरह 'बालसखा' के प्यारे पाठकों को यह मालूम हो जायगा कि बेपढों को पढाने का काम किस तरह जोरों पर है। एक चित्र में एक बे पढे आदमी को पढाया जा रहा है और उसे टंडन जी पढा रहे हैं। दूसरे चित्र में डाक्टर बेनीप्रसाद एक दूसरे आदमी को पढाने की कोशिश कर रहे हैं। डाक्टर साहब इतिहास के बहुत बडे विद्वान् हैं और तरह तरह की ऐतिहासिक खोज में लगे रहते हैं। इतना होते हुए भी उन्होंने एक बे-पढे आदमी को पढाने की प्रतिज्ञा की है और उसे पढा रहे हैं।

हमें आशा है कि "बालसखा" के हमारे पाठक भी पडोस के किसी बे पढे आदमी को पढाने की कोशिश करेंगे।

एक मजेदार गाना

प्रोफेसर मनोरञ्जन एक दिन बैठे हुए रेडियो के कुछ गाने गौर से सुन रहे थे। उस समय उनकी भतीजी लिल्ली भी उनके पास मौजूद थी। जब बाजे का प्रोग्राम शुरू हुआ तब 'बिल्ली आई, बिल्ली आई' शीर्षक गाना सुनाई पडा। यह गाना कौवाली के तर्ज पर था। इसको सुनने के बाद प्रोफेसर साहब ने "बिल्ली आई, बिल्ली आई" को ले करके लिल्ली को चिढाने और अपने मनोरञ्जन के लिए एक गाना बनाया। 'बाल-सखा' के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ उसे हम यहाँ प्रकाशित करते हैं—

बिल्ली आई बिल्ली आई,
बिल्ली आई बिल्ली आई।
चूहों का खेलने शिकार,
एक बिल्ली आई।

बिल्ली आई बिल्ली आई
बिल्ली आई बिल्ली आई।

बिल्ली कहे म्याऊँ म्याऊँ,
चूहे मारे मैं तो खाऊँ।

तब तक डण्डा हाथ में ले,
दौड़ी दौड़ी लिल्ली आई।
लिल्ली आई लिल्ली आई,
बिल्ली आई बिल्ली आई।
लिल्ली कहे डण्डे मारूँ,
बिल्ली कहे मैं ना हारूँ।
लिल्ली बिल्ली लड़ती-भिड़ती,
गिरती-पड़ती दिल्ली आई।
दिल्ली आई दिल्ली आई,
लिल्ली आई बिल्ली आई।
चूहों का खेलने शिकार,
एक बिल्ली आई।

नहीं छपेंगे

खेद है कि स्थानाभाव के कारण नीचे लिखे हुए लेख आदि नहीं छप सकेंगे। आशा है, प्रेषकगण क्षमा करेंगे—

कविता—श्री कुँवर उदयसिंह। नये बुझौवल—श्री नारायण राव। पक्का मेहमान—श्री हरप्रसाद टण्डन। व्यथा—श्री कान्तीचन्द्र 'मयङ्क'। हमें क्या सीखना है?—श्री जिनेन्द्र कुमार। हँसना—श्री पदमचंद काठिया। फैशन—श्री मदनमूरत। ढोलीपुरा—श्री भरतचन्द्र चतुर्वेदी। हमारा हिन्दुस्तान—श्री श्रीचन्द्र। भारत भ्रमण—श्री केदारनाथ अग्रवाल। प्रश्न—श्री योगेन्द्रकुमार, शिवपुरी। सहेली का बाग—कुमारी अवन्तिकाबाई। मदशिक्षा—श्री महेश कुमार। मातृभूमि—कुमारी विद्यादेवी। सुधा रानी—कुमारी आशा त्रिवेदी। अकबर और बीरबल—कुमारी निर्मला देवी। हीरदस—श्री मनोहरमल लोढा। पहेलियाँ—श्री प्रीतम सिंह। प्रश्न—कुमारी राजकुमारी सक्सेना।

इनाम जीतनेवाले

मार्च की प्रश्न-पहेली प्रतियोगिता में इनाम जीतनेवालों के नाम हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं—

१ नथमल अग्रवाल, बम्बई।
२ मदनकुमारी, मराला (सियालकोट)।
३ कमलावती देवी, चन्दौसी।
४ वीरेन्द्रभूषण सिंह, फैज़ाबाद।
५ केशवचन्द्र मित्तल, अलीगढ़।
६ बालकृष्णदास टण्डन, आगरा।
७ राजकुमारी मज्जन कुँवर, भींडर (मेवाड़)।
८ श्रीनाथ मिश्र, टीकमगढ़।
९ कमलाकुमारी, सामाराम (शाहाबाद)।
१० रामकृष्ण गुप्त, दारागञ्ज (इलाहाबाद)।

Printed and published by K. Mittra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वर्ष २३] जुलाई १९३९—आषाढ़ १९९६ [संख्या ७

आमों का गीत

लेखक, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी

अब भर भर आने लगे आम
सब ले ले खाने लगे आम
मिलते आने में बीस तीस
मिलते आने में तीस तीस
अब घर घर जाने लगे आम
अब भर भर आने लगे आम
ये मीठे, उठते महक महक
सब लोग देखते बहक बहक
दिल को ललचाने लगे आम
अब भर भर आने लगे आम
बच्चे आये, बूढ़े आये
हो गये खड़े सब मुँह बाये
सबको तरसाने लगे आम
अब भर भर आने लगे आम

आते मंडी में ढेर ढेर
देशी, लँगड़ा, हैं कई मेर
अब रंग जमाने लगे आम
अब भर भर आने लगे आम
अंगूर, सन्तरा, खरबूज़ा
कोई न ले रहा तरबूज़ा
सबको शरमाने लगे आम
अब भर भर आने लगे आम
खा रहे लोग ले ले बहार
मुँह डाल चूसते बार बार
मन पेट अघाने लगे आम
अब भर भर आने लगे आम
खा आम, मजे में दूध पियो
बलवान् बनो, सौ बरस जियो

सब काम बनाने लगे आम—अब भर भर आने लगे आम।

सेवा क्या है ?

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

एक बार स्कूल में लड़कों को मजमून लिखने के लिए विषय दिया गया। उस विषय का नाम था 'सेवा'। जब स्कूल के मास्टर के पास सब कापियाँ पहुँचीं और उन्होंने उन सबको पढ़ा तब उन्हें बड़ी निराशा हुई। उन्होंने सब लड़कों को बुलाया और कहा, "मुझे अफसोस है कि तुममें से एक लड़के ने भी सेवा शब्द का अर्थ नहीं समझा।" लड़कों में से एक ने पूछा, "कृपा करके आप ही बतला दीजिए।" इसपर मास्टर साहब ने लड़कों के सामने एक छोटा सा भाषण दिया। उसे हम यहाँ दे रहे हैं :—

प्यारे बच्चों, सेवा का अर्थ समझने के लिए न तो हमें किताबें पढ़ने की जरूरत है और न बड़े बड़े व्याख्यान सुनने की ही जरूरत है। इस शब्द का ठीक ठीक अर्थ हम तभी समझ सकते हैं, जब हम अपने आस-पास की चीजों को देखें और उनके बारे में अपने मन में कुछ सोचें।

स्कूल के बाहर एक बबूल का पेड़ खड़ा था और एक बकरी का बच्चा उसकी पत्तियाँ खाने की कोशिश कर रहा था। मास्टर साहब ने बच्चों का ध्यान उन दोनों चीजों की ओर दिलाया और कहा—देखो, इस समय ये दोनों संसार की सेवा में लगे हुए हैं। बबूल ने अपने अन्दर से हरी हरी पत्तियाँ निकाली हैं ताकि भूखे पशु अपना पेट भर सकें। बकरी का बच्चा उन [illegible] खा करके अपना पेट भर रहा है। इस [illegible] तो यह जान पड़ता है कि वह अपना पेट [illegible] रहा है और बड़ा स्वार्थी है लेकिन बात [illegible] नहीं है। वह अपने आप को संसार की [illegible] के लिए तैयार कर रहा है। जब वह [illegible] होगा और तन्दुरुस्त होगा तब उसका [illegible] किसी न किसी हिंसक पशु या मनुष्य के [illegible] में आ जायगा। यह उसकी सेवा है।

मास्टर साहब ने स्कूल की दीवाल [illegible] ओर लड़कों का ध्यान घुमाकर कहा—[illegible] यह मोटी दीवार जड़ है और मूक है [illegible] इस वक्त हमारी और तुम्हारी सेवा में [illegible] है। तुमको और हमको धूप और ग[illegible] बचाती है। इस तरह इस दीवाल का [illegible] एक कण सेवा में तल्लीन है।

पृथ्वी आश्रितों के लिए खजाना [illegible] है। कहीं तो सोने, चाँदी और लोहे की तय[illegible] हीरे आदि की खानें हैं। कहीं कोयला [illegible] लता है तो कहीं पानी के चश्मे भीतर से [illegible] लते हैं। पृथ्वी भीतर से हरियाली उ[illegible] है। इस प्रकार हमारे सामने जो तरह त[illegible] अनाज, फल फूल और तरकारियाँ आ[illegible] उनमें सूर्य और वर्षा का भी भाग होत[illegible] मतलब यह है कि संसार में पेड़-पौधे [illegible] उगना, खानों का खुदना, पानी का ब[illegible]

नहर, तालाब और झरनो का बहना, जीवों का जन्म लेना और मरना, हरियाली और फल-फूलो का लगना, मनुष्य का घर और तरह तरह की चीजों का बनाना यह सब सेवा ही है।

यो तो किसी असहाय को मदद देना, किसी अन्धे को रास्ता बता देना, भिखमगे के हाथ पर एक पैसा रख देना, बीमार को अस्पताल में पहुँचा देना भी एक किस्म की सेवा है। लेकिन इससे भी बड़ी सेवा अपने आप को तन्दुरुस्त, बुद्धिमान्, मिलनसार और हँसमुख बनाना है और इस तरह की और भी कोशिश करना है। ये गुण अपने ही में नहीं बल्कि अपने आस पास के समस्त व्यक्तियो में भी पैदा करने चाहिएँ। मिसाल के तैार पर मैं तुमसे यह बताऊँगा कि भिखमगे के हाथ पर कुछ रख देने के मुकाबिले उसको इस तरह बनाना कि उसके लिए भीख माँगने की नैाबत ही न आये उसकी बहुत बड़ी सेवा है।

यह संसार दिन प्रति दिन इतना जटिल होता जा रहा है कि पुराने आदर्श तेजी से टूटते जा रहे हैं और नये आदर्श अभी साफ साफ नहीं दिखलाई दे रहे हैं। ऐसी हालत में कौन-सा काम सेवा के अन्दर दाखिल हो सकता है और कैान नहीं, यह कहना सहज नहीं है। मिसाल के तैार पर पिछले असहयोग के दिनों में महात्मा गान्धी ने यह आवाज़ बुलन्द की कि विदेशी कपड़े का बायकाट करना चाहिए। नतीजा यह हुआ कि जगह बजगह विदेशी कपड़ो की होलियाँ जलाई गईं। यह स्वदेश की बहुत बड़ी सेवा कही जा सकती है। लोगो का इस सेवा में इतना विश्वास है कि शायद अगर कोई इसके खिलाफ बात कहे तो वह दुश्मन समझा जायगा। एक समय था जब हमारे देश का कोई आदमी मर जाता था तो उसकी स्त्री को लाश के साथ जला देते थे। औरतो का यह काम 'सती होना' कहा जाता था और यह स्त्री के लिए, अपने पति की, संसार की और ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा समझी जाती थी। लेकिन आजकल के जमाने में अगर कोई स्त्री ऐसा करे तो उसका यह काम पागल का काम समझा जायगा और उसे ऐसा करने के लिए जो प्रोत्साहित करेगा वह खूनी और हत्यारा तक कहा जाकर सजा पावेगा।

कहने का मतलब यह कि हर देश और हर समाज में, समय और जरूरत के हिसाब से, मनुष्यो के आदर्श बनते-बिगड़ते रहते हैं। जब मनुष्यों के दो दलों में लड़ाई-झगड़ा होता है तब वे दोनो दल एक दूसरे के खिलाफ इस तरह के काम करते हैं कि मेल की हालत में वही काम नहीं कर सकते। इसलिए छोटे बच्चों को यह समझने में कि कौन-सा काम सेवा है और कौन-सा काम सेवा नहीं, बड़ी कठिनाई है। उनके लिए तो यह मुनासिब है कि वे अपने शरीर को तन्दुरुस्त बनाये, अपने मस्तिष्क को ज्ञान से

भरे, और अपनी आदत ऐसी बनाये कि वे ठीक वक्त पर खाये, ठीक वक्त पर जगे, ठीक वक्त पर सोये और ठीक वक्त पर अपने सभी काम करें। छोटी-मोटी बातों पर उन्हें गुस्सा न आये और बड़े से बड़े भय में पड़ने पर भी वे सच्ची बात जाहिर करने में न घबड़ायें। इस तरह से जो लड़के अपने आपको बनायेंगे वे बड़े होने पर अपने देश की सच्ची सेवा कर सकेंगे और सच्चे सेवक समझे जायेंगे।

रेडियो

'रेडियो'-महिमा

लेखक, श्रीयुत सीताराम अग्रवाल (भुक्करकावाला)

धन्य मारकोनी तू, धन्य तेरा आविष्कार है।
ऐसी प्रिय चीज जिससे, बच्चों को भी प्यार है॥
दिल्ली, बम्बई, मद्रास तथा कलकत्ता।
सुनते हैं हम रोम, बर्लिन, लन्दन अलबत्ता॥
गाने, ड्रामे व तकरीरें, सुनते हैं आसानी
इसे बजाने में खूब, होती है आसानी
प्रिय सखाओ! आज ही, तुम भी मँगाओ एक
इससे मिलेंगी तुम्हें, शिक्षाएँ अनेक

बापू के प्रति

लेखक, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी

(१) सिर पर नर खादी का टुकड़ा,
कटि-तट लगा लंगोटी।
बापू, कहाँ चल पड़े, बालो,
लिये लकुटिया छोटी ?

(२) रह रहकर मुसका देते हो
इसमें क्या है जादू ?
दादा भी कुछ बता न पाते
बता न पाते दादू !

(३) चर्खा चलने
अहा ! बड़ा
इसका
क्या

(४) अहा !
पहने

है मेरे भी पास चट्टियाँ,
पर टूटी है पट्टी !

(५) बापू, चलते तेज बहुत तुम,
मैं न भाग पाता हूँ।
मैं क्या थकता, चाचाजी
को भी थकता पाता हूँ !

(६) हुआ टहलना खतम, कहो
अब यह क्या बैठे लिखते ?
कुर्सियाँ मेज तुम्हारी,
सूने दिखते !
नहीं गद्दियाँ,
चटाई।
आसन है,
!

(८) उठ करके चल पड़े कहाँ पर,
हुई स्नान की वेला।
धो लेते हो अपने कपड़े
तुम भी हो अलबेला!

(९) खाना खाने चले, भला,
देखूँ, क्या खाना खाते?
मिर्च-मसाला अरे! नदारद
हम भी अजब दिखाते!

(१०) उबली तरकारियाँ धरी हैं
मोटी मोटी रोटी,
दूध दही हाँ, मिल जाता है,
यही बात क्या छोटी?

(११) तुम परोसते स्वय अहा
अपने मित्रों को खाना!
खाना से ज्यादा अच्छा
लगता है तुम्हें खिलाना!

(१२) आगे के दो दाँत खा गया
कौन, बने तुम पुपला।
अचरज है, बातें करते तो,
करते कभी न तुतला!

(१३) ये आये हैं स में
महादेव ाई?
लख ी
। !
न है

(१ [illegible]

(१५) बापू तुम अच्छे लगते हो
तुम कहकहे लगाते।
मैं हँस हँस दुगना हो जाता
तुम दुगने हो जाते!

(१६) बापू, ये आ रही कौन हैं
क्या ये हिन्दुस्तानी?
ओहो! मीरा बेन यही हैं
'वर्धाश्रम' की रानी!

(१७) अच्छा! ये भी सूत काततीं
चर्खा रोज चलातीं।
गुरू भले तुम, चेली अच्छी
जोड़ी ख़ूब दिखाती!

(१८) कौन आ रहे ये मुसकाते
बातें करते आज?
अच्छा, वे भूलाभाई,
ये जमनालाल बजाज!

(१९) अच्छा! मैं पहचान गया,
कैसी मस्तानी चाल!
बापू, देखो, वह आते हैं
चले जवाहरलाल!

(२०) ये हैं कौन भले से लग
सीधे कितने भोले
ख़ाँ अब्दुल गफ्फार! चाह
जी संग हाँ, ले
तुम तक आते
क्यों जा
भेद बता
न छिप

(२२) बापू, तुमको सभी मानते
दुनिया शीश झुकाती,
पर, पुपला-सा देख मुँह मुझे
बड़ी हँसी आ जाती!

(२३) सभी 'महात्माजी' कहते हैं,
'गाँधीजी', जग सारा।
पर मुझको तो नाम तुम्हारा
'बापू' सबसे प्यारा!

(२४) बजी प्रार्थना की घंटी जब
टन टन टन टन बोली
जुड़ी तुरत ही पास तुम्हारे
सब मित्रों की टोली।

(२५) आँखें बन्द किये तुम बैठे
नीचे शीश झुकाये।
ध्यान धर रहे प्रभु का क्या,
जिसने सब खेल रचाये?

(२६) सो जाओ मेरे बापूजी,
सुबह तुम्हें जगना है।
जाने कितने काम पड़े हैं
उन सब में लगना है।

(२७) उठ बैठे इतनी जल्दी क्यों?
अभी। दो बजे रात।
लालटेन को जला, लगे
लिखने ये क्या क्या बात?

(२८) दिन भर क्या न वक्त मिलता है
इससे मेरे बापू!
अब करते हो काम, न जब
कोई हो नेरे बापू!

(२९) जब सारी दुनिया सोती है
जगते तुम्हीं अकेले।
इसी लिए क्या गुरू सभी के,
सभी तुम्हारे चेले!

(३०) बैठ गई यह सभा कौन सी
जुड़े बहुत नर-नारी।
जन्म-भूमि जय, जय जय भारत,
गूँज रही ध्वनि न्यारी!

(३१) उठे बोलने आज जवाहर
भैया क्यों झल्लाये?
चेहरा लाल हो गया पल में,
क्यों ये हैं गुस्साये?

(३२) बापू, तुम बातें करते तो
तुम न कभी झल्लाते।
गुस्सा होते कभी न तुम
धीरे से बतलाते।

(३३) तेज जवाहर भैया सबसे
हैं तेजी दिखलाते।
किन्तु, बात यह ठीक नहीं
छोटों को [illegible] बताते!

(३४) बापू, तुम मानो हो सबसे
कहते बात निराली
जो भी इतने बात [illegible]
वह [illegible]

(३५) [illegible]
[illegible] पर
[illegible]
[illegible]

(३६) बापू, चश्मा अजब तुम्हारा
दे दो, मुझे लगाऊँ।
शायद इसमें ही जादू है
बात समझ सब पाऊँ।

(३७) बापू, जाते नहीं देखने
कभी कहीं तुम मेला।
क्या न तुम्हें वह अच्छा लगता,
लगता बड़ा झमेला ?

(३८) बापू, बतलाऊँ मन की,
क्या मेरा जी है कहता।
मैं चाहता बनूँ तुम-सा ही
जिसको जग यों चहता।

(३९) मैं भी पहनूँ एक लँगोटी,
ओढ़ूँ चादर एक;
चट्टी पहन चलूँ मैं खटपट
बातें करूँ अनेक।

(४०) मैं भी चर्खा लेकर कातूँ
पहनूँ हरदम खादी,
और टेंट में लटका लूँ मैं
घड़ी एक ले सादी।

(४१) जब भी कोई मिलने आवे,
तुमसे बापू मेरे।
फुर्सत पा न सको तुम पल भर,
रहो काम से घेरे।

(४२) तब मैं कह दूँ, जो भी आवे
क्या कहते हो बोलो।
मैं बापू का बच्चा हूँ,
ज्यों चाहो मुझको तोलो।

(४३) बापू, मुझको सभी करेंगे,
ले गोदी में प्यार।
तब तो बड़ा मजा आयेगा
होगी बड़ी बहार।

(४४) नेतागण हैं बहुत, किन्तु
बापू तुम सबसे न्यारे,
बच्चों को तुम प्यारे लगते
बच्चे तुमको प्यारे।

सीख

लेखक, श्रीयुत बाबूराम पालीवाल

सूर्य समान बनो तेजस्वी,
चन्द्र समान बनो शीतल।
फूल समान सुगन्ध लुटा दो,
महक उठे जिससे भूतल॥
अपनेपन का नाम मिटा दो,
जग-सेवा में मेघ-समान।
तन मन धन पर-हेतु लगाने
में, मिलता कितना सम्मान॥

चन्दन को देखो है कैसा,
पत्थर पर रगड़ा जाता।
पर सुवास प्रति पल देने से,
मस्तक पर निवास पाता॥
इसी तरह हे प्यारे बच्चो!
जग-सेवा में चित देना।
पहले थोड़ा कष्ट उठाकर,
पीछे नाम कमा लेना॥

गणित-चमत्कार

लेखक, साहित्य रत्न पं० यशोधर मिश्र, एम० ए०, एल० एल० बी०, एम० एल० ए०

शतरञ्ज का खेल बाल सखा के बहुत से पाठकों ने खेला होगा। इस खेल के ईजाद करनेवाले सज्जन के सम्बन्ध में कई कहानियाँ कही जाती हैं। कोई कोई शतरञ्ज खेल के ईजाद करने का गौरव रावण की स्त्री महारानी मन्दोदरी को देते हैं और कोई आसा नाम के ब्राह्मण को।

शतरञ्ज के खेल का ईजाद करनेवाले के सम्बन्ध की गणित सम्बन्धी एक कहानी यहाँ दी जाती है। कहा जाता है कि शतरञ्ज का आविष्कारकर्ता अपने नये खेल को लेकर राजा के पास गया। राजा उसके खेल से बहुत प्रसन्न हुए और उससे इनाम माँगने को कहा। चतुर आविष्कार-कर्ता ने इनाम माँगा, जिसे राजा ने देना सहर्ष तुरन्त स्वीकार कर लिया।

उसने इनाम माँगा कि शतरञ्ज के पहले खाने में १ चावल, दूसरे खाने में उसके दुगुने यानी दो चावल, तीसरे खाने में उसके दुगुने यानी चार चावल, चौथे खाने में उसके दुगुने यानी आठ चावल, पाँचवें खाने में उसके दुगुने यानी सोलह चावल के हिसाब से ६४ खानों में चावल रखकर दिये जायँ। राजा ने उसे एक हजार मन चावल देने की आज्ञा की पर उस चतुर गणितज्ञ ने लेने से बिलकुल इन्कार कर दिया। एक लाख मन चावल मँगवाये गये पर उसने न लिये। अन्त में राजा ने गणित के पण्डित को हिसाब करने को कहा। हिसाब करने से मालूम हुआ कि आविष्कारकर्ता को देने के लिए भारतवर्ष भर के भी चावल पर्याप्त न होंगे।

पण्डित ने बताया कि बीसवें खाने में ५,२४,२८८ चावल होंगे और १ खाने से लेकर बीसवें खाने तक चावलों की तौल सत्तरह सेर एक छटाँक तीन माशे सात रत्ती और सात चावल होगी। एक सेर में ६१,४४० चावल होते हैं।

६४वें खाने में चावलों की संख्या में १९ अङ्क होंगे, यानी ६४वें खाने में ९२,२३,३७,२०,३६,८५,४७,७५,८०८ चावल होंगे। १ खाने से लेकर ६४वें खाने तक के चावलों की संख्या १,८४,४६,७४,४०,७३,७०,९५,५१,६१५ होगी। इन चावलों की तौल ७५,०५,९९,८८,७८,४०७ मन ३९ सेर १५ छटाँक ४ तोला ११ माशे ७ रत्ती ७ चावल होगी।

राजा बड़े असमञ्जस में पड़ा। सारे भारतवर्ष में तो इतने चावल पैदा नहीं होते हैं। सारी पृथ्वी पर इतने चावल पैदा होते हैं या नहीं, यह राजा को मालूम न था। राजा अपनी जल्दबाजी पर बहुत पछताया और उस आविष्कारकर्ता के पैरों पर गिर पड़ा।

आविष्कारकर्ता ने राजा का आधा राज्य लेकर उसको क्षमा किया।

गणित का दूसरा चमत्कार यह देखो। अपने किसी मित्र से मन में कोई सख्या लेने को कहो। फिर उसी सख्या को उसी सख्या से गुणा करने को कहो। ली हुई सख्या में एक जोडकर योगफल को योगफल से गुणा करने को कहो। फिर दोनो गुणनफलों को एक-दूसरे में घटाने को कहो और शेषफल मालूम कर लो। तो तुम अपने मित्र के मन में ली हुई सख्या को बता दोगे।

तुम्हारे मित्र ने ७ सख्या ली। ७ को ७ से गुणा करने पर गुणनफल ४९ हुआ। फिर ७ में एक जोडने से ८ हुआ और ८ और ८ का गुणनफल ६४ हुआ। दोनों गुणनफलों का अन्तर ६४-४९=१५ हुआ। तुम्हारा मित्र तुम्हे १५ बतावेगा। तब तुम अपने मित्र द्वारा बताये हुए शेषफल में एक घटाकर मन ही मन आधा कर लो। वही तुम्हारे मित्र की ली हुई सख्या होगी।

१५ में से १ घटाकर आधा करने से ७ रहे। तुम्हारे मित्र ने यही सख्या अपने मन में ली थी।

और चमत्कार के लिए बाल-सखा के अङ्कों की प्रतीक्षा करो।

वर्षा ऋतु

लेखक, श्रीयुत बाँकेविहारीलाल श्रीवास्तव

गई ग्रीष्म ऋतु अति दुखदायी।
वर्षा ऋतु आई सुखदायी॥
बरसा करता झम झम मेंह।
गरजा करता घर घर मेंह॥
अन्धकार छा जाता क्षण में।
सूर्य प्रकट हो जाता क्षण में॥
बिजली चमक चमक रह जाती।
बादल में फिर झट छिप जाती॥
तिनकों पर जो बूँदें पडतीं।
मोती जैसी हैं वे लगतीं॥
वन-उपवन की शोभा न्यारी।
आँखों को लगती अति प्यारी॥

वन में मुदित नाचते मोर।
कहीं मचाते मेंढक शोर॥
बीरबहूटी की छवि सुन्दर।
लगती प्यारी है पृथ्वी पर॥
होकर मन में मुदित किसान।
बोने लगे खेत में धान॥
ककडी भुट्टा बिकते खूब।
सस्ते भी रहते हैं खूब॥
बच्चो, तुम मत बाहर जाना।
देखो कहीं फिसल मत जाना॥
फिर अम्मा तुमको मारेंगी।
और खिलौना कभी न देंगी॥

मुजरिम की गिरफ़्तारी

लेखक, श्रीयुत कृपाशङ्कर मिश्र

सन् १८९९ से पहले की बात है। एक युवक नौकरी के सिलसिले में तीसरी बार बम्बई गया हुआ था। अब उसके लिए बम्बई कोई नई जगह नहीं थी। काम से छुट्टी मिलने पर वह कभी कभी शहर में सैर-सपाटा करने निकल जाया करता था। एक दिन वह अपने एक साथी समेत समुद्र-किनारे जा निकला जहाँ वैष्णवों का एक प्रधान मन्दिर बन रहा था। मन्दिर की जमीन के चारो ओर कँटीला तार लगा हुआ था। सैलानी घूमता-फिरता उसी जगह जा पहुँचा। मन्दिर में एक जनेऊधारी पुजारी के दर्शन हुए। वहाँ पर पुजारी की खासी आव-भगत थी। सैलानी और उसके साथी ने समुद्र में नहा-धोकर धोतियाँ, सूखने के लिए, तार के फेंसिङ्ग पर फैला दीं। अब दोनों ही मन्दिर के लम्बे दालान में दाखिल हुए। महन्तजी से गप शप की। फिर पुजारीजी के नौकर से युवक ने कहा कि तार पर हमारी धोती सूख रही है, उसे उतार लाओ तो गमछा उतारकर धोती पहन ले। नौकर धोती उठा लाया। उसको देखकर पुजारी ने कहा कि यह धोती इनकी नहीं है। युवक ने भी कहा कि हाँ, यह तो मेरे साथी की है।

नौकर दुबारा जाकर दूसरी धोती उतार लाया। धोती पहन ली। अब युवक सोचने लगा कि पुजारीजी बड़े करामाती हैं। इन्होंने फौरन् ताड़ लिया कि धोती दूसरे की है। भेद जानने के लिए युवक ने प्रश्न किया तो पुजारी ने कहा कि धोती पर और कुर्ते पर धोबी का निशान अलग अलग देखकर भूल पकड़ी है। इसमें अचम्भे की क्या बात है।

थोड़ी देर में युवक वहाँ से रवाना हुआ। रास्ते में उसने अपने साथी से कहा कि भई, इस पुजारी को मैं ब्राह्मण नहीं मानता। यह तो धोबी है। कोई फरार असामी जान पड़ता है। साथी ने प्रतिवाद कर कहा कि जिसकी इज्जत बड़े बड़े सेठ साहूकार कर रहे हैं उसको धोबी समझना सरासर भूल है।

साथी ने बात काट तो दी, लेकिन वह उधेड़-बुन करने लगा। अगले रास्ते पर पहुँचते न पहुँचते साथी ने युवक से कहा कि एक घटना को याद आ रही है। गाँव (मसीहाबाद-बाराबकी) का एक धोबी एक दूसरे धोबी का खून करके फरार हो गया था। कारण था, स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध होने का सन्देह। घटना दस-बारह वर्ष की पुरानी थी। इस पुजारी की सूरत में उसी धोबी की शक्ल जान पड़ती है।

उन दिनों गिरगाँव बम्बई में एक अँगरेज कास्टेब्ल था। युवक की और उसके साथी की जान-पहचान उस सिपाही से थी। उसको
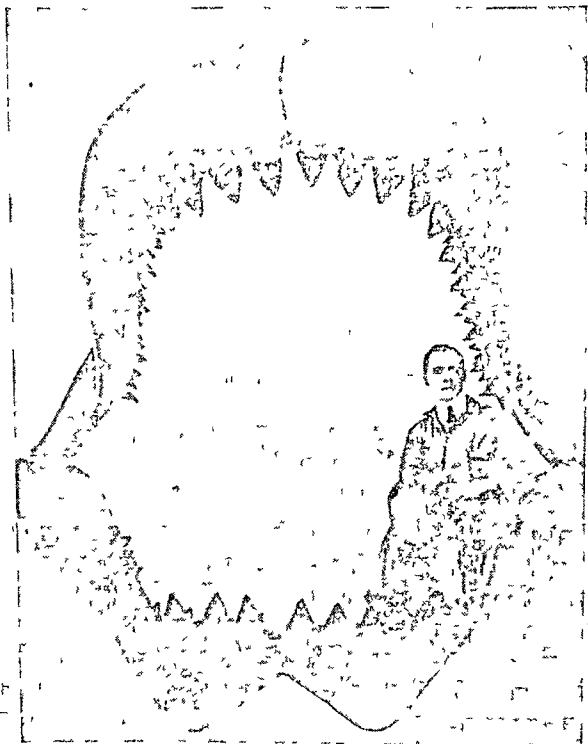
शार्क मछली का भयानक मुँह, जिसमें पड़कर आदमी तथा बड़े बड़े जानवर भी नहीं बच सकते।

भारतवर्ष के समुद्रों में ही बड़ी बड़ी शार्क मछलियाँ पाई जाती हैं। उन्हें ह्वेल शार्क कहते हैं। ये ७० फीट तक लम्बी होती हैं। हम लोग साँस द्वारा हवा खींचते हैं; परन्तु शार्क मछलियाँ साँस द्वारा पानी खींचती हैं और उसमें आक्सीजन का जो अंश रहता है उसे रखकर पानी को बाहर फेंक देती हैं। ऐसे समुद्रों में, जहाँ छोटी छोटी
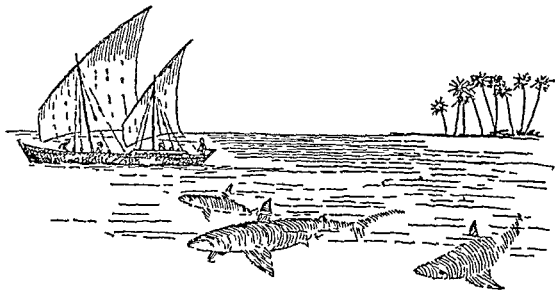
शार्क मछलियाँ, जिनके धक्के से नाव उलट जाती हैं।

मछलियाँ अधिक संख्या में पाई जाती हैं, शार्क मछलियाँ भूखी होने पर छोटी मछलियों के पास आकर पानी खींचने लगती हैं। इस प्रकार सैकड़ों छोटी छोटी मछलियाँ उनके पेट में पहुँच जाती हैं। शार्क मछली का मुँह बहुत बड़ा होता है। जब वह मुँह खोलती है तब उसके रेती के आकार के दाँत दिखलाई देते हैं। यह अधिकतर खाने की चीजों को समूची निगल जाया करती है। फिलीपाइन द्वीप-समूहों में एक बार शार्क मछली का पेट चीरा गया तो उसमें कई जूते, चमड़े की पेटियाँ तथा अन्य वस्तुएँ मिलीं। इसी प्रकार जापान में शार्क के पेट से ओक के पेड का एक लट्ठा निकला।

छोटी शार्क मछलियों को ग्रेट ह्वाइट शार्क कहते हैं। ये मछलियाँ ४० फीट लम्बी होती हैं। समुद्र में स्नान करनेवाले आदमियों पर ये अक्सर चोट करती हैं। और कभी कभी उनके हाथ या पाँव काट लेती हैं और कभी कभी तो उन्हें समूचा निगल जाती हैं। समुद्र या बड़ी बड़ी नदियों में मछली मारनेवाले मछुए बहुधा शार्क मछली द्वारा निगल लिये जाते हैं। कभी कभी इसके धक्के से छोटी छोटी नावें उलट जाया करती हैं। बड़ी शार्क की भाँति छोटी शार्क के भी जबड़े मजबूत होते हैं और उसके दाँत चाकू की तरह तेज होते हैं। एक बार एक छोटी शार्क मछली का पेट चीरा गया तो उसमें न्यूफाउंडलैंड का एक बहुत बड़ा मरा हुआ कुत्ता मिला। इसी प्रकार एक दूसरी शार्क मछली के पेट से टिन का एक बड़ा कटोरा, एक बुलडाग के शरीर का तीन चौथाई भाग और सुअर की कई टाँगें बरामद हुईं।

कभी कभी शार्क मछलियों के पेट से ऐसी वस्तुएँ निकला करती हैं जिनका किसी विशेष घटना से सम्बन्ध रहता है। एक बार लड़ाई
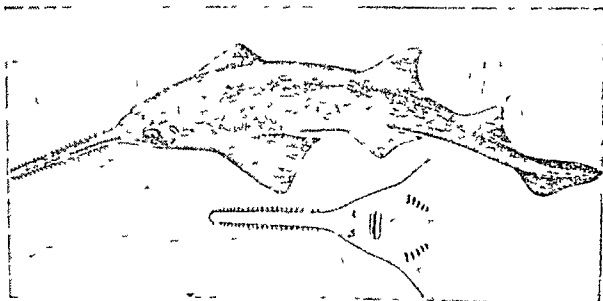
प्रिसटिम मछलियाँ, जो अपने काँटेदार मुँह को इधर उधर घुमाकर सैकड़ों छोटी छोटी मछलियों को आसानी से मार डालती हैं।

के दिनों में एक अँगरेजी जहाज़ एक अमेरिकन जहाज का पीछा कर रहा था। उस अमेरिकन जहाज में कुछ ऐसे कागज थे कि उनके बरामद हो जाने पर अमेरिकन जहाज गिरफ़ार कर लिया जाता। इससे उस जहाज के कैप्टन ने सभी कागज समुद्र में फेंक दिये। अमेरिकन जहाज पकड़कर, अँगरेजी बन्दरगाह में लाया गया। वहाँ उसकी तलाशी ली गई और उसके पास कोई कागज़ न मिला। वह छोड़ दिये जाने को था कि इतनी ही देर में उसी बन्दरगाह में एक दूसरा अँगरेजी जहाज आकर रुका। इस जहाज के एक यात्री ने एक शार्क मछली पकड़ी थी और उसके पेट से अमेरिकन जहाज के सभी कागज बरामद हुए। कागज मिल जाने से अमेरिकन जहाज गिरफ़ार कर लिया गया।

लम्बी और वजनदार होते हुए भी शार्क मछलियाँ समुद्र में तेजी से तैरती हैं। ये मछलियाँ एक घंटे में ६० मील तक का चक्कर लगाती हैं।

भारतवर्ष के समुद्री किनारा पर रहनेवाले लोग टाइगर शार्क नामक मछली से बहुत डरते हैं। यह भी शार्क जाति की है जो ३० फीट लम्बी होती है। यह अन्य शार्क मछलियों की तरह मोटी नहीं होती परन्तु बहुत तेज और भयानक होती है। इसकी चपेट में अधिकांश गोताखोर जान खो बैठते हैं। यह मछली प्रायः सभी प्रकार की मछलियाँ, केकड़ा, समुद्री पक्षी और समुद्री कछुआ खाती है। टाइगर शार्क बहुत चालाक मछली मानी जाती है। जब कभी वह भूखी होती है और उसे खाने के लिए कोई चीज नहीं मिलती तो वह अपनी दुम मुँह में रख लेती है। इस दशा में दूसरी मछलियाँ उसे मरी हुई समझ-

कर उसके पास इकट्ठी हो जाती हैं। जब काफी मछलियाँ इकट्ठी हो जाती हैं तो वह उन्हें खाना प्रारम्भ कर देती है।

यों तो शार्क जाति की बहुत-सी मछलियाँ होती हैं परन्तु यहाँ पर केवल एक और शार्क जाति की मछली का उल्लेख करना ठीक होगा। इस मछली को मा-मछली या मिसटिम कहते हैं। इसका मुँह अन्य मछलियों की अपेक्षा मकरा और आरी की तरह काँटेदार होता है। इसके दाँत नुकीले और मजबूत होते हैं। यह मछली ३० फीट तक लम्बी होती है और अन्य शार्क मछलियों की तरह धारा के विरुद्ध नदियों में आगे की ओर बढ़ती है। यह मछली काँटेदार मुँह से मिट्टी या रेत खोदकर उसमें छिपी हुई छोटी मछलियों को खा डालती है। जब कभी यह मछली अन्य मछलियों के बीच में पहुँच जाती है तो अपना काँटेदार मुँह चारों ओर हिलाकर कई मछलियों को मार डालती है और उन्हें खा लेती है। यह अपने काँटेदार मुँह से कभी कभी आदमियों के दो टुकड़े कर डालती है। भारतवर्ष के गोताखोर और मल्लाह इस मछली से भी बहुत डरा करते हैं।

टाइगर शार्क और मिसटिस दोनों मछलियाँ कीमती मानी जाती हैं। इनके लीवर से तेल तैयार किया जाता है और इनके चमड़े से बूट, अटैची-केस इत्यादि वस्तुएँ बनाई जाती हैं। समुद्र के किनारे मिसटिस मछलियों को मल्लाह बहुत पवित्र मानते हैं और कहीं कहीं मन्दिरों में देवताओं को भी चढ़ाते हैं।

गाय

लेखिका, श्री प्रमकुमारी उपाध्याय

मनों दूध हमको है पिलाती।
तनिक नहीं तू खुद है खाती॥
बछड़ा है तू हमको देती।
जो करता है सबकी खेती॥१॥

दूध के लड्डू हम हैं खाते।
बछड़े जिनको नहीं हैं पाते॥
मनों बोझ ह जो ढो लाते।
तनिक घास वे खुद हैं खाते॥२॥

गोबर हम हैं तुमसे पाते।
जिससे घर हैं लीपे जाते॥
उपले उससे हम हैं बनाते॥
शीत काल में जिन्हें जलाते॥३॥

सब पशुओं से तू है न्यारी।
नन्दलाल की थी तू प्यारी॥
कृषकों की है सम्पति सारी।
बड़े भाई को है तू प्यारी॥४॥

काली खोपड़ी का आदमी

लेखक, श्रीयुत असौरा गङ्गाप्रसादसिंह

एक नौजवान शेर था। वह बहुत मजबूत और साहसी था। जिस किसी को सामने पाता उसपर टूट पडता और उसके चिथडे चिथडे कर डालता।

एक दिन उसकी मा ने उससे कहा—यह बहुत अच्छा है कि तुम्हें अपनी ताक़त का अभिमान है। देखो, इस जगल में जितने जानवर हैं, हम उन सबके राजा है। इसलिए तुम अपनी ताकत की आजमाइश किसी पर भी कर सकते हो। लेकिन एक ऐसा भी जीव है जिसका हमारा कोई जोड नहीं और जो हमें देखते देखते पछाड सकता है। शायद तुम उसे नहीं जानते। वह दो पैरों पर चलता है, उसकी खोपडी पर काले बाल होते हैं और वह आदमी के नाम से मशहूर है। अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है तो उससे होशियार रहना।

जगल के नौजवान राजा ने कहा—बहुत अच्छा। मै देखूँगा कि वह कैसा होता है। अगर वह मेरा मुकाबला कर सकता हे तो जरूर वह कोई बहुत ही ताकतवर जानवर होगा। मै उसे ढूँढूँगा।

ऐसा सोचकर नौजवान शेर कई दिनो तक आदमी की फिराक में इधर-उधर घूमता रहा। एक दिन वह जगल के एक ऐसे हिस्से में जा पहुँचा जो आदमियो की बस्ती के नजदीक था। उधर जगली जानवर बहुत कम आया-जाया करते थे। सुबह का वक्त था। एक बढ़ई थैले में अपने औजार लिए और सिर पर सफेद मुरैठा बाँधे उसी राह से अपने काम पर जा रहा था। उसे देख नौजवान शेर ख़ुशी से उछल पड़ा और आप ही आप चिल्ला उठा—जरूर यही वह जीव है, जिससे होशियार रहने को मेरी मां कह रही थी। देखो, यह दो पैरों पर चल रहा है।

इसी वक्त शेर की निगाह बढई के सिर पर गई। उसे देखकर उसे बडी निराशा हुई—काले बालो की जगह पर उसे सफेद मुरैठा दिखलाई पड़ा। खैर, उसने मन ही मन यह तय किया कि कम से कम उससे उस काली खोपडीवाले आदमी का पता ही पूछना चाहिए। अगर वह जानता होगा तो बतायेगा ही।

यह सोचकर शेर ने जोर से बढ़ई को पुकारा—ऐ दोस्त! जरा ठहरना, मैं तुमसे कुछ बाते करना चाहता हूँ।

बेचारे बढई को उसका यह कहना मानना ही पडा। शेर ने उसके पास आकर पूछा—क्या तुम मुझे बता सकते हो कि काली खोपडी का आदमी कहाँ रहता है? उससे मिलने और उसपर अपनी ताकत आजमाने की मेरी बहुत इच्छा है।

यह सुनते ही डर से वह बढ़ई काँप उठा। उसने समझ लिया कि अब मेरी मौत आ गई। पर एकाएक उसे कुछ ख्याल आया। अँधेरे में रोशनी की एक झलक दिखाई पड़ी। उसने अपनी हिम्मत बटोर-कर जंगल के वीर राजा से कहा—तुम काली खोपड़ी के आदमी को देखना चाहते हो तो मेरे साथ चलो। मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूँ। उसे मैं तुम्हें दिखा दूँगा।

शेर इस बात पर राजी हो गया और दोनों थोड़ी दूर चलकर एक बड़े पेड़ के नजदीक पहुँचे।

बढ़ई ने कहा—अगर तुम यहाँ थोड़ी देर तक ठहरो, तो मैं काली खोपड़ीवाले आदमी को दिखा दूँगा।

शेर एक किनारे खड़ा हो गया और बढ़ई ने अपने औजारों से काम लेना शुरू किया। पहले उसने पेड़ के तने में एक बड़ा-सा सूराख बनाया। उस सूराख के मुँह पर उसने एक ऐसा तख्ता लगाया जो चूहेदानी के दरवाजे की तरह ऊपर नीचे आसानी से खिसक सकता था। बढ़ई के इन सब कामों को शेर बड़ी उत्सुकता से देखता रहा। सब तैयार हो जाने पर बढ़ई ने शेर से कहा—अब तुम आकर अपना सिर सूराख के ऊपर रक्खो और जब तक काली खोपड़ीवाला आदमी दिखाई न पड़े, सीधी निगाह से सूराख के उस पार देखते रहो।

जिससे मिलने के लिए शेर इतना उत्सुक था, उसे अब वह चन्द मिनटों में देख सकेगा। यह सुनकर उसे बड़ी खुशी हुई। उसने उत्सुकता-पूर्वक अपनी गर्दन सूराख के भीतर रक्खी। बढ़ई पल भर में पेड़ के ऊपर चढ़ गया और फन्दे को शेर की गर्दन पर गिराकर इतने जोर से दबाया कि वह एकदम मौत के नजदीक पहुँच गया। बढ़ई पेड़ से उतरकर सूराख की दूसरी ओर आ गया। उसने अपने सिर से मुरैठा उतार कर शेर को दिखाते हुए कहा—जिस काली खोपड़ी के आदमी से मिलने के लिए तुम इतने उत्सुक थे, वह तुम्हारा गुलाम तुम्हारे सामने खड़ा है। कहो क्या हुक्म है—क्या काम है ?

शेर अब जवाब देने लायक न था। उसकी आँखें टँग चुकी थीं और अब वह अपना दम तोड़ रहा था। बढ़ई अपने औजारों का थैला उठाकर अपने काम पर चला गया। काल के पंजे से इस तरह छुटकारा पाने पर वह मन ही मन बहुत खुश था।

बुद्धिहीन वीरता और ताकत किसी काम की नहीं।

देखो, उग आये ये तारे।

तारे

लेखिका, श्रीमती विद्वत्तमा मिश्र

देखो, उग आये ये तारे।
छोटे छोटे झिलमिल झिलमिल, लगते हैं अति प्यारे॥

दिन भर कहाँ रहा करते हैं?
क्या ये सूरज से डरते हैं?
निशि भर घूम घूम चरते हैं
जैसे श्वेत लवा रे।

चमक रहे ज्यों नये नगीने,
हीरे-मोती जड़े किसी ने,
या काढ़े नीली साड़ी में
सलमा और सितारे।

क्या कोई इनको गिन लेगा?
कितने हैं यह बतला देगा?
वह इनाम मुझसे पायेगा—
कहते पिता हमारे।

वह ध्रुव तारा कहलाता है,
जो उत्तर में दिखलाता है,
पथ जहाज को बतलाता है,
उसी ठौर से प्यारे।

चाँद सूर्य देते प्रकाश सब,
किन्तु नहीं रहते हैं वे जब,
इन्हें देखकर ही नभ में तब
लगता पथिक किनारे।

यदि मन लाकर पढ़ो-पढ़ाओ,
दुनिया में ऊँचा पद पाओ,
अपने कुल का मान बढ़ाओ
बनो आँख के तारे।

जादू का पलँग

लेखक, श्रीयुत प्रकाशचन्द्र सौनरिक्सा

पुराने जमाने की बात है। राजा देवराज के राज्य में एक बहुत गरीब बढ़ई रहता था। उस बेचारे के कई पुत्र थे, पर वह इतना गरीब था कि अपने बच्चों को एक वक्त भी पेट भर नहीं खिला सकता था। और उसकी स्त्री बड़ी कर्कशा थी। वह उसे दिन भर जली-कटी सुनाती रहती थी।

एक दिन बढ़ई एक लकड़ी लाया, और उसे काटने को ज्योंही उसने आरी चलाई त्योंही लकड़ी में से एक आवाज आई—"हे बढ़ई! तुम इस लकड़ी को धीरे धीरे काटो। नहीं तो मैं भी कट जाऊँगा।" इस पर बढ़ई बोला—"भाई! बता तू कौन है।" उसने कहा—"मैं एक साँप हूँ, मुझे लकड़ी के साथ मत काटो। मैं तुम्हारे काम आऊँगा।" बढ़ई को दया आ गई। उसने लकड़ी धीरे धीरे काटी और साँप को बाहर निकाला। साँप उसके सामने बैठ गया। उसने पूछा—तुम्हें क्या दुःख है? बढ़ई हाथ जोड़कर बोला—"हे सर्प देवता, मैं बहुत गरीब हूँ।" सर्प ने बढ़ई को एक मणि देकर कहा—"तुम इससे जो माँगोगे, वही यह तुम्हें देगी। पर याद रखना कि कहीं कभी लालच से बहुत ज्यादा न माँग बैठना! नहीं तो मणि तुम्हारा साथ छोड़कर गायब हो जायगी।" और अपनी दाढ़ी का बाल देकर कहा—"लो इसे लो। जब तुम पर विपत्ति पड़े, तब तुम इसे जमीन पर पटककर कहना 'बाल! बाल!! अपने स्वामी को बुला'।" यह कहकर साँप चला गया।

अब बढ़ई के दिन चैन से बीतने लगे। मणि से उसने सब चीजें माँग ली थीं, पर उसकी स्त्री बड़ी लालची थी। वह तरह तरह के गहने-कपड़े मणि से मांगती, मणि सब चीज दे देती थी। थोड़े दिन बाद पड़ोसियों ने सोचा कि यह बढ़ई थोड़े दिनों पहले तो इतना गरीब था, अब इतना अमीर कैसे हो गया। उन्होंने बढ़ई से इसका कारण पूछा। बढ़ई भोला-भाला तो था ही, उसने शुरू से आखिर तक सब हाल सुना दिया। अब तो वे लोग उससे मणि लेने की तरकीबें सोचने लगे।

एक दिन सवेरे जब बढ़ई सोकर उठा, तो उसकी स्त्री ने कहा कि आटा खतम हो गया। आटा लाओ। बढ़ई ने कहा "अच्छा, अभी लाता हूँ।" अब उसने मणि निकालने के लिए बक्स खोला। बक्स में मणि न पाकर वह चकराया, और अपनी स्त्री पर नाराज होने लगा। उसने कहा—"तूने ही लालच से बहुत माँगा होगा। तभी तो मणि गायब हो गई। ले, अब क्या खायगी? पत्थर।" स्त्री ने कहा—मैंने कुछ नहीं माँगा। न मालूम मणि कैसे गायब हो गई। बढ़ई फिर गरीब हो गया।

एक रोज बढ़ई ने कुछ बचे हुए कपड़ों को बेचने के लिए अपना बक्स खोला। उसमें एक डिबिया मिली। उस डिबिया को खोलने पर एक सफेद बाल निकला। बाल देखते ही उसे साँप की याद आ गई। उसने फौरन बाल को जमीन पर पटककर कहा—"बाल! बाल! अपने स्वामी को बुला।" बाल पटकते ही साँप आ गया और बोला—"भाई, क्या विपत्ति पड़ी?" बढ़ई ने सारा हाल सुना दिया। साँप ने कहा—"मणि तुम्हारी स्त्री के लालच से गायब नहीं हुई, बल्कि कुछ लोग उसे चुरा ले गये हैं। ख़ैर, तुम परवा न करो। तुम मैसूर के चन्दन के वन में जाओ। पर बच बचकर जाना, क्योंकि चन्दन का वन साँपों से भरा पड़ा है। तमाम पेड़ों पर भी साँप लिपटे हुए हैं। इसके लिए ऐसा करना कि दूध भरकर बहुत से प्याले जङ्गल में एक तरफ रख देना, और जब सर्प दूध की खुशबू से दूध पीने आयेंगे, तब उन सब में तुम एक सबसे बूढ़ा देखोगे जिसकी दाढ़ी हमारी ही तरह होगी। यह बाल देकर उससे कहना कि तुम्हारे भाई ने चन्दन की लकड़ी लेने भेजा है। वह तुमको थोड़ी सी लकड़ी काट लेने देगा। बस, तुम लकड़ी लाकर उसका एक पलँग बनाकर बेच देना।" यह कहकर साँप चला गया।

बढ़ई मैसूर की ओर रवाना हुआ। रास्ते में उसे अनेक नदी, नाले, पहाड़ वगैरह मिले। उन सबको पार करके वह डेढ़ [illegible] में मैसूर पहुँचा। वहाँ चन्दन के वन में जाकर उसने एक तरफ बहुत से प्यालों में दूध भरकर रख दिया। दूध की खुशबू से सब साँप वहाँ आ गये, और दूध पीने लगे। उसने उनमें सबसे बूढ़े साँप को बाल देकर कहा कि मुझे आपके भाई ने चन्दन की लकड़ी लेने के लिए भेजा है। साँप ने कहा—"अच्छा, थोड़ी सी काट लो।" बढ़ई ने थोड़ी सी लकड़ी काट ली, और साँप को झुककर प्रणाम किया। फिर वह अपने घर की तरफ लौटकर चल दिया।

उसने घर आकर उस चन्दन की लकड़ी का एक पलँग बनाया। पर वह बहुत छोटा था। इसलिए बढ़ई ने फिर बाल पटककर साँप को बुलाया और उससे कहा—हे सर्प देवता! यह पलँग बहुत छोटा है। इसे कौन खरीदेगा? साँप ने कहा—राजा बहुत सा धन देकर खरीद लेगा। यह पलँग जादू का है। यह कहकर साँप चला गया। बढ़ई उस चन्दन के छोटे पलँग को लेकर दरबार में गया। वहाँ पहुँचकर उसने कहा—महाराज, चन्दन का पलँग खरीद लीजिए। राजा बोला—अरे बेवकूफ, मेरा सबसे छोटा राजकुमार भी इस पलँग पर लेट नहीं सकता। बढ़ई बोला—महाराज, कुछ मूल्य आज दे दीजिए। आज रात को लेटने से आपको इसका गुण मालूम हो जायगा। बाक़ी मूल्य कल दे दीजिएगा। यह कहकर बढ़ई पाँच हजार मोहरें लेकर घर चला गया।

रात को राजा ने पलँग पर बैठकर

ज्योंही लेटना चाहा, त्यों ही पलँग अपने आप लम्बा होता चला गया और उस पर राजा पैर फैलाकर खूब अच्छी तरह सो गया।

आधी रात को एकाएक राजा की आँख खुल गई और उसने पलँग के चारों पायों को बोलता पाया। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ। फिर वह ध्यान लगाकर चारों पायों की बातें सुनने लगा। पहला पाया कह रहा था—"आज इस कमरे में एक साँप आयेगा।" दूसरे पाये ने कहा—"बस इतना ही मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ कि वह साँप सारे कमरे में और राजा के बदन पर रेंगेगा।" तीसरा पाया बोला—"मैं तुम्हें इससे ज्यादा बता सकता हूँ। वह साँप राजा के जूते में घुसकर बैठ जायगा और ज्योंही राजा जागेगा और जूता पहनेगा, त्योंही साँप काट खायगा और राजा मर जायगा।" मर जाने का नाम सुनकर राजा काँप उठा, परन्तु उसने चौथे पाये को यह कहते हुए सुना—"राजा बच सकता है अगर जगकर बिना जूते पहने बाहर से लकड़ी लाकर साँप को मार डाले।" बचने का उपाय सुनकर राजा सो गया।

सवेरे उठकर राजा ने झुककर देखा कि जूते में सचमुच एक साँप बैठा हुआ है। वह उठा और बाहर से लकड़ी लाकर उसने फौरन साँप को मार डाला। राजा बढ़ई पर मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ और सोचा कि मेरी जान पलँग के ही कारण बच गई नहीं तो जूता पहन लेता तो मर ही जाता।

उसी दिन राजा ने दरबार में बढ़ई को बुलाया। बढ़ई आया और उसने झुककर सलाम किया और फिर पूछा—"महाराज! मेरा कहना सच निकला या नहीं? रात को पलँग ने अपना गुण प्रकट किया या नहीं?" राजा खुश होकर बोला—"हाँ भाई बढ़ई! तुम्हारा पलँग तो बहुत ही अच्छा निकला और उसी के कारण आज सवेरे मेरी जान बची। मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। माँगो, तुम क्या चाहते हो।" बढ़ई ने झुककर प्रणाम करते हुए कहा—"महाराज! मेरे गाँव में किसान बहुत गरीब हैं और वे भूखों मरते हैं। आप बहुत सा धन उनमें बँटवा दीजिए।" राजा ने खुश होकर कहा—"अच्छा, ऐसा ही होगा। मैं तुमसे यह उम्मीद नहीं करता था कि तुममें दूसरों की भलाई करने की आदत है। इससे मैं बहुत खुश हूँ। आज से तुम्हें सरकारी खजाने से दस हजार मोहरें माहवारी खर्च के लिए हर महीने मिला करेंगी।" बढ़ई राजा को आशीर्वाद देता हुआ चला गया।

बढ़ई अब चैन से रहने लगा। उसके पुत्र दरबार में नौकर हो गये। वह साँप, जिसने बढ़ई की सहायता की थी, बढ़ई की भाँति बूढ़ा हो गया था। बढ़ई ने हठ करके उसे घर के पास बिल में रहने को बुला लिया। रोज सुबह-शाम बढ़ई एक सोने के प्याले में दूध भरकर बिल पर रख आता था। इस तरह साँप और बढ़ई का परिवार सुख से रहने लगा।

—— ३वे
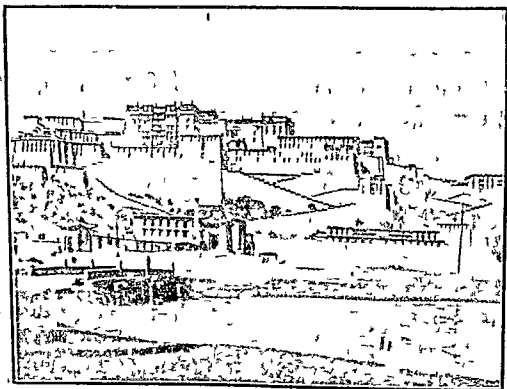
तिब्बत में दलाई-लामा का महल

तिब्बत का राजा, लाटरी में

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, हिन्दी रत्न

प्यारे बाल-सखाओ ! लाटरियो से हार-जीत, इनामो और बड़ी बड़ी रकमों का मिलना तो आप लोग आये दिन सुना ही करते है मगर आज मे आपको एक ऐसी मजेदार लाटरी का हाल बताऊँगा, जिसे सुनकर आप को आश्चर्य-चकित होना पडेगा।

संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी लाटरी इसी वर्ष तिब्बत की राजधानी ल्हासा-शहर में डाली जायगी और जिस का नाम पहले निकलेगा, वही राजा माना जायगा। क्या भी इस लाटरी का ...ए उतावला हो

जिस तरह हमारे देश में राजा, महाराजा और नवाब के पद होते हैं, उसी तरह तिब्बत के राजा को वहाँवाले "दलाई-लामा" की महान् उपाधि देते हैं। दलाई-लामा को वे लोग अपने धर्म का प्रधान गुरु और अपने देश का शासक मानते हैं।

दलाई-लामा की पदवी सन् १५७६ से शुरू हुई थी, और लामा चुन लेने की वर्तमान प्रथा ... बादशाह ने सन् १७८२ में ...लाई-लामा चुनने का नियम इस ... समय किसी ..., उसी दिन

तिब्बत के दलाई-लामा

'महाकाल'—तिब्बत का एक देवता

और उसी समय जो बालक जन्म लेता है उसी को तिब्बतवाले अपना राजा अथवा दलाई-लामा मान लेते हैं। क्योंकि उनका विश्वास है कि उनके दलाई-लामा साहब मरते नहीं, सिर्फ चोला बदल लेते हैं। यानी अभी मरे और फौरन ही बालक-रूप में उन्हें जीते जागते देख लीजिए। आप पूछ सकते हैं कि अगर एक ही वक्त कई बालक पैदा हों "तब क्या हो।" तो आपकी इस "तब" का माकूल जवाब भी तिब्बतवालों ने बहुत पहले से तैयार रख छोड़ा है। मान लीजिए, उस घड़ी ३-४ बच्चे तिब्बत में एक ही साथ पैदा हुए हों तो उनके नाम ...हे की छोटी छोटी पट्टियों पर खोदकर ...हें किसी झील में फेंकते थे। इनमें से, ईश्वर की इच्छा से, जो पट्टी ऊपर उठकर पानी पर तैरने लगती थी, उसपर खुदे नामवाले बच्चे को दलाई-लामा का असली अवतार मान लिया जाता था और यही साहब गद्दी के अधिकारी मान लिये जाते थे। मगर आजकल तो ईश्वर जरा बूढ़े हो गये मालूम देते हैं और लोहे की पट्टी को नीचे से ऊपर तक लाने की उनमें शक्ति नहीं रही। इसलिए अब तिब्बत में, बच्चों के नाम कागज़ के टुकड़ों पर लिखकर एक सोने के पीपे में डाल दिये जाते हैं। फिर वे कागज निकाले जाते हैं—ठीक आजकल की लाटरियों के टिकटों की तरह।

तिब्बत के पिछले राजा, जो १३वें

तिब्बत का एक बच्चा

दलाई-लामा के नाम से विख्यात थे, सन् १९३३ की १७वीं दिसम्बर को परलोकवासी हो गये। और चूँकि उस दिन और उस वक्त किसी बच्चे ने तिब्बत में जन्म नहीं लिया, इसलिए १४वे दलाई-लामा का पद किसी को आज तक नसीब नहीं हो सका या यों कहिए कि तिब्बत का तख्त अपने नये बादशाह की तलाश में परेशान है। तख्त हथियाने के लिए वहाँ के सरदारों में "चील झपट्टा" होता रहता है।

इन स्वर्गवासी १३वे दलाई-लामा ने तिब्बत पर पूरे २५ वर्षों तक राज्य किया था। इनके राजा होने के कुछ ही समय के बाद चीन वालों ने तिब्बत पर हमला किया था। उन्होंने ल्हासा हथिया लिया और बेचारे १३वें दलाई लामा को गद्दी छोड़कर भागना पड़ा। वे दो साल तक अपनी जान बचाने के लिए हमारे दार्जिलिंग में ठहरे थे। अन्त में ब्रिटिश सरकार की सहायता से उन्हें फिर अपना राज्य मिल गया।

हाँ, तो १४वें दलाई-लामा के अवतार की खोज जारी थी ही। अब ५ वर्षों के बाद पता चला है कि जिस दिन और जिस घड़ी १३वें दलाई-लामा स्वर्गवासी हुए, उसी घड़ी दो बालकों ने तिब्बत में और एक बालक ने पड़ोस के चीनी प्रान्त–चिंघाई में जन्म ग्रहण किया था। इसलिए इस वर्ष एक शुभ मुहूर्त में इन्हीं तीन बालकों के नाम से ल्हासा नगर में लाटरी डाली जानेवाली है और जिस बालक का नाम सर्वप्रथम निकलेगा, वही १४वाँ दलाई लामा और तिब्बत का राजा माना जायगा और माना जायगा स्वर्गीय १३वे दलाई लामा का अवतार।

तेजा और भोजा

लेखिका, कुमारी रत्न रमा "तितली" एच० एम० बी०

किसी शहर में तेजा और भोजा नामक दो आवारा लड़के रहते थे। एक दिन दोनों को मिठाई खाने की सूझी। वे अपने को रोक न सके और रात होने ही एक हलवाई के घर के पिछवाड़े जाकर खड़े हो गये। वहाँ आहट लेते रहे। हलवाइन खा-पीकर सो रही। उस दिन हलवाई कहीं मेहमानी करने गया था। बस, मौका अच्छा ही था। दोनों ने घर का छप्पर काटा और भोजा ने तेजा की कमर रस्सी मे बाँधकर नीचे कमरे में लटका दिया। तेजा ने खूब डटकर मिठाई खा ली और बाकी जितनी मिठाई बाँध सका उतना पोटली में बाँधकर रस्सी के सहारे ऊपर छप्पर पर आ गया। अब भोजा की बारी आई। तेजा ने उसकी भी कमर बाँधकर नीचे लटका दिया। मगर तेजा को छप्पर पर नींद आ गई। जब नींद खुली तो सुबह का भ्रम करके वह एकदम भाग खड़ा हुआ। यहाँ भोजा मिठाई खाने में लगा हुआ था। जब उसने सुबह होते देखा तब वह घबरा उठा, और 'तेजा', 'तेजा' कहता हुआ रस्सी हिलाने लगा। यहाँ ज्योही हलवाइन ने 'तेजा', 'तेजा' सुना, वह घबड़ा गई। उसे विश्वास हो गया कि घर में तेजा नामक कोई जानवर घुस आया है। बस, इतना ही काफी था। उसने मुहल्ले भर को सर पर उठा लिया और लगी जोर जोर से चिल्लाने—"अरे बाप रे! मुझे तेजा ने खा डाला। दौड़ो, बचाओ!"

यह सुनते ही सैकड़ो आदमी द्वार पर जमा हो गये, मगर तेजा को आज तक न किसी ने सुना था, न उसकी शकल ही देखी थी। सभी हैरान थे कि यह कोई नया ही जानवर है। किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि जान हथेली पर लेकर घर में घुसे और तेजा को मार बाहर करे। अन्त मे यह तय हुआ कि सब आदमी लाठी लेकर मकान घेरकर खड़े हो जायँ और ज्योंही तेजा निकले, उसे मार डालें। ये बातें हो ही रही थीं कि एक मुसलमान साहब, जो गप्पें हाँकने में पटु थे, वहाँ पहुँच गये। आपने उपयुक्त मौका समझकर आगे बढ़कर कहा कि हम तेजा को जानते हैं। वह बड़ा ही भयानक जीव है। जिसने कमरे में पैर रक्खा उसे वह तुरन्त मार डालेगा। पर तेजा हमारा कुछ भी न बिगाड़ सकेगा। अतः सब लोग इसी तरह खड़े रहो। हम उस कमबख्त जानवर को अभी निकाल बाहर करते हैं। उसकी पहचान यह है कि वह गहरे लाल रंग का होता है और

आदमी की शक्ल से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

वहाँ घर के भीतर बेचारा भोजा बड़े पसोपेश में पड़ा था। आप ही उसकी परिस्थिति का अनुमान लगा सकते हैं। उसका हृदय आपकी जेब-घड़ी की तरह धड़क रहा था। उसने मियाँजी की बातें सुन लीं, और चटपट एक लोटे में लाल रङ्ग घोलकर तैयार हो गया।

यहाँ मियाँजी ने लाठी लेकर, अकड़ते हुए, घर में पैर रक्खा। बेचारे को क्या मालूम था कि हमारे ऊपर ही बेभाव की पड़ेगी। दिल में तो डर रहे थे, पर अब पीछे लौटना भी ग़ैर मुमकिन था, क्योंकि तेजा को भगाने का वादा कर चुके थे। ज्योंही वे कमरे में घुसे, भोजा ने आव देखा न ताव और उछलकर उनके सर पर रङ्ग उँडेल दिया। मियाँजी इस उछल-कूद से घबरा गये। उनका सारा शरीर लाल हो गया। उनके छक्के छूट गये। वे घबराकर बेतहाशा भाग खड़े हुए।

रङ्ग से लथपथ मियाँजी सर पर पैर रखकर भाग निकले। लोगों ने जो उनको देखा तो समझा कि यही तेजा है और भागा जा रहा है। लोग मुस्तैद थे ही, सबने पीछा किया और मियाँजी पर बे भाव की पड़ने लगी। ताबड़-तोड़ लाठी, घूँसे, तमाचे, यहाँ तक कि मियाँजी बेहोश होकर गिर पड़े तब कहीं पीछा छोड़ा गया। लोगों ने बाद में पहचाना तो वे अफसोस करने लगे। यहाँ भोजा ने ज्योंही मैदान साफ देखा, त्योंही चुपके से घर की राह ली और प्रण कर लिया कि आज की तारीख़ से कभी तेजा के साथ चोरी करने के लिए न जाऊँगा।

मेला

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण त्रिपाठी 'श्याम', विशारद

कष्ट सहा, हमने दुख झेला,
किन्तु एक देखा कल मेला।
था मेले का, वहाँ झमेला,
खूब, हुई थी ठेली-ठेला।
कई एक ने मुझे ढकेला,
मैंने भी फिर उन्हें, पछेला।
खूब दुकानों का था मेला,
सब पर था जनता का रेला।

था अमरूद बहुत ही रेला,
लिया मगर हमने था केला।
थे दस पैसे चार अधेला,
खेल उसी में मैंने खेला।
आई जब सन्ध्या की बेला,
ले-देकर घर चला, अकेला।
कष्ट सहा, हमने दुख झेला,
मगर, एक देखा कल मेला।

खाओ तो कद्दू से, न खाओ तो कद्दू से

लेखक, श्रीयुत प्यारेलाल गर्ग, कानपुर

श्याम इस साल गर्मी की छुट्टियाँ गाँव में बिताने आया है। उसका समय गाँव-वालों को पढ़ाने-लिखाने और खेल कूद में जाता है। जब कभी गाँव में बारातें आ जाती हैं तो बाहर से आये हुए लोगों की सेवा करने में ही उसका समय कटता है। कभी खुद भी बाराती बनकर दूसरे गाँवों में जाता है। वह एक बात से बड़ा परेशान है। जब खाने का समय आता है तो सिवा कद्दू की तरकारी के दूसरी तरकारी उसे नहीं मिलती। जब दूसरी तरकारी माँगता है तो लोग कहने लगते है कि भाई, खाओ तो कद्दू से न खाओ तो कद्दू से। यह सुनकर वह चुप हो जाता है और किसी प्रकार अपना पेट भर लेता है।

एक बारात से जब वह घर लौटा तो देखता क्या है कि उसके ताऊजी आ गये हैं। कुशल-समाचार पूछने के बाद वह कहने लगा कि ताऊजी, यह तो बतलाइए कि आजकल सिवा कद्दू की तरकारी के देहातों में और कोई दूसरी तरकारी क्यों नहीं मिलती। उन्होंने कहा कि यह गर्मी के मौसिम की तरकारी है। इसके पैदा करने में अधिक खर्च नहीं होता। केवल सिचाई अधिक करनी पड़ती है। किसान के पास बैल और चरसा होते ही है, उन्हीं को वह काम में लगाये रहता है। पैदावार अधिक होने से यह तरकारी सस्ती भी बिकती है। हमारे देहाती भाई गरीब होते हैं। वे शहर के आस पास होनेवाली महँगी तरकारियों को खरीद नहीं सकते। इसी को काम में लाते हैं। शहर में तो आजकल भिण्डी, परवल, करेला, लौकी, टिंडे, मूली आदि मिल जाते हैं।

कद्दू की काश्त करना भी सरल है। जिस खेत में कद्दू बोना होता है, उसमें बरहे बना लेते है। प्रत्येक बरहे के बाद दस फुट पर एक डाँड़ बनाते हे। फिर उसी फासले पर बरहा। इन बरहों में खाद डालकर मिट्टी में खूब मिला देते है और जनवरी के महीने में बरहों के अन्दर मेंडो के सहारे दो दो फुट के फासिले पर बीज बो देते हैं। बरहों की सिंचाई करते रहते हैं। धीरे धीरे बेल बढ़ने लगती है। खेत में बराबर निराई-गुड़ाई करते रहते हैं। जब गरमी पड़ने लगती है तो सारे खेत को तर रखते हैं। एक कुएँ पर एक बीघे से अधिक जमीन नहीं रखते। मार्च में फल लगना शुरू हो जाता है। जब फल बड़े बडे हो जाते है तब तोड़ने लगते है। यही समय विवाह आदि का होता है। देहाती भाई कच्चे आम डालकर इसकी तरकारी और उबालकर रायता बनाते हे।

बिकने से जो कद्दू बच रहते हैं उन्हें खेत में ही पकने देते हैं। पकने पर उनका रङ्ग ललाई लिये पीला हो जाता है। उन्हें तोड़कर घरों में हवादार जगह में छींकों पर लटका देते हैं। ये जाड़े में तरकारी, रायता और हलुआ बनाने के काम आते हैं।

कद्दू को काशीफल और सीताफल भी कहते हैं।

सिंह और चित्रकार

लेखक, श्रीयुत राजमनोहरसिंह सोहल

इन्दु नामक चित्रकार वन में एक,
खींचा करता चित्र था बड़ा नेक।
एक सिंह भी रहता था उसी वन में।
देख सुन्दर चित्र इच्छा आई उसके मन में,
क्यों न मैं भी अपनी तस्वीर खिंचाऊँ
औ अपनी सिंहनी को दिखलाऊँ।
सुरम्य एक अति सरिता का तट था,
खुला कूँचियों द्वारा जहाँ चित्रकार का हृत्पट था।
जाकर खड़ा हो गया सिंह वीर,
जहाँ बना रहा था चित्रकार तस्वीर।
बोला सिंह देकर मूँछों पर ताव—
चित्रकार, मेरा भी एक चित्र बनाव।
कूँची छूट गई रङ्ग गया बिखर,
चेहरा हो गया फ़क सिंह का सामने देखकर,
लगा काँपने थर थर कैसे अपनी जान बचाऊँ।
टेढ़ी खीर है कैसे इसकी तस्वीर बनाऊँ।
बोला सिंह मुस्कराकर—मत घबड़ाओ,
सिंहनी होवे प्रसन्न ऐसा चित्र बनाओ।
सुचित्त हो तब चित्रकार हुआ सावधान।
लगा सोचने कैसे बचाऊँ इससे प्रान।
ध्यान आया सरिता का युक्ति भी मन में आई।
काम में लाया उसको सिंह से जान बचाई।
कहा चित्रकार ने, पधारिए केहरि महाराज।
चित्र बनेगा दो दिन में पीठ मेरी ओर हो आज।
पहले बनाता हूँ चित्र आपकी पीठ का,
फिर बनाऊँगा चित्र आपके श्रीमुख का।
पीठ की सिंह ने सुनकर यह,
पार कर सरिता चित्रकार हुआ तीन तेरह।
जान बचाई किसी तरह प्रसन्न हुआ मन में।
सपने में भी पग फिर न धरा उस वन में॥

कल की लड़की

कल की लड़कियाँ कैसी होंगी, यह ऐसा सवाल है जो आज की लड़कियों के सामने है। आज से यहाँ हमारा मतलब है वर्तमान समय, और कल से मतलब है आगे आनेवाला जमाना।

आज की लड़कियों की जरूरत को देखकर कोई भी समझदार आदमी बिना इस नतीजे पर पहुँचे न रहेगा कि कल की लड़की आज की लड़की से बिलकुल जुदा होगी। आज की लड़की की तरह न तो वह पर्दे में बन्द होकर बैठेगी और न नाक-कान छेदायेगी। घर से बाहर कहीं जाना होगा तो किसी आदमी के पीछे पीछे, मुँह मूँदकर न जायगी और बड़ी होने पर किसी आदमी की कमाई पर अपना जीवन आश्रित न रक्खेगी। वह स्वतन्त्र होगी। जिस तरह से लड़के अपनी मर्जी के अनुसार जहाँ चाहते हैं आते-जाते हैं और जो जी में आता है वह काम करते है, उसी तरह वह भी अपनी मर्जी के अनुसार चल-फिर सकेगी। लड़कों की तरह वह भी खेती-बारी, मेहनत मजदूरी और नौकरी-चाकरी कर सकेगी। कोई भी काम सीखने या कोई काम करने के लिए उसको किसी प्रकार की मनाही न होगी।

आज की लड़कियों को अपनी कल की इन बहनों का स्वागत करना ही पड़ेगा। आदर के साथ उनको जगह देनी ही होगी। इसलिए क्या अच्छा हो कि आज की लड़कियाँ अपनी इन कल की बहनों को समझने की कोशिश करें और अपने आपको इस तरह बना लें कि वे कल की लड़कियों को और भी योग्य बनाने का श्रेय हासिल कर सकें।

यह खुशी की बात है कि गहनों का रिवाज कम होता जा रहा है। पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भद्दे गहने नहीं पहनतीं। अब गहने तौल में हलके बनने लगे हैं और वे शरीर पर
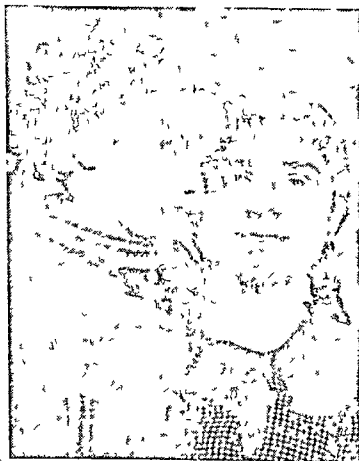
दो बहनें

कुमारी अजीला शाकिर। गवर्नमेंट इंटर जुबली कालेज, लखनऊ की स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर आप को अँगरेजी में सर्वश्रेष्ठ भाषण देने पर पदक प्राप्त हुआ है।

जगह भी कम घेरते हैं। पुराने समय में लड़कियाँ जहाँ कलाई से कुहनी तक चौड़ी चौड़ी चूड़ियाँ पहनती थीं वहाँ आज की लड़कियाँ सिर्फ दो-चार चूड़ियों से ही अपना काम चलाती हैं और मुमकिन है कि कल की लड़कियों के हाथ में एक भी चूड़ी न हो। पहनावे में जिस तरह से फर्क हो रहा है उसी तरह रहन-सहन में भी फर्क हो रहा है। कल की स्त्रियाँ चहारदीवारी के अन्दर बिलकुल बन्द न रहेंगी और उन्हें बहुत सी जिम्मेदारी का काम अपने ऊपर लेना पड़ेगा। आज की बहनों से निवेदन है, वे इस जमाने की रफ़्तार को समझें और अपने आपको इसके मुताबिक बनाने की कोशिश करें।

बत्तीसों की बानगी

लेखिका, कुमारी रत्न वर्मा "तितली", एच० एम० बी०

(१)

जेंटिलमेन—वैल पंडित जी सलाम।

देहाती पंडित—जनाब, यह हमारी तकदीर ही है कि आप हमको बैल कह रहे हैं। कल शायद गधा कहेंगे।

(२)

"अम्मा, जल्दी से कैमरे में फिल्म तो डाल दो।"

"क्यों बेटा?"

"पिता जी को साँड मार रहा है। उनकी फोटो लेनी है।"

(३)

मरीज—डाक्टर साहब, आपकी कृपा से मुझे आराम हुआ।

डाक्टर—(सज्जनता से) सब परमेश्वर की दया है।

मरीज—तब तो पैसे भी परमेश्वर के ही पास भेज दूँगा।

(४)

मास्टर—तुम्हारा लड़का इतिहास में बड़ा कमजोर है।

देहाती—अरे साहब, बेचारा क्या करे। आदमी को अपनी जिन्दगी की बातें याद नहीं रहतीं। आप तो उससे उस समय की बातें पूछते हैं जब कि मेरे दादा का भी जन्म नहीं हुआ था।

(५)

"जनाब, मेरे लड़के ने शेर का मुकाबिला किया।"

"बड़ा बहादुर था साहब! अन्त में क्या हुआ?"

"शेर उसे पकड़कर खा गया।"

मज़ेदार चुटकुले

एक आदमी अपने अस्तबल में गया। उसने देखा कि उसका लड़का घोड़े पर बैठा

दो बहनें

कुमारी अजीला शाकिर। गवर्नमेंट इंटर [illegible] कालेज, लखनऊ की, स्वर्ण-जयंती के अवसर [illegible] आप को अँगरेजी में सर्वश्रेष्ठ भाषण देने पर [illegible] प्राप्त हुआ है।

जगह भी कम घेरते है। पुराने समय में लड़कियाँ जहाँ कलाई से कुहनी तक चौड़ी चौड़ी चूड़ियाँ पहनती थीं वहाँ आज की लड़कियाँ सिर्फ दो-चार चूड़ियों से ही अपना काम चलाती है और मुमकिन है कि कल की लड़कियों के हाथ में एक भी चूड़ी न हो। पहनावे में जिस तरह से फर्क हो रहा है उसी तरह रहन-सहन में भी फर्क हो रहा है। कल [illegible] स्त्रियाँ चहारदीवारी के अन्दर बिलकुल [illegible] न रहेंगी और उन्हें बहुत सी जिम्मेदारी, [illegible] काम, अपने ऊपर लेना पड़ेगा। आज [illegible] बहनों से निवेदन है, वे इस जमाने की रह[illegible] को समझें और अपने आपको इसके मुताबि[illegible] बनाने की कोशिश करें।

बत्तीसो की बानगी

लेखिका, कुमारी रत्न वर्मा "तितली", एन० एम० बी०

(१)

जेंटिलमेन—वेल पंडित जी सलाम।

देहाती पंडित—जनाब, यह हमारी तकदीर ही है कि आप हमको बैल कह रहे हैं। कल शायद गधा कहेंगे।

(२)

"अम्मा, जल्दी से कैमरे में फिल्म तो डाल दो।"

"क्यों बेटा?"

"पिता जी को सॉंड मार रहा है। उनकी फोटो लेनी है।"

(३)

मरीज़—डाक्टर साहब, आपकी कृपा से मुझे आराम हुआ।

डाक्टर—(सज्जनता से) सब परमेश्वर की दया है।

मरीज—तब तो पैसे भी परमेश्वर के ही पास भेज दूँगा।

(४)

मास्टर—तुम्हारा लड़का इतिहास में बड़ा कमजोर है।

देहाती—अरे साहब, बेचारा क्या करे। आदमी को अपनी जिन्दगी की बातें याद नहीं रहतीं। आप तो उससे उस समय की बातें पूछते हैं जब कि मेरे दादा का भी जन्म नहीं हुआ था।

(५)

"जनाब, मेरे लड़के ने शेर का मुकाबिला किया।"

"बड़ा बहादुर था साहब! अन्त में क्या हुआ?"

"शेर उसे पकड़कर खा गया।"

मजेदार चुटकुले

एक आदमी अपने अस्तबल में गया। उसने देखा कि उसका लड़का घोड़े पर बैठा

हुआ कुछ लिख रहा है और उसके हाथ में पेंसिल और कापी है। उसने अपने लड़के से पूछा कि बेटा तुम क्या लिख रहे हो? लड़के ने उत्तर दिया—मैं एक लेख लिख रहा हूँ।

पिता—घर में बैठकर क्यों नहीं लिखते?

लड़के ने उत्तर दिया—मेरे मास्टर साहब ने घोड़े पर एक लेख लिखने को दिया है। इसलिए घोड़े पर लिख रहा हूँ।

—सुरेशनारायण सकलानी।

(१)

एक शहराती अपने दोस्त से, पार्क में भेंट होने पर, उदासी से बोला—यार क्या बताऊँ, दुनिया से ईमानदारी कतई उठ गई।

दोस्त—क्यों, क्या बात हुई?

शहराती—मैंने परसों एक नौकर रक्खा था। वह दूसरे ही दिन मेरी नई दरी चुराकर भाग गया।

दोस्त—तुमने कितने में दरी खरीदी थी?

शहराती—सच बताऊँ, खरीदी नहीं थी। आगरे की बढ़िया दरी थी। अभी उस दिन रेल में एक भला मुसाफिर उतरते समय, मेरे ही डब्बे में छोड़ गया था।

(२)

मजिस्ट्रेट—(मुलजिम से) क्यों जी, तुम्हारी उम्र क्या है?

मुलजिम—हुजूर, मेरी उम्र तीस साल की है।

मजिस्ट्रेट—हूँ! पारसाल जब तुम चोरी के इलजाम से मेरी अदालत में आये थे, तब भी अपनी उम्र ३० ही साल बताई थी—और आज भी तीस! यह कैसी उम्र है?

मुलजिम बोला—हुजूर, मैं अपनी उम्र हमेशा एक-सी बताया करता हूँ। अदालत में कभी एक बात कहूँ और कभी दूसरी—यह मुझसे नहीं हो सकता।

—लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।

वृद्ध (लड़के से)—बेटा, रविवार को कोई काम नहीं करना चाहिए।

लड़का—क्यों?

वृद्ध—इससे स्वर्ग नहीं मिलता।

लड़का—पुलिसवाले तो रविवार को भी काम करते हैं। क्या उन्हें स्वर्ग नहीं मिलेगा?

वृद्ध—वैसे लोगों की स्वर्ग में जरूरत नहीं होती, बेटा।

—पशुपतिनाथ वर्मा।

(१)

मास्टर—ज्वारभाटा किसे कहते हैं?

लड़का—वही ज्वार की रोटी भाटे के साथ।

(२)

पिता—तूने नये जूते पहन लिये?

लड़का—हाँ, पहन लिये।

पिता—तो अब लम्बे लम्बे डग भरना जिससे जूता न घिसे।

—कुमारी मैनादेवी।

नई पहेलियाँ

बच्चों का वह राजदुलारा, छत से लटका रहता है।
रोता बच्चा चुप हो जाता, यदि उसको पा जाता है।

(झूला)

—भगवानदास शिवहरे

घर घर घर है मेरी चाल,
सुखी करूँ हरदम हर काल।
धनी पुरुष रखते हमको हैं,
चला चलाकर दुख खोते हैं॥

(अँगरेजी पखा)

—कुमारी विद्यावती

मूली का-सा कतरा, दही का सा वेश।
बताओ तो बताओ, नहीं चलो हमारे देश॥

(रुपया)

—राजकिशोरप्रसाद

एक जानवर ऐसा, जिसके सिर के ऊपर पैसा।

(मोर)

—भवानीलाल माथुर

बिन बस्ती का मैं संसार,
बिन जल रक्खूँ समुद्र अपार।
नदी, पहाड़, शहर, वन, खूब,
पर खोजे से मिले न दूब॥

(नकशा)

—वेदप्रकाश गोयल

देखोगे उसको ज्योंही।
दो हो जाओगे त्योंही॥

(आईना)

—वरुणजी

जब थी मैं भोली-भाली,
खूब सही थी मैंने मार।
अब पहनी है घँघरिया,
अब न सहूँगी मार।

(मटका)

—गिरिजाशंकर दीक्षित

एक नारि देखी मैं न्यारी,
भीतर कपड़ा ऊपर उघारी।
अपने काम की बड़ी सयानी,
औरों के हाथ से पीती पानी॥

(दवात)

—रतनचन्द 'देव' राँका

मैं रिसट ब्लेड इकट्ठा करता हूँ और फोटोग्राफी से भी मुझको शौक है। इन दोनों विषयों में रुचि रखनेवाले मुझसे पत्र-व्यवहार करने की कृपा करें।

कृष्ण सांडल
C/o श्री एम० एम० सांडल
रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर
वृन्दावन, यू० पी०।

मुझे टिकट इकट्ठा करने का बहुत शौक है। मैंने बहुत से टिकट इकट्ठे भी किये हैं। मैंने टिकटों के अलावा कुछ प्रचलित सिक्के भी इकट्ठे किये हैं। जो भाई मुझसे अदल बदल करना चाहें वे निम्न पते म पत्र-व्यवहार करें—

विष्णुप्रसाद व्यास
C/o प० ठाकुरप्रसाद शर्मा
श्रीराम औषधालय
नयाबाज़ार, लश्कर
(ग्वालियर स्टेट)

मुझे भिन्न भिन्न देशों के टिकट सग्रह करने का बडा शौक़ है। मेरे पास अमेरिका, इँगलेंड, नीदरलेण्ड, जापान, कैनाडा, नैपाल और हिन्दुस्तान की रियासतों के बहुत से टिकट मोजूद हैं। मेरे पास लाटरी के फार्मों का भी अच्छा सग्रह है। जो पाठक इन बातों में दिलचस्पी रखते हो और जो टिकट बदलना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें—

राजेन्द्रनारायण अग्रवाल
C/o बा० सूर्यनारायणजी B A
पुराना शहर, इटावा।

मुझे टिकट, नेमल्स, कैडबेरी की तसवीरें तथा फोटोग्राफी का शौक है। मेरे पास करीब ३ हजार टिकट, २ एलबम भर चाकलेट की तसवीरें तथा बहुत से दृश्यों के फोटोग्राफ हैं। "बालसखा" के उन मित्रों से, जो इन विषयों में दिलचस्पी रखते हो पत्र-व्यवहार करना चाहता हूँ।

प्रेमवर्धन शाह
C/o श्री० श्रीविलास शाह, डिपुटी कलेक्टर
प्रेमाश्रम, खजुरी
बनारस कैण्ट

मुझे टिकट सग्रह करने का बहुत शौक है परन्तु खेद है कि मेरे निकट कोई लडका नहीं रहता जिससे मैं अपने टिकट अदल बदल कर सकूँ। जो पाठकगण टिकट सग्रह करके अदल बदल कर सकते हैं वे निम्नलिखित पते स पत्र व्यवहार करें। मेरे पास कई देशों के टिकट हैं।

गिरिजाशकर दीक्षित
C/o डा० रामाशकर दीक्षित
सुपरिंटेंडेंट जेल
सुल्तानपुर

'बालसखा' के इस अंक में हम बच्चों के बापू नाम की एक कविता छाप रहे हैं। इसके लेखक 'बालसखा' के पाठकों के सुपरिचित श्री सोहन-लाल द्विवेदी हैं। बच्चों के लिए कविता लिखने में आप सिद्धहस्त हैं और आपकी यह कविता बहुत ही अच्छी बन पड़ी है। जैसी अच्छी कविता आप लिखते हैं वैसा ही अच्छा यह विषय भी आपने चुना है। हमें आशा है, हमारे पाठक इस कविता को अवश्य पढ़ेंगे। इसके अलावा आपकी ग्रामीं का गीत नाम की एक कविता हम और छाप रहे हैं। यह कविता भी बहुत मजेदार है।

× × × ×

हिन्दी रत्न श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल का लेख "तिब्बत का राजा, लाटरी में", पाठकों की दिलचस्पी के लिए, हम इस अङ्क में छाप रहे हैं। तिब्बत का राजा दलाई-लामा के नाम से विख्यात है और उसके चुनाव का तरीका भी बहुत अजीब है। तिब्बत में जन्म लेनेवाला कोई भी आदमी दलाई-लामा हो सकता है, बशर्ते कि उसका जन्म ठीक उसी समय हो जिस समय दलाई-लामा ने शरीर छोड़ा हो। तिब्बतवालों का यह ख़्याल है कि उनका राजा मरते ही उसी देश में तुरन्त जन्म ले लेता है। इसी लिए तिब्बत की राजगद्दी पर जब कोई नया राजा बैठता है तब वह सिर्फ एक या दो दिन का बच्चा रहता है। सारी बात अग्रवालजी का लेख पढ़ने से मालूम हो जायँगी।

× × × ×

कुमारी रत्न वर्मा "तितली" बालसखा की योग्य लेखिका हैं। कुमारीजी बराबर "बाल-सखा' में छपने के लिए अच्छी अच्छी चीजें भेजती रहती हैं। हमें खेद है कि अभी तक हम उनकी सब रचनाएँ नहीं छाप सके। लेकिन उनकी रचना 'तेजा और भोजा' जो हमें बहुत पसन्द आई है, "बालसखा" के इस अङ्क में छापी जा रही है।

× × × ×

"बालसखा" के इस अङ्क में गणित चमत्कार शीर्षक लेख भी हम छाप रहे हैं। यह लेख 'बालसखा" के सुपरिचित श्री वंशीधर मिश्र एम० एल० ए० का लिखा है। मिश्रजी ने इस लेख में बतलाया है कि शतरञ्ज का खेल रावण की महा-रानी मन्दोदरी ने ईजाद किया था। यह लेख बहुत मज़ेदार है और सारी गणित-सम्बन्धी

बहुत सी अजीब बातें मालूम होती हैं। इसके पहले भी मिश्रजी के गणित-सम्बन्धी कई लेख छप चुके हैं। मिश्रजी "बालसखा" के सर्वश्रेष्ठ लेखकों में से हैं और हम उनकी इस बात के लिए तारीफ करते हैं कि पचासों राजनैतिक कामों में डूबे रहने पर भी वे "बालसखा" को नहीं भूलते। उसके लिए कुछ न कुछ बराबर भेजते ही रहते हैं।

वानर

हिन्दी मन्दिर प्रयाग से, प० रामनरेश त्रिपाठी के सम्पादकत्व में, 'वानर' नामक बच्चों का मासिक पत्र प्रकाशित होता था। परन्तु इधर कुछ समय तक वह बन्द हो गया था। पाठकों को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि जुलाई से 'वानर' फिर प्रकाशित होने लगेगा। हम इस पत्र की शुभ कामना करते हैं।

नहीं छपेंगे

खेद है कि स्थानाभाव के कारण निम्नलिखित लेख आदि नहीं छप सकेंगे। आशा है प्रेषकगण क्षमा करेंगे।—

मेरी हरिद्वार-यात्रा—श्री सालाराम अग्रवाल। पत्र—श्री शिवभगवान कावरा। बाल विवाह—श्री कालीचरण भगत। चोरी करने का फल—श्री लक्ष्मीनारायण। भ्रमण—श्री हरिशङ्कर शर्मा। पागल—श्री बृजनन्दन त्रिपाठी। विद्या की महिमा—श्री बाफना फतेचन्द्र। गरीब का ब्याह इत्यादि—श्री महादेव प्रसाद। सपूत बेटा—श्री विष्णुप्रसादजी व्यास। श्यामा—श्री मुरली धर वर्मा। कहानी—श्री शकुन्तला कुमारी जैन। चुटकुले—श्री सुरेश्वरप्रसाद। महात्मा गाँधी—श्री रामनिरञ्जन केजड़ीवाल। पतिव्रता—श्री पुष्पमल जैदक। कविताएँ—श्री विनोदकुमार। उल्का पात—श्री लक्ष्मीनारायण सघी। बुरा क्या है—श्री दुर्गालाल माथुर। कहानी इत्यादि—श्री सरयुगप्रसाद त्रिपाठी। बाल अभिनय इत्यादि—श्री गेंदमल देशलवरा। वीर सुभाषी आओ—श्री घनश्याम अस्थाना। सोमनाथ का ह्रास—श्री विजेन्द्रकुमार श्रीवास्तव। बाल सखा—श्री चन्द्रभूषण साह। ग्रीष्म—श्री चम्पालाल बोहरा। कविताएँ—कुमारी कुन्तीदेवी। राज कुमार के पाँच भूत—वेगराज खेमका। एक मुर्दा—श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव। चोरी का दामाद—श्री जानकीवल्लभ वाजपेयी। मैं खाऊँ क्या—श्री छेदीलाल निषाद। कविताएँ—श्री कृष्ण भारद्वाज। मनोहर रात्रि—कुमारी सुशीला गुप्ता।

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वर्ष २३] अगस्त १९३९—श्रावण १९९६ [संख्या ८

मेरी चाह

लेखिका, कुमारी विमला "कमलिनी"

यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ।
जित चाहूँ तित उड़ जाऊँ॥

रंग-बिरंगे फूलों से फिर
जोड़ूँ अपना नाता।
गा गाकर नित गीत सुनाऊँ
जो उनको है भाता॥
रोतों को पहुँच हँसाऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

इस डाली से उस डाली पर
फुदक फुदककर आती।
बच्चे आते, शोर मचाते
फुर फुर उड़ मैं जाती॥
पकड़ी कभी न जाऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

नये-नये नगरों को देखूँ
वन उपवन में सैर करूँ।
झरनों की मैं शोभा निरखूँ
मन में नित ही मोद भरूँ॥
जीवन स्वच्छन्द बिताऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

छोटी अपनी दुनिया होती
नन्हीं नन्हीं बातें।
छोटा सा घर होता अपना
नहीं जानती घातें॥
मनचाहा जीवन पाऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वर्ष २३] अगस्त १९३९—श्रावण १९९६ [संख्या ८

मेरी चाह

लेखिका, कुमारी निर्मला "कमलिनी"

यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ।
जित चाहूँ तित उड़ जाऊँ॥

रंग-बिरंगे फूलों से फिर
जोड़ूँ अपना नाता।
गा गाकर नित गीत सुनाऊँ
जो उनको है भाता॥
रोतों को पहुँच हँसाऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

इस डाली से उस डाली पर
फुदक फुदककर आती।
बच्चे आते, शोर मचाते
फुर फुर उड़ मैं जाती॥
पकड़ी कभी न जाऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

नये-नये नगरों को देखूँ
वन उपवन में सैर करूँ।
झरनों की मैं शोभा निरखूँ
मन में नित ही मोद भरूँ॥
जीवन स्वच्छन्द बिताऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

छोटी अपनी दुनिया होती
नन्ही नन्ही बातें।
छोटा सा घर होता अपना
नहीं जानती घातें॥
मनचाहा जीवन पाऊँ।
यदि मैं चिड़िया बन पाऊँ॥

वर्तमान राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद

लेखक, श्रीयुत प्रभुदयाल विद्यार्थी, वर्धा

मार्च सन् १९१० की बात है। एक नवयुवक, जिसकी उम्र २०-२२ साल की है, अपने बड़े भाई को चिट्ठी लिखता है—"मैं आपसे आमने-सामने बातें न कर सका। मैं अपने में एक ऊँची और पवित्र भावना अनुभव कर रहा हूँ। गोखले की सोसाइटी का सदस्य होना मेरे लिए कोई त्याग नहीं है। अच्छा हो या बुरा, परन्तु मुझे ऐसा अभ्यास है कि मैं अपने को किसी भी परिस्थिति के अनुकूल बना सकता हूँ। मेरा रहन सहन भी इतना सीधा-सादा और सरल है कि मुझको कोई विशेष सुख-सुभीता और आराम नहीं चाहिए। मुझे सोसाइटी से जो कुछ मिलेगा, काफी होगा। पर मुझे यह तो मानना ही चाहिए कि आपके लिए यह कुछ कम त्याग न होगा। आपने मुझसे बहुत बड़ी-बड़ी आशाएँ बाँध रक्खी हैं। वे सब एक क्षण में नष्ट हो जायँगी। हमें गरीबी के प्रति घृणा नहीं करनी चाहिए। संसार में जितने महापुरुष हुए हैं वे सब अत्यन्त गरीब रहे हैं। शुरू शुरू में उनको बहुत कष्ट भोगने पड़े हैं और उनको घृणा की दृष्टि से देखा गया है, किन्तु अन्त में अत्याचार और घृणा करनेवाले धूल में मिल गये, उनको जानने-पहचाननेवाला भी कोई न रहा। मेरी यदि कुछ महत्त्वाकांक्षा है तो वह यही कि मैं भारत-माता की कुछ भी तो सेवा करूँ।" देखिए, इस पत्र में हृदय के विचार कितनी अच्छाई और सच्चाई के साथ प्रकट किये गये हैं।

पत्र-लेखक राजेन्द्र बाबू जिस तरह आज सादी वेष-भूषा में रहते हैं उसी तरह स्कूल कालेज में पढ़ते समय भी रहते थे। आप में शौकीनी तो कभी आई ही नहीं। धोती, कुर्ता और टोपी, बस यही आपकी स्कूल की साधारण पोशाक थी। उस वक्त भी आप न अँगरेजी बाल रखते थे और न सिगरेट वगैरह ही पीते थे, यद्यपि उस वक्त अंगरेजी सभ्यता का आज से कहीं अधिक बोलबाला था। बचपन से ही आप शान्त और सुशील प्रकृति के थे, क्योंकि बचपन से ही सादगी और विचार की उच्चता एवं गम्भीरता आपके स्वाभाविक गुण थे। बचपन से ही दीन-दुखियों की सेवा की ओर आपका झुकाव था। आपकी यह कभी इच्छा नहीं हुई कि मैं बड़ा ओहदा पाऊँ और प्रचुर धन संग्रह करके धनी बनूँ। हमेशा आपका झुकाव सादे जीवन तथा उच्च विचार की ओर था। आप अक्सर अपनी माताजी से कहा करते थे "माँ, मुझसे यह उम्मीद न रक्खो कि मैं पढ़-लिखकर बहुत रुपया कमाऊँगा। मेरा मार्ग कुछ और ही होगा।"

माननीय गोखले की प्रेरणा से आप देश-सेवा करने के लिए प्रभावित हुए। ज्यों ज्यों आपने इस पर विचार किया त्यों त्यों आपका विचार और मजबूत होता गया। आखिर एक समय ऐसा आया जब आप अपना सर्वस्व त्यागकर मातृ-भूमि की सेवा में लग गये।

अक्सर लोग कहते हैं कि महात्मा गांधी की जादू की छड़ी ने राजेन्द्र बाबू को साधु बना दिया। लेकिन असल बात यह नहीं है। हाँ, महात्मा गांधी के सत्सङ्ग और सदुपदेश से आपका चरित्र और भी निर्मल हुआ है—आत्मा और भी पवित्र हो गई है और सेवा करने का भाव और भी बढ़ गया है तथा आप अपनी मनोगत भावनाओं को व्यावहारिक रूप दे सके हैं। इसमें कुछ सन्देह करने की बात नहीं है, लेकिन यह मानना पड़ेगा कि महात्मा गांधी से भेंट होने के पहले से ही आपके विचार बहुत पवित्र थे, जिन्हें आपने अपने बड़े भाई महेन्द्रजी को पत्र द्वारा युवावस्था में ही प्रकट कर दिया था। पत्र का कुछ अंश पीछे दिया जा चुका है।

सन् १९१७ में जिस वक्त महात्मा गांधी के साथ आप चम्पारन में सत्याग्रह कर रहे थे, उसी वक्त आपको पूरा अनुभव हुआ कि गरीबों की सच्ची सेवा किस प्रकार की जा सकती है। इसका प्रयोग कहाँ किस प्रकार करना चाहिए, ये सभी बातें आपको उसी

श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी
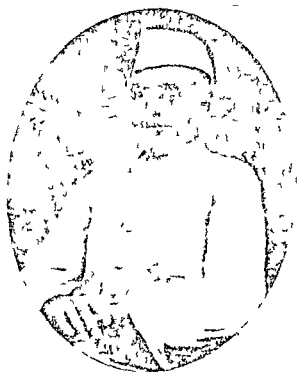
वक्त मालूम हुई। चुपचाप ग्रामों के बीच ग्राम सुधार-सम्बन्धी काम करने से ही स्वराज्य मिल सकता है, इसकी जानकारी भी आपको उसी समय हुई। आपके दिल से वहीं पर छूत छात की माया भी दूर हो गई। निस्सन्देह राजेन्द्र बाबू को चम्पारन में महात्माजी की सङ्गति से विशेष अनुभव प्राप्त हुआ। उसी का यह फल है कि आज दिन देश में व्यापक रूप से सत्य अहिंसा की जो लड़ाई हो रही है उसका सञ्चालन आप बड़ी कुशलता से समय समय पर करते आये हैं। गांधीजी के सत्य-अहिंसा के आप बहुत बड़े भक्त हैं। बाबू राजेन्द्रप्रसादजी और आपके परिवार के लोग सन् १९०० से स्वदेशी का व्रत लिये हुए हैं। उसी समय से आपके घर पर
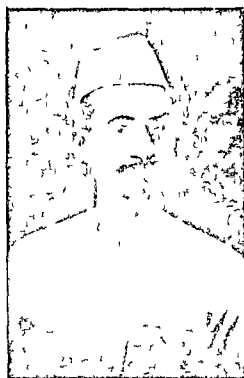
राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद

सब लोग स्वदेशी वस्त्र पहनते और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करते हैं।

देश-पूज्य बाबू राजेन्द्रप्रसादजी के प्रति लोगों की बडी भक्ति है। जो कोई आपको एक बार देखता है वह आपकी सादगी, सरलता, नम्रता, विद्वत्ता और साधुता पर मुग्ध हो जाता है। आपके ये ही गुण लोगों के हृदयों में आपके प्रति श्रद्धा और भक्ति पैदा कर देते हैं। व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव लोगों पर बहुत पडता है। कोई सार्वजनिक नेता तब तक आम जनता के हृदय पर शासन नहीं कर सकता जब तक उसका व्यक्तिगत जीवन पवित्र न हो। जिसका व्यक्तिगत जीवन जितना ही अधिक शुद्ध और पवित्र होगा वह लोगों पर उतना ही अधिक प्रभाव सकेगा। राजेन्द्र बाबू बडे शीलवान् और नम्र स्वभाव के व्यक्ति हैं। अभिमान आपमें कभी नहीं रहा। क्रोध करते शायद ही कभी किसी ने देखा हो। आपने किसी को दुःख पहुँचाना नहीं चाहा। अहिंसा आपके जीवन का मूल मन्त्र रहा है। आप सदा सब के एक से प्रेम-पात्र बने रहे। कड़े से कड़े दिलवाले आपके सामने आते ही नम्र बन जाते हैं। किसी के साथ आपकी किसी प्रकार की शत्रुता नहीं रहती। आपके सिद्धान्त के विपक्षी भी सदा आप पर श्रद्धाञ्जलि चढाते हैं।

बाबू राजेन्द्रप्रसादजी हमेशा एक नम्र सेवक की तरह काम करते रहे हैं। सदा शान्तिपूर्वक काम करने में ही आपको विशेष आनन्द आया है। इसी लिए आप इतने महान् पुरुष बन सके। आप अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी के और दो बार महासमिति के सभापति निर्विरोध चुने जा चुके हैं। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की ओर से आयोजित नागपुर-सम्मेलन के अवसर पर आप सभापति चुने गये थे। आपकी प्रतिभा और कार्य शक्ति सर्वतोमुखी फैली हुई है। थोडे में ही सब बातों को आप समझ लेते हैं। यह शक्ति आपमें अद्भुत है। आपकी स्मरण-शक्ति तो इतनी तीक्ष्ण है कि शीघ्र कोई बात भूलते ही नहीं। वर्षों की छोटी मोटी बातें आपको याद रहती हैं। आपकी भाषण और लेखन शैली दोनों ही उच्च कोटि की है। लेख लिखने की आदत आपको स्कूल से ही है। आप अक्सर स्कूल

की मासिक पत्रिकाओं के लिए लेख लिखते रहे हैं। आप अध्ययनशील भी बहुत अच्छे हैं। किसी विषय के रटने के आप बहुत विरोधी हैं।

राजनैतिक क्षेत्र के गांधीवादियों में आप ही गांधीजी के तत्त्व के आदर्श को समझनेवाले हैं और उसका पालन भी करते हैं। आप समय समय पर गांधीवाद का अच्छी तरह अध्ययन किया करते हैं।

राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू माननीय श्रीकृष्णसिंह तथा माननीय डाक्टर महमूद के साथ खड़े हैं।

गांधीवादियों में आपका जीवन आदर्श का जीवन है। आप केवल राजनैतिक नेता ही नहीं हैं, बल्कि आदर्श व्यक्ति भी हैं।

जब कभी जन सेवा का काम करने का कुछ भी मौक़ा आ जाता है तब आप उसमें तन मन और धन तीनों से लग जाते हैं। ये बातें आपके जीवन चरित्र को पढने और जीवन के संसर्ग में आने से ही मालूम होती हैं। आप जब से कुछ सोचने-विचारने लायक हुए हैं तभी से किसी न किसी प्रकार की जन सेवा, विद्यार्थी सेवा आदि करते आ रहे हैं। कांग्रेस का कार्य आप सन् १९०६ ई० से करते आ रहे हैं। अब तो आप उसके सर्वेसर्वा हैं। जहाँ कहीं आप जाते हैं, वहाँ आपका अभूतपूर्व स्वागत और सम्मान होता है। बिहार अत्यन्त दुःखी, गरीब और संकटापन्न प्रान्त है। प्राकृतिक कोपों का वह अक्सर शिकार होता रहता है। १९१३ में दामोदर और पुनपुन नदियों की बाढ़ों ने बिहार में भयानक त्रास फैला दिया था। १९२३ में गङ्गा की बाढ़ ने भीषण संकट पैदा कर दिया था। १९३१ में दुर्भिक्ष ने चम्पारन को उजाड़ दिया था और १९३४ में भूकम्प ने उत्तरी बिहार में प्रलय मचा दिया था। इन और ऐसे सभी अवसरों पर अपने गिरे हुए स्वास्थ्य की कुछ परवा न कर आपने अपना खून पसीना एक करके जनता की सेवा करने में कोई बात उठा नहीं रक्खी है। प्रलयकारी भूकम्प के समय १५ जनवरी सन् १९३४ को आप जेल में थे।

आपकी सेवा की भावना और सहायता के कार्य की छाप सरकार पर कई बार पड चुकी है। इसी से १७ जनवरी को आप तुरन्त रिहा कर दिये गये। बीमार होते हुए भी आप पीडितों की सेवा में लग गये। डाक्टरों के हजार मना करने पर आपने सेवा का कार्य अपना लिया और एक अखिल भारतीय रिलीफ कमेटी बनाई और उसके सभापति चुने गये आप। आपकी एक आवाज पर, दुखी बिहार की सेवा के लिए सारा देश उठ खड़ा हुआ और देशवासियों ने आपके हाथों में २९ लाख रुपया अन्न, वस्त्र से भारी सहायता करने का सामान सौंप दिया।

आपके प्रति जनता की अगाध श्रद्धा और दृढ विश्वास है। आप छोटे-बड़े सभी आदमियों से एक ही प्रकार से मिलते-जुलते है। मैंने कई बार ऐसा होते देखा है। बच्चों के बुलाने से भी आप उनकी सभा सोसाइटियों में जाना स्वीकार कर लेते है। वर्धा में कुछ विद्यार्थियों ने मिलकर गणेशोत्सव पर एक 'घनचक्कर-समाज' की स्थापना की थी। लड़कों ने कहा कि आप घनचक्कर-समाज में चलकर कुछ कहें। लड़कों को प्रसन्न करने तथा उनके उत्साह को बढ़ाने के लिए आपने वहाँ जाकर एक घण्टे तक उपदेश दिया।

आपका जन्म बिहार-प्रान्त में, जिला सारन के जीरादेई गाँव में ३ दिसम्बर १८८४ ई० को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक घर पर ही मौलवी रखकर उर्दू-फारसी की हुई। ९ साल की उम्र में आप स्कूल में पढने के लिए भेजे गये थे। सन् १९०२ में कलकत्ता युनीवर्सिटी में सर्व-प्रथम रहकर आपने एंट्रेंस की परीक्षा पासकी। आपकी उच्च शिक्षा कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में हुई। वहीं से आपने १९०६ में बी० ए० और १९०७ में एम० ए०, यूनीवर्सिटी में प्रथम रहकर, पास किया। इसलिए आपको बहुत सी छात्रवृत्तियाँ मिलती रहीं। १९१५ में आपने एम० एल० की परीक्षा दी और उसमें भी सर्व-प्रथम रहे। आपने जब युनीवर्सिटी छोड़ी तब कुछ समय तक विभिन्न कालेजों में प्रोफेसरी की और फिर वकालत का पेशा अपनाया। थोडे ही समय में आपका पेशा बहुत बढ़ गया और हजारों रुपये की आय होने लगी। लेकिन देश-हित के लिए १९२१ में अपनी चलती हुई वकालत पर लात मारकर देश सेवा का काम चौबीसो घण्टे को अपना लिया। इसी लिए कई बार जेल भी गये, मार भी खाई तथा नाना प्रकार का कष्ट उठाया।

महात्मा गांधी के पद चिह्नों पर चलते हुए अपने को सब प्रकार से देश-जाति-समाज तथा राष्ट्र की सेवा पर न्यौछावर कर देनेवालों में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। आपकी देश भक्ति का इतिहास निष्कलङ्क, आपकी देश सेवा उत्कृष्ट और सार्वभौमिक जीवन बहुत पवित्र है। आपमें स्वार्थ का लेश भी नहीं है। आपका जीवन सबके लिए पथ-प्रदर्शक है।

माता और मातृ-भूमि

लेखक, श्रीयुत 'मनोहर'

मेरे भैया
कुँवर कन्हैया
तू मेरी आँखों का तारा
तू मेरे घर का उजियारा।

गोद सुलाकर
हिला डुलाकर
पोसा मैंने तुझे प्यार से
हिलरा-दुलराकर दुलार से।

अन्न उगाकर
हमें खिलाकर
सरि कूपों का नीर पिलाती
पोस-प्यारकर हमें बढ़ाती

भारत-माता
जीवन-दाता
जग का मङ्गल करनेवाली
दुग्ध-धार के झरनेवाली।

हो न्यौछावर,
दूध पिलाकर
प्यार भरी छाती में निस-दिन
मङ्गल चाहा तेरा छिन-छिन।

मेरे प्यारे
राजदुलारे
योंही तो हिलरा-दुलराकर
बड़ा किया है पाल-पोसकर

मुझको, तुझको
और सभी को
बहिन और भाई को तेरे
अपनी मातृ-भूमि ने प्यारे।

तू इसका शिशु,
सब इसके शिशु,
अपनी-अपनी माँ के सब शिशु,
अपनी मातृ-भूमि के सब शिशु।

मौज मनाते
पीते खाते
इसके उपजाये मेवे फल
होता है सब ही का मङ्गल।

अपनी माँ का
ज्यों तू प्यारा
त्यों माँ के सब अपनी प्यारे
सभी किन्हीं आँखों के तारे।

मातृभूमि पर
पैदा होकर
आँखों के आगे है, जो कुछ
प्यारा हो तुझको सब सो कुछ

मूर्ख जाट

लेखिका, श्रीमती गोपालदेवी गणपतराय, प्रभाकर

विन्नी लल्ला को सोते समय कहानी सुनने का बड़ा शौक था। मा जब कहती 'बेटा, सो जाओ!' विन्नी कहानी सुनने के लिए जिद किया करता था। तब मा उसे सुन्दर और शिक्षा-प्रद कहानी सुनाया करती थी।

एक दिन मा ने विन्नी को एक 'मूर्ख जाट' की कहानी सुनाई। वह कहानी बड़ी मजेदार है।

रामनगरी में एक चन्दू नामक जाट रहता था। एक दिन चन्दू के मन में विचार आया कि घर में खाली हाथ पर हाथ रक्खे बैठे क्या करेंगे, क्यों न शहर में चलकर कुछ पैसा कमा लें। यह सोचकर वह शहर की ओर चल पड़ा। मार्ग में एक छोटी सी नदी आई। चन्दू जब उस नदी को पार कर रहा था, उसे एक लुढकता हुआ घड़ा दिखाई दिया। वह उस घड़े को पांव से ढकेलता हुआ नदी के पार ले गया। घड़े का मुँह बन्द था। चन्दू जब नदी पार कर चुका तो घड़े का मुँह खोलने के लिए जमीन पर बैठ गया। घड़े का मुह तोड़ा तो उसमें रङ्ग बिरङ्गे कङ्कड़ देखे। कङ्कड़ो के बाद रङ्ग-बिरङ्गे चमकते हुए गुल्ले दिखाई दिये। चन्दू गुल्लों को पाकर बड़ा खुश हुआ। शहर पहुँचने तक उसने उन गुल्लों से क… परिन्दों को मार दिया। जब दो तीन गुल्… उसके हाथ में रह गये, शहर की दूकानें भ… पास आ गईं। इतने में एक दूकानदा… की दृष्टि चन्दू के हाथ पर पड़ी।

चमकती हुई चीज देखकर दूकानदा… ने चन्दू जाट को रोक लिया और कहने ल… कि भैया, यह चीज बड़ी सुन्दर है, अग… यह मुझे दे दो, तो मै इसके बीस रुपये दूँगा… यह सुनकर चन्दू बड़े गम्भीर विचार… पड़ गया। चन्दू की चुप्पी का मतलब दूका… नदार ने यह समझा, कि शायद इसके लि… बीस रुपये कम हैं। उसने झटपट, पचा… रुपये देने के लिए कहा। यह सुनकर च… और भी अधिक उदास हो गया। दुका… दार उसकी उदासी देखकर सौ रुपये दे… को तैयार हो गया। सौ रुपये का ना… सुनते ही उसने अपने हाथ सिर पर र… और बोला, "भैया, मार दिया!!" दूका… दार हैरान हो गया, वह सौदे को छोड़… नहीं चाहता था। इसलिए एकदम दो … रुपये देने को तैयार हो गया। इतनी बड़ी रक… सुनकर चन्दू जाट बेहोश होकर गिर पड़… आध घण्टे तक वह सन्न होकर पड़ा रहा… बाज़ार के लोग दौड़े आये। पानी के छ…

देकर चन्दू को सचेत किया। लोग दूकानदार के पीछे पड़ गये कि तुम उसे क्यों तङ्ग कर रहे हो। तब दुकानदार ने सारा किस्सा सुनाया। इतने में चन्दू भी बोल उठा—"मैं दुकानदार की बात से दुःखी नहीं हुआ। मैं अपनी मूर्खता पर रो रहा हूँ। मेरे पास ऐसे पचीसों गुल्ले थे। मैं तो उन्हें काँच के टुकड़े समझकर फेंकता रहा। अगर मुझे इस जवाहिरात की पहचान होती तो मैं आज करोड़पति बन जाता। पर मेरी किस्मत फूटी हुई थी!"

लोगों ने उसे समझाया। चन्दू ने वे दो गुल्ले दो सौ रुपये में दुकानदार के हाथ बेच दिये और घर वापिस चला गया।

दूकानदार ने वही गुल्ले एक जौहरी के पास एक लाख में बेच दिये। जो मनुष्य संसार में सोच-विचार कर काम करेगा, वही जीवन में सफल हो सकेगा।

तोता

लेखिका, कुमारी शारदा मिश्र (उम्र ११ वर्ष)
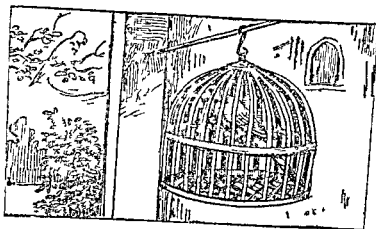
तोता हरा हमारा है,
कैसा प्यारा प्यारा है!

हरे पङ्ख सुन्दर कैसे,
पत्ते पेड़ों के जैसे!
लाल चोंच टेसू का फूल,
उस पर पड़ती कभी न धूल।
टें टें करता रहता है,
जी बहलाया करता है।

उसे झुनझुनी पहनाऊँ,
रुनझुन रुनझुन बजवाऊँ।
पिंजड़ा है यह सोने का,
नाम न लेना रोने का!
रात हुई, सो जाओ तोते,
देखो सभी पड़े हैं सोते।

घडियाल अपने अडों को सूखी घास से ढक देता है।

घड़ियाल

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी

आप लोगों ने घड़ियाल की कहानियां अवश्य सुनी होंगी। यह नदियों, झीलों और बडे-बडे तालाबों में पाया जाता है। पानी में लोग इससे उसी प्रकार डरते है जिस प्रकार वनों में चीते और शेर से। परन्तु घड़ियाल चीते और शेर से भी अधिक भयङ्कर होता है। एक बार एक मछुआ मछली फँसाने के लिए पास के जङ्गल में गया जिसमें एक नदी बहती थी। वह नदी के किनारे ... की लटकती हुई डाल पर बैठ गया और मछली फंसाने की कोशिश करने ल... अभी उसे डाल पर बैठे दस मिनट भी ... हुए थे कि पीछे से उस पर एक चीता झ... परन्तु वह इतनी तेजी से झपटा था कि ... के ऊपर होता हुआ नदी में गिर पड़ा। ... के पास ही नदी में एक घडियाल मछ... पकड़ने के लिए बैठा था। वह चीते को ... में रखकर नदी के पेट में बैठ गया।

घडियाल मास खाता है। इ... वह बहुत खतरनाक होता है। घडिय...

घडियाल का भयानक मुँह और मजबूत जबड़े।

बच्चे अधिकतर मछलियाँ ही खाते हैं। परंतु वे ही बड़े होने पर मछलियों से सन्तुष्ट न होकर पानी में रहनेवाले अन्य जन्तुओं तथा पानी पीने और नहाने के लिए आनेवाले मनुष्यों और जानवरों को पकड़कर खाने लगते हैं। कहीं कहीं ऐसे भी घड़ियाल पाये जाते हैं जो आदमियों पर चोट नहीं करते। परन्तु इस प्रकार के घड़ियालों की संख्या बहुत कम है।

घड़ियाल रात में पानी में रहता है और शेर तथा चीते की तरह अधिकतर रात ही में शिकार ढूँढ़ता है। सुबह होने पर वह पानी से निकलकर लकड़ी के लट्ठों पर या बालू में लेटता है और धूप खाता है। उस समय वह सोता हुआ मालूम पड़ता है परन्तु थोड़ी सी भी आहट पाते ही पानी में कूद पड़ता है। वह गुस्सा करने पर रात में कभी-कभी तेजी से आवाज भी करता है।

घड़ियाल अण्डे देता है। उसके अण्डे अन्य अण्डों की अपेक्षा कुछ कड़े होते हैं। अण्डे देने के लिए वह सूखी जगह ही चुनता है। अक्सर वह बालू में ही अण्डे देता है परन्तु कभी-कभी वह सेवार तथा घास इकट्ठी करके उस पर अण्डा देता है। जब तक अण्डे फूट नहीं जाते तब तक घड़ियाल ध्यानपूर्वक उनकी रक्षा करता है।

घड़ियाल की टाँगें छोटी होती हैं। इसी से वह जमीन पर तेज़ी से नहीं चल सकता। लेकिन उसके जबड़े बहुत मजबूत होते हैं और जिस चीज को वह जबड़ा से दबाता है वह क्षण भर में चूर चूर हो जाती है। इन जबड़ों के नीचे पड़ी हुई चीज किसी प्रकार

बचाई नहीं जा सकती। परन्तु पकड़े जाने पर मनुष्य यदि घड़ियाल की आँखों में उँगली कर दे तो घड़ियाल घबड़ाकर अपना मुँह खोल देगा।

घड़ियाल प्रायः सभी देशों में पाये जाते हैं परन्तु भारतवर्ष के घड़ियाल सब से बड़े होते है। अभी तक जो सब से बड़ा घड़ियाल पकड़ा गया वह ३३ फीट लम्बा था। वह इसी देश में पकड़ा गया था। अफ्रीका की बहुत सी नदियों में भी घड़ियाल पाये जाते हैं। नील नदी तो घड़ियालों के लिए मशहूर है। अब तक अफ्रीका में घड़ियालों द्वारा मनुष्यों की जितनी मृत्युएँ हुई है उतनी किसी और जानवर से नहीं। पूर्व काल में मिस्र-निवासी घड़ियालों को पवित्र मानते थे। इसी से वे हजारों की तादाद में घड़ियाल के बच्चों को पालते थे। अब लोगों ने अपने विचार बदल दिये है। वहाँ पर बहुत दिनों तक लोग घड़ियाल के चमड़े का कवच बनाकर उसे काम में लाते थे, जिस पर तीर का कुछ भी असर नहीं होता था। अब बन्दूकों और तमञ्चों के बन जाने से ये कवच बेकार हो चले हैं।

उत्तरी भारत में ३० फीट लम्बे घड़ियाल पाये जाते है जिनमें से अधिकाश गङ्गा, सिन्ध और ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों तथा सुन्दरबन के दलदल में पाये जाते है। घड़ियालों का शिकार करने पर उनके पेट से कभी कभी गहने भी निकलते हैं। गर्मी में पानी सूख जाने से घड़ियालों को बहुत कष्ट होता है और वे अधिक ठण्ढी जगह की तलाश में निकल पडते है। एक बार अकाल पड़ा जिसमें कई बड़े-बड़े तालाब सूख गये। उनमें रहनेवाले घड़ियाल निकलकर रात में पासवाले गाँव की ओर चल पड़े। उनमें से बहुत से कुँओं में गिर पड़े और कुछ पकड़ लिये गये।

घड़ियाल और मगर दो भिन्न भिन्न जानवर है। घड़ियाल की तरह मगर तेज और चालाक नहीं होता। घड़ियाल और मगर पहचानने का सबसे आसान तरीका यह है कि घड़ियाल का मुँह पतला और लम्बा होता है परन्तु मगर का मुँह चौड़ा और छोटा होता है। मगर घड़ियाल से अधिक वजनदार और मोटा होता है। अमेरिका और चीन की बहुतसी नदियों में मगर पाये जाते है।

घड़ियाल और मगर का चमड़ा बहुत कीमती होता है; क्योंकि उससे बनी हुई चीजें अधिक दाम में बिकती हैं। धनी लोग घड़ियाल और मगर के चमड़े से बने हुए सूटकेस, जूते और थैले खरीदते है। यह चमड़ा किताबों की जिल्द बाँधने में भी काम आता है।

क्यों ?

लेखक—श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी

(१)

क्यों बच्चों को नहीं सुहाता,
पढ़ना, लिखना, शाला जाना ?
खेल कूद में मन लगता है,
दिन भर घर में धूप मचाना ?
क्यों भाती मन को रँगरेली ?
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(२)

क्यों पतंग उड़ती है ऊपर,
क्यों न कभी नीचे को छाती ?
और गेंद फेंको जो ऊपर,
तो वह फौरन नीचे आती,
चोट लगाते ठेला ठेली,
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(३)

क्यों मेंढक पानी में रहते ?
टर्रो टर्रो गाना गाते,
क्यों न घोसलों में चढ़ करके
वे चिड़ियों को मार भगाते ?
जल में ही करते अठखेली ?
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(४)

क्यों कोल्हू जब बैल चलाता,
उसकी आँख बन्द की जाती ?
ताल से न तेल कढ़ता है,
कितनी ही वह पेरी जाती,
कब मन में खुश होता तेली ?
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(५)

क्यों स्याही होती है काली,
क्यों काला कागज न दिखाता ?
रंग बिरंगी तस्वीरें लख,
हरा भरा मन है बन जाता।
क्यों भाते हैं सखा सहेली ?
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(६)

नहीं मदरसे अच्छे लगते,
भाता है छुट्टी का घण्टा।
मजा न चुप रहने में मिलता,
मजा तभी जब मचता टण्टा।
अच्छी लगती ठेलमठेली।
सुलझावे, यह कौन पहेली ?

(७)

बाबाजी क्यों दाढ़ी रखते,
बच्चों के मूँछें न दिखातीं ?
क्यों चाची कंघी करती हैं,
अम्मा अंजन रोज लगातीं ?
गुरु को भाते चेला-चेली,
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(८)

क्यों चींटी बिल में रहती है ?
क्यों इनको है शक्कर भाती,
पानी में शक्कर डालो तो,
पल भर में वह घुल मिल जाती,
चींटे को भाती गुड़ भेली,
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(९)

क्यों नटखट बच्चों को भाता,
सदा पहेली को सुलझाना,
क्यों नानी को अच्छा लगता,
बच्चों के मन को उलझाना,
क्यों भाती है कथा नवेली ?
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(१०)

सम्पादक जी को क्यों भाता,
बच्चों के मन को बहलाना ?
क्यों बच्चों को अच्छा लगता,
सम्पादक का मन फुसलाना,
छिड़ती छेड़-छाड़ अलबेली
सुलझावे यह कौन पहेली ?

(११)

क्यों मुझको अच्छा लगता है
नई नई नित कविता गढ़ना ?
क्यों तुमको अच्छा लगता है,
नई नई नित कविता पढ़ना ?
क्यों भाता है फूल चमेली ?
सुलझावे यह कौन पहेली ?

रारती लड़के की एक दिलचस्प कहानी

लल्लू और शम्भू

लेखक, श्रायुत दीनबन्धु पाठक

लल्लू ने लालाजी से कहा—"पिताजी, इम्तहान तो खतम हो गया।"

एकाएक पिताजी ने लल्लू से पूछ ही तो लिया "तो तुम्हारे कितने सवाल ठीक हुए?"

लल्लू—"पिताजी, सवाल कैसे? मैंने तो सभी विषय के सवाल किये हैं।"

लालाजी—"अरे भाई! हिसाब में कितने नम्बर ठीक है?"

लल्लू—"पिताजी, मैंने किये तो सभी प्रश्न है, पर उत्तर एक का भी नहीं मिलता।"

लालाजी—"तो फिर इस साल भी चौपट कर आये हो! जब एक सवाल भी नहीं कर पाये तो पास होने की आशा को कौन कहे, कहीं स्कूल से भी न निकाल दिये जाओ!"

लल्लू—"मैं अब स्कूल नहीं जा सकता, क्योंकि मैं लगातार दो वर्ष से इसी सातवें दर्जे में फेल हो रहा हूँ।"

लालाजी—"तुमको पढने जाना होगा और भला यह तो बताओ कि वह बुढिया जो मेरे मकान के पास रहती है उसका लड़का शम्भू किस दर्जे में पढ रहा है। वह अभी तो बच्चा है।"

लल्लू—"इस साल मेरे फेल हो ज वह हमारे साथ ही बैठेगा।"

लालाजी—"अरे वह तो बिल्कुल नौ ही साल का है और तुम्हारे साथ!"

लल्लू—"पिताजी, वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हम उसे एक ही चपत में ठीक कर सकते हैं। मे उसको अभी जाकर चार जूते लगाता हूँ।"

लालाजी—"लल्लू, ऐसी बात मत बको। वह अभी बच्चा है। और तुम इतने बड़े होकर ऐसा सोचते हो? तुमको भी आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए।"

"मैं अब अम्माजी के पास जा रहा हूँ। इतना कहकर लल्लू एक तेज झपट्टे के सा घर के अन्दर घुस गया।

लालाजी "लल्लू, लल्लू" पुकारते रहे कि इतने में एक इक्कावान अपना इक्का लि लालाजी से फरियाद करने आ पहुँचा। इ वाले ने लालाजी से हाथ जोड़कर कहा "लालाजी, हमारे ऊपर दया कीजिए" लालाजी बड़े आश्चर्य में पड़ गये और बोले "क्यों कल्लू, क्या है? तुम इतना गिडगिडा-

तो

की तरफ कुछ शोर-सा हो रहा था। यही चाहे जैसी बात हो। और तो मैंने कुछ नहीं सुना।" कल्लू लालाजी के पैर पकड़कर बड़े जोरों से रो पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, "सरकार! हुजूर! हम आपके नौकर हैं, और आपकी सेवा ही में हम लोगों का जीवन बीता है। लेकिन अब ।" इतना कहते कहते कल्लू के आँसू छलछला पड़े और आवाज बन्द हो गई। लालाजी बड़े चक्कर में पड़े और कल्लू को सान्त्वना देते हुए बोले—"कल्लू, क्या बात है? जरा साफ साफ समझाओ तो!"

कल्लू को रोने के सिवा दूसरी बात न सूझती थी। फिर भी वह किसी तरह हृदय को शान्त करके बोला—"सरकार! आज अभी १ घण्टा बीता होगा। लल्लू हमारे घर की ओर घूमने गये थे। पता नहीं, उन्होंने, क्यों नाराज होकर मेरे नन्हे लड़के धुधुआ को एक ढेला मारा। उसके सिर से अभी तक थोड़ा-थोड़ा खून बह रहा है।"

लालाजी लल्लू के ऊपर गुस्सा करते हुए बोले—"अभी हम उसके सिर पर बीसों जूते लगाते हैं। और भी तो कोई नई बात नहीं की?"

कल्लू—"सरकार! हमारे घोड़े की बाग डोर उठा लाये हैं। मैं गरीब आदमी घोड़े को इक्के में जोतकर अपने अँगोछे से बाँधकर आपको दिखाने लाया हूँ। इसी की बदौलत पेट परदा चलता है। आप खुद ही जानते हैं। मैं आपसे अधिक क्या कहूँ।"

लालाजी शर्मिन्दा और कुछ क्रोधित होकर बोले—"तभी वह मदरसा जाने से इनकार कर रहा है। कल्लू, अभी ठहर, मैं जाकर ललुआ को पकड़ लाता हूँ।"

कल्लू—"सरकार! कुछ बुरा-भला न कहिएगा। नहीं तो लल्लू की मा नाराज हो जायँगी। मुझे मेरी बागडोर मिल जाय। मैं अपने घर चला जाऊँ। अभी घोड़े को कुछ खिला-पिलाकर हाँकना है।"

लालाजी 'कुछ न कहेंगा' कहते अन्दर घुस गये।

(२)

जब लालाजी अन्दर घुसे जा रहे थे उसी समय उन्होंने सुना कि लल्लू अपनी मा से कह रहा है "मा, मुझे कलुवा ने बड़ी गालियाँ दीं। और अगर मैं वहाँ से न भागता तो वह मुझे बहुत मारता।"

मा—"तो तुमने उसको क्यों नहीं मारा?"

इतने में लालाजी अन्दर घुस गये। लालाजी उस मुहल्ले के रईस और न्यायप्रिय व्यक्ति थे। न्याय ही करने के कारण वे मुहल्ले के तमाम छोटे-बड़े आदमियों के प्यारे थे।

लालाजी ने गुस्से में आकर कहा—"लल्लू! तुमने तो मेरा सर्वनाश कर दिया। न ही अच्छा था। तू अभी- को एक घण्टे पद

कि अच्छी तरह। उसका नतीजा यह निकला कि लल्लू ने आज मेरे सिर पर एक कङ्कड़ फेंककर मेरा सिर तोड़ दिया।"

लालाजी—"अरे! क्या ललुआ ने तुम्हारे साथ भी ऐसा ही बरताव किया!"

शम्भू—"क्या कहूँ चाचाजी?"

लालाजी मौन हो गये और शम्भू अपने घर चला गया।

(४)

शम्भू उस मुहल्ले से अपनी मा को लेकर दूसरे मुहल्ले में रहने लगा। उसने कई वर्ष तक कठिन पढ़ाई की। मा बेचारी इधर-उधर टूटे-फूटे काम करके कुछ पैसे ले आती और शम्भू को देती। शम्भू भी पढ़ाई में अव्वल होने के कारण वजीफा पाने लगा। धीरे-धीरे वह हाई स्कूल और इण्टर पास कर यूनिवर्सिटी में भर्ती हुआ। वह और धनी लड़कों की तरह न तो नौकर रखता और न होस्टल में रहता। वह रोज घर चला आता और मा खाना बनाकर खिलाती। रात में भी वह खूब पढ़ता। इधर-उधर के पुस्तकालय से तमाम अन्य विषयों की किताबें लाकर पढ़ा करता। दो साल की कठिन पढ़ाई का यह परिणाम हुआ कि शम्भूनाथ ने फर्स्ट डिवीजन में एम० ए० पास कर लिया।

एम० ए० पास कर चुकने पर शम्भूनाथ ने आई० सी० एस० की भी परीक्षा पास की और उसे डिप्टी मैजिस्ट्रेट का ओहदा मिला। नौकरी करने के बाद जब शम्भू इजलास पर बैठा तो उसी दिन लल्लू का एक मुकदमा उसी की अदालत में आया, जिसमें उस पर चोरी का इलजाम था। शम्भू ने जान-बूझकर लल्लू को छोड़ दिया और अपनी अदालत में लल्लू को पेशकार का काम दिला दिया। कुछ दिन बाद शम्भू ने लल्लू से कहा—"तुम्हारी मा ने तुम्हारा आचरण खराब कर दिया है। अब तुम यहीं रहा करो। लालाजी और मा को भी बुला लो।"

लड़कों का मा-बाप की गालियों और झिड़कियों से नाराज नहीं होना चाहिए। उनको अपना और अपने साथियों का हमेशा ख्याल करना चाहिए।

तितली

लेखिका, कुमारी निर्मला 'कमलिनी', चन्दौसी

रङ्ग-बिरङ्गे पङ्खोंवाली।
आई यह तितली मतवाली॥
फर फर फर उड़ती आई।
मन को कैसी भाई॥
मन ललचाने आई।
सबका दिल बहलाने आई॥
लड़के देखो शोर मचाते।
दौड़ रहे हैं हाते हाते॥
तितली क्या लगती है प्यारी?
इसकी शोभा कैसी न्यारी?

फ्रंटियर के पठानों की बातें

लेखक, जमादार ठाकुर शिवकरन सिंह

[१]

मैं उन दिनों आठ राजपूत में था, और यह पलटन लड़ाई के समय हरिसिंह के बुर्ज के कैम्प में थी। जहाँ हम लोग रहते थे वहाँ एक पठान अक्सर आया करता था। वह हम लोगों को मकई और भुट्टे वगैरह दिया करता था और इसके बदले में हम लोग उसको नमक देते थे। इसलिए वह हम लोगों का बहुत बड़ा मित्र हो गया था। उसने एक बार हमसे और हमारे एक दोस्त से यह इच्छा प्रकट की कि हम दोनों उसके गाँव चलें। मैंने तो उस गाँव में जाने से साफ इनकार कर दिया पर हमारा साथी, जिसका सम्बन्ध हमारी ही तरह था, उसके कहने पर उसके गाँव की ओर चल पड़ा। जब उस गाँववालों को यह मालूम हुआ कि इस गाँव में फौज का एक आदमी आया हुआ है तो गाँववालों ने यह निश्चय किया कि इसको मार डालना ही अच्छा होगा। लेकिन जो आदमी उसे ले गया था उसके तीन भाई जीवित थे। उन्होंने कहा कि पहले हम चार भाइयों को जो मार डालेगा वही इस सिपाही को मार सकता है। इस पर गाँववालों ने यह सोचा कि जब यह सिपाही कैम्प को लौटने लगे तो रास्ते में मार डाला जाय। लेकिन

सीमा प्रांत का एक सरदार

उस पठान ने, उस सिपाही को करीब १ या १½ बजे रात को अपने घर से जनाने कपड़े पहनाकर निकाला। इस तरह वह, रातो-रात, कैम्प में पहुँचाया गया।

उस सिपाही के पहुँचने के पहले ही उसके गुम होने की रिपोर्ट कमाण्डर को दी जा चुकी थी। जब वह रात के करीब ७ बजे कैम्प के अन्दर पहुँचा तब कमाण्डर ने पूछने

पर उसने सारा किस्सा बताया। इससे हमने समझा कि पठान अपनी बात के कितने धनी होते हैं।

[२]

यहाँ की १४ लड़ाइयों में जिस वक्त हमारा रेजिमेण्ट समरकन्द में था, दुभाषियों से खबर मिली कि करीब ३०० पठान समरकन्द की पहाड़ी पर जमा हैं। जनरल अफसर कमाडिङ्ग का हुक्म हुआ कि आठ राजपूत, दो तोपें और दो ट्रुप रिसाला जाकर इन पठानों को उस पहाड़ी से निकाल दे। आठ राजपूत वाले हमला करने को उन पठानों की तरफ गये, बेराबर फायर करते रहे, लेकिन दुश्मनों की तरफ से सिर्फ एक ही दो फायर हुए। ऐसी दशा में यह पलटन दुश्मनों से ५० गज की दूरी पर जाकर रुकी और बराबर की लड़ाई शुरू हुई। इत्तफाक से इसी बीच में एक अफसर के पैर की पट्टी खुल गई और उसने चाहा कि हम पीछे हटकर उस पट्टी को बाँध लें। लेकिन ज्योंही वे पीछे लौटे, सिपाहियों को यह सन्देह हुआ कि शायद साहब रिटायर कर रहा है। इस-लिए तमाम सिपाहियों ने रिटायरमेंट करना शुरू कर दिया। ऐसी हालत में जो ३०० पठानों की खबर मिली थी उसमें से १४ या १५ ही आदमी निकले और आठ राजपूतों का नुकसान हुआ और बहुत से सरकारी मारे गये।

[३]

हमारे आठ राजपूतों की एक पलटन दत्ताखेल के कैम्प में पड़ी हुई थी। उन दिनों रात को पठान लोग अक्सर आया करते थे और इस आशय से कैम्प पर फायर किया करते थे कि रात को सिपाही सोने न पायें और तग हों। ऐसी हालत में अक्सर सिपा-हियों को सोने का मौक़ा नहीं मिलता था। इस तरह से तमाम सिपाही और अफसर बहुत परेशान थे। इत्तफाक से एक रोज दो पठानों ने, जो सगे बाप-बेटे थे, शहीद होने के इरादे से हमारे कैम्प पर, जहाँ सत रियों का पहरा था, फाटक की ओर से हमला किया। 'अली' 'अली' की पुकार करते हुए वे दोनों बराबर तलवार चलाते रहे, लेकिन सिपाहियों ने उन दोनों को अपनी सगीनों से नाथ लिया। फिर भी वे जब तक जमीन पर नहीं गिरा दिये गये तब तक 'अली' 'अली' की आवाज़ लगाते रहे। यह सोचकर कि ये पठान बहुत तङ्ग करते हैं और रात में सोने नहीं देते, उस समय यही उचित समझा गया कि इनको जला दिया जाय ताकि इनके जलाये जाने की खबर पाकर जब और पठान इकट्ठे हों तो उन पर फायर कर दिया जाय। इस तरह उनका अधिक नुक-सान होगा। लिहाजा यह खबर चारों तरफ फैला दी गई कि जो दो पठान पकड़े गये हैं जो यहाँ शहीद होने के लिए

आये थे, वे जलाये जायेंगे। पठान अपने मुर्दों का जलाया जाना सह नहीं सकते। इसलिए बहुत से पठान इकट्ठे होकर उन्हें छुड़ाने आये। समय अच्छा देखकर हमारे अफसर ने गोली चलाने की आज्ञा दे दी। दोनों तरफ से लड़ाई हुई। इसमें बहुत से पठान मारे गये। यही मकसद था। अन्त में दोनों पठानों को जलाया नहीं गया। उनकी लाशें पठानों को दे दी गईं। वे लोग उन लाशों को ले गये और उन्हें दफना दिया।

बरसात

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

क्या भली बरसात आई!

सघन कज्जल से घनों का दल उमड़ आया गगन में।
वायु के शीतल झकोरे, भर रहे आनन्द मन में।
विमल बूँदें उतर नभ से, थिरकती इक साथ आई।
क्या भली बरसात आई!

आज पहने हरित साड़ी, हँस रही है प्रकृति प्यारी।
गोद में लेकर गुलों को, किलकती हर एक क्यारी।
ताल सरिता निर्झरों में, उमड़कर है बाढ़ आई।
क्या भली बरसात आई!

धुल-निखरकर लहलहे तरु हैं खड़े सीना फुलाते।
सरस कोमल पल्लवों से, सैकड़ों मोती गिराते।
डालियों के पक्षियों ने यह खबर मीठी सुनाई।
क्या भली बरसात आई!

आज सब प्राणी सुखी हैं, विश्व का आँगन हरा है।
बीज बोता कृषक-दल, जिसका हृदय आशा भरा है।
झींगुरों औ मेंडकों ने, रात दिन यह रट लगाई।
क्या भली बरसात आई!

पर उसने सारा किस्सा बताया। इससे हमने समझा कि पठान अपनी बात के कितने धनी होते है।

[२]

यहाँ की १४ लड़ाइयों में जिस वक्त हमारा रेजिमेण्ट समरकन्द में था, दुभाषियों से खबर मिली कि करीब ३०० पठान समरकन्द की पहाड़ी पर जमा है। जनरल अफसर कमांडिङ्ग का हुक्म हुआ कि आठ राजपूत, दो तोपें और दो ट्रुप रिसाला जाकर इन पठानों को उस पहाड़ी से निकाल दे। आठ राजपूत वाले हमला करने को उन पठानों की तरफ गये, बेराबर फायर करते रहे, लेकिन दुश्मनों की तरफ से सिर्फ एक ही दो फायर हुए। ऐसी दशा में यह पलटन दुश्मनों से ५० गज की दूरी पर जाकर रुकी और बराबर की लड़ाई शुरू हुई। इत्तफाक से इसी बीच में एक अफसर के पैर की पट्टी खुल गई और उसने चाहा कि हम पीछे हटकर इस पट्टी को बाँध लें। लेकिन ज्योंही वे पीछे लौटे, सिपाहियों को यह सन्देह हुआ कि शायद साहब रिटायर कर रहा है। इसलिए तमाम सिपाहियों ने रिटायरमेंट करना शुरू कर दिया। ऐसी हालत में जो ३०० पठानों की खबर मिली थी उसमें से १४ या १५ ही आदमी निकले और आठ राजपूतों का भी नुकसान हुआ और बहुत से सरकारी भी मारे गये।

[३]

हमारे आठ राजपूतों की एक पलटन दत्ताखेल के कैम्प में पड़ी हुई थी। उन दिनों रात को पठान लोग अक्सर आया करते थे और इस आशय से कैम्प पर फायर किया करते थे कि रात को सिपाही सोने न पायें और तग हों। ऐसी हालत में अक्सर सिपाहियों को सोने का मौक़ा नहीं मिलता था। इस तरह से तमाम सिपाही और अफ़सर बहुत परेशान थे। इत्तफाक से एक रोज दो पठानों ने, जो सगे बाप-बेटे थे, शहीद होने के इरादे से हमारे कैम्प पर, जहाँ संतरियों का पहरा था, फाटक की ओर से हमला किया। 'अली' 'अली' की पुकार करते हुए वे दोनों बराबर तलवार चलाते रहे, लेकिन सिपाहियों ने उन दोनों को अपनी संगीनों से नाथ लिया। फिर भी वे जब तक जमीन पर नहीं गिरा दिये गये तब तक 'अली' 'अली' की आवाज़ लगाते रहे। यह सोचकर कि ये पठान बहुत तङ्ग करते है और रात में सोने नहीं देते, उस समय यही उचित समझा गया कि इनको जला दिया जाय ताकि इनके जलाये जाने की खबर पाकर जब और पठान इकट्ठे हों तो उन पर फायर कर दिया जाय। इस तरह उनका अधिक नुकसान होगा। लिहाजा यह खबर चारों तरफ फैला दी गई कि जो दो पठान पकड़े गये हैं जो यहाँ शहीद होने के लिए

आये थे, वे जलाये जायेंगे। पठान अपने मुर्दों का जलाया जाना सह नहीं सकते। इसलिए बहुत से पठान इकट्ठे होकर उन्हें छुड़ाने आये। समय अच्छा देखकर हमारे अफसर ने गोली चलाने की आज्ञा दे दी। दोनों तरफ से लड़ाई हुई। इसमें बहुत से पठान मारे गये। यही मकसद था। अन्त में दोनों पठानों को जलाया नहीं गया। उनकी लाशें पठानों को दे दी गई। वे लोग उन लाशों को ले गये और उन्हें दफना दिया।

—— ——

बरसात

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

क्या भली बरसात आई!

सघन कज्जल से घनों का दल उमड़ आया गगन में।
वायु के शीतल झकोरे, भर रहे आनन्द मन में।
विमल बूँदें उतर नभ से, थिरकती इक साथ आई।
क्या भली बरसात आई!

आज पहने हरित साड़ी, हँस रही है प्रकृति प्यारी।
गोद में लेकर गुलों को, किलकती हर एक क्यारी।
ताल सरिता निर्झरों में, उमड़कर है बाढ़ आई।
क्या भली बरसात आई!

धुल-निखरकर लहलहे तरु हैं खड़े सीना फुलाते।
सरस कोमल पल्लवों से, सैकड़ों मोती गिराते।
डालियों के पक्षियों ने यह खबर मीठी सुनाई।
क्या भली बरसात आई!

आज सब प्राणी सुखी हैं, विश्व का आँगन हरा है।
बीज बोता कृषक-दल, जिसका हृदय आशा भरा है।
झींगुरों औ मेंडकों ने, रात दिन यह रट लगाई।
क्या भली बरसात आई!

—— ——

झूठ की सज़ा

लेखक, श्रीयुत जगदीशकुमार माथुर, बी० एस् सी०, एल् एल० बी०, सलूम्बर (मेवाड़)

सन् १९३० का जिक्र है। उस साल प्रयाग में कुम्भ का बड़ा भारी मेला होनेवाला था। अपने राम को भी मेला देखने की धुन समाई। कई मित्र साथ हो लिये। हमारी दस-बारह आदमियों की मण्डली में डाक्टर साहब, मास्टर साहब, इसपेक्टर साहब, जमादार साहब, इत्यादि कई सज्जन थे जिनमें 'साहब' से कम कोई न था।

इस लेख का विशेष सम्बन्ध जमादार साहब से है। इसलिए उनका थोड़ा सा परिचय दे देना भी आवश्यक जान पड़ता है। नाम सुनकर आपको शायद यह खयाल हुआ हो कि वे किसी फ़ौज के जमादार होंगे। मगर यह बात नहीं है। मार काट से तो वे कोसों दूर रहनेवाले व्यक्ति हैं। ऐसी बात भी नहीं है कि वे चपरासियों, खलासियों या भंगियों के जमादार हों। 'जमादार' केवल उनका नाम ही पड़ गया था। यह तो हमको भी मालूम नहीं कि यह नाम कैसे पड़ा, पर इतना जरूर कह सकते हैं कि अपने जिले भर में वे इसी नाम से प्रसिद्ध हैं। उनका दूसरा नाम "किल्लत साहब" भी है। इस नाम का ब्यौरा हम बता सकते हैं।

साल श्रावण के महीने में बड़े जोर हुई। जङ्गल बड़ा सुहावना हो रहा था। हमारी मित्र-मण्डली की राय हुई कि जंगल की सैर करने चलें और वहीं भोजन भी बने। जगह का चुनाव होने लगा। तालाब के किनारे एक जगह बहुमत से चुनी गई। मगर जमादार साहब ने उसे पसन्द नहीं किया। चट बोल उठे—"जगह तो अच्छी है, पर यहाँ पानी की बड़ी 'किल्लत' है।" सब दङ्ग रह गये। हे भगवन्, यह पानी की किल्लत* कैसी! तालाब का किनारा, बरसात का मौसम और पानी की क़िल्लत! मैंने कहा —"यह क्या कह रहे हो जमादार साहब?" पर वे अपनी बात पर डटे रहे और यही कहते रहे कि वहाँ पानी की 'किल्लत' है। कई सवाल-जवाब होने के बाद आपका मतलब लोगों की समझ में आया। आपकी आपत्ति यह थी कि वहाँ कोई ऐसी छायादार जगह नहीं है जिसके नीचे पानी बरसने की हालत में भोजन बन सके। अर्थात् पानी बरसने की 'मुसीबत' को आप पानी की 'किल्लत' कह रहे थे। उसी रोज से आपका नाम 'क़िल्लत साहब' भी पड़ गया। परन्तु जमादार शब्द के आगे यह नाम बहुत दिनों तक नहीं रुक सका।

अब मेले की ओर आइए। आप लोगों में से बहुत से लोगों ने प्रयाग का माघ-मेला

* फ़ारसी मक़िल्लत कमी को कहते हैं।

देखा होगा। बड़ी भीड़-भाड़ थी। ऐसा अनुमान था कि मौनी अमावास्या के दिन ४० लाख आदमी जमा हो गये थे। ऐसे जमाव में ठहरने के लिए अच्छी जगह मिलना भी कठिन होता है। एक और मित्र की कृपा से, जार्जटाउन के एक बँगले में एक छोटा सा कमरा हमें मिल गया। हम दस-बारह आदमी बड़ी कठिनाई से अड़-फँसकर उसमें सो सकते थे। पर हमने इसको ही बड़ी गनीमत समझा; क्योंकि हम देख रहे थे कि लाखों आदमी तो केवल पेड़ों के नीचे ही विश्राम करते थे। मेरे एक चचाजाद भाई भी उन दिनों प्रयाग में रहते थे। मकान की तंगी देखकर मैंने हरचन्द चाहा कि भाई साहब के मकान पर चला जाऊँ, मगर हमारे मित्रों ने इसकी आज्ञा न दी। मेरी सब दलीलें रद्द कर दी गईं। और एकदम 'फुल बेंच' का यह फैसला हो गया कि कोई शख्स मण्डली को छोड़कर इधर-उधर नहीं ठहर सकता। मैं विवश हो गया। इस पर यह नादिरशाही हुक्म कि मैं अपने भाई से मिलने भी नहीं जा सकता। क्यों भाई! इसलिए कि तुम्हारा क्या एतबार, मिलने गये और लौटकर न आये तो हम तुम्हारा क्या कर लेंगे? ठीक! पच कहे बिल्ली तो बिल्ली ही सही!।

अब सुनिए, एक रोज सुबह १० बजे भोजन आदि करके हम सब घूमने जो निकले तो देखते हैं कि सामने से हमारे भाई साहब साइकिल पर चले आते हैं। मुझे देखते ही वे उतर पड़े और लगे सवाल पर सवाल करने, 'कब आये?' 'कहाँ रहे?' 'हमारे यहाँ क्यों नहीं ठहरे?' 'हमसे मिलने क्यों नहीं आये?' 'हमें इत्तला क्यों नहीं दी?' अब क्या जवाब दूँ? बहानेबाजी शुरू की। खैरियत यह हुई कि १० बज चुके थे और वे भी कचहरी जाने के लिए उतावले हो रहे थे। वरना न मालूम क्या क्या खोटी-खरी सुननी पड़ती। वे साइकिल पर चढ़ कर चलने लगे और मुड़कर चलते समय बोले, "शाम को हमारे यहाँ जरूर आना और खाना भी वहीं खाना।" मैंने 'बहुत अच्छा' कहकर अपना पीछा छुड़ाया।

उस दिन बड़ी घुमाई हुई। मेला, त्रिवेणी, किला, शिवकुटी, विश्वविद्यालय, हाईकोर्ट, सिविल लाइंस, चौक, गरज यह कि सारे प्रयाग की खाक छान डाली और मजा यह कि यह सब यात्रा पैदल ही की गई। सुबह के गये शाम को घर लौटे। तमाम कपड़े धूल से भर गये। बदन थककर चूर चूर हो गया, टाँगें अकड़ गईं। डेरे पर पहुँचते ही बदहवास होकर सब अपने अपने बिस्तर पर लेट गये। कुछ देर बाद जब जी ठिकाने लगा तो हाथ-मुँह धोने के पश्चात् दाना-पानी की फिक्र हुई। सबसे बड़ी समस्या यह थी कि बाजार से खाना लाये कौन? जिसको देखिए वही के मारे अकड़ा हुआ है। फिर भ।

हिम्मत कौन करे ? पहले तो यह सलाह हुई कि भूखे ही सो रहो। मगर दिनभर की दौड़-धूप से पेट में तो चूहे कूद रहे थे। आखिर जब भूख ने बहुत सताया तो जमादार साहब से न रहा गया। हिम्मत करके बाजार जाने को तैयार हुए। मुझे भाई साहब के यहाँ जाने का खयाल परेशान कर रहा था। किसी तरह हम दोनों लड़खड़ाते हुए कमरे से रवाना हुए। सब ने मुझसे कहा "जमादार साहब को अपने सामने हलवाई के यहाँ से खाना दिलवा देना, तब दावत खाने जाना"। कुछ यह खयाल नहीं था कि जमादार साहब पैसे काट लेंगे। उनकी ईमानदारी पर तो सबको विश्वास था, मगर भय यह था कि जो शख्स पानी की ज्यादती को 'क़िल्लत' कह सकता है वह पूरियों के बजाय न मालूम क्या उठा लाये। बात थी भी ठीक। सुबह भी जमादार साहब ही खाना बाजार से लाये थे। लाये तो पूरियाँ ही मगर थीं दो रोज की बासी !

मैंने रास्ते में जमादार साहब से कहा "भाई, मैं तो बहुत थक गया हूँ। अब दावत खाने न जाऊँगा, तुम एक काम करो तो बड़ा अच्छा हो।" वे राजी हो गये। मैंने कहा, "तुम भाई साहब के यहाँ जाकर यह कह आओ कि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है। ~ ~ जाऊँगा। मेरा इन्तजार न करें।" कहा "मैं तो उनका मकान नहीं जान जगह में रात के वक्त कैसे तलाश करूँगा ?" मैं इस आपत्ति को पहले से ही समझे हुए था। भाई साहब का मकान हलवाई की दूकान के पास ही एक गली में था। मेरे प्रस्ताव पर जमादार साहब ने यह राय पास कर दी कि हम दोनों भाई साहब के मकान तक जायँ। मैं उनको मकान बताकर वहाँ से हट जाऊँ और जमादार मेरा सन्देश कहकर लौट आयें। इसके बाद हम दोनों पूरियाँ खरीदकर डेरे पर पहुँचें। कहिए, कैसी सूझी ? आप कहेंगे कि जब मकान तक जाना ही पड़ा तो खाना भी क्यों नहीं खा लिया। मगर भाई, मुझे खाना खाने से परहेज थोड़े ही था। आफत तो यह थी कि वहाँ घण्टों अदब-क़ायदे के साथ बैठना पड़ता। यहाँ बदन इतना थका हुआ था कि हर घड़ी बिछौना याद आ रहा था। १०-११ बजे रात तक हाजिरी देने की ताकत किसमें थी ?

हम दोनों अपनी होशियारी, या यों कहिए कि धूर्तपने पर हँसते हुए भाई साहब के मकान तक पहुँचे। मैंने इशारे से मकान बता दिया और हटकर अलग खड़ा हो गया। जमादार साहब ने आवाज दी, 'बाबूजी' और भाई साहब तुरन्त बाहर निकले। मैं जरा दूर खड़ा हो गया था इसलिए उन ~ की बातें नहीं सुन सका। बाद में ~ साहब की जबानी जो क़िस्सा ~ वह यहाँ लिखता हूँ।

अपना परिचय देने के ~ साहब ने मेरा सन्देश कह

साहब ने अफसोस प्रकट करते हुए कहा, आपको रात में मकान खूब मिल गया। क्या आप मेरा नाम जानते हैं? वह बेचारे नाम क्या जानते थे। बड़े खफीफ हुए। खैरियत यह हुई कि सुबह जब भाई साहब रास्ते में मिले थे उस वक्त जमादार साहब भी साथ थे। सब ने पूछा, "यह कौन साहब थे?" मैंने कहा, "यही हमारे भाई साहब हैं, जिनके यहाँ मैं ठहरना चाहता था"। किसी ने पूछा, 'यह क्या काम करते हैं?' मैंने कहा, 'यह अमुक दफ्तर में रजिस्ट्रार हैं।' नाम न किसी ने पूछा न मैंने बताया। यह बात जमादार साहब को याद रह गई। उन्होंने बात बना दी और कहा, 'मैं आपका नाम तो नहीं जानता लेकिन मुझे यह मालूम है कि आप रजिस्ट्रार हैं, इसलिए पूछता पूछता चला आया।" एक आफत तो टली मगर दूसरी मौजूद थी। भाई साहब बोले, "आप जरा बैठिए। मैं आपके साथ चलता हूँ। दवा लिये चलता हूँ।" अब तो जमादार साहब बहुत सिटपिटाये। बात भी ऐसी ही थी। जिस मरीज के लिए भाई साहब दवा ला रहे थे वह तो उनके मकान के बाहर ही खड़ा था।– लगे बहाने बनाने। 'नहीं साहब, आप तकलीफ न कीजिए, कुछ ज्यादा तबीयत खराब नहीं है।' लेकिन हमारे भाई साहब एक ही तकल्लुफ-बाज आदमी हैं। उन्होंने एक न सुनी और चलने को तैयार हो गये। जमादार साहब ने कहा 'मुझे पेशाब लगा है। गली में बैठकर पेशाब कर लूँ?' भाई साहब ने कहा—'हाँ हाँ, कर लीजिए। मैं जरा कोट पहन आऊँ तो चलूँ।' आप लोग समझ ही गये होंगे कि जमादार साहब का इरादा यह था कि पेशाब के बहाने बाहर आकर मुझे होशियार कर दें और मैं भाग जाऊँ। मगर यह तदबीर भी निष्फल गई क्योंकि भाई साहब दरवाजे तक उनके साथ आये और कहने लगे, "दूर क्यों जाते हैं? बस, यहीं दरवाजे के पास बैठ जाइए। मैं कुरता पहनकर अभी आता हूँ।' जमादार साहब पेशाब करते जाते थे और दबी आवाज से 'गो आन, गो आन' (go on) भी कहते जाते थे। मैं भला उनकी 'गो आन' कैसे सुनता, क्योंकि जरा दूर खड़ा था। और अगर सुन भी लेता तो शायद यह खयाल न होता कि जमादार साहब बोल रहे हैं, क्योंकि जमादार साहब अँगरेजी नहीं जानते हैं। यह दो शब्द उन्होंने न जाने कहाँ से सीख लिये थे।

जमादार साहब उठने भी न पाये थे कि भाई साहब कुरता पहनकर बाहर निकल आये। जमादार साहब ने इतनी होशियारी फिर भी की कि गली के दूसरे रास्ते से बाजार की तरफ निकले और बातें करते हुए दोनों हमारे डेरे पर पहुँचे। दवा की शीशी भाई साहब के हाथ में थी, लेकिन वहाँ तो न मर्ज था न मरीज। हमारे अन्य साथी बैठे हुए थे। भाई साहब ने मेरे लिए पूछा कि वह कहाँ हैं। बेचारे–

दोनों बातें करते हुए हमारे डेरे पर पहुँचे।

से क्या वाकिफ थे। चट कह दिया, 'जमादार साहब! आपके साथ तो गये थे।' जमादार पर घड़ों पानी पड़ गया। वह खिसियाने से होकर कहने लगे, 'मेरे साथ तो नहीं गये। यहीं रह गये थे, उनकी तबियत कुछ खराब थी।' आँखों से इशारेबाज़ियाँ हुई, होंठ दबाये गये तो हमारे साथी तो चुप हो गये मगर भाई साहब हैरान थे। पर उनकी समझ में कुछ न आया कि मामला क्या है। जमादार साहब ने कहा—"शायद किसी डाक्टर के यहाँ चले गये होंगे, आप बैठिए। आते ही होंगे।" भाई साहब वहीं बैठ गये। जमादार साहब बँगले के बाहर सड़क पर मेरे इन्तज़ार में टहलने लगे कि मैं आऊँ तो मुझे चेतावनी हो जाय कि घर में शेर का डर है। वास्तव में जमादार साहब उस समय ऐसे ही दबे हुए थे जैसे शेर से गीदड़। अब मजा यह देखिए कि उधर तो मेरे इन्तजार में जमादार साहब बँगले के बाहर टहल रहे हैं। इधर मैं उनके इन्तजार में बाजार में टहल रहा हूँ। न वह मेरे पास आते हैं न मैं उनके पास जाता हूँ। क़रीब ४० मिनट तक यही नाटक होता रहा। मैंने बाजार के इधर से उधर तक बीसों चक्कर लगाये पर जमादार साहब न आये। आते कैसे? वे तो बेचारे अपनी ही मुसीबत में गिरफ़्तार थे। भाई साहब उनकी गरदन पर सवार थे। मैं मन ही मन जमादार साहब पर झुँझला रहा था। अगर उस वक्त दाम मेरे पास होते तो मैं पूरियाँ लेकर जरूर लौट जाता। मगर खजानची तो जमादार साहब थे। मेरी टाँगें जवाब देने लगीं। मजबूर होकर मैंने धीरे-धीरे घर का रास्ता लिया और कहा 'भाड़ में जाये पूरियाँ। मैं तो जाता हूँ।'

बँगले के पास पहुँचा तो देखा कि जमादार साहब मजे में चहलक़दमी कर रहे हैं। देखकर जी जल गया। मैंने गुस्से में जोर से कहा "जमादार साहब, यह कब की दुश्मनी निकाली, आप बड़े ही . ." वे चौंककर दबी जबान से बोले—'अररर, जोर से न बोलिए, वे यहाँ बैठे हैं।' मैंने फिर भी जोर से कहा, 'कौन बैठे है?' जवाब दिया 'वही आपके भाई साहब!' 'मार डाला' कहकर

मैं वहीं पुलिया पर बैठ गया। मगर बैठने कौन देता था। फौरन उठाया गया। भाई साहब बाहर निकल आयेंगे तो क्या होगा? जमादार साहब ने राय दी कि मैं दूर जाकर टहलूँ। जब भाई साहब चले जायेंगे तो बुला लिया जाऊँगा। भण्डा फूटने के डर से ऐसा ही किया। जार्जटाउन की कई सड़कें नाप डालीं मगर मुझे लाइन-क्लियर नहीं मिला। भाई साहब ऐसे चिपककर बैठे कि उठने का नाम ही नहीं लेते थे। मैं तो थका हुआ था ही, पर मैंने भाई साहब को भी थका ही दिया। पूरे डेढ़ घण्टे इन्तजार करने के बाद वह निराश होकर चले गये। राम राम करके मैं डेरे पर पहुँचा। पहले तो जमादार साहब को कई गरमा गरम बातें सुनाईं पर जब उनकी जबानी उनकी मुसीबत-भरी कहानी सुनी तो सब लोग हँसते हँसते लोटन कबूतर बन गये। पूरियाँ लेने के लिए फिर बाजार जाना पड़ा। पंचों ने झूठ बोलने की यही सजा तजवीज़ की।

लड़को, देखो जरा सी झूठ के लिए कैसी मुसीबत उठानी पड़ी। अच्छा खाना छोड़कर बाजार की पूरियाँ रात के ११ बजे मिलीं और जिस तकलीफ से बचना चाहते थे उससे सौ गुनी तकलीफ भी उठाई। इतना अच्छा हुआ कि भाई साहब को यह रहस्य मालूम नहीं हुआ। वे यही समझते रहे कि मैं डाक्टर के यहाँ गया था।

गन्देलाल की इज्जत

लेखक, श्रीयुत काशीप्रसाद द्विवेदी

देखो गन्दा लड़का आया,
मुँह में जूठन है लपटाया।
कपड़े इसके गन्दे कैसे,
बने हुए गोबर के जैसे।
बढ़े हुए नाखून निराले,
डर लगता, हों मानो भाले।
है किताब पर कालिख डाले,
पहने सड़े-गले दस माले।
मैल देह पर खूब जड़ी है,
धोती गन्दी और सड़ी है।
दाँत दिखाई देता मैला,
इस पर भी कहलाता छैला।
सभी उसे हैं दूर भगाते,
नहीं पास में तनिक बिठाते।
रहता नित बीमार बेचारा,
दुखी और आफत का मारा।
तुम सब बच्चे करो सफाई,
सभी करेंगे तभी बड़ाई।
कभी नहीं बीमार पड़ोगे,
पहलवान होगे, अकड़ोगे

बिना सोचे कुछ मत बको

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण दीनदयाल अवस्थी

छोटे गाँवों में न तो नाटक कम्पनियाँ ही पहुँचती हैं और न सिनेमा ही जाते हैं। बात यह है कि इनका इतना पैसा वहाँ कैसे मिले? वहाँ के खेल तो रामलीला और रास-मण्डली आदि रहते हैं। देहातियों को इन्हीं खेलों में मजा आ जाता है। वे इन्हीं खेलों को देखकर फूले नहीं समाते।

रामपुर गाँव में एक रास-मण्डली आ पहुँची। उस दिन रात्रि को वहाँ उनका खेल आरम्भ हुआ। सब लोग खेल देखने और गाना सुनने जा पहुँचे। भला कजूस-मल सेठ कैसे घर बैठते, वे भी जा धमके। सेठ कजूसमल का जैसा नाम था, वैसे वे कजूस भी बड़े थे। उनका इतना सार्थक नाम किसी ने सोच-समझ कर ही रक्खा था। कभी किसी को एक पैसा भी नहीं देते थे। धर्म करना तो वे जानते ही न थे। भूखे को भोजन और प्यासे को पानी तो उन्होंने कभी भूलकर ही दिया हो।

रास होने लगा। सचमुच दो लड़कों ने बड़ा अच्छा गाना गाया। सब देहाती वाह वाह करने लगे। सेठ कजूसमल भी बड़े प्रसन्न हुए। उनकी ख़ुशी का आज ओर-छोर न रहा था, आज तो वह हद-पार कर गई थी। सहसा उनके मुँह से निकल पड़ा—

"इन दोनों लड़कों को मैंने एक एक भैंस इनाम में दी। प्रातःकाल अपनी भैंसों में से दो भैंसें निकाल दूँगा। वाह! वाह! कितना अच्छा गाना गाया!"

रास-मण्डली के मैनेजर तथा और और गानेवालों का तो पूछना ही क्या था। वे तो मारे प्रसन्नता के फूले न समाये। उन्होंने जाना कि आज खूब माल हाथ लगा। जो दूसरे देहाती गाना सुन रहे थे वे भी अचम्भे में पड़ गये। वे मन ही मन कह रहे थे कि सेठ कजूसमल ने तो आज अपनी कजूसी का दीवाला निकाल दिया। सब लोग सेठ का मुँह ताक रहे थे।

जोश में आकर सेठ कजूसमल बात तो कह गये थे परन्तु अब वे भी मन ही मन पछता रहे थे। सोचा, यह मैं क्या बिना सोचे-समझे बक बैठा। आज तो सचमुच ऐसी भूल हुई जो किसी दशा में न होनी चाहिए थी। बात भी पचों में कही थी। अब भला बदलते तो कैसे बदलते? उधर रास मण्डली वाले भी कब माननेवाले थे। मन ही मन पछताने के सिवा और कुछ भी बनने जैसा न था।

सहसा उन्होंने एक युक्ति सोच निकाली। वे दोनों लड़के तो गाकर चले गये थे। उनके

बाद चार लड़के और गाना गाने आये। इन लोगों का गाना शुरू हुआ। इनका गाना कुछ अच्छा न था। न ताल से गाते थे और न सुर ही ठीक था। इनके गायन पर सारे देहाती अनमने हो रहे थे। परन्तु इनका भी गायन सुनकर सेठ कजूसमल ने कहा—"अच्छा, इन चारों को भी एक एक भैंस इनाम में देता हूँ। कल सुबह ले लेना।"

अबकी बार रास मण्डलीवालों को कुछ प्रसन्नता तो जरूर हुई परन्तु कुछ शक भी हुआ। उन्होंने पास बैठे किसी देहाती से पूछा—"यह मनुष्य कोई पागल तो नहीं है?" परन्तु उसने कहा—"पागल तो नहीं है। मालदार भी है। लेकिन कजूस जरूर परले दर्जे का है।" खैर, यह सुनकर उन्हें कुछ सन्तोष जरूर हुआ। उन्होंने सोचा, यदि छः भैंसें न भी दीं तो कम से कम एक तो जरूर देगा। कजूसी में पाँच रख लेगा। छः की छः थोड़े ही हजम कर जायगा। चलो, एक ही क्या कम होती है।

फिर खेल बदला। अबकी बार आठ लड़के मिलकर गाना गाने लगे। उनका गाना भी सुनकर सेठ कजूसमल ने कहा—"इनको भी एक एक भैंस इनाम में देता हूँ। कल सुबह आकर ले लेना।"

अब तो खेल में सचमुच हुल्लड़ मच गया। रास मण्डलीवाले भी भौचक्के थे। सोच ही रहे थे कि आखिर बात क्या है जो यह प्रत्येक गानेवाले को एक एक भैंस दे रहा है। एकदम चौदह भैंसें? इतने में किसी ने चिल्लाकर कहा—"का कजूसमल आज कुछू भाँग वाँग पी लिहिस हौ का?"

कजूसमल ने भाँग पीने की बात सुनी तो उछल पड़े। मन ही मन कहने लगे, वाह! वाह! कैसे मौके की और मार्के की बात बता दी है। परन्तु भीतर ही भीतर मन मारकर बोले—"कसस भाँग? भाँग तुम पिया होय। हम चवदह भैंसिया दै चुकिन है, चवदह। जानत हौ?"

अब सेठ ने अपने सिर की दुपल्ली टोपी और गले का खादीवाला अँगोछा निकाला और ऊपर उछाल-उछालकर गाने और बकने लगे—

जो बनियन की बात है, तुम का जानो?
चवदह भैंस दे चुके हम, पक्की बात इसे मानो।
जय जय बोलो गंगा तीर!
नाचो कूदो जय रघुवीर!!

सेठ कजूसमल इस तुकबन्दी को बकता गाता जाता था। और अब बेतहाशा नाचने भी लगा था। कभी-कभी धूल भी उछाल देता था। बस, लोग यही तमाशा देख रहे थे। रास-लीला चौपट हो गई थी।

अब तो लोगों ने सचमुच उन्हें पागल नहीं तो पूरा भँगेड़ी जरूर समझा। सबों ने मिलकर सेठ कजूसमल को पकड़ा, रोका, थामा, दाबा भी, पर वे बड़ी कठिनता से पकड़े। सबों ने मिलकर उन्हें घर पहुँचाने में आये। सबों ने मिलकर उन्हें घर पहुँचाने की ठानी और उनको घर [illegible]

लीला करनेवाले भी उनके साथ हो लिये। वहाँ पहुँचकर लोगों ने सेठानी से कहा—"आज सेठजी ने छककर भाँग पी ली है और ये पागल हो गये है। रास-मण्डली वालों को इनाम में चौदह भैंसें दे आये हैं।" यह सुनकर सेठानी ने कहा—"क्या बक रहे हो? सेठजी तो कभी भाँग वाँग नहीं पीते। घर में तो केवल आठ भैंसें है, चौदह भला कहाँ से देंगे?"

सेठानीजी की तो जान सूख गई। परन्तु सेठ कजूममल ने कहा—"देंगे, जरूर देंगे, खरीदकर देंगे। जा बनिये की बात है, तुम का जानो?"

लोगों ने फिर उनको दावा, समझाया-बुझाया। मगर सेठजी कब माननेवाले थे। वे तो बराबर वही बकते जाते थे। इधर सेठानी घबरा रही थीं, परन्तु उधर रास-मण्डलीवाले जरूर खुश हो रहे थे। उन्होंने समझ लिया था कि चौदह नहीं तो कम से कम एक तो जरूर ही दे देगा। सवेरा होने दो। आज का खेल भी सब मारा गया। आखिर दो-चार रुपये के पैसे आते, वे सब चौपट हो गये। कुछ-न कुछ तो इससे लिये बिना न छोड़ेंगे। इसके बाद सब लोग वहाँ से विदा हो गये। खेल तो बन्द हो ही चुका था।

(२)

जब सब लोग चले गये तब सेठानी ने से पूछा—"आज यह तुमने क्या किया! एकदम चौदह भैंसें इनाम में?" इस पर सेठजी ने कहा—"तुम नहीं जानतीं, ये तो सब बनी बातें थीं। यदि ऐसा न करता तो दो भैंसें तो मुझे देनी ही पड़तीं। बात यह हुई थी कि बिना सोचे-विचारे मेरे मुँह से, जोश में, निकल गया था कि दो भैंसें दूँगा। उसी भूल को सुधारने के लिए मैंने ऐसा किया। वे लोग मेरी इस बनियाई चाल को क्या जाने। कैसा चकमा दिया?"

सचमुच सेठजी की बातें और युक्तियाँ सुनकर सेठानी को कुछ हँसी जरूर आई। वे मुसकुराकर बोलीं—"सचमुच तुमने खूब चालें चलीं। पागल तक बन गये। बड़े विचित्र और गुणी हो तुम।"

यह सुनकर सेठजी को भी कुछ प्रसन्नता हुई। फिर दोनों सो रहे।

प्रातःकाल रास-मण्डली का मैनेजर भैंसें माँगने आया। सेठजी तो सब बातें उन्हें देखते ही समझ गये थे। परन्तु फिर भी उन्होंने मुँह बनाकर पूछा—"तुम कौन हो?" मैनेजर ने कहा, "हम लोग वही रास-मण्डली के लोग हैं जिन्हें आप कल रात को चौदह भैंसे देने कह आये थे।" इस पर सेठजी ने बिगड़कर कहा "मैं तो रात को कल भाँग पिये अपने घर में पड़ा रहा, बाहर तक नहीं निकला। कैसी भैंसे? अजब आदमी हैं आप!" इस पर मैनेजर ने बिगड़कर कहा "सेठजी, क्या यही बनिये की बात है? मारा हमारा सारा खेल चौपट कर दिया। एक

कौड़ी भी कल नसीब नहीं हुई। कुछ खेल खेल करते तो दो चार रुपये मिल ही जाते।"

इस पर कजूसमल ने आँखें निकाल, कड़ककर कहा—"हाँ, यही बनिये की बात है। तुम क्या जानो ? चलो यहाँ से। भेंसें तुम्हारे लिए कहाँ धरी है ?"

रास-मण्डली का मनेजर रोता हुआ अपने स्थान पर चला गया और सेठ कजूसमल तथा उसकी सेठानी हँसते हुए अपने घर में यह कहते चले गये—"कैसा चकमा दिया है ? कैसे बुद्धू बने ये सब ? यही बनिये की चाल है। इसे वे क्या —"

भारत देश

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

भारत देश हमारा प्यारा !

हम सब इसके बच्चे प्यारे ! नन्हे नन्हे बड़े दुलारे !
हैं इसकी आँखों के तारे। मात-पिता यह पालनहारा।
भारत देश हमारा प्यारा।

जनमे, पले, यहीं सब भाई। यहीं सभी ने शिक्षा पाई।
आबहवा कैसी सुखदाई ! पावन भू का हमें सहारा।
भारत देश हमारा प्यारा।

उत्तर में है खड़ा हिमालय। पर्वत ऊँचा बड़ा हिमालय।
सदा वैरियों को देता भय। पर हम सबका है रखवारा।
भारत देश हमारा प्यारा।

गङ्गा यमुना बहतीं कलकल। झरनों का है पानी निर्मल।
हरा भरा धरती का आँचल। सुन्दरता में जग से न्यारा।
भारत देश हमारा प्यारा।

तीन ओर सागर लहराता। भारत हमको सुखी बनाता।
इसकी सेवा में हम अपना, अर्पण कर दें जीवन सारा।
भारत देश हमारा प्यारा।

कुछ जानने योग्य बातें

१—लोमड़ी एक घण्टे में २० मील दौड़ सकती है।

२—आध सेर फासफोरस में १० लाख दियासलाइयाँ तैयार हो सकती हैं।

३—हिन्दुस्तान का सबसे पहला अखबार २९ जनवरी सन् १७८० को कलकत्ते से प्रकाशित हुआ था। उसका नाम 'बङ्गाल गजट' था।

४—रोशनी ११,००,०००० मील प्रति मिनट चलती है और आवाज हवा में १ सेकण्ड में ११०० फीट और पानी में ४७०० फीट चलती है।

५—पोस्टकार्ड का आविष्कार सबसे पहले आस्टिया हङ्गरी में हुआ था और छाते का चीन में।

६—भारतीय-कांग्रेस का जन्म १८८५ में हुआ था और उसके पहले प्रेसिडेण्ट उमेशचन्द्र बनर्जी थे।

७—रात को हम जो स्वप्न देखते हैं वह ५-६ सेकण्ड में खतम हो जाते हैं किन्तु होता है कि घण्टों से देख रहे हों।

८—दुनिया का सबसे पहला 'टाइपराइटर' सन् १८६७ में बना था।

९—तम्बाकू के खेत में साँप नहीं जाता।

१०—स्वेज नहर १३ साल में बनकर तैयार हुई थी।

११—रेल के टिकट का आविष्कार पहले १८३६ ई० में हुआ था।

—राकेशमोहन जोशी।

चींटियों की चाल

चींटियाँ कितनी मेहनती और लगनवाली होती हैं, यह तो सभी जानते हैं। चलने में भी उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। वे इतनी जल्दी अपना कदम उठाती हैं कि यदि उसी रफ़ार से हम अपना कदम उठावें तो एक घण्टे में ८०० मील पहुँच जायँ। इतनी तेज तो कोई सवारी भी नहीं जाती।

मुलायम पत्थर

अमरीका में ब्रेजिल से एक ऐसा पत्थर लाया गया है जो मोम की तरह मुलायम है और आसानी से लपेटा जा सकता है।

—शिशु से

हँसो-हँसाओ

लेखक, श्रीयुत कृष्णमनोहरसिंह साडल

[१]
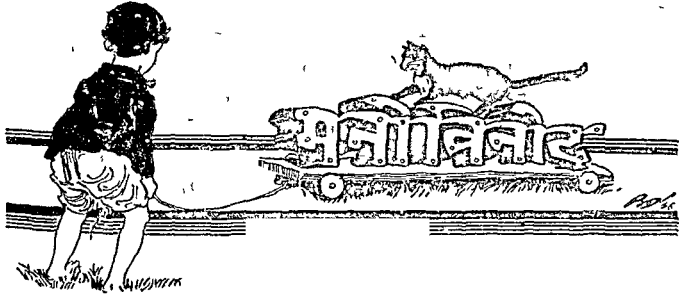
एक अमीर आदमी गाँव की सैर करने के लिए अपनी मोटर में निकला। उसने एक छोटे से घर के सामने देखा कि एक बुढ़िया अपने असबाब सहित बैठी है। उसको बुढ़िया पर दया आई। उसने सोचा, अवश्य बुढ़िया पर जमींदार ने अत्याचार किया है और उसको घर से निकालकर घर पर कब्जा कर लिया है। वह मोटर से उतर पड़ा। बुढ़िया को दस रुपये का नोट दिया और कहा, "क्यों बुढ़िया, क्या बात है?"

बुढ़िया—मेरा बुड्ढा आज घर में सफेदी कर रहा है, अतः मुझे असबाब की रखवाली के लिए यहाँ बैठना पड़ा।

अमीर आदमी का इरादा कुछ और सहायता करने का था। यह उत्तर पाकर वह उल्टे पाँव लौट पड़ा और अपनी मोटर में जा बैठा।

[२]

देवदास जन्म का गूँगा था। उसे किसी ने कभी बोलते नहीं सुना। एक दिन लुहार की दुकान पर जलते हुए लोहे से उसका शरीर छू गया। वह चिल्ला उठा, "अरे, कमबख्त ने जला दिया।"

लुहार ने आश्चर्य से कहा, "ताज्जुब है गूँगा देवदास बोलने लगा।"

देवदास—ताज्जुब कुछ नहीं। इससे पहले मुझे बोलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी थी।

[३]

दीना बाबू—क्यों जी! कल रात को तुमने मुझे एक खोटी इकन्नी दी थी?

दूकानदार—नहीं बाबू साहब, मुझे दूकानदारी करते चालीस वर्ष हो गये। आज तक मैंने खोटा सिक्का न तो लिया और न दिया। खोटे सिक्के को मैं छूते ही पहचान लेता हूँ। खैर, इकन्नी आप यहीं चला ही देंगे।

शित हुई। इनमें हनुमत-विनोद हमें बहुत पसन्द आई। इसके लेखक पण्डित चन्द्रशेखरजी हैं और इसका दाम चार आने है। इसमें हनुमान्‌जी की हँसी दिल्लगी के १६ किस्से छपे हैं। उनमें से एक यह है। एक बार जब रामचन्द्रजी सीताजी के साथ साकेत लोक जाने लगे तब उनके साथ हनुमान्‌जी ने भी घुसने की कोशिश की। इस पर रामचन्द्रजी ने हनुमान्‌जी से कहा कि आप कृपा कर बाहर रहें। साकेत लोक में मेरे सिवा और कोई नहीं जा सकता। तब हनुमान्‌जी ने सीताजी की ओर इशारा करके कहा—यह क्यों जा रही हैं? रामचन्द्रजी ने कहा—यह अपनी माँग में जो सिंदूर लगाये हुए हैं उसी के बल पर जा रही हैं।

दूसरे रोज हनुमान्‌जी अपने तमाम बदन में सिंदूर पोतकर वहाँ पहुँचे और बोले कि अब हमें साकेत लोक में ले चलिए। जब सीताजी सिंदूर की एक पतली लकीर लगाकर जा सकती हैं तब मैं तमाम बदन में सिंदूर पोतकर क्यों नहीं जा सकता? कहते हैं, उसी दिन से हनुमान्‌जी को सिंदूर लगाया जाने लगा।

नहीं छपेंगे

खेद है कि स्थानाभाव के कारण नीचे लि[खे] हुए लेख आदि नहीं छप सकेंगे। आशा है प्रेषकगण क्षमा करेंगे।

कुछ हमारे देश के पक्षी—श्री नारायणसि[ंह] सयाना। मोटर—श्री लक्ष्मीनारायण विद्यार्थी। ऋतुराज का आगमन—श्री धीरजलाल पटेल। एक मूर्ख जाट की कहानी—श्री जुझारसिंह। स का स्वाद—श्री शारदाचरण शुक्ल। आडी—श्री गोपीकिशन मेहता। दरिद्र भारत की आत्म-कथा—श्री छोटेलाल। दोनों भाई—श्री शिवशङ्कर प्रसाद। कविता—श्री भास्कर राव सोनवलकर। सरस्वती-विनय—श्री गोविन्द शरण गुप्त। देशभक्त भामा—श्री हरिशङ्कर शर्मा। दिन सूचक—श्री गोपालप्रसाद चौरसिया। धन और तकदीर की लड़ाई इत्यादि—श्री दिनेशचन्द्र द्विवेदी। बदला—श्री राधाकृष्ण खन्ना। चार ठग—श्री जानकीवल्लभ वाजपेयी। पुष्पलता की कहानी—श्री महेशकुमार रेकी वाल। गुड्डों का नाच—श्री भुवनारायण गुप्त। कुबड़ा बौना—श्री जितेन्द्रनाथ। छत्तीस गढ़ी ददरिया—श्री महात्मा राम।

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

१३] सितम्बर १९३९—भाद्रपद १९९६ [संख्या ९

झूला

लेखक, श्रीयुत रामविहारी सहाय 'मधुर'

अम्मा, आज लगा दे झूला, इस झूले पर मैं झूलूँगा ।
इस पर चढ़कर, ऊपर बढ़कर, आसमान को मैं छू लूँगा ॥
झूला झूल रही है डाली, झूल रहा है पत्ता पत्ता ।
इस झूले पर बड़ा मजा है, चल दिल्ली, ले चल कलकत्ता ॥ १ ॥
झूल रही नीचे की धरती, उड़ चल, उड़ चल, उड़ चल, उड़ चल ।
बरस रहा है, रिमझिम-रिमझिम, उड़कर मैं लूटूँ दल-बादल ॥
वे पक्षी उड़ते जाते हैं, अम्मा तुम भी मुझे उड़ाओ ।
'पी जा मेरे सुगना बूटी, मेरे पिंजड़े में आ जाओ' ॥ २ ॥
'आओ झूलूँ, तुझे झुलाऊँ, नन्हे को मैं यहीं सुलाऊँ ।
आ जा निंदिया, आ जा निंदिया, तुम भी गाओ, मैं भी गाऊँ ॥
यह मूरत चुनमुनिया झूले, जंगल में ज्यों मुनिया झूले ।
मेरे प्यारे, तुम झूलो तो मेरी सारी दुनिया झूले' ॥ ३ ॥

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

सितम्बर १९३९—भाद्रपद १९९६ [संख्या ९

झूला

लेखक, श्रीयुत रामसिंहासन सहाय 'मधुर'

अम्मा, आज लगा दे झूला, इस झूले पर मैं झूलूँगा।
इस पर चढ़कर, ऊपर बढ़कर, आसमान को मैं छू लूँगा॥
झूला झूल रही है डाली, झूल रहा है पत्ता पत्ता।
इस झूले पर बड़ा मजा है, चल दिल्ली, ले चल कलकत्ता॥ १॥

झूल रही नीचे की धरती, उड़ चल, उड़ चल, उड़ चल, उड़ चल।
बरस रहा है, रिमझिम-रिमझिम, उड़कर मैं लूटूँ दल-बादल॥
वे पक्षी उड़ते जाते हैं, अम्मा तुम भी मुझे उड़ाओ।
'पी जा मेरे सुगना बूटी, मेरे पिंजड़े में आ जाओ'॥ २॥

'आओ झूलूँ, तुझे झुलाऊँ, नन्हे को मैं यहीं सुलाऊँ।
आ जा निंदिया, आ जा निंदिया, तुम भी गाओ, मैं भी गाऊँ॥
यह मूरत चुनमुनिया झूले, जगल में क्यों मुनिया झूले।
मेरे प्यारे, तुम झूलो तो मेरी सारी दुनिया झूले'॥ ३॥

हास्यरस की एक सुंदर कहानी

तीसमारख़ाँ

लेखक, श्रीयुत भारतीय, एम० ए०

पुराने जमाने की बात है। उस समय हिन्दुस्तान आजाद था। एक गाँव में एक जुलाहा रहता था। दुबला पतला डेढ़ हड्डी का आदमी, कोटर में धँसी हुई आँखें, ठुड्डी पर बकर-दाढ़ी—ऐसी थी उसकी सूरत। बेचारा गरीब था, साथ ही साथ आलसी और डरपोक भी था। किया-धरा उससे कुछ न बनता पर उसे बात बात पर ताव आ जाता था और वह सबसे लड़ने को तैयार हो जाता था। इसी कारण गाँव में उसकी क़दर न थी। सभी उसकी उपेक्षा करते—उससे नफरत करते। लोगों ने उसे चिढ़ाने के लिए उसका नाम रक्खा था तीसमारख़ाँ।

तीसमारख़ाँ निकम्मे थे ही। उनकी बीबी इसी कारण उनपर बहुत बिगडती रहती। बात बात में उन्हे फटकार सुनाती। आख़िर तीसमारख़ाँ ने तङ्ग आकर घर छोड परदेश जाने का निश्चय किया। सोचा, परदेश में चलकर अपना भाग्य आजमायेंगे। अगर लगा तो तीर नहीं तुक्का तो है ही। कोई नौकरी लग गई तो अच्छा ही है नहीं तो भीख माँग खायेंगे। अपने गाँव में तो भीख माँगते भी नहीं बनती। यही सोचकर एक तीसमारख़ाँ घर से चुपके से चल पडे। दिन भर चलते-चलते वे शाम को एक नगर में पहुँचे। ढूँढते-ढाँढते वे सराय में पहुँचे। सराय में बिना पैसे के कौन पूछे! तीसमारख़ाँ के पास पैसे ही कहाँ थे! पूछते-पाछते वे एक बुढिया भटियारिन के घर पहुँचे। टूटे-फूटे घर में अकेली बुढिया किसी तरह अपना पेट पालती थी। तीसमारख़ाँ ने सोचा कि इसी के यहाँ रात बिताई जाय। उन्होंने पहुँचते ही कुडी खटखटाई। बुढ़िया लाठी टेकती हुई बाहर निकली। तीसमारख़ाँ ने झट बड़े अदब से झुक कर कहा, "बुआ सलाम"। बुढिया ने उन्हें पहचाना नहीं पर उसके मुँह से निकल गया, "खुश रहो बेटा।"

तीसमारख़ाँ झट खाट पर जा बैठे और बुढिया से हाल-चाल पूछने लगे। उसने अपनी दुख कहानी कह सुनाई। तीसमारख़ाँ उसे तसल्ली दिलाने लगे। अब बुढ़िया के यहाँ तीसमारख़ाँ टिक गये। बुढ़िया अकेली से दुकेली हो गई। कुछ वह करती, कुछ तीसमारख़ाँ करते। किसी तरह गुजारा होने लगा। तीसमारख़ाँ ईश्वर को धन्यवाद देते कि उन्हे बिना किच-किच के रोटी मिलने लगी। घर पर होते तो रोज बीबी के ताने सुनते रहते। कुछ दिन इस तरह बीते। अब बुढिया मुसाफिरों को ठहराकर कुछ

कमाने लगी। दोनों के दिन अच्छी तरह कटने लगे। तीसमारखाँ मुसाफिरों की खिदमत करते और बुढ़िया उन्हें अच्छे अच्छे खाने पकाकर खिलाती। मुसाफिर चलते समय दोनों को इनाम दे जाते।

नगर के पास जङ्गल था। उसमें जङ्गली जानवर बहुत रहा करते थे। इधर कुछ दिनों से एक बाघ नगरवालों को दुख देने लगा था। कभी किसी की बकरी मारता, कभी किसी का लड़का, कभी किसी का चौपाया। चिराग जलने से पहले ही लोग अपने अपने किवाड़ बन्द कर लेते थे। राजा ने चारों ओर ढिंढोरा पिटवा दिया था कि जो इस 'लगहर' शेर को मारेगा उसे खजाने से इनाम मिलेगा। शेर की घात में बहुत से शिकारी लगे, पर कोई सफल न हुआ। शेर के मारे चारों ओर कोहराम मचा था।

एक दिन बुढ़िया के यहाँ एक सौदागर ठहरा। वह बहुत दूर से अपना माल बेचता हुआ आ रहा था। उसे शेर के बारे में कुछ पता न था। सराय में पहुँचते ही उसने घोड़ी पर से अपना सामान उतारा और उसे चरने के लिए छोड़ दिया। रात अँधेरी थी। इधर काले काले बादल भी आ धमके। धीरे-धीरे बूँदाबाँदी होने लगी। मुसाफिर थका-माँदा था, पड़ते ही सो गया। बुढ़िया ने खाना पका कर उसे जगाया। सौदागर खाते-खाते हाल चाल पूछने लगा।

उसे मालूम हुआ कि यहाँ एक शेर ने बड़ा ऊधम मचा रखा है तो वह अपनी घोड़ी के लिए चिंतित हो उठा। घोड़ी चरते चरते कहीं दूर न निकल गई हो। बुढ़िया ने कहा, "चिन्ता करने की क्या बात है। हमारा भतीजा बड़ा बहादुर है। वह रात बिरात तुम्हारी घोड़ी ढूँढ लायेगा।" सौदागर निश्चिन्त होकर सो गया।

खाना खिला पिलाकर बुढ़िया जब सोने चली तब उसने कहा—"बेटा तीसमारखाँ, सौदागर की घोड़ी यहीं कहीं आस-पास चरती होगी। पकड़ कर बाँध देना। तुम्हें इनाम दिला दूँगी।" तीसमारखाँ ने कहा, "अच्छा बुआ।" वह भी सोने चली गई। तीसमारखाँ ने लगाम उठाई और घोड़ी ढूँढने चले। एक तो उन्हें ऐसे ही रतौंधी होती थी, दूसरे अँधेरी बरसात की रात। बेचारे टटोलते हुए घर से बाहर निकले। बीच बीच में जो बिजली कौंध जाती तो उन्हें कुछ दूर तक रास्ते का अन्दाज लग जाता।

तीसमारखाँ ने सोचा, "घोड़ी बहुत दूर न गई होगी। यहीं कहीं आस पास होगी। बहुत गई होगी तो गड़ही तक। वे टटोलते-टटोलते गड़हिया तक पहुँचे। कई जगह फिसलते फिसलते बचे। उनकी कम्बल की 'घोघी' भीग कर भारी हो रही थी। अंत में वे पास के गूलर के पेड़ के नीचे खड़े होकर घोड़ी की आहट लेने लगे। इतने में बिजली चमकी। तीसमारखाँ को कुछ दूर कोई चौपाया खड़ा दिखाई पड़ा। फिर

राजा ने तीसमारखाँ को अपनी सेना का सेनापति बना दिया।

चारों तरफ अँधेरा छा गया। तीसमारखाँ अंदाज से लाठी टेकते उसी जानवर के पास पहुँचे। टटोला तो गर्दन के बाल हाथ पड़े। चट उन्होंने लगाम चढ़ा दी, और पीठ पर सवार हो गये। मारते-पीटते वे उसे लेकर घर पहुँचे और थान पर घोड़ी को अगाड़ी-पिछाड़ी लगाकर बाँधा, फिर वे जाकर सो रहे।

सवेरा हुआ। सौदागर अपनी घोड़ी को दाना खिलाने पहुँचा। देखता है तो उसकी घोड़ी के थान पर एक शेर अगाडी पिछाडी में बँधा खड़ा है। सौदागर चिल्ला कर भागा। शोर मच गया। पूछने पर मालूम हुआ कि यह तीसमारखाँ की करामात है। सब तीसमारखाँ की बहादुरी का बखान करने लगे। बूढ़ी भटियारिन तो अब उन्हें अपना सगा भतीजा कहकर तारीफ का पुल बाँधने लगी थी। तीसमारखाँ अपनी जग खाई ।ऽ लेकर पैंतरे भरते हुए बतला रहे थे कि मैंने यों शेर को घर दबाया, यों उसकी पीठ पर सवार हो गया, ऐसे लाकर बाँधा। किसी को यह पता न लगा कि शेर को आँखों से कुछ दिखाई न पड़ता था।

शेर मार डाला गया। तीसमारखाँ की तारीफ राजा के कानों तक पहुँची। वे दरबार में तलब किये गये। बड़े आदर से राजा ने उनका स्वागत किया। उन्हें पाँचों कपड़े और ५०० रुपये मिले। इतना ही नहीं, उनकी बहादुरी से खुश होकर राजा ने उन्हें अपनी सेना का कप्तान बना दिया। तीसमारखाँ अब बहुत बड़े पद पर पहुँच गये। उनकी बहादुरी की चर्चा चारों ओर फैल गई।

राजा अब तीसमारखाँ के हाथ में अपनी सेना का भार सौंपकर निश्चिंत से हो गये। उन्हें विश्वास हो गया था कि उनके राज पर कोई शत्रु चढ़ाई करने की हिम्मत न करेगा और अगर भूलकर हमला करने की हिम्मत करेगा भी तो मुँह की खाकर रहेगा।

कुछ दिनों तक अमन-आमान रहा। पर इधर थोड़े दिनों से सरहद पर का एक राजा कुछ उपद्रव करने लगा था। तीसमारखाँ को दरबार से हुक्म मिला कि तुम शत्रु पर चढ़ाई कर दो। बेचारे तीसमारखाँ की परीक्षा के दिन आ पहुँचे। वर्षों से गहरी रकम मार रहे थे। मजे उड़ा रहे थे। अब अगर भाग निकलते तो ठीक न था। उन्होंने

ईश्वर का ध्यान किया। वे चढ़ाई की तैयारी करने लगे। राजा ने हुक्म दे दिया कि फौज के लिए जो चीज़ चाहिए ला। फौज सजने लगी। हर्बे-हथियार तयार होने लगे। अब यात्रा की तैयारी होने लगी। तीसमारखाँ कभी घोड़े पर सवार न हुए थे—उनके लिए राजा ने खास अपना कलावन्त घोड़ा दिया था। तीसमारखाँ बड़े असमंजस में पड़े। ऐसे घोड़े की पीठ पर बड़े बड़े सवार ही ठहर सकते थे—वे तो छोटी सी घोड़ी पर बैठने के भी आदी न थे। पर तीसमारखाँ ने तरकीब सोच ली थी।

मैदान में पलटन कतार की कतार में आ पहुँची। घोड़े कसकसा कर खड़े थे। बस फौज के कूच के नगाड़े बजाने की देर थी। राजा अपनी फौज को विदा करने के लिए तैयार थे। तीसमारखाँ फौजी जिरह बक्तर में लैस, ढाल तलवार बाँधे खड़े थे। उनका घोड़ा सामने खड़ा खूँद रहा था। उनकी चढ़ने की हिम्मत न होती थी। तीसमारखाँ ने राजा साहब से विनती की, "हुजूर, मुझे इस घोड़े पर बैठाकर रस्सी से कसवा दीजिए, जिससे मैं दोनों हाथों से तलवार चला सकूँ।"

राजा को तीसमारखाँ की बात बहुत पसन्द आई। तीसमारखाँ घोड़े पर बैठा दिये गये। उन्हें अच्छी तरह कसकर घोड़े से जकड़ दिया गया। उनके हाथों में दो तलवारें थमा दी गईं। अब फौज के कूच का नगाड़ा बजा। तीसमारखाँ को लेकर घोड़ा फौज के आगे आगे भाग चला। घोड़सवार पलटन उनके पीछे पीछे लपकी।

दुश्मन का फौज बहुत दूर न थी। घण्टे ही दो घण्टे में लड़ाई का मैदान आ पहुँचता। तीसमारखाँ आगे आगे घोड़े पर उड़े जा रहे थे। बेचारे खुदा खुदा चिल्लाते जाते और मनाते जाते "या खुदा वहाँ गिरूँ, जहाँ गिल्ली माटी" अर्थात् ऐसी जगह गिरूँ जहाँ मिट्टी गीली हो जिससे चोट न लगे।

पीछे की पलटन का शोर सुनकर तीसमारखाँ का घोड़ा और भड़का और बेतहाशा भाग चला। रास्ते में एक जङ्गल पार करना था। संयोग से तीसमारखाँ के सामने एक पेड़ की डाल आ पड़ी। उन्होंने उसे पकड़ लिया। घोड़ा अपने जोश में भागा जा रहा था। उसके झटके से पेड़ की बड़ी डाल टूट कर तीसमारखाँ के कंधे पर लटक रही। घोड़ा उसे भी लिये हुए उड़ा चला जा रहा था।

दुश्मन के सिपाही तीसमारखाँ की अद्भुत बहादुरी का बखान सुन चुके थे। उनकी हिम्मत पहले ही से पस्त हो रही थी। पर करते क्या? अपने राजा की आज्ञा से उन्हें लड़ाई के मैदान में आना पड़ा था। पर उनकी हिम्मत तीसमारखाँ का सामना करने की न होती थी। वे पहले ही चौंके हुए और भयभीत खड़े थे। इतने में उन्होंने देखा कि एक सवार कंधे पर

रक्खे दोनों हाथों में चमकती हुई तलवारें लिये, बेतहाशा घोड़ा दौड़ाये, उनकी तरफ बढ़ा आ रहा है। उसके पीछे हजारों सवार लल कारते चले आ रहे हैं। अब तो दुश्मन के सिपाहियों के होश उड़ गये। तीसमारखाँ का नाम तो उन्होंने सुना ही था पर उनका यह विकराल रूप देखकर सिपाहियों के पैर उखड़ गये। वे भाग खड़े हुए। तीसमारखाँ ने बिना हाथ उठाये ही दुश्मन को भगा दिया। उनकी बहादुरी का सिक्का और भी बैठ गया।

लौटकर जब तीसमारखाँ अपने राजा के यहाँ पहुँचे तो उन्हें बहुत-बहुत इनाम-एकराम मिले। पर अब तीसमारखाँ ने राजा से छुट्टी की प्रार्थना की। राजा ने उनकी बहादुरी और राजसेवा के उपलक्ष में उन्हें बहुत सा धन देकर विदा किया।

तीसमारखाँ जब अपने गाँव लौटे तो लोग उनके भाग्य की सराहना करने लगे। अब तो उनकी बीबी भी उनका आदर करती थी।

मेरे भाई

लेखिका, श्री प्रियंवदा देवी

(१)

सतीश सुशील हैं मेरे भाई।
उनमें होती खूब लड़ाई।
भोली-भाली सूरत उनकी।
प्यारी प्यारी बातें उनकी।

(२)

बाबूजी जब दफतर जाते।
सेव शंतरे रोज मँगाते।
बाबूजी साइकिल पर जाते।
वे भी पीछे दौड़ लगाते।

(३)

सतीश सुशील हैं मेरे भाई।
उनमें जुटती खूब लड़ाई।
कभी नहीं हैं घर में रहते।
दूर दूर की दौड़ लगाते।

(४)

बाबूजी दफ़र से आते।
वे भी साइकिल पर चढ़ जाते।
सतीश सुशील हैं मेरे भइया।
माता उनकी लेय बलइया।

रबर बरतना में जमाया जा रहा है।

भारतीय रबर की कहानी

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी

आप लोग रबर के खिलौने और गेंद बहुत पसन्द करते है। लोहा और पीतल की तरह रबर खानों में नहीं पाया जाता। इसके पेड होते है जो भारतवर्ष, लङ्का, मलाया द्वीप और अमेरिका में अधिक सख्या में पाये जाते हैं। कहा जाता है कि पहले भारतवर्ष और लङ्का में रबर के पेड़ नहीं थे। आज से डेढ सौ वर्ष पहले हेनरी विकहम नामक एक अँगरेज दक्षिणी अमरीका के घने जङ्गलों से रबर के ७ हजार बीज ले आया और उन्हे इँगलैण्ड के एक बगीचे में बो दिया। वहाँ उगे हुए पेड़ों के बीज लङ्का और मलाया भेज दिये गये, जहाँ इस समय कई लाख एकड जमीन में रबर के पेड़ उगे हुए है।

एक एकड़ जमीन में लगभग १०० रबर के पेड़ लगाये जाते हैं। ऐसे पेडो के लिए अधिक पानी की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए ऐसी जगह रबर के पेड नहीं लगाये जा सकते जहाँ बरसात कम होती हो। रबर के पेड़ कमजोर मिट्टी में भी उगते है।

चार-पाँच साल में रबर के पेड़ का तना काफी मोटा हो जाता है और लोग उसमें से दूध निकालकर रबर बनाने लगते है। दूध निकालने के लिए पहले तने के छिलके को

रक्खे दोनों हाथों में चमकती हुई तलवारें लिये, बेतहाशा घोड़ा दौड़ाये, उनकी तरफ़ बढ़ा आ रहा है। उसके पीछे हजारों सवार ललकारते चले आ रहे हैं। अब तो दुश्मन के सिपाहियों के होश उड़ गये। तीसमारखाँ का नाम तो उन्होंने सुना ही था पर उनका यह विकराल रूप देखकर सिपाहियों के पैर उखड़ गये। वे भाग खड़े हुए। तीसमारखाँ ने बिना हाथ उठाये ही दुश्मन को भगा दिया। उनकी बहादुरी का सिक्का और भी बैठ गया।

लौटकर जब तीसमारखाँ अपने राजा के यहाँ पहुँचे तो उन्हें बहुत-बहुत इनाम-एकराम मिले। पर अब तीसमारखाँ ने राजा से छुट्टी की प्रार्थना की। राजा ने उनकी बहादुरी और राजसेवा के उपलक्ष में उन्हें बहुत सा धन देकर बिदा किया।

तीसमारखाँ जब अपने गाँव लौटे तो लोग उनके भाग्य की सराहना करने लगे। अब तो उनकी बीबी भी उनका आदर करती थी।

मेरे भाई

लेखिका, श्री प्रियम्वदा देवी

(१)

सतीश सुशील है मेरे भाई।
उनमें होती खूब लड़ाई।
भोली-भाली सूरत उनकी।
प्यारी प्यारी बातें उनकी।

(२)

बाबूजी जब दफ्तर जाते।
सेव शतरे रोज मँगाते।
बाबूजी साइकिल पर जाते।
वे भी पीछे दौड़ लगाते।

(३)

सतीश सुशील है मेरे भाई।
उनमें जुटती खूब लड़ाई।
कभी नहीं हैं घर में रहते।
दूर दूर की दौड़ लगाते।

(४)

बाबूजी दफ़्तर से आते।
वे भी साइकिल पर चढ़ जाते।
सतीश सुशील हैं मेरे भइया।
माता उनकी लेय बलइया।

रबर बरतनों में जमाया जा रहा है।

भारतीय रबर की कहानी

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी

आप लोग रबर के खिलौने और गेंदे बहुत पसन्द करते हैं। लोहा और पीतल की तरह रबर खानों में नहीं पाया जाता। इसके पेड होते हैं जो भारतवर्ष, लङ्का, मलाया द्वीप और अमेरिका में अधिक संख्या में पाये जाते हैं। कहा जाता है कि पहले भारतवर्ष और लङ्का में रबर के पेड़ नहीं थे। आज से डेढ सौ वर्ष पहले हेनरी विकहम नामक एक अँगरेज दक्षिणी अमरीका के घने जङ्गलों से रबर के ७ हजार बीज ले आया और उन्हें इंगलैण्ड के एक बगीचे में बो दिया। वहाँ उगे हुए पेड़ों के बीज लङ्का और मलाया भेज दिये गये, जहाँ इस समय कई लाख एकड जमीन में रबर के पेड़ उगे हुए हैं।

एक एकड़ जमीन में लगभग १०० रबर के पेड़ लगाये जाते हैं। ऐसे पेडों के लिए अधिक पानी की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए ऐसी जगह रबर के पेड नहीं लगाये जा सकते जहाँ बरसात कम होती हो। रबर के पेड कमजोर मिट्टी में भी उगते हैं।

चार-पाँच साल में रबर के पेड़ का तना काफी मोटा हो जाता है और लोग उसमें से दूध निकालकर रबर बनाने लगते हैं। दूध निकालने के लिए पहले तने के [illegible]

रबर के जङ्गल का एक दृश्य।

रबर का दूध इकट्ठा किया जा रहा है।

किसी तेज औजार से चाकोर काट देते हैं तब उसमें से धीरे-धीरे दूध टपकने लगता है। छिलका काटने में भी काफी सावधानी रखनी पड़ती है, क्योंकि यदि वह बहुत गहराई तक कट जाय तो लाभ की जगह हानि ही होगी। पहले लोग अधिक दूध इकट्ठा करने के लालच में आकर तने के छिलके को प्रतिदिन काट दिया करते थे। परन्तु अब यह बात सिद्ध हुई है कि प्रतिदिन तने के छिलके का काटना पेड़ के लिए हानिकारक है। प्रायः रबर के एक पेड़ से २० से ३० गैलन तक दूध मिलता है और एक गैलन दूध से लगभग दो पौण्ड रबर तैयार होता है।

छिलका काटने पर पेड़ का दूध धीरे-धीरे टपकने लगता है। उसे इकट्ठा करने के लिए तने में एक प्याला टाँग दिया जाता है। जब प्याला दूध से भर जाता है तो दूध रखने के बर्तन में उसे उड़ेल कर प्याला खाली कर लिया जाता है और भरने के लिए वह दुबारा टाँग दिया जाता है। बड़े-बड़े बरतनों में रबर के पेड़ों का दूध भरकर गोदाम में रक्खा जाता है जहाँ वह छान लिया जाता है। जिस आकार के रबर की आवश्यकता होती है उसी आकार के बरतन में रबर के पेड़ों का दूध डाल दिया जाता है। ऐसिड तथा अन्य चीजें मिलाने से रबर जम जाता है। रबर जमाने में लगभग १२ घण्टे का समय लगता है। जमे हुए रबर के बरतनों में से निकाल लिये जाते हैं और वे बेलन के नीचे दबाये जाते हैं। ऐसा करने से रबर के तख्ते चिकने हो जाते हैं और उनका खुरदरापन दूर हो जाता है। किनारा ठीक करने के लिए रबर के तख्ते एक प्रकार के दूसरे बेलन के नीचे दबाये जाते हैं। रबर के तख्ते तैयार करते समय उनके किनारों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, क्योंकि अगर किनारा कटा रहेगा तो उससे पूरा तख्ता खराब हो जायगा।

अधिकतर यह प्रयत्न किया जाता है कि रबर के तख्तों के किनारे कुछ उठे रहें, क्योंकि ऐसा होने से अधिक तख्तों को एक साथ रखने और उन्हें अलग करने में सहायता मिलती है। तख्ते तैयार कर लेने पर वे पानी से धो लिये जाते हैं और सूखने के लिए रैकों पर टाँग दिये जाते हैं। इसके बाद वे ऐसे कमरे में रक्खे जाते हैं, जहाँ धुआँ होता है। तख्ते धुएँ में इसलिए रक्खे जाते हैं कि वे अच्छी तरह सूख जायँ और फिर पानी पड़ने पर सड़ न सकें। जो तख्ते धुएँ में नहीं रक्खे जाते वे बहुत जल्द सड़ने लगते हैं। धुआँ देने के लिए नारियल का छिलका जलाया जाता है या कोई और कड़ी लकड़ी। धुएँ में रक्खे जाने के बाद रबर के तख्ते काम में लाने के लिए बाहर भेजे जाते हैं और उनसे लड़कों के खिलौने, जूते, थैलियाँ, मोटर और साइकिल के ट्यूब-टायर इत्यादि वस्तुएँ बनती हैं। योरप में कुछ सड़कें ऐसी हैं जिनपर रबर के तख्ते बिछाये गये हैं।
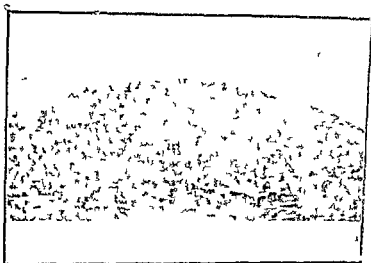
चित्रकूट का एक सुन्दर दृश्य।

चित्रकूट

लेखक, श्रीयुत गोविन्दराव मराठे

कुछ दिवस हुए—हम चित्रकूट
से घर आये आनन्द लूट
हम चले रात की ट्रेन पकड़
'कर्वी' स्टेशन पर गये उतर।
फिर 'कर्वी' से पैदल चलकर
'राघवप्रयाग' कुछ देर ठहर,
'कामदगिरि' की शोभा लखकर,
'कामता रजौला'* से होकर—
पिस्तौल, कैमरा, गन लेकर—
हम पहुँचे 'स्फटिकशिला' जाकर।
था चारों ओर घना कानन,
इसलिए साथ में ले ली गन।

पर मिला नहीं कोई वनचर,
केवल कुछ दीख पड़े वानर।
सुन्दर मोरों के दल के दल
थे करते 'जङ्गल में मङ्गल'।
है 'चित्रकूट' में जितने स्थल
शोभा से भरे हुए झलमल,
यह विदित हुआ उनको लखकर—
है 'फटिकशिला' सरस सुन्दर।
मानो है जग का नन्दन-वन
सुन लो उसका शोभा वर्णन।
दर्पण सी 'पयस्विनी' का जल,
बहता रहता कल-कल छल छल।

यात्री यात्रा के मार्ग
* चित्रकूट की एक रियासत, जो श्री राव साहब राधाकृष्णजी के अधिकार में है। ...ने इस कविता के कई प्रमा
हम लोग राव साहब के यहाँ दो दिन थे। वहाँ के युवराज श्री राव ... आदि
हैं—आगे की यात्रा में हम लोगों का साथ दिया था। वहीं से हम लोगों को पिस्तौल, बन्दूक, कारतूस
वस्तुएँ मिली थीं। इस कृपा के लिए हम राव साहब तथा युवराजजी के चिर कृतज्ञ हैं।

जिसमें मछलियाँ सदा उन्मन
करती रहतीं स्वच्छन्द भ्रमण;
तट पर कुछ चट्टानें उज्ज्वल
हैं युगों-युगों से पड़ी अचल;
जिनपर पैरों के चिह्न अमर
हैं बने हुए कतिपय सुन्दर।
वन-वास-समय सीता-लक्ष्मण
के साथ यहाँ दशरथ-नंदन—
थे रहे शान्ति-सुख से आकर
उनके ही ये पद-चिह्न अमर।
इस पार नदी के हैं द्रुम-दल
उस पार नदी के हैं द्रुम-दल,
मँझधार नदी के हैं द्रुम-दल
मनुहार नदी के हैं द्रुम-दल।

हैं हरे-भरे ऊँचे द्रुम-दल
हैं हरे-भरे नीचे द्रुम दल।
उड़ इधर-उधर चिड़ियाँ कलरव
करतीं रहतीं अभिनव-अभिनव।
मँझधार नदी में जो द्रुम दल
उन पर बगुलों के दल के दल,
निज-निज शिकार करने में रत
रहते हैं पूरे बने भगत।
निज सुरभित-शीतल मन्द पवन
रवि शशि आतप में बह सन-सन,
प्रति रोम-रोम में ला सिहरन
आनन्दित कर देता है मन।
ऐसा है 'स्फटिकशिला' का स्थल
भारत का इक गौरव उज्ज्वल।

वर्षा-ऋतु

लेखिका, कुमारी उषा

रिम झिम रिम झिम पानी बरसे,
उसे देखने को जी तरसे।

देखो, कैसा है यह सावन,
सुखदायक, मनहर औ पावन।
हरियाली चहुँ ओर सुहाती,
मेरे मन को अच्छी भाती।
लाल गुलाबी नीले पीले,
फूल खिले हैं बड़े रसीले।

कोयल कू कू कूक रही है,
जी में मेरे हूक रही है।
कभी कनेरी चीं चीं करती,
फुदक-फुदक मन को है हरती।
आली बरसा अच्छी आई,
मेरे मन को बड़ी सुहाई।

चमेली का फूल

लेखक, श्रीयुत कुमार बुद्धिभद्र

(१)

एक बड़े महल के सामने सुन्दर बगीचे में हरे पौधे के ऊपर, वह सफेद चमेली का फूल फूला। उसकी पँखुड़ियाँ कोमल थीं, खुशबू मीठी थी और हवा के साथ उसका झूमना अजीब था। जब रात की काली चादर खींचकर सूरज उसे लाल रंग में डुबो देता तो कितने ही फूल ठठाकर हँस पड़ते। भौंरे गुनगुनाने लगते और शहद भरी बोली में बुलबुल गा उठती।

हाँ, तो वह चमेली का फूल था नन्हा सा खुश। दूसरे के दुःख से दुःखी होनेवाला, सबके सुख से हँसनेवाला।

एक दिन दोपहर के बाद जब वह फूल पास के एक साथी से बहुत पुराने जमाने की एक कहानी सुन रहा था, तभी न मालूम कहाँ से चहकती हुई एक बुलबुल पास ही डाली पर आकर बैठ गई। अपनी लाल चोटी को चमकाकर उसने कितना अच्छा गाना गाया, और उस चमेली के फूल को उसने प्यार से चूम लिया।

एकाएक निहँसकर वह चमेली का फूल कह उठा—प्यारी बुलबुल बहन! तुम तो बड़ा अच्छा गाती हो। उड़कर तुमने इस दुनिया की न जाने कितनी अजीब बातें देखी होंगी। और मैं इस बाग के भीतर ही पड़ा हूँ। बहन, क्या तुम मुझे एक कहानी न सुनाओगी?

बुलबुल ने कहा—हाँ, हाँ, नन्हे फूल भैया, मैं तुम्हें जरूर कहानी सुनाऊँगी। तुम कितने अच्छे हो। कितने भोले हो और कितने सुन्दर! एक नहीं, मैं तुम्हें तमाम कहानियाँ रोज ही सुनाऊँगी और तमाम गाने।

इसके बाद बुलबुल ने एक कहानी कही। फूल चुपचाप सुनता रहा और अन्त में जब शाम को चहचहाती हुई तमाम चिड़िया अपने बसेरों को चलीं तो बुलबुल भी फूल को चूमकर उड़ गई।

(२)

यह जैसे रोज का नियम था। बुलबुल आकर फूल को कहानियाँ और गाना सुनाती, फूल मुग्ध होकर उसके मुँह की ओर ताकता रहता। दोनों दीदी-भैया एक दूसरे को बहुत प्यार करने लगे, बहुत प्यार।

लेकिन एक दिन फूल के पास बैठी बुलबुल को तीन चार लड़के लासा लगाकर पकड़ ले गये। बुलबुल चीख उठी, फूल गुस्से से काँप उठा, लेकिन दोनों बेचारे क्या करते।

बुलबुल को लड़कों ने एक सुनहले पिंजड़े में रक्खा और उसे दाना पानी भी देने लगे लेकिन दुनिया में स्वतन्त्रता से रहनेवाली

बुलबुल इस जरा से पिंजड़े में बन्द होकर, ख़ुश रहे तो कैसे ? चारा पानी करे तो कैसे ? और लड़कों को फ़िक्र हुई, बुलबुल किस तरह कब्जे में आवे।

एक ने कहा, पिंजड़े में लाकर कुछ हरी डालियाँ और फ़ूल सजाये जायँ तो शायद बुलबुल ख़ुश रहे और तब तीन-चार लड़के फूल और डालियाँ काटने चल दिये।

बुलबुल का भैया चमेली का फूल दीदी के वियोग में रो रहा था, कलप रहा था, जाने वह कहाँ गई सदा के लिए उसे छोड़कर।

लड़कों ने आकर उसी फूल की जड़ काटी। सुकुमार चमेली का फूल दर्द से कराह उठा। लेकिन पिंजड़े में पहुँचकर जब उसने देखा दीदी बुलबुल ! तो दर्द में भी वह मुस्कुरा उठा।

रात के सन्नाटे में, जब लड़के सो गये थे, मुर्झाते हुए फूल ने कहा—दीदी, एक कहानी ?

दुखी और परवश बहन क्या कहती, फिर भी उसने कहा। सारी रात उसने आदमियों के अत्याचारों की तमाम कहानियाँ कह डालीं। और सुबह जब आसमान लाल हो रहा था, बुलबुल ने सारा जोर लगाकर एक गाना गाया, बहुत करुण, बहुत करुण, इतना कि टूटते हुए तारे भी रो उठे।

एकाएक फूल भैया ने देखा कि उसकी दीदी गाना खतम करके सो गई, सदा के लिए सो गई।

(३)

सुबह मरी हुई बुलबुल को लड़कों ने अपने घर के पिछवाड़े गाड़ दिया। ऊपर वही कटी हुई चमेली की डालियाँ सजा दीं। 'बेचारी बुलबुल बड़ी अच्छी थी, जाने क्यों मर गई"—कहते हुए लड़के चल दिये।

लेकिन दीदी की क़ब्र पर चढ़ा हुआ वह चमेली का फूल ? उसके दुख को कौन समझे, उसका रोना कौन सुने और कौन आवे उसे समझाने !

दुपहर की कड़ी धूप में उसकी कोमल पँखड़ियाँ सूख गईं, काली काली होकर बिखर गईं लेकिन अभी जैसे हवा के साथ उड़ उड़ कर वे कह रही थीं—"दीदी, मेरी प्यारी दीदी ! एक कहानी, एक गाना, कह दो न-सुना दो न !"

मोर

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण त्रिपाठी 'श्याम' विशारद

वन में खूब विचरते मोर, सबके मन को हरते मोर।
नीले हरे रँगीले मोर, चमक रहे चमकीले मोर।
सब चिड़ियों से न्यारे मोर, मुझको लगते प्यारे मोर।
सिर पर मुकुट सजाये मोर, राजा हैं वन आये मोर।
सुन्दर नाच दिखाते मोर, परों को फैलाते मोर।
मेरे पास न आते मोर, मुझको नित तरसाते मोर।

बचपन की एक मज़ेदार कहानी

मुनिया की गुड़िया

सागर, बाबू सुबोधकुमार अग्रवाल

(१)

मुनिया की गुड़िया रानी का ब्याह होनेवाला था। उसके लिए काफी तैयारी हो रही थी। मैंने कहा, "मुन्नी, गुड़िया रानी के विवाह में क्या-क्या सामग्री और लाऊँ? मैंने तो लड्डू, बरफी, दिलकुशाल, गुलाब जामुन, इत्यादि मिठाइयाँ इकट्ठी कर ली है।" उसने एक गम्भीर दृष्टि से देखा और फिर गुड़िया के शृङ्गार में लग गई, मानो उसने मुझे देखा ही नहीं। "मुन्नी, ओ री मुनिया", मैंने ज़ोर से पुकारा। "त्या तान फाल दालोदे?" मैंने कहा, "सुन"। "मुद सुनता है तुमने बद्ध तुमाले थाने ती तीदें बना लीं" और क्या "तुद्ध चरचरा भी बनाते। मैं भी था लेती।"

"अब बना दूँ?"

"दान तो आ दायदी, फिल बनाते लेना।"

मैंने अपना भरिया और गूँदी हुई बालू लेकर फौरन नमकीन उतार डाली। "यह लो तैयार है।"

मुन्नी—"भइया, तुम मुदे बद प्याले लगते हो।"

उस समय हमारी उम्र केवल ६ ७ साल की थी।

(२)

शाम को ५ बजे गुड़िया रानी की बरात आई। घर के बाहर चबूतरे पर चटाई बिछा-कर उन्हें बैठाया गया। पड़ोस के बहुत से बच्चे बराती बन करके आये थे। मोहन, गोविन्द, हरी आदि मेरी ओर से आये थे। मैं दौड़ा हुआ घर में गया। "मुन्नी जीजी, बरात आ गई है।" सुनते ही दादी और बुआ भी बारात देखने के लिए निकलीं। मुन्नी, गिन्नी और सीता आदि सहेलियाँ अपने साथ अपनी गुड़ियों की पिटारी ले आई थीं। मुन्नी हँसती हुई बोली, "दिन्नी बहन, लानी तो तपले पहनाओ, छीता देने छजाओ।" मुझे एक ओर ले गई "तो त्या इन तब तो मित्ती ही ती मिठाई थिलाओदे?"

"नहीं, लड्डू भी मँगाये हैं।"

बरातियों को मिट्टी ही की मिठाई नहीं, चार पैसे के लड्डू भी खिलाये गये थे। ये लड्डू बुआ ने मँगा दिये थे।

विवाह हो गया। गुड़िया रानी दूलह की पालकी में बिठा दी गई। उसको बहुत सा दहेज भी दिया गया। दो परात बरफी, एक परात लड्डू और और भी मिठाइयाँ दी गईं। मोतियों के गहने, छल्ले जो बिसाती

से लिये गये थे, कोट, कमीज, टोपी, जो बुआ ने बना दिये थे, दिये गये।

अब गुड़िया रानी की पालकी चली। मुनिया की आँखों में आँसू भर आये। उसने गुड़िया की तरफ देखकर मेरी ओर एक अपूर्व कातर दृष्टि से देखा। गुड़िया रानी चली गई। मेरी आँखें भी आँसुओं की धार गिराने लगीं।

(३)

शाम को भोजन नहीं भाया। मुनिया बहुत दुःखी थी। हमें १० बजे तक नींद नहीं आई। मुनिया कभी सोती, कभी बैठती, कभी अपनी गुडियावाली सन्दूक देखकर फूट-फूटकर रोने लगती। मैं भी फूट-फूटकर रोता।

अम्मा को जब नींद आ गई, मुनिया चुपके से बोली "भइया, तलो अपनी दुलिया लानी तो ले आवें। क्या वे अब उछे अपने घल नहीं आने देंदे?" हमने चुपके से दरवाजा खोला। उस समय हीरा को मकान में घुमते देखा। वह और सारदा गुड्डे को सुलाने में मस्त थे। मुन्नी मुस्करा दी। आहट पाकर हीरा बोल उठा "क्योजी, क्या हमारे दूल्हे को नहीं सोने दोगे?" मुनिया—"तो हमाली दुलिया दे दो बछ।" "इस वक्त गुड़िया रानी सोती है।" "छोती है?" क्षण भर के लिए उसके होठों पर एक मधुर हँसी झलक उठी। उसने कहा "भइया, इनछे अपनी दुलिया ले लो" और वह रोने लगी। मैं भी रो पड़ा। वे भी रो पड़े।

उडनखटोला

लेखक, श्रीयुत कुमार बुद्धिभद्र

आसमान में चाँद समूचा
आज हुआ है, कितना ऊँचा।

उजले उजले छोटे बादल
उड़ते हैं जितने दल के दल
कभी चाँद का मुँह ढक लेते
नहीं किसी को तकने देते।
बाहर खटिया पर हम लेटे
उसे देखते राजा बेटे।
ऐसा लगता, ऐसा लगता
बड़े जोर से चन्दा भगता।

खटिया जैसे उडन-खटोली
चीर-चीर बादल की टोली,
बडे जोर से सन् सन् उडती
कितनी फुर्ती, कितनी फुर्ती,
छोड दूर पीछे के बादल
लाँघ चाँदनी झलमल झलमल
पहुँच रही है धीरे-धीरे
जहाँ चमकते हैं कुछ हीरे।
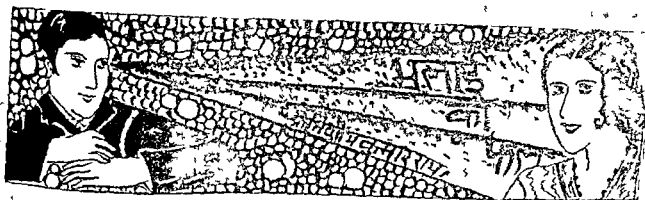
एक छोटे से मदान में दूर-दूर पर कई एक दीन के घर बने हुए हैं। उन्हीं घरों को छूती हुई एक टेढ़ी-मेढ़ी कच्ची सड़क चली गई है। शाम से बारिश हो रही है! रास्ता बिलकुल सुनसान!! एक भी आदमी दिखाई नहीं देता। अभी अभी शाम हुई है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि एक पहर रात बीत गई हो।

मैदान के आखिर में सुधीर बाबू का घर है। सुधीर बाबू बड़े धनवान् है, पर उनके दिल को चैन नहीं है।

कई दिनों से इस ओर डाके बहुत पड़ रहे थे और यह डर था कि सुधीर बाबू के घर र भी जल्द डाका पड़ेगा। इसी कारण धीर बाबू ने डर के मारे घर के सभी हथियार कट्ठे कर लिये और उन्हें अपने सिरहाने रख लिया। लेकिन कभी-कभी रात को वह रह-हकर चौंक उठते है, और उन्हें ऐसा मालूम होता है कि कमरे के बाहर कोई दबी आवाज बातचीत कर रहा है। अभी तक बारिश द नहीं हुई। धीरे धीरे रात आ गई। वह र भी सोने नहीं गये। उनकी स्त्री आई और कहने लगी "आओ, अब सो जाओ। इस बारिश में कौन अपने गर्म बिस्तर को छोड़कर तुम्हारे घर चोरी करने आयेगा।" सुधीर ने कहा—"हाँ, अब तो सोने जा रहा हूँ। लेकिन ऐसा मालूम हो रहा है कि कोई दरवाजे पर धक्के पर धक्के मारता चला जा रहा है।" स्त्री कहने लगी, "कोई दरवाजे पर धक्का नहीं मार रहा है, बल्कि तुम्हारे सर पर धक्का मार रहा है।"

—"नहीं, कान लगाकर सुनो। कोई शायद मुझे पुकार रहा है।" यह कहकर सुधीर एकदम खड़े हो गये। उन्होंने बन्दूक उठा ली और थरथराती हुई आवाज से कहा—"कौन है?" उनकी स्त्री हँसती हुई बोल उठी—वाह! डाकू लोग ऐसे बेवकूफ थोड़े ही हैं कि तुम्हें अपना नाम धाम बतावेंगे!

सुधीर ने स्त्री की बात पर ध्यान नहीं दिया, और फिर चिल्लाकर पूछा—"तुम कौन हो?" अब की बार किसी ने भीगी हुई आवाज में उत्तर दिया—मैं!—

—आप कौन?

म आपका भतीजा मनीन्द्र हूँ।
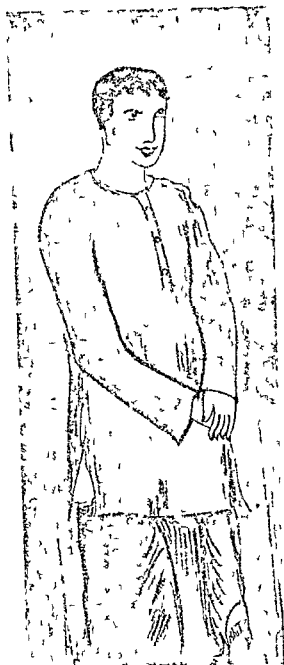
बन्द थे पर वे जान न सके कि किस तरह मनीन्द्र उन्हें खोलकर भीतर घुस आया और उन्हें उसने फिर बन्द कर दिया।

उसे देखते ही सुधीर बाबू डर के मारे सिटपिटा गये। चाचाजी की अवस्था देख-कर वह हँसकर बोला—"आप जानते हैं .? आपके घर कल डाकू आये थे. .... और मैंने उन्हें एक विचित्र उपाय से भगाया था!!! इसका नतीजा यह हुआ कि आपने पुलिस वालों को बतलाया कि मैं डाकुओं का सरदार हूँ और मेरा नाम भी लिखवा दिया! देखिए उस दिन किस उपाय से मैंने चोर और डाकुओं को भगाया था!! दिखलाने के लिए ही मैं आपके पास आया हूँ!!! देखिए .. देखिए . उसका" स्वर धीमा होता गया और सारे शरीर से मांस के लोथड़े निकलते गये और कुछ देर में ही वह एक नर-कङ्काल बनकर गायब हो गया।

दूर सुनाई देने लगा 'आपने भलाई करनेवाले के साथ इस प्रकार अविश्वास किया!!!! . . .

दूसरे दिन दारोगाजी ने सुधीर बाबू को खबर दी—मनीन्द्र एक महीना पहले एक्सीडेण्ट (आकस्मिक दुर्घटना) में मर गया है। इस समय उस नाम का कोई यहाँ नहीं रहता।*

---

* एक विदेशी कहानी के आधार पर।

हाथी बड़े आराम और ठाट बाट से रक्खे जाते हैं।

हाथी

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

पृथिवी पर रहनेवाले चौपायों में हाथी सबसे विशाल जन्तु है। सीलोन का हाथी ऊँचाई में नौ फीट तक पाया गया है। एक बार जापान में एक ऐसा हाथी पकड़ा गया था जिसकी ऊचाई १२ फीट १ इञ्च थी। सुनने में आता है कि एक बार ईरान के बादशाह ने रूस के सम्राट् पीटर दि ग्रेट के पास एक हाथी की १२ हाथ ऊँची ठठरी भेजी थी। टीपू सुलतान के समय में ९ फीट ऊँचे हाथी काम में लाये जाते थे। मध्य अफ्रीका में १२½ से १४ फीट तक के ऊँचे हाथी देखे गये हैं। हाथी जैसा ऊँचा होता है वैसा ही भारी भरकम भी होता है। बलवान् तो वह ऐसा होता है कि पक्का तीस मन का बोझ लेकर २० मील तक जा सकता है। वह एक मन चावल खाकर ३½ मन पानी पी सकता है। ऐसे भी हाथी पाये गये हैं जो ४० मन तक बोझ ढो सकते हैं और ४ मन तक आहार पचाने की शक्ति रखते हैं।

भारी भरकम शरीर के साथ ही साथ हाथी में अगणित गुण भी होते हैं। वह बला का बलवान् होता है। आज तोप, बम के गोले और हवाई जहाज के युग में हाथियों का आदर नहीं रहा, परन्तु प्राचीन काल में हाथियों से लड़ाइयों में आफत मच जाती थी। महाभारत में अनेक बड़े, बलिष्ठ

साधु-वेष धर दसकन्धर ने
जनकसुता हर आनी ॥
लङ्का गढ पर हुई चढ़ाई,
मरा शत्रु अभिमानी।
सीता साथ राम घर आये
कथा सभी की जानी ॥
नाती, सुन लो, रामकहानी !

मैंने देखी थी बचपन में
रामायण की पोथी।
पढ़ लिखकर विदुषी बन जाऊँ,
यह इच्छा जी को थी ॥
किन्तु, सगुन जब किया, हाय,
तब मिला मुझे यह उत्तर।
विद्या नहीं लिखी किस्मत में,
फिर क्या होगा पढ़कर ?
जी छोटा हो गया हमारा,
सब उत्साह हुआ कम।
मूर्खा मैं रह गई, नहीं
पढ़ने में किया परिश्रम ॥
करके उसकी याद आज भी,
मैं बैठी पछताती,
ऐसी गलती तुम मत करना,
सुन लो, मेरे नाती।
नाती, सुन लो, रामकहानी !

× × ×

सम्पादकजी, भेज रहा हूँ
मैं यह 'रामकहानी'।
कैसे इसमें चिट्ठी भेजूँ,
होती है हैरानी ॥
डाक-भवन के सब डाकू हैं,
डाका डाला करते।
बैरंग ठप्पे लगा लगाकर
तुरत दिवाला करते ॥
कहते हैं–'चिट्ठी लिखते हो,
पूरे टिकट लगाओ।
पास नहीं पैसे हों तो,
मत लिखो, मौन रह जाओ' ॥
लेकिन मुझको लिखना ही है,
देखें वे क्या करते।
कहता हूँ, यह छपने को है,
हम हैं तनिक न डरते ॥
अच्छा अब यह पूछ रहा हूँ,
ठाकुर, सम्पादक - वर !
मेरी पहली चिट्ठी का क्यों
मिला न अब तक उत्तर ?
मैंने विवरण पत्र आप से
सम्मेलन का माँगा ॥
किन्तु, आपने दिया न उत्तर,
मैं हूँ अजब अभागा।
यदि उसमें पैसे लगने थे
एक पत्र लिख देते,
फिर हमको जो करना होता
हम उसको कर लेते ॥
अब भी तो कुछ कृपा कीजिए,
मैं कर रहा प्रतीक्षा।
मित्र भाव की आज आपके
है यह अग्नि-परीक्षा ॥
और न कुछ मुझको लिखना है,
इतनी ही थी अर्जी !
माफ कीजिए, सम्पादकजी,
लेखक की खुदगर्जी ॥

हाथी बड़े आराम और ठाट बाट से रक्खे जाते हैं।

हाथी

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

पृथिवी पर रहनेवाले चौपायों में हाथी सबसे विशाल जन्तु है। सीलोन का हाथी ऊँचाई में नौ फीट तक पाया गया है। एक बार जापान में एक ऐसा हाथी पकड़ा गया था जिसकी ऊँचाई १२ फीट १ इञ्च थी। सुनने में आता है कि एक बार ईरान के बादशाह ने रूस के सम्राट् पीटर दि ग्रेट के पास एक हाथी की १२ हाथ ऊँची ठठरी भेजी थी। टीपू सुलतान के समय में ९ फीट ऊँचे हाथी काम में लाये जाते थे। मध्य अफ्रीका में १२½ से १४ फीट तक के ऊँचे हाथी देखे गये हैं। हाथी जैसा ऊँचा होता है वैसा ही भारी भरकम भी होता है। बलवान् तो वह ऐसा होता है कि पक्का तीस मन का बोझ लेकर २० मील तक जा सकता है। वह एक मन चावल खाकर ३½ मन पानी पी सकता है। ऐसे भी हाथी पाये गये हैं जो ४० मन तक बोझ ढो सकते हैं और ४ मन तक आहार पचाने की शक्ति रखते हैं।

भारी भरकम शरीर के साथ ही साथ हाथी में अगणित गुण भी होते हैं। वह बला का बलवान् होता है। आज तोप, बम के गोले और हवाई जहाज के युग में हाथियों का आदर नहीं रहा, परन्तु प्राचीन काल में हाथियों से लड़ाइयों में आफत मच जाती थी। महाभारत में अनेक बड़े, बलिष्ठ

हाथियों की चरचा मिलती है। अश्वत्थामा नाम का हाथी भीम ने मारा था। राजा भगदत्त और भूरिश्रवा के हाथी भी बड़े विकराल थे। राजा रघु और इन्द्र के युद्ध में हाथी की भयानक शक्ति का आभास मिलता है। इतिहासों में भी हाथियों का पर्याप्त वर्णन है। सिकन्दर और पोरस के युद्ध में हाथियों ने प्रलय मचा दी थी। चन्द्रगुप्त और अशोक के समय में भी लड़ाके हाथियों की बहादुरी का बखान मिलता है। राजा उदयन का हाथी प्रसिद्ध है। विक्रमादित्य और शालिवाहन के युद्ध में हाथियों ने जो उपद्रव मचाया था, उसे देखकर बड़े-बड़े सैनिकों के दिल दहल गये थे। मुहम्मद गजनवी की सेना में मदान्ध हाथियों का एक जबरदस्त दल था जो बड़ी-बड़ी इमारतों की पक्की दीवारों को धक्के दे देकर गिरा देता था, विशाल खम्भों को उखाड़कर ऊँची छत को भूमिसात कर देता था। पृथिवीराज और मुहम्मद गोरी की लड़ाई में हाथियों ने तोप तक को तोड़-मरोड़ डाला था। हाथी की लड़ाई जगत्प्रसिद्ध है। इतिहास साक्षी है कि प्राचीन काल में अनेक राजा-महाराजाओं को हाथी की लड़ाई देखने का अत्यन्त शौक था। मुगल सम्राट् अकबर मत्त गजेन्द्रों के युद्ध को बड़े चाव से देखता था। उसे बलवान् हाथियों के रखने का भी था। औरंगजेब के विषय में सुना है कि वह लड़ते हुए हाथियों के बीच में जाकर उन्हें अलग कर देता था। उदयपुर के राणाओं के यहाँ भी दशहरे के दिन हाथियों की लड़ाई हुआ करती थी। भारत के राजाओं में कुछ आज भी ऐसे हैं जो बलिष्ठ, गुणवान् और मूल्यवान् हाथी रखने के शौकीन हैं। भारत की कई देशी रियासतों में हाथियों की समाधि पर सुन्दर छतरियाँ बनी हुई हैं। आज भी हाथी बड़े आराम और ठाट-बाट से रक्खे जाते हैं और मोती, यमुना, गङ्गा जैसे प्यारे नामों से सम्बोधित किये जाते हैं। किसी मेले या बरात में जब जरी की काम की हुई रेशमी झूलों से सुसज्जित हाथियों की कतार चलती है तो देखते ही बनता है।

हाथी जितना बलवान् होता है उससे कहीं अधिक साहसी होता है। पहाड़ी खड्डों से भरे घने जङ्गलों में शिकार खेलने के लिए सबसे अधिक सुविधाजनक सवारी हाथी की ही समझी जाती है। जिस समय शेर तड़पता है और हाथी के मस्तक पर पञ्जा जमा देता है उस समय भी कुछ ऐसे हाथी हैं जो भय से घबराते नहीं, बल्कि क्रोधान्ध होकर गरज उठते हैं। उस समय उनकी गरज बादल की गरज के समान प्रतीत होती है। शेर के शिकार में भी शोखी दिखाना हाथी का ही काम है।

हाथी जब क्रोधित होता है तो उसके गले से बड़ा ही भयङ्कर शब्द निकलता है। ऐसा देखा गया है कि क्रोधान्ध हाथी अपने

पुष्ट दन्त मूसलों के भीषण प्रहार से दीवारों को गिरा देता, पेड़ों को चीर डालता, शहतीरों को खींच-खींचकर छप्पर को उजाड़ देता और लोहे के सीकचों से बने हुए मजबूत फाटकों की भी शकल बिगाड़ देता है। जङ्गली हाथी जब क्रोधान्ध होकर दौड़ता है तो उसके सामने रास्ते में कोई वृक्ष भी बाधा नहीं डाल सकता। कितने ही वृक्षों का समूल ध्वंस हो जाता है, कितनी ही मोटी-मोटी डालें टूट पड़ती हैं, और घनी झाड़ियाँ मसल जाती हैं। बिगड़ैल जङ्गली हाथी कभी-कभी बाघ-सिंह से भी भिड़ जाता है। उस समय वृक्ष की स्थूल शाखाओं से वह शस्त्र का काम लेता है और उसके वज्राघाती दंत तो पर्वत की शिलाओं को भी चूर्ण करनेवाले होते हैं। क्रोधित होने पर उसके शत्रु को पृथ्वी पर शरण मिलना कठिन हो जाता है।

यहाँ रहा हाथी लट्ठ भी ढोता है।

साहस और बल के अतिरिक्त हाथी में और भी अनेक गुण होते हैं। वह स्वामि भक्त, आज्ञाकारी, स्वाभिमानी, दयालु, कृतज्ञ और समझदार होता है। वह अपमान या तिरस्कार को बर्दाश्त नहीं कर सकता। प्यार और उपकार को झट ताड़ जाता है, और बदले में कृतज्ञता भी प्रकट कर देता है। उसकी बुद्धि विशेष प्रखर होती है। सरकसों में हाथियों की करामात देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। सिखाये जाने पर हाथी सूँड से चँवर डुलाते हैं, सलामी देते हैं, तलवार भाँजते हैं और बच्चों को धीरे से उठाकर कन्धे पर चढ़ा लेते हैं। सिखाया हुआ हाथी स्वर ताल पर नाचता, धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ता, बन्दूक चलाता, तिपाई पर बैठता, रस्सी की गाँठ खोलता, पुस्तक के पन्ने पलटता, गगरे के जल से स्नान करता, पेड़ों से फल-फूल तोड़ता, आइना दिखाता और गले में माला पहनाता है।

रङ्गून के जङ्गलों में बहुत से हाथी सागौन के लट्ठे ढोने का काम करते हैं। उनके काम का समय नियत होता है—प्रातःकाल ६ बजे से ११ बजे तक और ३ बजे से सूर्यास्त तक सायङ्काल। ज्योंही ११ बजता है, वे अपना काम बन्द कर देते हैं। फिर महावत की कोई भी शक्ति उन्हें लट्ठा लेकर आगे नहीं बढ़ा सकती। यहाँ तक कि यदि वे कोई लट्ठा लेकर जा रहे हों

हाथियों की चरचा मिलती है। अश्वत्थामा नाम का हाथी भीम ने मारा था। राजा भगदत्त और भूरिश्रवा के हाथी भी बड़े विकराल थे। राजा रघु और इन्द्र के युद्ध में हाथी की भयानक शक्ति का आभास मिलता है। इतिहासों में भी हाथियों का पर्याप्त वर्णन है। सिकन्दर और पोरस के युद्ध में हाथियों ने प्रलय मचा दी थी। चन्द्रगुप्त और अशोक के समय में भी लड़ाके हाथियों की बहादुरी का बखान मिलता है। राजा उदयन का हाथी प्रसिद्ध है। विक्रमादित्य और शालिवाहन के युद्ध में हाथियों ने जो उपद्रव मचाया था, उसे देखकर बड़े-बड़े सैनिकों के दिल दहल गये थे। मुहम्मद गजनवी की सेना में मदान्ध हाथियों का एक जबरदस्त दल था जो बड़ी-बड़ी इमारतों की पक्की दीवारों को धक्के दे देकर गिरा देता था, विशाल खम्भों को उखाड़कर ऊँची छत को भूमिसात कर देता था। पृथिवीराज और मुहम्मद गोरी की लड़ाई में हाथियों ने तोप तक को तोड़-मरोड़ डाला था। हाथी की लड़ाई जगत्प्रसिद्ध है। इतिहास साक्षी है कि प्राचीन काल में अनेक राजा-महाराजाओं को हाथी की लड़ाई देखने का अत्यन्त शौक था। मुगल सम्राट् अकबर मत्त गजेन्द्रों के युद्ध को बड़े चाव से देखता था। उसे बलवान् हाथियों के रखने का [illegible] भी था। औरंगजेब के विषय में सुना [illegible]है कि वह लड़ते हुए हाथियों के बीच में जाकर उन्हें अलग कर देता था। उदयपुर के राणाओं के यहाँ भी दशहरे के दिन हाथियों की लड़ाई हुआ करती थी। भारत के राजाओं में कुछ आज भी ऐसे हैं जो बलिष्ठ, गुणवान् और मूल्यवान् हाथी रखने के शौकीन है। भारत की कई देशी रियासतों में हाथियों की समाधि पर सुन्दर छतरियाँ बनी हुई हैं। आज भी हाथी बड़े आराम और ठाट-बाट से रक्खे जाते हैं और मोती, यमुना, गङ्गा जैसे प्यारे नामों से सम्बोधित किये जाते है। किसी मेले या बरात में जब जरी की काम की हुई रेशमी झूलों से सुसज्जित हाथियों की कतार चलती है तो देखते ही बनता है।

हाथी जितना बलवान् होता है उससे कहीं अधिक साहसी होता है। पहाड़ी खड्डों से भरे घने जङ्गलों में शिकार खेलने के लिए सबसे अधिक सुविधाजनक सवारी हाथी की ही समझी जाती है। जिस समय शेर तड़पता है और हाथी के मस्तक पर पञ्जा जमा देता है उस समय भी कुछ ऐसे हाथी हैं जो भय से घबराते नहीं, बल्कि क्रोधान्ध होकर गरज उठते हैं। उस समय उनकी गरज बादल की गरज के समान प्रतीत होती है। शेर के शिकार में भी शोखी दिखाना हाथी का ही काम है।

हाथी जब क्रोधित होता है तो उसके गले से बड़ा ही भयङ्कर शब्द निकलता है। ऐसा देखा गया है कि क्रोधान्ध हाथी अपने

पुष्ट दन्त मूसलों के भीषण प्रहार से दीवारों को गिरा देता, पेड़ों को चीर डालता, शहतीरों को खींच-खींचकर छप्पर को उजाड़ देता और लोहे के सींकचों से बने हुए मज़बूत फाटकों की भी शकल बिगाड़ देता है। जङ्गली हाथी जब क्रोधान्ध होकर दौड़ता है तो उसके सीधे रास्ते में कोई वृक्ष भी बाधा नहीं डाल सकता। कितने ही वृक्षों का समूल ध्वंस हो जाता है, कितनी ही मोटी-मोटी डालें टूट पड़ती हैं, और घनी झाड़ियाँ मसल जाती हैं। बिगड़ैल जङ्गली हाथी कभी-कभी बाघ-सिंह से भी भिड़ जाता है। उस समय वृक्ष की स्थूल शाखाओं से वह शस्त्र का काम लेता है और उसके वज्राघाती दंत तो पर्वत की शिलाओं को भी चूर्ण करनेवाले होते हैं। क्रोधित होने पर उसके शत्रु को पृथ्वी पर शरण मिलना कठिन हो जाता है।

साहस और बल के अतिरिक्त हाथी में और भी अनेक गुण होते हैं। वह स्वामिभक्त, आज्ञाकारी, स्वाभिमानी, दयालु, कृतज्ञ और समझदार होता है। वह अपमान या तिरस्कार को बर्दाश्त नहीं कर सकता। प्यार और उपकार को झट ताड़ जाता है, और बदले में कृतज्ञता भी प्रकट कर देता है। उसकी बुद्धि विशेष प्रखर होती है। सरकसों में हाथियों की करामात देखकर दाँतों

कहा कहा हाथी लट्ठ भी ढाता है।

उँगली दबानी पड़ती है। सिखाये जाने पर हाथी सूँड़ से चँवर डुलाते हैं, सलामी देते हैं, तलवार भाँजते हैं और बच्चों को धीरे से उठाकर कन्धे पर चढ़ा लेते हैं। सिखाया हुआ हाथी स्वर ताल पर नाचता, धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ता, बन्दूक चलाता, तिपाई पर बैठता, रस्सी की गाँठ खोलता, पुस्तक के पन्ने पलटता, गगरे के जल से स्नान करता, पेड़ों से फल-फूल तोड़ता, आइना दिखाता और गले में माला पहनाता है।

रङ्गून के जङ्गलों में बहुत से हाथी सागौन के लट्ठे ढोने का काम करते हैं। उनके काम का समय नियत होता है—प्रातःकाल ६ बजे से ११ बजे तक और ३ बजे से सूर्यास्त तक सायङ्काल। ज्योंही ११ बजता है, वे अपना काम बन्द कर देते हैं। फिर महावत की कोई भी शक्ति उन्हें लट्ठा लेकर आगे नहीं बढ़ा सकती। कि यदि वे कोई लट्ठा लेकर

सवारी का हाथी और उसका महावत।

और नियत स्थान पर पहुँचने के पूर्व ही ११ बज जायँ तो वे बीच में ही लट्ठा छोड़ देते हैं और फिर अपने समय पर उठा ले जाते हैं। इस प्रकार वे समय के पूरे पाबन्द हैं।

लङ्का में अनेक हाथी उन प्रान्तों में काम करते हैं, जहाँ रबर के वृक्ष पाये जाते हैं। वहाँ उनसे रबर के वृक्ष गिराने का काम लिया जाता है। पहले कुल्हाड़ी द्वारा रबर के वृक्ष की जड़ें काट दी जाती है, फिर उन्हें अपनी सूँड़ से पकड़ कर गिरा

हाथी को कोई इस काम में धोखा नहीं दे सकता। आप पेड़ की जड़ को अनकटा छोड़ दीजिए और देखते रहिए कि हाथी क्या करता है। वह अपनी सूँड़ को उठावेगा, पेड़ तक जायगा और परीक्षा के लिए मस्तक से दो तीन धक्के लगावेगा; फिर एक या दो कदम पीछे हट जायगा और सूँड हिलाता हुआ दूसरी ओर चला जायगा। इसके पश्चात् जब तक कुली जड़ को भली भाँति काट न देगा, उसका अङ्कुश भी उसे पेड़ तक ले जाने में सफल नहीं हो सकता।

हाथी की स्मरणशक्ति उसके कुशाग्र-बुद्धि होने का दूसरा प्रमाण है। ऐसी घटनाएँ देखने में आई हैं कि कभी-कभी महावत ने हाथी के साथ दुर्व्यवहार किया है और फिर डर से अथवा अन्य किसी कारण से वह वर्षों उसके सम्मुख नहीं गया। परन्तु जब वे एक दूसरे के सम्मुख लाये गये है तो हाथी ने तुरन्त उसे पहचान लिया है। कहा जाता है कि एक बार एक मनुष्य सर्कस में हाथी देखने गया। ज्योंही हाथी ने उसे देखा, वह आग हो गया और उसे पकड़ कर उसने चीर डाला। वह मनुष्य उसका पुराना महावत और शत्रु था जिसे हाथी ने २० वर्ष पश्चात् देखा था।

हाथी अपने मन के भावों को दूसरे पर प्रकट करने में भी कुशल होता है। पारखियों का अनुभव है कि वह जब प्रसन्न होता है तो सूँड उठाकर तुरही जैसा शब्द करता है। जब वह गण्डस्थलों को फुलाकर बल बताता है तो उसकी भूख प्यास का पता चलता है या उसके किसी अभाव की सूचना मिलती है। जब उसे भीतरी पीड़ा होती है तो वह चिंघाड़ता है और अंग अंग हिलाता है तथा अन्य अनेक रीतियों से अपनी पीड़ा का पता देता है। उसकी पीड़ा दूर करने के लिए जिस समय उपाय किये जाते हैं, उस समय वह शान्त रहता है और अद्भुत सहन शीलता का परिचय देता है।

एक बार एक हाथी के दाँत में दर्द था। दर्द दूर करने के लिए उसके दाँत को काटना आवश्यक था। अस्तु, उसके दाँत पर कुल्हाडी और छेनियाँ चलीं परन्तु उसने चूँ तक न की।

थोड़े ही दिन हुए, लंदन जू के एक प्रसिद्ध हाथी के दाँतों में भयानक पीड़ा उत्पन्न हुई। दर्द से तंग होकर उसने अपने दाँत तोड़ डाले परन्तु जब उसके स्थान पर नये दाँत निकले तो उन्होंने अपना मार्ग ऊपर की ओर बनाना चाहा और चाहा कि मांस को छेदकर आँख के दोनों ओर निकलें। जू के अधिकारियों ने निश्चय किया कि इस सम्बन्ध में नश्तर लगाना ही लाभप्रद होगा। इस कार्य के लिए उन्होंने एक विशेष प्रकार की लोहे की छड़ तैयार की जो कई फीट लम्बी थी और उस्तरे से भी अधिक तेज थी। डाक्टर ने हाथी के मुख के निकट खड़े होकर तेजी से पहले दाहिनी ओर नश्तर लगाया। बेचारा हाथी दुःख की अधिकता से काँपने लगा परन्तु डाक्टर के कार्य में उसने किसी प्रकार भी बाधा नहीं दी। यही नहीं, बल्कि शीघ्र ही दूसरी ओर भी नश्तर लगवाने के लिए वह तैयार हो गया।

हाथियों के कुशाग्र बुद्धि होने के दो और उदाहरण दिये बिना मैं नहीं रह सकता। एक तो अमेरिका जू के जि[illegible] नामक हाथी का है। एक बार वह बीमार पड़ा। उसके पेट में भयानक पीड़ा उत्पन्न हुई। पीड़ा दूर करने के लिए उसके रक्षक ने उसे जिन और जिञर पिलाई और उसके पेट पर राई सरसों इत्यादि का लेप किया। कहा जाता है कि शराब पीने के लिए उस हाथी ने हफ्तों बीमारी का बहाना किया और पेट के दर्द का बहाना किये वह पृथिवी पर लोटता रहा परन्तु उसे फिर शराब न मिली। हाँ, कुछ कम मजेदार लेप जरूर मिल गया था।

दूसरा उदाहरण योरप के एक सरकस के हाथी का है। उसके साथ भी यही किस्सा हुआ। एक बार उसके जुकाम को दूर करने के लिए उसे ह्विस्की पिलाई गई। फिर तो उसे प्रति सप्ताह जुकाम होने लगा। लोगों ने ह्विस्की की [illegible] ठंडी चाय भर कर उसे देने का

परन्तु उसने तुरन्त ही उसे देनेवाले के मुँह पर छिड़क दिया। बियर और अन्य कम दामों की शराबों का प्रयोग भी किया गया परन्तु कुछ अच्छा परिणाम न निकला। अन्त में निराश होकर उसे ह्विस्की पिलाई गई। फिर तो ऐसा हो गया कि यदि उसे जब तब ह्विस्की न दी जाती तो वह आपे से बाहर हो जाता था। ह्विस्की की बोतल को वह दो-चार में पी जाता था और उसका बुरा प्रभाव उस पर कभी नहीं पड़ा। यह उसकी बुद्धिमानी का पुरस्कार था।

हाथी में अधिक गुण होते हैं, इसलिए उसका मूल्य भी अधिक होता है। तीस हजार रुपये भी उसके लिए कम समझे जाते हैं। प्राचीन काल में तो एक-एक हाथी का मूल्य एक एक लाख तक होता था। मूल्य की भाँति उसकी आयु भी अधिक होती है। वह १५० वर्ष तक जी सकता है। प्राचीन काल में दो-दो सो वर्ष तक के हाथी पाये जाते थे। हाथी के बारे में कहावत है कि जब साठा तब पाठा। अर्थात् हाथी ६० वर्ष की आयु में जवान होता है।

जीते जी तो हाथी का मूल्य अधिक होता ही है, मरकर भी वह कम मूल्य का नहीं रह जाता। कहावत है कि हाथी मरा भी तो नौ लाख का। उसकी हड्डियों और दाँतों से अनेक सामान बनाये जाते हैं। हाथी-दाँत बहुत मँहगा बिकता है। किसी-किसी हाथी-दाँत की तौल चार-चार मन होती है। उसका मूल्य २५०) से कम नहीं होता। परन्तु ऐसे दाँत कम पाये जाते हैं। अधिकतर मन भर के दाँत मिलते हैं। अफ्रीका से बहुत से हाथी-दाँत भारत के बम्बई नगर में आते हैं। बम्बई के व्यापारी इनके टुकड़े काटकर विदेश भेजते हैं। ग्वाले हाथी-दाँत का बुरादा गायों को खिलाकर दूध बढ़ाते हैं। पुष्टिकर दवा में भी इसका उपयोग होता है। सूरत, अमृतसर, पटना, ढाका, कटक, दिल्ली, मुर्शिदाबाद, चटगाँव आदि भारत के नगरों में हाथी-दाँत से कङ्घे, चूड़ियाँ, मूर्तियाँ, खिलौने, शतरञ्ज की गोटें, अँगूठियाँ, छड़ियाँ, सन्दूकचियाँ, चाकू के बेट इत्यादि बनते हैं जिन पर अति विचित्र बेल-बूटे बनाकर कारीगर लोग अपने हुनर, हाथ की बारीकी और सफाई का परिचय देते हैं।

सचमुच हाथी में अनन्त गुण हैं।

विचित्र घर

लेखिका, कुमारी शान्तिस्वरूप गुप्ता

दूसरे दिन यशोदा ने कहा—पिताजी, मुझे और जातियों के विचित्र घरों के बारे में भी कुछ बताइए।

यशोदा के पिता ने कहा—हिन्दुस्तान के दक्षिणपूर्व में एक द्वीप समूह है। वहाँ बारहों महीने वर्षा और गर्मी पड़ा करती है। सर्दी पड़ती ही नहीं। इसलिए यहां पर घने जङ्गल हैं। पेड़ इतने अधिक और पास-पास हैं कि मीलों तक दिन में भी अँधेरा छाया रहता है। नमी और अँधेरे के मारे यहां पर साँस घुटने लगती है। मोटी मोटी लताएँ पेड़ों पर चढ़ जाती हैं। इन जङ्गलों में ऐसा जाल सा बिछ जाता है कि इन जङ्गलों में होकर आना जाना बड़ा कठिन है। ऐसे नम और अँधेरे जङ्गलों में साँप, बिच्छू, कनखजूरे और विषैले तथा हिंसक पशु रहते हैं। इन टापुओं में कहीं-कहीं मीलों तक दलदल पाये जाते हैं। घोर वृष्टि होते ही नदियों के पास के गाँव मीलों तक जल में डूब जाते हैं।

समुद्र तट से दूर कुछ जङ्गली जातियाँ रहती हैं। ये अपने मकान वृक्षों पर बनाती हैं।

यशोदा—लोग वृक्षों पर मकान किस प्रकार बनाते हैं? वे पेड़ों पर क्यों रहते हैं?
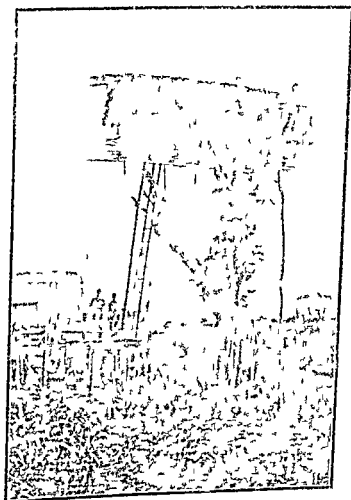
पेड़ पर बना हुआ एक घर। इस प्रकार के घर पूर्वी द्वीप समूह में अधिक संख्या में पाये जाते हैं। नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ भी लगी रहती हैं।

पिता—जैसा अभी तुमसे बताया है, इन जङ्गलों में विषैले और हिंसक जन्तु बहुत रहते हैं। उन्हीं से बचने के लिए यहाँ के निवासी पेड़ों पर मकान बना कर रहते हैं। लोग बड़े-बड़े पेड़ों की टहनियों पर बाँस बाँधकर लकड़ियाँ रख देते हैं और —
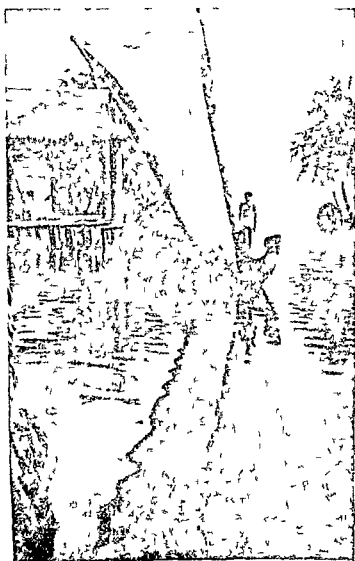
पानी म लट्टों पर बने हुए घरों का एक दृश्य। इन घरों म रहनेवाले लोग नावों द्वारा एक जगह से दूसरी जगह आया जाया करते हैं।

पर एक मचान बना लेते हैं। फिर उस मचान पर घास-फूस बिछाकर बाँस की एक छोटी सी झोपडी बना लेते हैं।

यशोदा—इन झोपडियो तक तो पहुँचना बड़ा कठिन होता होगा। छोटे-छोटे बच्चे इन पर किस प्रकार चढ़ते होंगे?

...घर तक पहुँचने के लिए ... सीढ़ियाँ होती हैं। जब घर के सब लोग ऊपर आ जाते हैं तो सीढियाँ ऊपर खींच ली जाती है। इस प्रकार रात में लोगों को पशुओं से भय नहीं रहता और निडर होकर सभी अपने घर में विश्राम करते है। नदियो के किनारे लोग बास या लकडी के खभों को भूमि में गाडकर उन पर झोपड़ियाँ बनाते है। नदी में बाढ आने पर भी लोग इन झोपड़ियों में सुरक्षित रहते हैं, क्योंकि पानी इन झोपड़ियो तक नहीं पहुँचने पाता।

यशोदा—पिताजी! जब बाढ आती होगी तो ये लोग अपने घरों से बाहर कैसे निकलते होंगे? इनको खाने-पीने का सामान भी उस समय कैसे मिलता होगा?

पिता—(यशोदा को थपथपाते हुए) प्रत्येक झोपड़ी के बाहर एक नाव बँधी रहती है। ये लोग बाढ के दिनो में इसी पर यात्रा करते हैं। ये लोग बचपन से ही तैरना और नाव चलाना जानते है। अब मै तुमको तैरते हुए मकानों का हाल सुनाऊँगा।

यशोदा—पिताजी! भला मकान पानी में कैसे तैर सकते है?

पिता—ब्रह्मा और स्याम देशों में लोग लकड़ी के बड़े-बडे लट्ठों पर झोपड़ियाँ बनाते है। ये लट्ठे नदियो पर तैरते रहते है। इनमें रहनेवाले किसान अपने मकानों को अपने खेतो के पास एक रस्से से बाँध देते हैं। जब धान की फसल तैयार हो

अनाज काट कर मकान में भर लेते हैं और फिर अपने खेतों की ओर वापस चल आते हैं। घर को रस्से से खोलकर नदी में खेकर नगर ... माता-पिताजी! लोग बड़े विचित्र को ले जाते हैं और वहां अपना ... में रहते हैं। इनके ... बेचकर आवश्यक वस्तुएँ खरीद लेते हैं और ... हैं।

लल्लू

लेखिका, कुमारी ... , "..."

छोटा सा वह सुन्दर बालक,
लल्लू मैंने पाया था,
गाल गुलाबी गोरे प्यारे,
बहुत मुझे वह भाया था॥

पूरी की थी इच्छा मेरी,
बूआ मुझे बनाया था,
स्वर्गलोक का वह सुन्दर शिशु,
सुख देने को आया था॥

निशि-दिन था वह खेला करता,
करता रहता हास्य-विनोद,
भूल सदा मा को वह जाता,
जब पाता बाबा की गोद॥

चलता था वह ठुमक-ठुमक कर,
घुँघराले थे उसके बाल,
दूनी होती माँ की छाती,
कैसा प्यारा था गोपाल॥

गुड्डे से वह खेला करता,
गुड्डा उसे सुहाता था,
... हमारे सँग था पीता,
... र खूब खुश होता था॥

लल्लू

मुझे भतीजा था प्यारा वह,
उसने दिया मुझे आल्हाद।
शीघ्र गया वह छोड़ सभी को,
करती रहती उसको याद॥

संसार की बड़ी-बड़ी वस्तुएँ

१—दुनिया की सबसे लम्बी नदी मिसिसिपी है जो उत्तरी अमेरिका में बहती है।

२—दुनिया का सबसे बड़ा घण्टा मास्को (रूस) में है जिसका वजन २०० टन है।

३—दुनिया का सबसे बड़ा रेलवे-पुल जेम्बजी नदी पर बना है। यह नदी पूर्व अफ्रीका में बहती है।

४—दुनिया के पर्वतों में एवरेस्ट पर्वत सबसे ऊँचा है। इसकी ऊँचाई २९,००२ फीट है।

५—दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान सहारा है जो अफरीका के उत्तरी भाग में है।

६—दुनिया की सबसे बड़ी इमारत 'इम्पायर स्टेट बिल्डिङ्ग' है जो संयुक्त-राज्य अमेरिका में है।

७—दुनिया भर में सबसे अधिक वर्षा चेरापूँजी (आसाम) में होती है।

८—दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम लंदन का ब्रिटिश म्यूजियम है।

९—दुनिया की सबसे बड़ी दीवाल चीन की दीवाल है जो १ हजार मील से अधिक लम्बी है।

१०—दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप ग्रीनलैण्ड है और सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया है।

११—दुनिया का सबसे बड़ा सिनेमा-घर न्यूयार्क में है। इसमें ६ हजार आदमी बैठ सकते हैं।

१२—दुनिया का सबसे बड़ा पेड़ कैलीफोर्निया (अमेरिका) में है। कहा जाता है कि यह पेड़ लगभग ४ हजार वर्ष पुराना है।

मेढक से लाभ

ऊपर से देखने पर मेढक बिलकुल कुरूप और निकम्मा जीव जान पड़ता है; परन्तु है वह बड़े काम का। बरसात में ऐसे बहुत से कीड़े पैदा हो जाते हैं जो पेड़ पौधों की जड़ों को कमजोर कर देते हैं और फिर वे बेकाम हो जाते हैं। मेंढक ऐसे कीड़ों का जानी दुश्मन है। ऐसे सब कीड़ों को यह खा जाता है जिससे पेड़ों की बहुत कम हानि हो पाती है।

(शिशु से)

चौबेजी की धर्मशाला

लेखक—भानु लक्ष्मीनारायण शर्मा, फरीदपोर
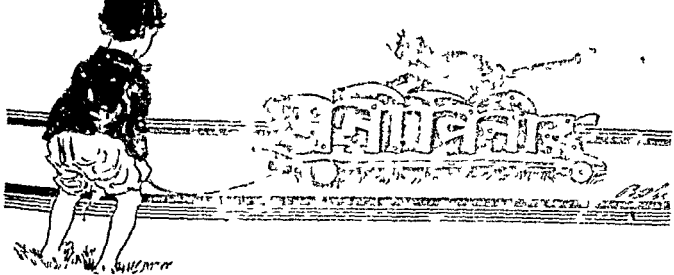
(१)

एक बार अलीगढ़ के कुछ मुसलमान विद्यार्थी, अपने क्लास के मानीटर साहब के साथ, रेल के एक डिब्बे में यात्रा कर रहे थे और उसी डिब्बे में एक चौबेजी भी जा रहे थे। उनकी चौबाइनजी तथा एक छोटा बच्चा उनके साथ थे और बगल में रक्खे थे एक टोकरी-भर मथुरा के पेड़े। पेड़ों को देखते ही विद्यार्थियों की जीभ लपलपाने लगी। उन लोगों ने अपने मानीटर के कान में धीरे से कहा "भाई जान, किसी तरह ये पेड़े हमें खिलवाओ। तब तुम्हें मानीटर जानें।" मानीटर साहब की खोपड़ी कमाल ढाना जानती ही थी। उन्होंने झट एक तरकीब सोची। आपने चौबेजी के बच्चे को, बातों-बातों में, अपनी गोद में ले लिया और उसे खूब पुचकारने तथा खिलाने लगे। बच्चे की खुशी का क्या कहना? और उसके माँ-बाप भी मानीटर के प्यार से गद्गद हो रहे थे। मौका देखकर मानीटर ने, बच्चे को थोड़ा सा, बेरहमी से नोच दिया। बस, फिर क्या था वह रोने-चिल्लाने लगा। बच्चे को चुप कराने के बहाने आपने कहा, "अरे लल्लू रोता क्यों है? ले एक पेड़ा खा ले।" और झटपट, पास रक्खी हुई उस टोकरी में से एक पेड़ा निकाल कर बच्चे के हाथ पर रख दिया। यह देखकर चौबेजी एकदम घबड़ा गये और पैजामे से बाहर होते हुए बोले, "अरे सान, जि का करौ, (यह क्या किया तुमने?) म्लेच्छ ने सब पेड़ा खराब कर्‌दए! बाहर फेंको इन्हें!" यह सुनकर मानीटर बेचारे रोनी सूरत बनाकर, हाथ जोड़-जोड़ कर, चौबेजी से अपनी अनजान में की हुई गलती के लिए माफी माँगने लगे। मगर अब होता ही क्या। वे पेड़े चौबेजी के किसी काम के नहीं रह गये थे और चौबेजी राम राम करते हुए, उस टोकरी को चलती रेल के बाहर फेंकने जा ही रहे थे कि दूर की बेंच पर बैठे उन शरारती

लड़कों में से एक बोल उठा, 'चौबेजी, भूल से जो कुछ हो गया सो तो हो ही गया, अब इन पेड़ों को बाहर फेंकने से तो यही अच्छा होगा कि इन्हीं म्लेच्छों को दान कर डालें आप।' चौबेजी को आखिर समझ के साथ ही साथ दया भी आ गई और उस टोकरी को लड़कों की तरफ सरका दिया।

अब अपने मानीटर के साथ सब लड़के जिस खुशी के साथ टोकरी भर-पेड़े जो चट-कर गये, उसका क्या कहना।

आज लड़कों को पता लगा कि उनके मानीटर साहब की खोपड़ी में सचमुच गजब का मसाला भरा है।

(२)

एक दिन कर्मचन्द नामक एक लड़के ने अपने पिता से कुछ पैसे लिये। छुट्टी का दिन था। जीभ का चटोरा वह था ही। सारे दिन आलू कचालू की चाट, पकौड़ियाँ, दाल-मोठ वगैरह खा-खाकर पेट में ठूँसता फिरा। उसे रात को नींद नहीं आई और रह रहकर उसके पेट में दर्द होने लगा। दूसरे दिन सवेरे जब कर्मचन्द पेट के दर्द से बेतरह छटपटाने लगा, तो हारकर उसका पिता उसे पड़ोस के एक हकीम के पास ले गया। हकीमजी ने उसकी नब्ज देखी, पेट की देख-भाल की, जो फूल कर कुप्पा हो रहा था। जब उसने हाथ जोड़कर हकीमजी से दर्द की दवा माँगी तो हकीमजी ने लापरवाही से अपने कम्पाउण्डर से कहा कि इस मरीज लड़के की आँखों में सुरमे की एक-एक सलाई डाल दो। इस पर लड़का, जो पेट-दर्द से बेचैन था, एकाएक गुस्से में आ गया और साहस बटोरकर बोला, "ग़रीब-परवर, दर्द तो मेरे पेट में है, आँखों में नहीं। यह आप क्या कर रहे हैं?" तब हकीमजी ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "भोले लड़के! इन्हीं आँखों से देखकर तुमने बासी चाट पकौड़ियाँ वगैरह खाई थीं, जिनसे तुम्हारे पेट में इतना दर्द हुआ। इसलिए तुम्हारी आँखों का इलाज ही इस रोग को जड़ से काट देगा।" यह सुनकर लड़का अवाक् और शर्मिन्दा हो गया और बाप बेटा दोनों अपना-सा मुँह लेकर घर लौट आये। देखा आपने? हकीमजी का नया इलाज कितना माकूल था।

(३)

दूर-देश के कई किसान त्रिपुरी की कांग्रेस का जलसा देखने गये। पैदल चलकर ये लोग रात के वक्त कांग्रेस-नगर पहुँचे। इन बेचारों ने कभी हाथी देखे ही न थे। सामने ही एकदम ५२ हाथियों का जो काला काला जमघट इन्होंने देखा तो इनकी अक्ल गड़बड़ा गई। ये सीधे-सादे लोग कुछ समझ ही न सके कि आखिर यह है क्या बला। थोड़ी देर के बाद उनमें से एक किसान—जो औरों से अपने को कहीं ज्यादा अक्लमन्द समझता था—झट कह उठा "लाल-बुझक्कड़ बुझियाँ, और न बुझै कोय। रात इकट्ठी ह्वै गई, कि दिल्ली वारौ कोय।"

देखा आपने, काग्रेस के ५२ हाथियो के नक्कारे ने क्या किया !

(४)

और सुनिए, हाथियों के एक दूसरे झुण्ड ने कितना गजब ढाया। एक किसान ने अपने खेत में हल जोत कर, दूसरे दिन उसमें बीज बोने की ठान रक्खी थी। संयोग वश, उसी रात को कुछ हाथियों का एक छोटा सा झुण्ड उसके खेत मे हाकर गुजरा। भोर में जब वह किसान बीज वगैरह लेकर खेत बोने के लिए आया तो वह हाथियो के बडे-बडे मस्ताने पैरों के निशान देखकर बडा चकराया। अपनी उम्र में हाथी का नाम-भर उसने सुना था। हाथी को देखना आज तक उसके नसीब में नहीं था। सो उल्टे पाँव वह गाँव की ओर भागा और अपने पडोस के दो चार साथियों को निशान दिखाने बुला लाया।

देख भाल में काफी अक्ल खर्च करने के बाद उनमें से एक लाल बुझक्कड़जी बोल ही तो उठे :—

"जानन-हारे जान गये, क्या जाने अनजान।
पैर में चकी बाँधि कै, चर गये खेत मृगान॥"

आप लोग हँसे नहीं। बुझक्कड़जी ने रोग की नब्ज ठीक ही पकड़ी है। मरुभूमि के खेतों से तो हरिनों ही की कतारें गुजरती उसने देख रक्खी थीं। ख्याल किया कि इतने बडे पाँवों का कोई जानवर तो हो ही नहीं सकता। मुमकिन है कि हरिनों के उपद्रवों का रोकने के लिए पासवाले खेत के किसानों ने हरिनों के पग में चकियो के पाट बाध दिये हो ताकि वे अपनी मनमानी उछल कूद से उसकी हरी खेती न बिगाड सकें। हाथियों के पैरों के निशान से दहाती-राम ने किस जानवर का पता लगाया !

(५)

एक भोजन-भट्ट चौबेजी को न्योता खाने के लिए दूसरे गाँव में एक सेठ के घर जाना पडा। पैदल जा नहीं सकते थे। माल-गोदाम में पिछली रात को ठूँसा-ठूँसी जो ज्यादा कर रक्खी थी! इसलिए ४ कहारों की एक पालकी में लदकर चल पडे।

थोड़ी दूर जाने के बाद चौबेजी का बोझ कहारों के लिए भारी हो उठा और वे चलते-चलते आपस में कानाफूसी करने लगे।

एक बोला, "सरवा बड भारी बा रे।"

दूसरा बोला, "मुफत के माल खा-खा मोटा गइल बा।"

तीसरा बोला, "कलजुग के सब पाप एहि ससुरा के पेट में समा गइल बा।"

चौथा बोला, "पेटवा नढ के ससुरा का जैसे पेटारा भइल बा।"

ऊपर लदे चौबेजी के कान इस समय काम नहीं कर रहे थे। नहीं तो

नई पहेलियाँ

(१)

बगल में रखके छोटे लडके,
निज-निज शाला जाते हैं।
दिन भर उसे रगडते रहते,
फिर भी नहीं घिस पाते हैं॥
कई बार नहलाते दिन में,
फिर भी काली रहती है।
बच्चों के अत्याचारों को,
बडी ख़ुशी से सहती है॥
(तख्ती या पट्टी)

(२)

दुबला पतला उसका तन है,
काला टोप लगाती है।
अपनी देह जला करके वह
पर का काज बनाती है॥
(दियासलाई)

—प्रेमसुख शर्म्मा "रँगीला", बीकानेर

लोहा उसे चबाते देखा,
सिर में सूत लपेटे देखा।
हाथ फटकारा बन गया गोला,
चक्कर उसे लगाते देखा॥
(भौरा या लट्टू)

—देवीराम सिहावा

कल्लू मल्लू लल्लू में तुम पा जाओगे मेरा नाम।
तालाबों मे फूला करता फूलों मे हूँ मैं सरनाम॥
(कमल)

—वेदप्रकाश गोयल, रावलपिंडी

(१)

बित्ता भर की बित्तुनियाँ,
लाद रही हैं नौ मनियाँ।
(खड़ाऊँ)

(२)

एक थाल ऐसा,
जो मोती से भरा।
सबके ऊपर औंधा पड़ा,
उसका मोती एक न गिरा॥
(आकाश)

(३)

कटोरे में कटोरा, बेटा बाप से भी गोरा।
(गरी)

—कुमारी इन्दुबाई पांडे, सीतापुर

लन्दन के बच्चे नीबू और सतरे खूब पसन्द करते हैं। वहाँ हाल ही में 'नीबू और सन्तरा दिवस' मनाया गया था। इस चित्र में लड़के इसी नीबू लिये हुए हैं।

देखो यह हिरणी का बच्चा, अभी उम्र में है यह कच्चा । इसको दूध पिलाता हूँ मैं, इसका मन बहलाता हूँ मैं ॥
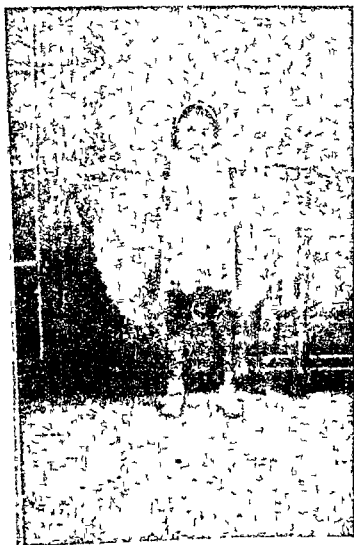
कुमारी शशि प्रेम (पुत्री डॉ० धनीराम प्रेम) अपने लन्दन स्कूल में 'तितली नृत्य' की तैयारी में ।

माया लीला दोनों बहनें,
नहीं सुहाते इनको
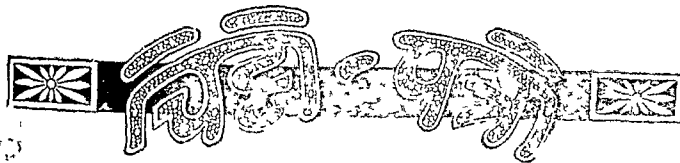
मुझे सच्चा मित्र चाहिए

मुझे 'बाल-सखा' के प्रेमियों का सच्चा मित्र बनने का शौक है। और मैं आशा करता हूँ कि मुझे सच्चे मित्र मिल जायँगे। जो लोग मुझे अपना मित्र बनाना चाहें, वे मुझे अपना फोटो सहित पत्र भेजें। मैं बीस साल से कम उम्र वालों को मित्र बनाना चाहता हूँ।

राकेशमोहन जोशी
ललित भवन,
लैंसडौन।

शर्म की बात

जून के 'बाल-सखा' में पृष्ठ २३३ पर एक कविता श्री राधेश्याम पोद्दार की 'उलटी नगरी' नामक छपी है। वह सम्पूर्ण कविता जुलाई सन् १९३५ के 'बालक' नामक मासिक पत्र से नकल की गई है। उसके रचयिता श्रीयुत आरसी प्रसाद सिंह हैं। सिर्फ उस कविता की पाँचवीं लाइन में श्री राधेश्याम ने नीचे लिखा परिवर्तन कर दिया है—

मूँछ दाढ़ियाँ रखतीं औरत, मर्द जना करते हैं बच्चे।
'बालक'

दाढ़ी-मूँछें रखें औरतें, मर्द खिलावे घर में बच्चे।
'बाल सखा'

ऐसी साहित्यिक चोरी करना बड़े शर्म की बात है।

शारदाचरण शुक्ल।

कलम-सखा

मुझे टिकट-संग्रह करने का बहुत शौक है। मेरे पास करीब १०००० टिकट हैं, और संसार के करीब करीब सब देशों के टिकट हैं। मैं दूसरे सज्जनों से जो इस बात में रुचि रखते हैं, पत्र व्यवहार और टिकटों का अदल बदल करना चाहता हूँ। मेरे छोटे भाई जानकीदास को भी टिकट जमा करने का शौक है। उनके पास फ्रांस, हालैण्ड, जर्मनी इँगलैण्ड, न्यूजीलैंड, रूस और भारतवर्ष के लगभग ४००० टिकट हैं। वह भी मेरी तरह ऐसे सज्जनों से जो इस बात में रुचि रखते हों पत्र व्यवहार और टिकटों की अदल बदल करना चाहता है।

नगेन्द्रदत्त मिश्र,
४२।१८ जतनबर,
बनारस सिटी।

मुझे टिकट संग्रह करने का बहुत शौक है और मैंने टिकट संग्रह करनेवालों का एक क्लब भी खोला है जो टिकट जमा करनेवालों की हर प्रकार की मदद देता है। क्लब का सालाना चन्दा एक रुपया है। जो इस क्लब के कलम-सखा बनना चाहें वे मुझे अपना चन्दा भेज कर नाम लिखा लें।

मणि ... बैजल
श्री कवल ...

सम्पादक का पृष्ठ

आजकल रबर की बहुत सी चीजें बाजार में बिकती हैं। खिलौने, जूते, थैलियाँ, मोटर और साइकिल के ट्यूब टायर इत्यादि वस्तुएँ तैयार करने के काम में रबर आता है। यह रबर किस तरह तैयार किया जाता है इस विषयपर हम इस अंक में एक मनोरञ्जक लेख छाप रहे हैं।

× × × ×

श्री भारतीय, एम० ए० की बालकों के लिए लिखी गई कहानियाँ बहुत सुन्दर और मनोरञ्जक होती हैं। इस अंक में हम उनकी 'तीसमारखाँ' शीर्षक कहानी छाप रहे हैं। इसे पढते ही हँसी का फव्वारा छूटने लगेगा।

× × × ×

प्रो० मनोरञ्जन, एम० ए० बाल-सखा के पुराने लेखक हैं। आपकी कविताएँ बहुत सुन्दर होती हैं। हम इस अंक में आपकी 'राम-कहानी' शीर्षक कविता छाप रहे हैं। आपने हमारे पास एक पत्र भी भेजा था। यह पत्र हमें बहुत पसन्द आया। इसलिए हम पत्र भी छाप रहे हैं। बाल सखा के जो पाठक इस पत्र का उत्तर कविता में लिखकर भेजेंगे उसे भी हम छाप देंगे।

× × ×

कुमार

कुँवर सुरेशसिंह के सम्पादकत्व में प्रकाश-गृह, कालाकाँकर (अवध) से 'कुमार' नामक मासिक पत्र प्रकाशित हुआ करता था। इधर कुछ दिनों के लिए उसका प्रकाशन रोक दिया गया था। हर्ष की बात है कि वह फिर से प्रकाशित होने लगा है। इसमें छपी हुई कहानियाँ, कविताएँ, जीवनियाँ, यात्राएँ तथा स्वास्थ्य और विज्ञान-सम्बन्धी लेख बहुत सुन्दर होते हैं। इस पत्र के अधिक से अधिक लेख और कविताएँ सचित्र रहती हैं। बालकों के पढने के लिए भी काफी मनोरञ्जक और सुन्दर लेख, कहानियाँ और कविताएँ रहती हैं। 'कुमार' का वार्षिक मूल्य ३) और एक प्रति का पाँच आना है। उसका पता प्रकाशगृह, कालाकाँकर (अवध) है।

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press Ltd, ALLAHABAD

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

सहायक स०—देवदत्त द्विवेदी, बी० ए०

वर्ष २३] अक्तूबर १९३९—आश्विन १९९६ [संख्या १०

भूतल का स्वर्ग

लेखक, श्रीयुत मोहनलाल द्विवेदी

लघु लघु बूँदों के जुड़ने से
भर जाती पल में गागर,
लघु लघु सरिता के जुड़ने से
भर जाता विशाल सागर !

लघु लघु कण कण के जुटने से
भर जाता खाली भंडार,
लघु लघु तृण तृण के जुड़ने से
हरा भरा बनता संसार

लघु लघु क्षण क्षण के जुड़ने से
बनते दिवस मास औ वर्ष
लघु लघु दो सुख की बातों से
छा जाता जीवन में हर्ष !

लघु लघु मृदु स्वर के जुड़ने से
सज उठता है मोहक गान,
लघु लघु प्यार भरे बोलों से
भू में बसता स्वर्ग महान !

महात्मा गांधी की जीवन-सम्बन्धी कुछ बातें

लेखक, श्रीयुत प्रभुदयाल विशारद, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्यारे बालको, आज मै महात्मा गाधी के जीवन की कुछ पुरानी बातें आप लोगों के सामने रखने जा रहा हूँ। उनकी जीवनी पढ़कर आप लोग आश्चर्य-चकित हो उठेंगे। आप लोग सोचते होंगे—गाधीजी का गॉव कहाँ है ?

जल्दी से हम 'पोर बन्दर' कहते है।

"हॉ, हॉ" मैंने वहॉ जन्म लिया है।

नदी के किनारे पर बसा हुआ फिनिक्स और टॉल्स्टाय का आश्रम कह उठते है, "सचमुच आपने हमारे यहॉ जन्म लिया है। कैसे भूल जाते है ?"

अहमदाबाद कहता है, "आपने साबरमती आश्रम मेरे पास बनाया है न ?"

पूना अपना हक आगे लाता है, "आपने अपना स्थान यरवदा जेल में बनाया था। इसको न भूलिए।"

बिहार के किसान कहते है, "तुम सब लोग चाहे जो कहो, लेकिन गाधीजी हमारे है। हमारी गलियों और खेतों मे वे कितना घूमे है, तुम क्या जानो ?"

पजाब एकदम कह उठता है—"गांधीजी को बड़ा बनानेवाला हमारा जलियानवाला बाग है। इसको कोई भी इनकार नही कर सकता।"

कलकत्ता कहता है—"असहयोग का शख गाधीजी ने पहले पहल हमारे यहाँ ही फूँका था।"

बम्बई कहता है—"लेकिन सत्याग्रह शुरू करने के लिए वे यहीं तो आये थे।"

बारडोली बोल उठता है—"बड़े-बड़े शहरों में कोई मेरी बात सुन सकता है ? गांधीजी ने तो मेरी लड़ाई स्वीकार की है।"

दिल्ली गाधीजी को अपना ही समझता है, क्योंकि वहाँ उन्होंने कई दिनों का पवित्र उपवास किया था। बेलगॉव का दावा बहुत बड़ा मालूम पड़ता है। बेलगांव की अखिल भारतीय कांग्रेस के सभापति गाधीजी ही बने थे। भारतवर्ष का ताज बेलगॉव ने ही गाधीजी को पहनाया था।

पर्वतों का मालिक हिमालय मन में हँसता है। कौन इन झगड़ों में पड़े ? गाधीजी अपने हृदय में क्या सोचते हैं—मैं क्या जानूँ ?

उस छोटे से सेगांव का भाग्य धन्य है! हिन्दुस्तान के बीचोंबीच में पड़नेवाले इस गॉव को कोई नहीं जानता था। इसने कुछ दावा भी नहीं किया, न झगड़ा ही किया और न मॉग ही पेश की। गाधीजी स्वयं वहाँ गये।

गाधीजी जाति के बनिये हैं, लेकिन स्वयं वह क्या कहते है ?

एक बार सरकार ने इनके ऊपर राज-द्रोह का मुकदमा चलाया था।

मुकदमे की सुनवाई अहमदाबाद में शुरू हुई। अदालत में मुकदमा सुननेवाले अफसर ने गांधीजी का नाम और पता पूछा।

"आपका क्या नाम है ?"

"मोहनदास करमचन्द गांधी।"

"कहाँ रहते है ?"

"सत्याग्रह आश्रम साबरमती में।"

"क्या काम करते है ?"

"कपड़ा बुनने और खेती करने का।"

गांधीजी का जवाब सुनकर न्यायाधीश आश्चर्यचकित हो गया। जो लोग वहाँ उपस्थित थे, गांधीजी को टकटकी लगाकर देखने लगे।

जब गांधीजी छोटे थे तभी से उनको सत्य से बहुत प्रेम था।

छोटेपन में थोड़े समय के लिए इनको बुरी सोहबत मिली थी। उस बात को गांधीजी ने स्वयं लिखा है।

लड़कों को बीड़ी पीने की आदत पड़ गई। इस काम के लिए पैसा चाहिए और माँ-बाप से इस काम के लिए पैसा नहीं माँग सकते थे। इसलिए उन लोगों ने नौकरों की जेबों से पैसे चुराना सीखा।

ऊपर लिखे हुए काम से गांधीजी के जी में एक बेचैनी पैदा होती, लेकिन अपने भाइयो और सबंधियो को बीड़ी पीते देखकर सब भूल जाते थे।

इस तरह करते-करते नाश्ता आदि के पैसे देने का तक़ाजा व्यापारी करने लगे,

महात्मा गांधी।

क्योंकि सामान उधार लाते थे। अब क्या करें ? जब वे लोग सबके सामने पैसा माँगने लगेंगे तो ? शायद वे लोग घर पर आकर पिताजी से माँगें तो ?

नौकरों की जेबों से तो पैसा या पाई मिलती, पर देना अधिक है। अब क्या किया जाय ?

टोली में इस बात की चिंता फैल गई। टोली में बड़े भाई थे। उनको इससे —

पाने के लिए एक बड़ी चोरी

श्रीमती कस्तूरी बाई गाधी तकली कात रही हैं ।

उन्होंने कहा—"हमारे हाथ में सोन का कडा है। इसमें से कुछ तोला काटकर उधार चुका देने से किसी को खबर भी नहीं मिल सकती।"

यह काम मोहन (बापू) को अनोखा लगा, परन्तु बोलने की हिम्मत न हुई और कड़ा कट जाने दिया। देना तो चुक गया, परन्तु सत्य को कायम रखने के लिए वे विचलित हो उठे। चैन कैसे पड़ता ?

हाय, हाय, मैं चोरी में पड़ा। ऐसे नाश्ता में धूल पड़ जाय और ऐसी बीडी में आग लग जाय।

फिर विचार आया—अरे ! मैंने तो पिताजी को भी धोखा दिया।

मोहन को खाना अच्छा नहीं लगता और न कोई और चीज अच्छी लगती। भीतर ही भीतर पाप मँडराया करता।

अन्त में निश्चय किया "पिता के पास चलकर अपने पाप का अपराध स्वीकार कर लूँ। मारें, तो मार सह लूँ। यदि क्षमा करें तो सहन कर लूँ।"

पिता के पास मुँह से पाप कहने की हिम्मत न हुई। गाधीजी ने एक चिट्ठी लिखी और सब पाप कबूल करके पिताजी से क्षमा चाही। आँखों में आँसू और काँपते हुए हाथ से उन्होंने पिताजी को चिट्ठी दी। चिट्ठी पढ़कर पिता की आँखों से मोती जैसे आँसू निकल पड़े। उन्होंने मोहन का गुनाह माफ कर दिया। गुनाह माफ़ हो जाने से सत्यवादी पुत्र का हृदय प्रफुल्लित हो उठा।

गाधीजी ने लँगोटी क्यों पहनी, यह जानना आप लोग चाहते होंगे। चम्पारन (यह स्थान बिहार में है) की गुलामी का नाश करने के लिए गाधीजी वहाँ के गाँवों में रहते और सेवा करते थे।

गाधीजी एक गाँव में गये। वहाँ बहुत सी बहनों को मैला देखा। गाँधीजी ने कस्तूरबा से कहा—"इन बहनों को रोज नहाने और कपड़ा साफ करने की शिक्षा दो।"

कस्तूर बा उन बहनों के पास गई और गाधीजी के कथनानुसार उन्हें सफाई-सम्बन्धी शिक्षा दी। उन्होंने कहा—"बहनो, आपको
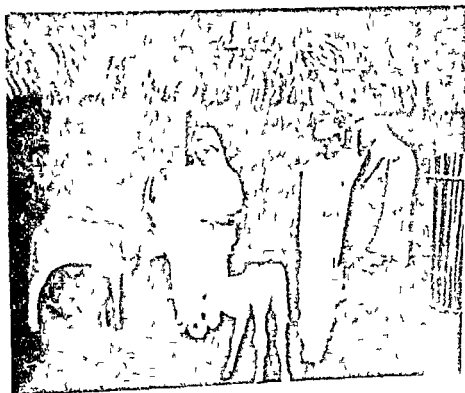
सेगांव में महात्मा गांधी की गोशाला। यह चित्र उस समय का है
जब सेगांव आने पर लार्ड लोथियन उसे देखने गये थे।

कपड़ा धोना चाहिए। इसके लिए आलस्य नहीं करना चाहिए।"

गंदगी से रहनेवाली बहनें उनको देख रही थीं। पीछे उनमें से एक बहन ने कहा—"माताजी, थोड़ी देर के लिए मेरे घर में आइए।" वह उन्हें घर ले गई और बोली—"माताजी, मेरे घर को देख लीजिए। यहां क्या कपड़ों से कबार भरा है? अब माताजी, क्या साफ करूँ और क्या बदलूँ? इसलिए महात्माजी से कहकर मुझे दूसरे एक दो कपड़े दिलाइए। तब मैं रोज धोये हुए कपड़े पहन कर साफ रहूँ भी।"

गांधीजी ने देश की दरिद्रता देख ली थी लेकिन जब उन्होंने यह बात सुनी तो सच्ची कल्पना जग पड़ी।

यह दरिद्रता कैसे दूर हो? पहली स्त्री को दूसरा कपड़ा देने से क्या हो सकता था? उस तरह की तो देश में असंख्य दरिद्र बहनें हैं।

स्वराज्य मिलने का एक ही उपाय है। गांधीजी जब स्वराज्य के लिए लड़ते हैं तो उनको उन गरीब झोपड़ियों में रहनेवाली बहनों की याद आती है।

गांधीजी ने ऐसी लड़ाई शुरू की और वह खूब जोर में थी। तब अचानक एक बहुत बड़ी घटना घटित हुई। सरकार ने

आपके महान् साथी मौलाना मुहम्मदअली को गिरफ़ार कर लिया।

इस कठिन समय पर गांधीजी को फिर मैली रहनेवाली बहनों की याद आई। उसी वक्त आपने प्रतिज्ञा की कि जब तक स्वराज्य नहीं मिलेगा और भारत माता की देह नहीं ढकी जायगी तब तक मै तीन तीन कपडे नहीं पहनूँगा। लाज से बचने के लिए लँगोटी काफ़ी है। तभी से गांधीजी ने लँगोटी पहनना शुरू किया। वह नियम उनका अब तक चला आ रहा है।

प्यारे बालसखाओ, ऐसी अनेक घटनाएँ गांधीजी के जीवन की हैं। उन्हें यहाँ नहीं लिखा जा सकता। आप लोग भी देश के लिए कुछ प्रतिज्ञाएँ करके देश की सेवा करें।*

---

* गांधीजी नामक एक गुजराती पुस्तक के आधार पर।

तितली रानी

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

कहाँ चलीं तुम तितली रानी!

रंगबिरंग इन फूलों पर!
सरिता के सुन्दर कूलों पर!
लहरों के अनुपम झूलों पर।
झूल रहीं कैसी मनमानी!
कहाँ चलीं तुम तितली रानी!

स्याह, गुलाबी, नीली-पीली!
परी नवेली, रंग-रँगीली!
विश्व-विपिन में विचर रही हो,
नूतन पहिने, साड़ी धानी!
कहाँ चलीं तुम तितली रानी।

चूम चूम फूलों का मुखड़ा!
भूल रहीं जीवन का दुखड़ा!
किसका यश-सौरभ फैलातीं!
गाती हो तुम क्या मस्तानी।
कहाँ चलीं तुम तितली रानी।

रस पी कुसुम-सेज पर सोईं।
किन मीठे सपनों में खोईं!
उड़तीं स्वर्ण-पंख फैला फिर!
किसे खोजने को दीवानी।
कहाँ चलीं तुम तितली रानी।

भेड़िये की लड़की

लेखक ठाकुर श्रीनाथसिंह

(१)

एक राय साहब थे। उनका नाम मनबोधनलाल था। उन्हें किसी बात की कमी नहीं थी, क्योंकि वह नरगढ़ राज्य के मालिक थे। फिर भी उनका दूसरा विवाह एक भेड़िये की लड़की से हुआ था। राय साहब के इस विवाह की कहानी मैं 'बाल सखा' के पाठकों के मनोरञ्जन के लिए यहाँ लिखता हूँ।

यह उस समय की बात है जब राय साहब की पहली स्त्री मर गई थी और उसके कुछ दिन बाद वह एकाएक बहुत बीमार पड़ गये थे। उन्होंने डाक्टरों, वैद्यों और हकीमों की दवा की, लेकिन उससे कुछ भी फायदा नहीं हुआ। इससे वे अपने जीवन से निराश हो गये। वे ज्योतिषियों का बहुत आदर करते थे। एक दिन एक ज्योतिषी ने राय साहब से यह बतलाया कि आपका यह रोग अच्छा न हो सकेगा और आप केवल ६ महीने तक और ज़िंदा रह सकेंगे।

राय साहब को ज्योतिषी की इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया कि वे ६ महीने बाद अवश्य मर जायेंगे। उनकी लाखों की वसूल-तहसील थी और उनके ख़जाने में अपार सम्पत्ति थी। फिर भी उन्हें कोई सन्तान नहीं थी। इसलिए उन्होंने मरने के पहले अपनी सारी सम्पत्ति को दूसरे की इच्छा पूरी करने में खर्च करने का निश्चय कर लिया।

सुबह होते ही राय साहब की यह घोषणा डुग्गी पिटवाकर गाँव-गाँव और गली-गली में करवा दी गई। एक हफ्ते में उनके महल के सामने हजारों की भीड़ लग गई। उन्होंने सब लोगों से अर्जियाँ देने के लिए कहा। लेकिन जब अर्जियों की संख्या बढ़ने लगी तब राय साहब ने लोहे का एक बहुत बड़ा सन्दूक महल के सामने रखवा दिया और आज्ञा हुई कि सब लोग अपनी-अपनी अर्जियाँ उसी में डाल दें। आज के तीसरे रोज से कोई अर्ज़ी नहीं ली जायगी और उसके बाद अर्ज़ियों पर विचार होगा।

तीन दिन बाद सब लोग महल के सामने फिर इकट्ठे हुए। राय साहब ने अर्जियों वाला सन्दूक अपने पास रख लिया और भीड़ में से एक छोटे से बच्चे को बुलाकर कहा कि सन्दूक में से एक अर्ज़ी निकालो। बच्चे ने एक अर्ज़ी निकाली। वह अर्ज़ी एक जौहरी की थी। वह अपनी स्त्री के लिए गहने चाहता था। राय साहब ने अपनी मरी हुई स्त्री के सभी गहने उस जौहरी को दे दिये। इसके बाद लड़के ने दूसरी अर्ज़ी निकाली। वह एक मुसलमान की थी। वह

हज करने के लिए रुपये चाहता था। राय साहब ने उसे रुपये दिला दिये। इसके बाद लड़के ने तीसरी अर्जी निकाली। वह एक साधु की थी, जो यह चाहता था कि उसे इतने रुपये मिल जायँ कि वह रात-दिन गाँजा पी सके। राय साहब ने उसे करीब १० गाँव दे दिये। इसके बाद लड़के ने बीरू जाट की अर्जी निकाली। उसमें लिखा हुआ था "हुजूर! मेरी सिर्फ एक विनती है। गेरू के तालाब के जङ्गली टीले पर जो भेड़िया रहता है वह मार डाला जाय।"

राय साहब ने बीरू को बुलाकर कहा—बीरू! तुम बड़े मूर्ख जान पड़ते हो! पर खैर, मैं गेरू के ताल के जङ्गली टीले पर बजाय एक के २० सिपाही भेजता हूँ। तुम भी उनके साथ जाओ। वे उस भेड़िये को मार डालेंगे।"

इसके बाद राय साहब ने उस बच्चे से और अर्जियाँ निकालने के लिए कहा। मगर मंत्री ने उस बच्चे का हाथ पकड़ लिया और राय साहब से कहा—"हुजूर! मैंने उस भेड़िये की बहुत अजीब कहानी सुनी है। मैंने सुना है कि उसकी माँद में एक सुंदर राजकन्या भी रहती है और वह मनुष्य की आहट पाते ही तुरत गायब हो जाती है। मेरा तो विचार है कि यह कोई बहुत बड़ा रहस्य है जो बीस सिपाहियों के मान का नहीं। मुमकिन है कि आपका सारा खजाना खाली हो जाने पर भी वह भेड़िया मारा न जा सके। इसलिए आप और लोगों की इच्छा तब पूरी करें जब वह भेड़िया मार डाला जाय।"

मंत्री की यह बात राय मनबोधनलाल को पसंद आ गई और उन्होंने हुक्म दिया कि सब लोग गेरू के तालाब के किनारे चलें। राय साहब की आज्ञा पाकर सब लोग उस तालाब की ओर चल पड़े।

(२)

यह ताल चित्रकूट के पास पहाड़ी इलाके में है। गेरू का ताल यह इसलिए कहा जाता है कि उसके चारों तरफ गेरू की चट्टानें हैं और इन चट्टानों पर से बरसात का पानी जब बहकर आता है तब सारा ताल लाल हो जाता है। चारों तरफ हरी-भरी पहाड़ियों के बीच यह लाल ताल बहुत ही सुन्दर लगता है। परंतु इस ताल तक जाने का रास्ता बड़ा कठिन है। मगर राय साहब को बीरू जाट की इच्छा पूरी करनी थी। इसलिए वे इस ताल के किनारे तक गये और वहाँ उन्होंने बाकायदे डेरे डलवाये। उनके साथ वह लोहे का सन्दूक भी गया जिसमें सबकी अर्जियाँ थीं और वे सब आदमी भी गये जो उन अर्जियों को लेकर राय साहब के सामने हाजिर हुए थे।

खासा पड़ाव पड़ गया। राज्य की ओर से सबके स्वागत-सत्कार का इंतजाम होने लगा और उस भेड़िये की खोज होने लगी। उस विचित्र भेड़िये को देखने के लिए

उस विचित्र भेड़िये को देखने के लिए राय साहब अपने सिपाहियों के साथ पालकी पर सवार होकर जंगली टीले की ओर गये।

खुद राय साहब के मन में भी बहुत बड़ी इच्छा उमड़ी। वे भी अपने सिपाहियों के साथ पालकी पर सवार होकर उस जंगली टीले की ओर गये।

आहट पाकर भेड़िया भाग न जाय, इस खयाल से सब आदमी झील के किनारे एक कैम्प में ठहरा दिये गये थे और सिर्फ थोड़े से आदमी उस टीले पर चढ़ने पाये। लगातार ६ घंटे की खोज के बाद कहारों ने एकाएक आश्चर्य-चकित होकर पालकी रख दी और राय साहब से कहा—"हुजूर! ज़रा उधर टीले पर सबसे ऊँची चट्टान पर देखिए।"

राय साहब ने देखा, सचमुच एक भेड़िया बैठा है और उसके पास ही खड़ी एक सुंदर स्त्री लंबी लतरों के डंठल में फूल और पत्तियाँ गूँथ रही है। उनकी उत्सुकता इतनी बढ़ी कि वे पालकी में उठकर बैठ गये और बैठते ही उन्हें जान पड़ा जैसे वे कभी बीमार ही नहीं थे। उन्होंने पालकी में बैठे ही बैठे अपनी दूरबीन माँगी और उससे उन्होंने जंगली टीले पर के भेड़िये और स्त्री को ध्यान से देखा। वह स्त्री उन्हें परियों से कहीं अधिक सुंदर मालूम हुई। यह स्त्री कौन है? यहाँ उस टीले पर उस भेड़िये के कब्जे में वह किस तरह पहुँची? बीरू जाट उस भेड़िये को क्यों मरवाना चाहता है?—आदि सवाल उनके दिमाग में तूफान की तरह उठने लगे। उन्होंने बीरू जाट को बुलवाया और पूछा—"यही भेड़िया है?" बीरू जाट ने जवाब

राय साहब ने देखा, सचमुच एक भेड़िया खड़ा है और उसके पास ही एक स्त्री भी खड़ी है।

दिया, "हाँ सरकार, वही है।" राय साहब ने उससे पूछा, "तू उसे क्यों मरवाना चाहता है?" वीरू ने कहा, "मैं लकड़ी और चारे की तलाश में अकसर टीले पर जाता था और उस भेड़िये को तथा उसके साथ रहनेवाली लड़की को देखता था। मैंने सोचा कि इस सुंदर लड़की का विवाह किसी से हो जाय तो बहुत अच्छा हो। जब तक यह भेड़िया नहीं मारा जाता तब तक यह बात नहीं हो सकती। इसलिए मैं चाहता हूँ कि यह भेड़िया मारा जाय। इस लड़की का हाल शायद ही मेरे सिवा और किसी को मालूम हो, क्योंकि यहाँ तक कोई आया ही नहीं।"

"हूँ" राय मनबोधनलाल ने कहा और उन्होंने दूरबीन उठाकर फिर उस भेड़िये की ओर देखने की कोशिश की। मगर वहाँ कोई नहीं था। शायद आदमियों की आहट पाकर दोनों गायब हो गये थे। इसके बाद उस दिन शाम भर और दूसरे दिन फिर पूरे दिन भर उस भेड़िये की खोज की गई। मगर उसका कहीं पता न चला।

वीरू जाट उस भेड़िये और लड़की के बारे में इससे अधिक नहीं बता सका। पर राय साहब उसके बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए उत्सुक हुए। इसलिए वे उस गाँव में गये जिसमें वीरू जाट रहता था। उन्होंने गाँववालों से उस लड़की के बारे में पूछना शुरू किया। गाँववालों में से जो बूढ़े थे उन्होंने बताया कि कोई पंद्रह-बीस वर्ष पहले एक भेड़िया एक किसान की दूध पीती बच्ची को उठा ले गया था। किसान की औरत लड़की को धान की मेड़ के पास सुला कर धान काट रही थी। उसी वक्त भेड़िया आया और उस दूध-पीती बच्ची को उठा ले गया। बेचारा किसान और उसकी औरत रोकर रह गये। बाद में अकसर लोगों ने उस भेड़िये को लड़की को लिये हुए फिरते देखा। मगर कोई उसको पकड़ नहीं सका या लड़की को उससे छुड़ा नहीं सका। मुमकिन है कि यह वही लड़की हो और वही भेड़िया हो।

राय साहब के हुक्म से वह किसान बुलाया गया जिसकी लड़की को भेड़िया उठा ले गया था। उसके और भी लड़के लड़कियाँ थीं। राय साहब ने देखा, वे बड़े दुबले पतले और मैले कुचैले कपड़े पहने हुए थे। उन मैले कुचैले कपड़े पहननेवालों से वह नंगी लड़की कहीं अधिक सुंदर और स्वस्थ थी।

राय साहब उस किसान के बच्चों को देखकर भारी चिंता में पड़ गये और किसी तरह उस गाँव में दो तीन दिन काट कर अपने डेरे पर लौट आये।

(३)

राय साहब फिर अपने कुछ विश्वासी आदमियों को साथ लेकर उस पहाड़ी टीले का चक्कर लगाने लगे। मगर उन्हें उस भेड़िये और उस लड़की का कोई पता नहीं चला। इसलिए जिन लोगों की अर्जियाँ उनके ... थीं और जो उनके साथ गन्ने ...

के पास इकट्ठे हुए थे उन सबों से उन्होंने कहा—"जब तक मैं इस लड़की को इस भेड़िये के साथ से छुड़ा न लूँगा तब तक और किसी अर्ज़ी पर विचार न करूँगा।"

कई दिन लगातार घूमने के बाद एक दिन राय साहब बहुत थके हुए एक पेड़ के नीचे बैठे थे। इसी समय एकाएक उनके कान में किसी मनुष्य के सिसकने की सी आवाज़ आई। उन्होंने देखा कि जहाँ वे बैठे है, वहाँ से थोड़ी ही दूर पर खड़ी वह लड़की सिसक-सिसककर रो रही है और वह भेड़िया मरा पड़ा है। राय साहब ने सोचा कि जब पहली बार उन्होंने भेड़िये को देखा था तब शायद वह बीमार था और अब वह मर गया है और वह लड़की उसी के वियोग में रो रही है। शायद इस भेड़िया के सिवा इस लड़की का और कोई सहारा नहीं था। इसी लिए वह रो रही है। वे तुरत उठकर खड़े हो गये और उस लड़की की ओर बढ़े। लेकिन उन्होंने देखा कि वह वहाँ से भागकर माँद मे घुस गई। राय साहब बहुत देर तक उस माँद के पास खड़े रहे। फिर अपने डेरे पर चले आये।

दूसरे दिन सबेरे राय साहब खाने-पीने की स्वादिष्ट चीजें बनवाकर उस माँद के पास गये और माँद के दरवाजे पर उन चीजों को रखकर बाहर खड़े हो गये। उन्होंने देखा कि वह लड़की आई और चुपके से उसने उन चीजों में से कुछ को चक्खा, कुछ को सूँघकर फेंक दिया और फिर माँद के अंदर चली गई। इस तरह राय साहब प्रतिदिन करने लगे और लड़की उनसे अधिक से अधिक ढीठ होने लगी। एक दिन उन्होंने कितने ही क़ीमती गहने और कपड़े ले जाकर उस माँद के सामने रक्खे और बाहर खड़े होकर यह देखना शुरू किया कि वह लड़की उन गहनों और कपड़ों का क्या करती है। कुछ बहुमूल्य कपड़ों को उसने फाड़ डाला और कुछ बहुमूल्य मालाओं को तोड़कर बिखेर डाला मगर वह आश्चर्य में थी कि ये क्या चीजें हैं और किस काम आती है।

इस तरह करते करते एक दिन वह लड़की राय साहब के इतने नजदीक आ गई कि राय साहब ने उसको पकड़ लिया और फिर नहीं छोड़ा। अपने हाथ से एक बढ़िया रंगीन साड़ी पहनाकर वे उसे उस गाँव में ले आये जहाँ से कि भेड़िया उसको पहली बार ले भागा था। तमाम गाँव के लोग उस लड़की को देखने के लिए जमा हुए। आस-पास के गाँव के लोग भी उसको देखने के लिए आये।

राय साहब उस लड़की को लेकर नरगढ़ वापस चले आये। उसको उन्होंने पढ़ना लिखना सिखाया और अंत में वही लड़की नरगढ़ की रानी बन गई और राय मनबोधनलाल बहुत दिनों तक जीवित रहे तथा उनके दिन सुख और आनंद से कटे।*

* ("हंस" में प्रकाशित लेखक की 'जिंदगी और मौत के गीत' शीर्षक कहानी से परिवर्तित।)

बाल-महाभारत

कृष्णचंद्र की प्रतिज्ञा

लेखक, पं० मोहनलाल नेहरू

चंद्र राज यज्ञ की चर्चा फैली देश विदेश
उनके दर्शन को आये बहु छोटे बड़े नरेश।
धृष्टद्युम्न कृष्णा के भाई, कृष्णचंद्र बलदेवा
वृष्णिवंश और चेदिराज भी करें कुछ उनकी सेवा।
अपनी दुख भरी गाथा जब कृष्णा उन्हें सुनाती
वीरों की कायरता का दिग्दर्शन उन्हें कराती।
अपमानों की कथा सुनाकर आँसू नदी बहाती
सभा उपस्थित वीरों की गर्दन नीचे झुक जाती।
कुपित कृष्ण होकर यों बोले करी प्रतिज्ञा मानी
"धर्मराज को राज दिलाकर तुझे बनाऊँ रानी"।
पांडव-कृष्ण मिलन की घटना जब राजा ने पाई,
होश हुए सब उसके गायब बुद्धी गई पराई।
धृतराष्ट्र ने कहा विदुर से खबर नगर की लीजे
वृद्ध जनों का क्या कहना है हमें सुना सब दीजे।
कहा विदुर ने सारी नगरी तुम्हें बुरा बतलाती है
कुरुवंश के वृद्ध जनों को जालिम वह ठहराती है।
राज सभा में नारद ने यों आकर शब्द सुनाया
'चौदह वर्ष जहाँ बीते बस काल तुम्हारा आया।'
नारद के इन दुर्वचनों से कौरव बहु घबराये
द्रोणाचार्य वृद्ध के शरणों सब के सब वे आये।
नारद वाक्य सही बतलाकर कहें द्रोण इस भांता
"जन्म लिया जिसने दुनिया में मौत उसे है आती।
"कुछ काल गये कौरव पांडव में युद्ध अवश है होना
"कूट नीति अंधे राजा की युद्ध-बीज का बोना।
"महारथी अर्जुन को जानो शिष्य हमारा प्यारा
"शरणागत पर तुम हो मेरे रक्षक रहूँ तुम्हारा।
"दुर्योधन शकुनी! तुम मिलकर बने कुरु के काल
"वृद्धजनों का कहा न करना बुरी तुम्हारी चाल।
"वीरपुरुष हैं पांडव भ्राता रच वधे बलवान
"मनुजमात्र की गिनती क्या है नहीं बचेगी जान।
"कृष्णचंद्र और धृष्टद्युम्न जब पांडव के हों साथी
"मार गिरावें सकल सृष्टि वे यक्ष देव या हाथी।
"फिर भी साथ तुम्हारा दूँगा करो यही विश्वास
"अर्जुन भीम मगर कर देंगे कौरवगण का नाश।"
ऐसे वचन गुरु के सुनकर कौरव बहु घबराये
पांडव की हत्या करने पर कर्ण उन्हें उसकाये।
सेना एक इकट्ठी लेकर बन की तरफ सिधाये
छल से पाँचों भाई बधेंगे ऐसा वह ठहराये।
वेदव्यास द्वारा यह सेना जाने से रुक जाये
छल करना ऐसे वीरों से कूट नीति कहलाये।
खबर मिले किरमीर मरन की कौरव बहुत उदास
पीडित हो चिंता में पड वे लेवे टूटी सास।

पृथ्वी की दूसरी तरफ़ रहनेवाले गिर क्यों नहीं पड़ते

लेखक, श्रीयुत सुरेशशरण अगवाल, बी० एस् सी०

चित्र सख्या १

चित्र सख्या २ (अ)

चित्र सख्या २ (ब)

बच्चे से लेकर बूढे तक सभी जानते हैं कि जमीन नारगी की भाँति गोल है। परन्तु कभी-कभी जमीन की गोलाई के विरुद्ध कई बडे-बडे सवाल उठ खडे होते है। जमीन गोल होने का पहला प्रमाण तो यह है कि यदि समुद्र के किनारे से जहाज में बैठकर कोई नाक की सीध पर बराबर चलता जाय, तो अत में वह वहीं वापिस आ जायगा जहाँ से पहले चला था। इस प्रकार जमीन का पहला चक्कर लगानेवाला पुर्तगाल का मेगलन नामक एक मल्लाह था। सन् १५१९ में वह तीन जहाजों के साथ रवाना हुआ। पश्चिम में चलते-चलते वह फिलिपाइन द्वीप पहुँचा। वहाँ के निवासियो ने लडाई में उसे मार डाला और उसके दो जहाज लूट लिये। यह घटना सन् १५२१ की है। परन्तु सौभाग्य से तीसरा जहाज, जिसके कप्तान दलकानो थे, पश्चिम की ओर बढ़ गया और चारों ओर घूमता हुआ सन् १५२२ में पुर्तगाल के तट पर आ गया। जमीन के गोल होने के इस प्रमाण को बडे-बडे सदेह करनेवाले भी मान लेते हैं।

परन्तु दो और बड़े-बडे प्रश्न उठते हैं। हमने मान लिया है कि जमीन गोल है।

प्रयाग-निवासी यह सोचेगा कि जमीन का कोई भाग अवश्य प्रयाग के बिल्कुल विरुद्ध होगा अर्थात् वहाँ पर जो लोग रहते होंगे उनका सर तो नीचे होगा और वे लटकते होंगे। भला यह कैसे सम्भव है? आश्चर्य की बात तो यह है कि वहाँवाले भी यह सोचते होंगे कि प्रयाग-निवासी कैसे रहते होंगे। क्या वे सिर नीचे और पैर ऊपर करके चलते होंगे? नहीं, हम तो ठीक ही चलते हैं। दूसरा प्रश्न यह है, सब जानते हैं कि पानी सदा एकतल में रहता है, पर यदि जमीन गोल है तब इसके ऊपर जो सागर और महासागर होंगे वे भी टेढ़े होंगे ताकि वे जमीन की ठीक गोलाई में आ सकें। तब भला यह पानी कैसे स्थिर रहता है, गिर क्यों नहीं पड़ता? मैं पूछता हूँ, कहाँ गिर पड़े और गिरकर कहाँ जाय? फिर भी, चाहे कहीं जाय परन्तु इसका जमीन पर टिकना तो असम्भव है।

इन दोनों प्रश्नों का उत्तर देकर मैं सब भ्रम दूर कर दूँगा। पहले सवाल में 'ऊपर', 'नीचे' कई बार आया है। बताओ तो जरा 'ऊपर' क्या है, 'नीचे' क्या है। तुम सबने देखा होगा कि किसी चीज को हाथ से छोड़ दो तो वह गिरकर नीचे चली जाती है और यदि पृथ्वी में एक बड़ी गहरी सुरंग खोद दें तो हर चीज पृथ्वी के केन्द्र में पहुँचेगी। इससे हम कह सकते हैं कि 'नीचे' का अर्थ है पृथ्वी के केन्द्र की ओर। इसी प्रकार ऊपर का अर्थ होगा पृथ्वी के केन्द्र से दूर। अब ...

चित्र-संख्या ३

संसार में कोई एक विशेष दिशा तो ऐसी है नहीं जिसे 'ऊपर' कह सकें या 'नीचे'। तुम चित्र देखो। एक जहाज बरफ में चल रहा है, उसको तो तुम कहोगे ठीक चल रहा है क्योंकि उसका सिरा ऊपर है, परन्तु मैं कहूँगा कि उसके ठीक चलने का कारण यह है कि उसकी तली पृथ्वी के केन्द्र की ओर है यानी तली नीचे को है। इसी से तुमने स्वयं जहाज का चलना ठीक बताया था। अब जरा इसके बिल्कुल विरुद्ध स्थान पर देखो। वहाँवाले जीव भी सीधे खड़े हैं, क्योंकि उनकी तली नीचे को, यानी पृथ्वी के केन्द्र की ओर है। इससे तुम समझ गये होगे कि पृथ्वी के तल पर सब जगह रहनेवाले पृथ्वी के केन्द्र की ओर ही खड़े हैं, अतएव सभी वैसे हैं जैसे होने चाहिए। न कोई उलटा लटकता है, न उलटा चलता है। अब यह कहना कि प्रयाग के विरुद्ध रहनेवाले उल्टे रहते होंगे, कदापि ठीक न होगा।

पृथ्वी की दूसरी तरफ़ रहनेवाले गिर क्यों नहीं पड़ते

लेखक, श्रीयुत सुरेशशरण अग्रवाल, बी० एस् सी०

चित्र संख्या १

चित्र संख्या २ (अ)

चित्र संख्या २ (ब)

बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी जानते हैं कि जमीन नारंगी की भाँति गोल है। परन्तु कभी-कभी जमीन की गोलाई के विरुद्ध कई बड़े-बड़े सवाल उठ खड़े होते हैं। ज़मीन गोल होने का पहला प्रमाण तो यह है कि यदि समुद्र के किनारे से जहाज में बैठकर कोई नाक की सीध पर बराबर चलता जाय, तो अंत में वह वहीं वापिस आ जायगा जहाँ से पहले चला था। इस प्रकार जमीन का पहला चक्कर लगानेवाला पुर्तगाल का मेगलन नामक एक मल्लाह था। सन् १५१९ में वह तीन जहाजों के साथ रवाना हुआ। पश्चिम में चलते-चलते वह फिलिपाइन द्वीप पहुँचा। वहाँ के निवासियों ने लड़ाई में उसे मार डाला और उसके दो जहाज लूट लिये। यह घटना सन् १५२१ की है। परन्तु सौभाग्य से तीसरा जहाज, जिसके कप्तान दलकानो थे, पश्चिम की ओर बढ़ गया और चारों ओर घूमता हुआ सन् १५२२ में पुर्तगाल के तट पर आ गया। जमीन के गोल होने के इस प्रमाण को बड़े-बड़े संदेह करनेवाले भी मान लेते हैं।

परन्तु दो और बड़े-बड़े प्रश्न उठते हैं। हमने मान लिया है कि ज़मीन गोल है।

प्रयाग-निवासी यह सोचेगा कि जमीन का कोई भाग अवश्य प्रयाग के बिल्कुल विरुद्ध होगा अर्थात् वहाँ पर जो लोग रहते होंगे उनका सर तो नीचे होगा और वे लटकते होंगे। भला यह कैसे सम्भव है? आश्चर्य की बात तो यह है कि वहाँवाले भी यह सोचते होंगे कि प्रयाग-निवासी कैसे रहते होंगे। क्या वे सिर नीचे और पैर ऊपर करके चलते होंगे? नहीं, हम तो ठीक ही चलते हैं। दूसरा प्रश्न यह है, सब जानते हैं कि पानी सदा एकतल में रहता है, पर यदि जमीन गोल है तब इसके ऊपर जो सागर और महासागर होंगे वे भी टेढ़े होंगे ताकि वे जमीन की ठीक गोलाई में आ सकें। तब भला यह पानी कैसे स्थिर रहता है, गिर क्यों नहीं पड़ता? मैं पूछता हूँ, कहाँ गिर पड़े और गिरकर कहाँ जाय? फिर भी, चाहे कहीं जाय परन्तु इसका जमीन पर टिकना तो असम्भव है।

इन दोनों प्रश्नों का उत्तर देकर मैं सब भ्रम दूर कर दूँगा। पहले सवाल में 'ऊपर', 'नीचे' कई बार आया है। बताओ तो जरा 'ऊपर' क्या है, 'नीचे' क्या है। तुम सबने देखा होगा कि किसी चीज को हाथ से छोड़ दो तो वह गिरकर नीचे चली जाती है और यदि पृथ्वी में एक बड़ी गहरी सुरंग खोद दें तो हर चीज पृथ्वी के केन्द्र में पहुँचेगी। इससे हम कह सकते हैं कि 'नीचे' का अर्थ है पृथ्वी के केन्द्र की ओर। इसी प्रकार ऊपर का अर्थ होगा पृथ्वी के केन्द्र से दूर। अब इस

चित्र संख्या ३

संसार में कोई एक विशेष दिशा तो ऐसी है नहीं जिसे 'ऊपर' कह सकें या 'नीचे'। तुम चित्र देखो। एक जहाज बरफ में चल रहा है, उसको तो तुम कहोगे ठीक चल रहा है क्योंकि उसका सिरा ऊपर है, परन्तु मैं कहूँगा कि उसके ठीक चलने का कारण यह है कि उसकी तली पृथ्वी के केन्द्र की ओर है यानी तली नीचे को है। इसी से तुमने स्वयं जहाज का चलना ठीक बताया था। अब जरा इसके बिल्कुल विरुद्ध स्थान पर देखो। वहाँ वाले जीव भी सीधे खड़े हैं, क्योंकि उनकी तली नीचे को, यानी पृथ्वी के केन्द्र की ओर है। इससे तुम समझ गये होगे कि पृथ्वी के तल पर सब जगह रहनेवाले पृथ्वी के केन्द्र की ओर ही खड़े हैं, अतएव सभी वैसे हैं जैसे होने चाहिए। न कोई उलटा लटकता है न उलटा चलता है। अब यह कहना कि ... के विरुद्ध रहनेवाले उल्टे रहते हैं ठीक न होगा।

आइने में राजकुमारी को अपना चेहरा खराब दिखलाई पड़ने लगा।

राजकुमारी सारे दिन उस कमरे में पड़ी रही। न तो उसने खाना खाया और न पानी पिया। इधर उत्तरा के कहने के मुताबिक़ एक दिन बन्द रहकर वह आदमी दरवाजा तोड़कर बाहर भाग गया।

राजा, रानी और दासियाँ उत्तरा के कमरे के दरवाजे पर धक्का देने लगीं और उसे बाहर निकलने के लिए कहने लगीं, पर उत्तरा न तो जवाब दे सकी और न दरवाजा ही खोल सकी। आखिर लाचार होकर राजा ने दरवाजा तोड़ डालने का हुक्म दिया। दरवाजा तोड़ा गया। भीतर घुसकर जब ने उत्तरा का रूप देखा तो कोई उसे चान न सका। सब ने सोचा कि यह डाइन ही राजकुमारी को खा गई है और खुद बैठी है।

रानी ने कहा कि अगर अब भी तू मेरी लड़की को लौटा दे तो तू छोड़ दी जायगी। पर उत्तरा ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। इस पर राजा क्रोधित होकर बोले—"इस डाइन को क़ैद करके रक्खो। कल तक अगर उत्तरा को यह न लौटा देगी तो इसे फाँसी दी दी जायगी।" राजा के कथनानुसार वह क़ैद कर ली गई। इस पर वह बेचारी बहुत रोने लगी। उसके मन में सारा घमंड गया। आखिरकार रोते रोते वह सो कुछ देर बाद वह किसी की पुकार से गई। देखा, वही आइनेवाला खड़ा होकर बुला रहा है। उत्तरा उसके पाँव पर गिर कर फूट-फूटकर रोने लगी। तब वह आदमी बोला—"उत्तरा, मैं कोशल नगरी का युवराज हूँ। तुमसे ब्याह करने आया था। पर फाटक पर से ही भगाया गया था। अब अगर तुम मुझसे ब्याह करने की प्रतिज्ञा करो तो मैं तुम्हें पहले की तरह बना दूँ।" उत्तरा ने प्रतिज्ञा की तब उसने और एक आइना उसे दिया। उसमें देखते ही उत्तरा को अपनी पहलेवाली सूरत मिल गई।

दूसरे दिन उत्तरा ने पिता से सब हाल कह सुनाया और उस युवराज के साथ ब्याह करके वह सुख से रहने लगी।[*]

[*] एक बँगला कहानी के आधार पर।

पैसे के किनारे पेंसिल फेरकर चित्र बनाइए
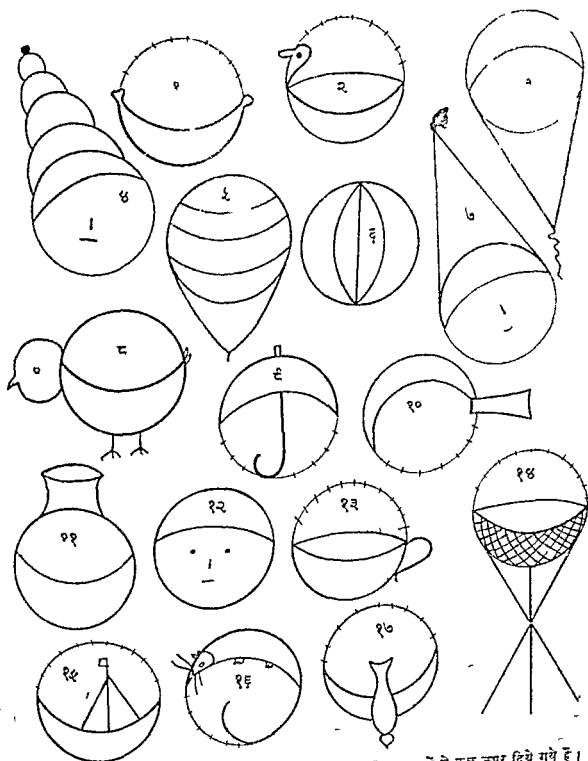
पैसे के किनारे पेंसिल फेरकर कई चित्र बनाये जा सकते हैं। उनमें से कुछ ऊपर दिये गये हैं। १—बेला २—बतख ३—गुब्बारा ४—फैंसी टोपी ५—लट्टू ६—फुटबाल ७—सूरदास की टोपी ८—मुर्गा ९—छाता १०—हँसिया ११—झज्झर १२—चेहरा १३—प्याला १४—टोकरी १५—जहाज़ १६—चूहा १७—चिड़िया। ये चित्र बम्बई से प्रकाशित 'पुष्प' नामक अँगरेजी मासिक पत्र से लिये गये हैं।

रेशम के कीड़ों को शहतूत की पत्तियाँ खिलाई जा रही हैं।

अलग अलग अंडे देते हैं। ये खाने उन्हें अंडे देने के लिए बनाये गये हैं।
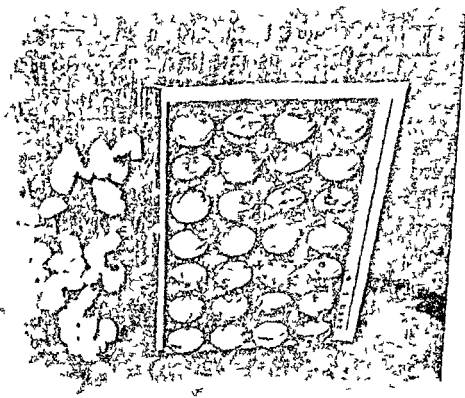
जापानी स्त्रियां कुकून साफ़ कर रही हैं ।

रेशम के कीड़े की कहानी

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी

हम साल भर एक ही तरह के कपडे नहीं पहनते। गर्मी के दिनों में हम सूती और रेशमी हलके कपडे पहनते है, परतु जाडे में ऊनी कपडे पहनते है। सूती कपड़े रूई से बनते हैं और ऊनी कपडे अधिकतर भेड़ों की ऊन से। लेकिन आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि रेशमी कपड़ों के लिए जिन तागों की आवश्यकता पडती है उन्हे रेशम के छोटे-छोटे कीडे तैयार करते हैं। इन कीड़ों की कहानी बहुत ही मनोरञ्जक है।

छाए हिए गए कुकून

पूरे आकार के रेशम के कीड़े शहतूत की पत्तियाँ खा रहे हैं।

जाता है, तब वह अपना सिर उठाता है और यह मालूम होता है कि वह अब रेशम पैदा करने के लिए तैयार हो गया है। तब वे दूसरी टोकरियों में बदल दिये जाते हैं। उस समय उनकी लंबाई तीन इंच के लगभग होती है और उनका रंग कुछ पीला और भूरा हो जाता है। जब रेशम के कीड़े पूरे बढ़ जाते हैं, तब ये रेशम कातने का काम शुरू कर देते हैं। रेशम के कीड़ों के मुँह में दो नलियाँ होती हैं। कातते समय ये नलियाँ फूल जाती हैं और उनमें से रेशम का धागा निकलने लगता है। रेशम के कीड़े धागा निकालते समय अपना सिर ऊपर-नीचे और दाएँ-बाएँ हिलाते रहते हैं। इससे रेशम के धागों का एक सुंदर बंडल तैयार हो जाता है। इस बंडल को कुकून कहते हैं।

कुकून बन चुकने पर रेशम का कीड़ा एक छोटे से अण्डाकार डिब्बे में बंद कर दिया जाता है जिसमें वह आराम से बैठा रहता है और कुछ दिन बीतने पर वह एक सुंदर और चमकीले पतंग की शकल में बदल जाता है। कुकून को धूप में अच्छी तरह सुखा लिया जाता है। इसके बाद उसे एक बरतन में रखकर आग पर चढ़ा दिया जाता है। यह इसलिए किया जाता है कि उसके भीतर के कीड़े मर जायें। अगर कीड़ों को भीतर रहने दिया जाय तो वे फिर से अंडे देना शुरू करके कुकून को नष्ट कर देते हैं। कीड़ों के मर जाने पर कुकून को ठंढे पानी में रख देते हैं और बाद में फिर गरम पानी में। इसके बाद कुकून को सुलझाकर रेशम की रीलें बना ली जाती हैं। रील बनाने का काम कहीं कहीं मशीन पर होता है और कहीं-कहीं औरतें खुद इस काम को करती हैं। जापान में औरतें ही रील तैयार करती हैं। इसके लिए वे अपने सामने कुकून, गरम पानी का प्याला और रील बनाने का यंत्र रख लेती हैं। रील तैयार करने का काम बहुत कठिन है, क्योंकि रेशम के कीड़े बहुत बारीक

रेशम के कीड़े और उनके अंडे

रेशम बनाने के लिए रेशम के कीड़ों को पालना पड़ता है। ये कीड़े जो अंडे देते हैं वे एक जगह इकट्ठे कर लिये जाते हैं। जो अंडा जितना अच्छा होता है उससे उतना ही अच्छा कीड़ा पैदा होता है। खराब अंडों से कीडे नहीं पैदा होते और अगर पैदा हुए भी तो वे अच्छा रेशम नहीं तैयार करते। रेशम का धंधा करनेवालों को शहतूत के पेड़ लगाने पडते हैं क्योंकि रेशम के कीडों का खास भोजन शहतूत की पत्ती है। जापान में शहतूत के पेड़ अधिक संख्या में लगाये जाते हैं, क्योंकि जापान-निवासी रेशम का कार-बार करते हैं। बिलोचिस्तान, अफगानिस्तान, काश्मीर और आसाम में भी शहतूत के पेड पाये जाते हैं।

रेशम के कीड़ों के अंडे बाँस की छोटी-टोकरियों में रख दिये जाते हैं और ऊपर से पुआल की चटाइयों से ढक दिये जाते हैं। ये टोकरियाँ गरम कमरों में रख दी जाती हैं। कुछ दिनों में अंडों में से कीडे निकल आते हैं। फिर उन्हे शहतूत की मुलायम पत्तियों के टुकडे खाने के लिए दिये जाते है। जब ये कीडे छोटे रहते है तब उन्हे दिन में पाँच-छः बार और रात में दो-तीन बार पत्तियाँ खिलाई जाती हैं। ये कीड़े दिन में भी तीन-चार बार खाते हैं।

शहतूत के पत्ते खाने से रेशम के कीडे मजबूत होने लगते है और उनका आकार भी बढने लगता है। जब ये काफी बडे हो जाते है तो पत्तियाँ खाना बंद कर देते है।

बढते समय एक और विचित्र घटना होती है। ये कीडे बढते समय अपनी ऊपरी खाल बदलते रहते है। जब रेशम का कीड़ा पूरा बढ

साफ किये गये कुकून

पूरे आकार के रेशम के कीड़े शहतूत की पत्तियाँ खा रहे हैं।

जाता है, तब वह अपना सिर उठाता है और यह मालूम होता है कि वह अब रेशम पैदा करने के लिए तैयार हो गया है। तब वे दूसरी टोकरियों में बदल दिये जाते हैं। उस समय उनकी लंबाई तीन इंच के लगभग होती है और उनका रंग कुछ पीला और भूरा हो जाता है। जब रेशम के कीड़े पूरे बढ़ जाते हैं, तब ये रेशम कातने का काम शुरू कर देते हैं। रेशम के कीड़ों के मुँह में दो नलियाँ होती हैं। कातते समय ये नलियाँ फूल जाती हैं और उनमें से रेशम का धागा निकलने लगता है। रेशम के कीड़े धागा निकालते समय अपना सिर ऊपर-नीचे और दाएँ-बाएँ हिलाते रहते हैं। इससे रेशम के धागों का एक सुंदर बंडल तैयार हो जाता है। इस बंडल को कुकून कहते हैं।

कुकून बन चुकने पर रेशम का कीड़ा एक छोटे से अण्डाकार डिब्बे में बंद कर दिया जाता है जिसमें वह आराम से बैठा रहता है और कुछ दिन बीतने पर वह एक सुंदर और चमकीले पतंग की शकल में बदल जाता है। कुकून को धूप में अच्छी तरह सुखा लिया जाता है। इसके बाद उसे एक बरतन में रखकर आग पर चढ़ा दिया जाता है। यह इसलिए किया जाता है कि उसके भीतर के कीड़े मर जायँ। अगर कीड़ों को भीतर रहने दिया जाय तो वे फिर से अंडे देना शुरू करके कुकून को नष्ट कर देते हैं। कीड़ों के मर जाने पर कुकून को ठंडे पानी में रख देते हैं और बाद में फिर गरम पानी में। इसके बाद कुकून को सुलझाकर रेशम की रीलें बना ली जाती हैं। रील बनाने का काम कहीं कहीं मशीन पर होता है और कहीं-कहीं औरतें खुद इस काम को करती हैं। जापान में औरतें ही रील तैयार करती हैं। इसके लिए वे अपने सामने कुकून, गरम पानी का प्याला और रील बनाने का यंत्र रख लेती हैं। रील तैयार करने का काम कठिन है, क्योंकि रेशम के कीड़े

धागा निकालते हे। रील तैयार करते समय कई धागों को एक साथ मिला लिया जाता हैं जिससे वे मजबूत रहे और टूट न सकें।

रील तैयार होने पर उससे रेशमी कपड़े बुने जाते हैं। सूती और ऊनी कपड़े बुनने के लिए कपास और ऊन को कातना पड़ता है परंतु रेशमी कपड़ों के लिए रेशम के कीड़ों से कता-कताया रेशम ही मिल जाता हैं। एक कूकून में चार सौ गज तक का रेशम का धागा निकलता है।

प्रोफ़ेसर चश्मू !

प्रोफ़ेसर चश्मू !

लेखक, श्रीयुत सीताराम अग्रवाल
(मुक्खावाला)

ऐ बच्चो ! जरा चुप हो जाओ,
अब न तुम शोर मचाओ।
खेलो कूदो नाचो या गाओ,
कुछ सुनो हमारी या सुनाओ।
हम हैं प्रोफेसर छोटेलाल,
मेरी है तुमसी ही चाल।
जब हम फुला लेते हैं गाल,
खाते नहीं हैं रोटी-दाल।
'लेक्चर' देते हैं हम रोज,
जरा देखो हमारा 'पोज'।
चढ गया है कैसा 'नोज',
हमारे भाषण में है ओज।
हम लगा के ऐनक हुए हैं मग्न,
पर जरा हैं अभी - अर्धनग्न।
आओ सुनो तुम भी तकरीर,
विषय है 'स्वास्थ्य और शरीर'।

बिना रंग और पानी के रूमाल रँगना

लेखक, श्रीयुत ओमप्रकाश सराफ

"अच्छा, अब मैं आप लोगों के सामने बिना रंग और पानी के रूमाल रँग के दिखाऊँगा। यह तरीका बहुत ही कम खर्चीला और आसान है। तुम लोग मुझे दो आने देकर यह जादू सीख सकते हो और फिर बाद में घर की औरतों को भी बता सकते हो। साहबान, घबराना मत, खेल देखकर जाना और याद रखना कि मदारी ठीक कहता था।" इतना कहकर जादूगर ओट में पड़ी हुई तीन रंगों में रँगी तीन रूमालें लेकर एक काली नली में डाल देता है और एक मोटा कागज उठाता है जो ९ इंच लंबा और ६ इंच चौड़ा है। इन दोनों चीजों को लेकर वह मेज पर रख देता है। इसके बाद वह स्वयं खड़ा हो जाता है और डमरू बजाने लगता है।

"हाँ, क्या कहा बिना रंग और पानी के रूमाल रँग दूँ। ठीक है।" इतना कहकर जादूगर फिर डमरू बजाना शुरू कर देता है।

इसके बाद वह रँगने का आदेश पाकर मोटे कागज़ को मोड़कर गोल बना लेता है। उस गोल किये हुए कागज में वह दो या तीन सफेद रूमाल डालकर हिलाता जाता है और कहता जाता है "शैतान काम करो!" इस तरह से वह काफी देर तक रँगने का उपक्रम करता रहता है। फिर लकड़ी से एक रूमाल का छोर निकालकर देखता है और सफेद देखकर थोड़ी देर तक सोचने लगता है। लोग हँसने लगते हैं। इस पर वह कहने लगता है "क्या बात है, रंग नहीं आया! क्या मेरा जादू निष्फल हो गया? मैं अपवित्र तो नहीं हूँ?" इसके बाद वह स्वयं बोल पड़ता है, "हाँ रंगों के नाम तो बताये ही नहीं।" निःस्तब्ध जनता ठहाका मारकर हँस पड़ती है। लोगों से फिर रंगों के नाम पूछता है और किसी न किसी तरह उनसे उन रंगों के नाम भी कहला लेता है जो उसके पास हैं—अर्थात् लाल, पीला और काला—जिन रंगों की रूमालों को उसने नली में डाला था। फिर वह गोल किये हुए कागज को, जिसे उसने मेज पर रख दिया था, दुबारा उठा लेता है और लोगों की आँख बचाकर काली नली भी उठा लेता है। फिर उसमें तीनों रूमालें व नली डाल उन्हें लकड़ी से हिलाता जाता है और कहता जाता है "शैतान काम करो! शैतान काम करो!!"

जनता से छिपाकर वह कागज़ के अन्दर ही अन्दर एक सफेद रूमाल उस नली में अपनी अँगुली से घुसेड़ देता है। उधर ऊपर से

लाल रूमाल निकलने लगती है जिसे जादूगर खींचकर निकाल देता है। रूमाल धीरे धीरे निकालनी चाहिए, नहीं तो नली के गिरने का अन्देशा रहेगा। इसके बाद जादूगर पीली रूमाल भी निकाल देता है। आखिर में काली रूमाल रह जाती है और काली ही नली होती है। उसे भी खींचकर निकाल लेता है और साथ में नली भी उसमें छिपाकर मेज पर रख देता है जिसका कि रंग काला होता है। इस रूमाल को अन्य रूमालों की तरह झटकना नहीं चाहिए। दूसरी काली रूमाल नीचे ही नीचे होनी चाहिए।

बाल-बधुओ! जितने ये जादू के खेल देखते हो ये सब हाथ की सफाई से होते हैं। जादू कोई चीज नहीं है। ये सब जीविका कमाने के उपाय हैं। तुम कभी तावीज इत्यादि बेचनेवालों के फंदे में मत फँसा करो। अगर तुम चाहो तो अभ्यास करने पर जादूगर की तरह सफाई के खेल दिखला सकते और वाहवाही लूट सकते हो।

मेरी गायें

लेखक, श्रीयुत सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ

(१)

बड़े प्यार से हैं ये पाली,
सीधी-सादी अजब निराली,
कैसी लगती भोली भाली—
जब वे सब चरने को जायें,
मेरी भूरी-भूरी गायें।

(२)

चरें घास या खा लें खेती,
पेट खूब जब सब भर लेती,
कहीं दूर दिखलाई देती—
एक-एक कर सभी रँभायें,
मेरी भूरी-भूरी गायें।

(३)

जब हैं पानी पीने जातीं।
एक साथ सब दौड़ लगातीं।
आगे पीछे जब बढ़ जातीं—
भागें दौड़ें पूँछ उठायें,
मेरी भूरी-भूरी गायें।

(४)

धौरी, चम्पा, मुली, चमेली,
एक-एक से हैं अलबेली,
आ जाती है एक अकेली—
जब ले जिसका नाम बुलायें,
मेरी भूरी-भूरी गायें।

(५)

इनके बछड़े कितने प्यारे,
बछड़ों को जो कोई मारे,
वह इनके सींगों से हारे—
सींग दिखायें और डरायें,
मेरी भूरी-भूरी गायें।

मोहन का मसखरापन

लेखक, श्रीयुत देवीप्रसाद गुप्त 'कुसुमाकर' बी० ए०, एल् एल० बी०

मोहन की हाजिरजवाबी और मसखरेपन के विषय में बाल सखा में पाठक बहुत कुछ पढ़ चुके हैं। मैं आज उसके बचपन की दो एक ऐसी ही बातें और सुनाता हूँ।

मोहन लगभग ७ वर्ष का था। एक बिल्ली, जो दही की मथानी में मुँह डालकर दही खा रही थी, उसको घर में दिखाई दी। मोहन दबे पाँव गया और उसकी दुम पकड़ कर खींचने लगा। इतने में उसकी माँ आ गई और मोहन को डाँटकर बिल्ली को छोड़ देने को कहा। मोहन बोला—"यह अपना दही खाये जा रही थी और तुम इसको छोड़ देने को कहती हो। मैं जब कोई नुकसान करता हूँ तो मुझे तुम मारती हो।"

माँ बोली—"मैं छोड़ देने को इसलिए नहीं कह रही हूँ कि बिल्ली को मैं तुमसे अधिक प्यार करती हूँ।"

मोहन—"फिर और दूसरी क्या बात हो सकती है?"

माँ—"बिल्ली तुमको काट खायेगी।"

मोहन—"नहीं काट सकती।"

माँ—"क्यों?"

मोहन—"उसका मुँह इस तरफ थोड़े ही है।"

(२)

एक दिन मोहन के गुरुजी क्लास के कमरे में एक पेंसिल भूल गये। वह मोहन को मिल गई। उसने उसे बहुत सम्हालकर रक्खा और दूसरे दिन मोहन के क्लास में ज्यों ही गुरुजी आये त्यों ही मोहन ने वह पेंसिल उनके सामने पेश की और कहा कि आप पेंसिल भूल गये थे।

गुरुजी ने क्लास के सब लड़कों के सामने मोहन की ईमानदारी की प्रशंसा की और फिर उससे कहा—"मोहन! यह पेंसिल अब मैं तुमसे नहीं लूँगा। इसे अपनी ईमानदारी का पुरस्कार समझकर तुम्हीं रख लो।"

मोहन ने पेंसिल रख ली। अब मोहन उसी पेंसिल के विषय में कि वह कब मिली, कैसे मिली, उस समय और कोई उसके साथ नहीं था, फिर उसने ले जाकर उसे कहाँ रक्खा इत्यादि कई बातें कहने लगा। गुरुजी बोले—"मोहन! तुम अधिक समय नष्ट मत करो। सब लड़कों का और मेरा समय कीमती है। बैठ जाओ, पेंसिल तुमको इनाम में दी गई। ईमानदार सदैव पुरस्कार पाता है।"

कुछ दिनों बाद वे ही गुरुजी एक दिन अपना कीमती चश्मा भूल गये। टेबिल पर चश्मा रह गया। सब लड़के चले गये और गुरुजी भी। मोहन ने, जो संयोगवश पीछे रह गया था, चश्मा देख लिया और उसे उठाकर वह अपने घर ले गया।

चश्मा के बिना गुरुजी को बड़ी तकलीफ हुई। बिना चश्मा के वे कुछ पढ़-लिख ही नहीं सकते थे। दूसरे दिन ज्योंही पाठशाला खुलने का समय हुआ, वे आ गये और बड़ी चिन्ता के साथ क्लास में आकर पूछा—"मैं कल अपना चश्मा टेबिल पर भूल गया था। क्या वह किसी लड़के को मिला है ?"

सबने इनकार किया। मोहन बोला—"गुरुजी, चश्मा मिला नहीं है।"

गुरुजी—"फिर कहाँ गया होगा ?"

मोहन—"बेचारा चल फिर सकता ही नहीं। न वह किसी से आकर मिल सकता है और न चलकर कहीं जा सकता है।"

गुरुजी—"आखिर वह हुआ क्या ?"

मोहन—"आपके चले जाने के बाद मैं उसको उठा कर अपने घर ले गया।"

गुरुजी—"निकालो, कहाँ है।"

मोहन—"गुरुजी, वह तो मैंने अपने छोटे भाई रामू को खेलने को दे दिया। और आपसे उसका जिक्र करने का भी इरादा नहीं था।"

गुरुजी—"क्यों ?"

मोहन—"क्योंकि मैंने सोचा कि यदि मैं आपसे कहूँगा तो उसे आप मेरी ईमानदारी के पुरस्कार में मुझे दे देंगे। और उसके विषय में जो कुछ भी अधिक कहूँगा उससे आपका क़ीमती समय नष्ट होगा।

गुरुजी—"लेकिन तूने उसे रामू को क्यों दे दिया ?"

मोहन—"आपने ही तो कई बार कहा है कि छोटे बच्चों को प्यार करो। उन्हें रुलाओ मत। यदि वे ऐसी किसी चीज को पाने के लिए मचल जायँ जिसके देने में अपने पैसे का नुकसान नहीं होता तो उन्हें अवश्य दे दो। और यदि पैसे का नुकसान होता हो तो उनको समझाकर भुलाने की कोशिश करो। चश्मा देने में मुझे कोई नुकसान नहीं था क्योंकि पेंसिल सरीखा वह भी मुफ़्त में मिला था।

मुन्ना

लेखिका, श्रीमती राजेश्वरीदेवी

देखो! मेरा मुन्ना आया, हाथों में दो लड्डू लाया,
एक आप है लड्डू खाता, और दूसरा मुझे खिलाता।
देखो! कैसा भोला भाला, चाल-ढाल में गजब निराला,
गर्दन में है मोती माला, वह है इसका खेल-मसाला।

कभी-कभी शैतानी करता, हाथ-पैर है खूब पटकता,
रोटी-भात न इसको भाता, दिन भर लड्डू ही यह खाता।
तुतली तुतली इसकी बोली, कानों में मिसरी सी घोली,
ठुमुक-ठुमुक जब मुन्ना आता, मेरे मन को है वह भाता।

सींगोंवाले राजा की एक मजेदार कहानी

सींगोंवाला राजा

लेखक, शिशु रामबहादुर नीरपाल चन्द्र

बहुत दिन बीते एक राजा राज्य करता था। उसका नाम था अनिरुद्ध। वह लका के राक्षस वश में से था। 'राक्षसा के सींग होते है। उनकी शक्ल डरावनी होती है।' यह हम सुना करते हैं पर यह बात हमें नहीं मालूम है कि यह ठीक है या नहीं। पर इस राजा के सींग थे। यह सच बात है। बहुत दिनों तक लोगा को इस बात का पता न लगा था। पर बाद को तो यह सभी जान गये। कैसे जान गये, यह हम सुनाते हैं।

इस राजा के यहाँ और नौकरों की तरह एक नाई भी था। वह कई बार बाल बनाते समय राजा के सींग देख चुका था। पर यह बात उसने किसी से नहीं कही थी क्योंकि वह राजा का विश्वासपात्र नाई था। एक बार दुर्भाग्य से वह बीमार पड गया। इधर राजा के बाल बढ़े हुए थे। अब क्या करे? बालों को बनवाना आवश्यक था। खैर, उसने एक दूसरे नाई को बुलवाया। राजा के सींग देखते ही वह भौचक्का सा रह गया। 'है, यह क्या?' वह मन ही मन बोला। राजा उसके भाव को ताड़ गया। उसने कहा—'देखो जी! यह किसी से कहना नहीं। नहीं तो धड़ से सिर अलग करवा दिया जायगा।'

बाल बना चुकने के बाद वह सोच रहा था, 'यह किससे कहूँ!' पर मारे जाने के भय से वह चुप था। इस चुप्पी से उसे बेचैनी मालूम हो रही थी। इससे मन बहलाने के लिए वह एक सूनसान जगह की ओर चल पड़ा। थक जाने पर वह रास्ते में एक पेड़ के नीचे बैठ गया और गुनगुनाने लगा—'महाराज के सींग है! कैसी आश्चर्य की बात! महाराज के सींग है!' पेड़ ने यह सुन लिया।

कुछ दिनों बाद उधर से कुछ गवैये निकले। उन्होंने उस पेड को कटवाकर सारङ्गी और तबला बनवाये। वे उन्हें अपने काम में लाने लगे। एक बार ये राजा अनिरुद्ध के यहाँ भी गये। बैठक जम गई। एक ने सारङ्गी ले ली, दूसरे ने तबला; और एक मँजीरा लेकर बैठा। सारङ्गी ने कहा—'अनिरुद्ध महाराज सिंग छई' अर्थात् महाराज अनिरुद्ध के सींग है। मँजीरा बोल उठा—'किन्ने कहा, किन्ने कहा?' तबला बोल उठा—'बब्बू है जो नाई, बब्बू है जा नाई।' 'है यह कैसी बात?' अनिरुद्ध ने

'रोको ! बंद करो गाना-बजाना !' उसने बच्चू नाई को बुलवाया। 'क्यों रे, बद-माश ! यह शैतानी ? मैंने क्या कहा था ? अब तू न बचेगा !' राजा गरज उठा। नाई ने बहुत हाथ-पैर जोड़े पर उसे छोड़ा न गया।

अब भी सारङ्गी और तबले में से यही आवाज आती है। सुनना।

बिल्ली
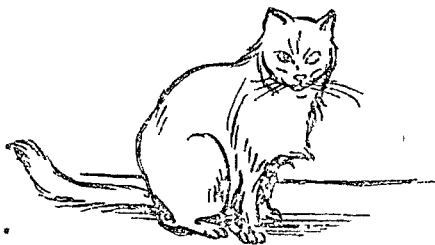
लेखक, श्रीयुत हरीलाल पटेल

आओ बिल्ली आओ बिल्ली,
तुझे खिलाऊँ डण्डा-गिल्ली,
म्याऊँ ! म्याऊँ !! करती आओ,
आकर मेरा दिल बहलाओ !

तुझे खिलाता दूध-मलाई,
पर तू करती नहीं भलाई,
अब दूँगा मैं दूध-बताशा,
फिर दिखलाना नया तमाशा।

तू अपने बच्चों को लेकर,
दौड़ाती हो घर के ऊपर,
बिल्ली तू है बड़ी सयानी,
अँधियारे की हो महरानी !

आओ बिल्ली कहना मानो,
रामू हूँ मुझको पहिचानो,
तुझे कहूँगा बिल्लो-रानी,
तब तुम मत करना मनमानी !
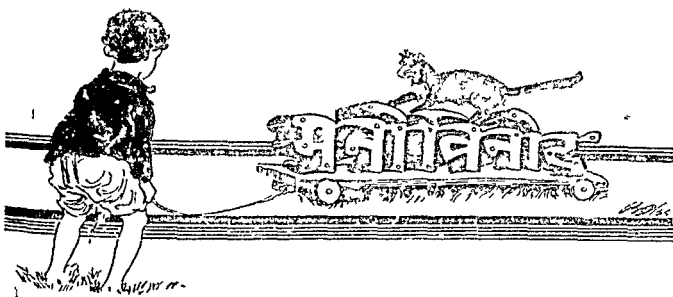
मजेदार चुटकुले

एक बार एक हलवाई ने अपने पुत्र से कहा कि मैं भीतर भोजन करने जाता हूँ, तुम दूकान देखते रहना। वह भोजन करने चला गया। इतने में एक चालाक लडका आकर मिठाई खाने लगा। हलवाई के लडके ने चालाक लडके से उसका नाम पूछा। उसने कहा "मेरा नाम मक्खी है।" हलवाई के लडके ने जोर से कहा "दादा दौडो, मक्खी मिठाई खा रहा है।" हलवाई ने कहा "खा लेने दो बेटा, मक्खी तो रोज ही मिठाई खाती है।"

—कुमारी शान्तिदेवी सेठ।

एक दिन एक काना आदमी सिनेमा देखने गया। उसने टिकट-आफिस में आधा टिकट माँगते हुए पूछा—मैं इस आधे टिकट से तमाशा देख सकता हूँ न ?

टिकट देनेवाले ने जवाब दिया—क्या आप बच्चे हैं, जो आधे टिकट में देख सकेंगे ?

उस आदमी ने कहा—मैं बच्चा तो नहीं हूँ। लेकिन क्या तुम देखते नहीं हो कि मैं काना हूँ। मैं एक ही आख से तो तमाशा देख सकूँगा।

—रघुराजशरण अग्रवाल।

(१)

निपेश—"मास्टर साहब, मेरी माँ बहुत बीमार है। छुट्टी दे दीजिए।"

मास्टर—"क्यो जी, यह क्या बात है कि जब कभी कोई मच होता है तो तुम्हारी माँ बीमार हो जाती है ?"

निपेश—"जी हाँ, मास्टर साहब, यह एक बडी अजीब बात है। कभी कभी मैं सोचता हूँ कि वह बहाना करती है।"

(२)

एक बूढे को, बेहोश करके, नश्तर लगाया गया। जब वह होश में आया तो डाक्टर ने पूछा—"तुम्हें बेहोशी में कैसा लग रहा था ?"

बूढा बोला—"बडा सुन्दर डाक्टर साहब, जब तक मैंने आपको नहीं देखा, मैंने समझा कि मैं स्वर्ग में हूँ !"

(३)

प्रफुल्ल (पार्क में फूल तोड़ने की नीयत से)—"क्यों माली, ये फूल गुलाब के हैं ?"

माली—"जी नही, ये फूल म्यूनिसपल्टी के हैं।"

—जसवन्त सिह ।

"क्यों जी, कुत्ते को अँगरेज़ी में डाग क्यों कहते है ?"

"इसलिए कि कुत्ते के काटने पर उस स्थान में दाग हो जाता है। इसलिए उसे अँगरेजी में दाग का अपभ्रंश डॉग कहते हैं।"

—वल्लभदास विन्नानी ।

(१)

एक पुरुष बाजार में एक उल्लू और एक उल्लू का बच्चा बेचना चाहता था। एक मनुष्य ने पूछा "क्यों भाई, इनका क्या मूल्य है ?"

"उल्लू के आठ आने और बच्चे के बारह आने।"

"वाह! विचित्र बुद्धि का आदमी है। अरे बड़े का मूल्य अधिक होता है या छोटे का ?"

"सरकार, आप ही सोच लें। बड़ा केवल उल्लू ही है, दूसरा उल्लू भी और उल्लू का बच्चा भी है।"

(२)

घड़ी चुराने के अपराध में एक आदमी पकड़ा गया और जज के पास लाया गया। जज को विश्वास न हुआ और उससे कहा—'जाओ तुम छोड़ दिये गये।'

कैदी ने आश्चर्य से कहा—"क्या मैं छोड़ दिया गया ?"

जज ने कहा—'हाँ'

कैदी—'सरकार, अब घडी तो वापिस न करनी होगी ?"

—राकेशमोहन जोशी ।

(१)

एक मनुष्य ने डाक्टर साहब को एक पत्र लिखकर नौकर के हाथ भेजा कि मेरे सिर में दर्द है, थोड़ा सा सिरका भेजिए, लगाऊँगा। डाक्टर साहब ने एक पुराना जूता कपड़े में लपेट कर नौकर के हवाले किया और पत्र में लिख दिया कि 'सिर का' खतम हो गया इसलिए पैर का भेजता हूँ। खुशी से लगाइए।

(२)

राम मास्टर साहब, श्याम ने मेरे सिर में स्याही डाल दी।

मास्टर—क्यों श्याम, तूने राम के सिर में स्याही क्यों डाली ?

श्याम—मास्टर साहब, मैंने राम के सिर में स्याही नहीं डाली, बल्कि सिर के बालों में डाली थी।

—सूर्य्यप्रकाश मडेलिया
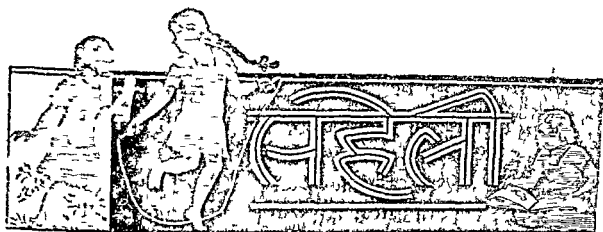
बेटी का गणित-चमत्कार

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, हिन्दी रत्न, करसियांग

भाई बाल सखाओ, जुलाई के 'बाल-सखा' में श्रद्धेय प० वंशीधरजी मिश्र का एक गणित-चमत्कार आपने पढ़ा ही होगा। मिश्रजी की देखा-देखी मैं भी कहीं से खोज खाजकर एक दूसरा चमत्कार लाया हूँ जिसे यहां दे रहा हूँ।

एक सेठ ने अपनी इकलौती बेटी का विवाह किया और दहेज में अन्य वस्तुओं के देने के बाद, बेटी से कहा कि वह अपनी मनचाही कोई भी एक चीज माँग ले। बेटी गणित जानती थी। वह बोली, पिताजी, आपने मुझे सभी वस्तुएँ दे डाली हैं। फिर भी आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए मैं यह माँगती हूँ कि "४ सुपारियों को १६ बार चौगुनी करके मुझे दिला देवें" और बेटी ने यह तुकबन्दी पढ़ी—

"चार सुपारी चौगुनी, सोलह बार फलाय।
बाबा, बेटी लाडली, माँगे देहु मँगाय।"

कुमारी कल्पना गोस्वामी, जबलपुर।

प्यारी बेटी का यह भोलापन देखकर पिता को हँसी आ गई। बोले, "यह तो बड़ी मामूली सी चीज तुमने माँगी। अच्छा,

अभी मँगवाये देता हूँ।" और कागज पर पेन्सिल से ४ का गुणनफल निकालने लगे। ३-४ बार ही चौगुना किया था कि सेठजी का दिमाग कूच कर गया। कुछ घबराये से, कुछ डरे-से, दवे पाँव वे अपने मुनीमजी के पास गये और बेटी के सवाल का जवाब माँगा।

मुनीमजी ने आख़िर दुनियाँ देखी थी कि ठट्ठा ? बेटी का सवाल गौर से सुना, सर खुजलाया, फिर कहने लगे कि बेटी के प्रश्न का जवाब सुनिए—

"धुर सत्तावन और छब्बीस
बासठ ऊपर रक्खो तीस,
छक्के ऊपर बिन्दी दो,
इतनी सुपारी गिन गिन लो।"

यानी पहले ५७ लिखो फिर २६ फिर ६२ के सामने ३० रक्खो फिर ६ लिखो और ० (बिन्दी) दो। बस जवाब तैयार हो गया। और ज्यादा खुलासा यह लीजिए— ५,७२,६६,२३,०६० अर्थात् ५ अरब, ७२ करोड़, ६६ लाख, २३ हजार, ६० सुपारियाँ सेठजी को लाड़ली बेटी के हवाले कर अपना पिण्ड छुडाना पड़ा! अब आप बतलाइए, उस बेटी का गणित-चमत्कार कैसा रहा।

तारे

लेखक, श्रीयुत 'अम्बु" जोशी

कितने हो तुम प्यारे प्यारे,
भाई तारे, भाई तारे।
आपस में हँसते रहते हो
चम चम चम बातें करते हो।
समझ नहीं वह पाते हैं हम
देख देख रह जाते है हम।
छोड झगड़ना रोना धोना
सदा प्रसन्न-चित्त ही रहना।
पाठ हमें यह सिखला जा रे
भाई तारे, भाई तारे।

अपने निकट बुला लो मुझको
लड्डू दे दूँगा मैं तुझको।
कह दे भ्रात कहाँ से आऊँ
रस्ता सीधा कैसे पाऊँ ?
वहाँ मुझे लख पिता भ्रात सब
विस्मित होंगे घर बैठे जब।
हँस कर उन्हें खिझाऊँगा मैं
कभी न पीछे आऊँगा मैं।
कभी न रोऊँगा मैं प्यारे
भाई तारे, भाई तारे।

सबसे छोटी मछली

लेखक, श्रीयुत महेशकुमार रेक्रवाल

संसार की सबसे छोटी मछली फिलीपाइन द्वीप-समूह में पाई जाती है। इसका नाम वैज्ञानिकों ने 'पडाका पिगमिया' रक्खा है। इसकी औसत लम्बाई ६/२६ इंच होती है तथा सबसे लम्बी ७/१० इंच की पाई गई है। यह प्रायः चींटे के बराबर होती है और सम्भवतः वैज्ञानिकों का ध्यान जहाँ तक गया है, यही सबसे छोटा रीढ़वाला जीव है। इन मछलियों का शरीर पतला और प्रायः पारदर्शक होता है। उसके इस पार से उस पार की चीजें करीब करीब देखी जा सकती हैं। उसकी आँखें उसके शरीर के हिसाब से बड़ी होती हैं और वे ही स्पष्ट दिखलाई पड़ती हैं। इन मछलियों की संख्या अधिक नहीं है।

इसके बाद छोटी मछलियों में पाई जानेवाली मछली 'सिनारापान' कहलाती है। वह भी फिलीपाइन द्वीप में पाई जाती है। यह औसत लम्बाई में 'पडाका पिगमिया' से १/१२ इंच अधिक होती है। ये मछलियाँ बूही लेजन झील में बहुत अधिक पाई जाती हैं।

अङ्क-कौतुक

वर ७ के दिन थे। १ दिन ३०रे पहर १०रथप्रसाद अपने मन में कुछ सोचते त्रि४ते हुए चले जा रहे थे। रास्त में उनकी अपने २स्त ६नीलेदास से भेट हो गई। २नों को १ दूसरे से मिलने की ग्रुत खुशी हुई। उनमें खूब एकता थी। कोई किसी से ८ल न करता था। २नों १ही साथ घूमने को चल पड़े। किन्तु रास्ते में ही उनमें किसी विषय पर वाद-विवाद हो गया। झगड़े तक की ९वत आ गई। १००भाग्यवश उधर से जाते हुए १ महोदय ने उन्हें शान्त किया। झगड़ा करने में २प २नों ही का था।

—चन्द्रभाल मोदी

क्या आप जानते हैं?

संसार की सबसे सूनी जगह चीनी तुर्किस्तान में है। यहाँ एक बड़ा रेगिस्तान तीन लाख वर्गमील तक फैला है जिसमें कोई भी जीव-जन्तु मनुष्य या जानवर नहीं रहता। यहाँ तक कि कोई पेड़ पौधा तक नहीं उगता।

—नवलकिशोर वाजपेयी
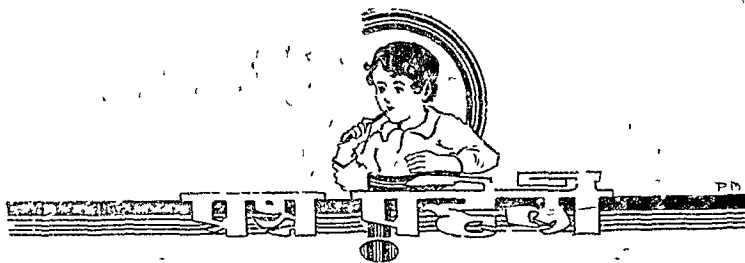
जवाब भेजिए और इनाम लीजिए

टाँगे मेरी सुंदर चार,
कपड़ा का मैं सहती भार।
घर घर में आती हूँ काम,
तुम बतलाओ मेरा नाम ॥१॥

—वरुणजी, वर्मा

रहूँ सदा मैं सबके पास
भीतर बाहर आस पास।
देख न सकते मुझको कभी,
भग जाऊँ तो रो दो अभी ॥२॥

—हरेकृष्ण अग्रवाल

लल्लू ने एक चिड़िया पा ली,
पेट में उसके रस्सी डाली।
रस्सी खींची उड़ गई ऊपर,
ढील दिया तो आई भू पर ॥३॥

—सुखदास तिवारी

नाम मेरा बतलाओ, रखता हूँ मैं दो शरीर,
पहला-चूहा दूसरा पक्षी,- ऐसा हूँ मैं वीर ।४

—माधवप्रसाद गुप्त

(१)

रामू के घर में इतने आदमी और इतने पलँग हैं कि एक पलँग पर यदि एक एक आदमी सोये तो एक पलँग और चाहिए, यदि एक पलँग पर दो दो आदमी सोएँ तो दो पलँग बचते हैं। तो बताओ रामू के घर में कितने आदमी और कितने पलँग हैं।

(२)

मैं तीन अक्षरों की एक नदी हूँ। मेरा पहला अक्षर छोड़ देने से एक छोटा फल हो जाता है। बीच का अक्षर अलग करने से मेरा रङ्ग काला हो जाता है। बताओ मैं कौन हूँ।

—गजानन्द शुक्ल

नोट—१—यहाँ चार पहेलियाँ और दो प्रश्न छापे गये हैं। जिसका कम से कम एक प्रश्न और दो पहेलियों का उत्तर ठीक होगा, उसका नाम 'बालसखा' में छापा जायगा।

२—छपे हुए नामों में, जिनका उत्तर साफ लिखा होगा और जो अपने अभिभावक से यह दस्तखत कराकर भेजेंगे कि उन्होंने जवाब निकालने में किसी से मदद नहीं ली उनको एक बढ़िया पुस्तक इनाम मिलेगी।

३—कुल चार इनाम दिये जायँगे। इन चारों नामों का चुनाव उनमें से किया जायगा जिनके अधिक से अधिक उत्तर ठीक होंगे और जवाब अधिक से अधिक साफ़ लिखे होंगे।

४—जवाब सम्पादक, बालसखा, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद के पते पर १५ दिन के अन्दर भेजना चाहिए।

हमारी चित्रावली

महात्मा गांधी की सीमांत यात्रा के अवसर पर तक्षशिला स्टेशन पर खान वर उनका स्वागत कर रहे हैं।

बैठे रहते हैं चुपचाप, नहीं लड़ाई लड़ते आप!

... पमात का तैगाग।
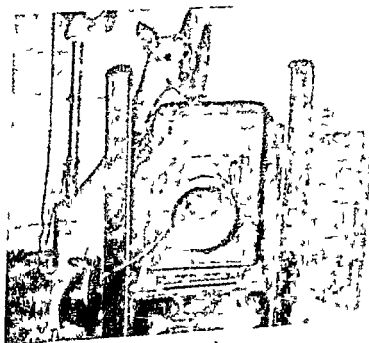
क्योंकि यह उनकी प्रिय पत्रिका थी और इसके साथ उनका नाम अपने-आप याद हो आता है। इस पत्रिका में शिक्षा-सम्बन्धी जानने योग्य बहुत सी ऐसी बातें रहती हैं जो अन्य पत्र-पत्रिकाओं में ढूँढने पर भी नहीं मिलतीं। यह पत्रिका गुजराती और मराठी में भी निकलती है। हम चाहते हैं कि स्वर्गीय श्री गिजुभाई की यह पत्रिका पूर्ववत् प्रकाशित होती रहे। पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) और पता, शिक्षण-पत्रिका-कार्यालय, ६७, चन्द्रभागा, जूनी इन्दौर है।

धार्मिक पुस्तकें मुफ़्त

तीर्थ यात्रा करनेवालों को तीर्थ-स्थानों की पूरी जानकारी न होने से कभी-कभी बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। हर्ष की बात है कि श्री किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री ने हरद्वार, मसूरी, बदरीनारायण आदि की यात्रा-सम्बन्धी पूरी जानकारी लोगों को देकर उनकी सेवा करने का आयोजन किया है। आप नीचे लिखी तीर्थ यात्रा-सम्बन्धी तीन धार्मिक पुस्तकें श्रद्धालुओं को तथा वाचनालय पुस्तकालयों को मुफ्त भेज रहे हैं। जिन्हें जरूरत हो, पोस्टेज के लिए सिर्फ डेढ़ आने का टिकट भेजकर मँगा ले। पुस्तकें ये हैं—१—हरिद्वार का इतिहास, २—हरिद्वार का कलंक, ३—तीर्थयात्रा कब और कैसे करनी चाहिए। पता यह है—श्रीकिशोरीदास वाजपेयी शास्त्री, कनखल (हरिद्वार)

पैसे से चित्र बनाइए

इस बाल-सखा के इस अंक में पैसे से चित्र बनाने का नक्शा छाप रहे हैं। चित्र बनाते समय वह पहली लाइन मिटा देनी चाहिए जो काट दी गई है। इसी प्रकार पैसे से टमाटर, थैली, गमला, बाल्टी, पक्षी इत्यादि चीज़ें भी बनाई जा सकती हैं।

बाल-महाभारत

पण्डित मोहनलाल नेहरू बाल-सखा के हमेशा लेख, कहानियाँ इत्यादि लिखा करते हैं पहले पण्डितजी की बाल-महाभारत शीर्षक छपती थी। परन्तु इधर कुछ महीनों से आ बाल महाभारत का लिखना बंद कर दिया था हमारे पास इस संबंध में कई पत्र आये। लोगों ने बाल-महाभारत शीर्षक कविता की अपनी दिलचस्पी दिखलाई थी और उसे रखने पर जोर दिया था। खुशी की बात है पण्डितजी ने बाल-महाभारत का लिखना शुरू कर दिया है। इससे पाठकों को तरह फिर पंडितजी की कविता पढ़ने को

Printed and published by K Mittra at The Indian Press, Ltd, A

सम्पादक—श्रीनाथसिंह,
सहायक स०—देवदत्त द्विवेदी, बी० ए०

[२३] नवम्बर १९३९—कार्तिक १९९६ [संख्या ११

खिलौना

लेखक, श्रीयुत रामविलास महाय 'मधुर'

आओ मेरे राजदुलारे, आओ, तुमको गले लगा लूँ।
तुम मेरी गोदी में आओ—म धरती-आकाश उठा लूँ।
यह गुदगुद, वह गुदगुद गुदगुद, चमक उठी यह किलक दँतुलियाँ।
मैं खिल खिल, तुम खिल खिल, खिल खिल, मेरे मुँह मत मेल अँगुलियाँ ॥१॥
यह सूरत चुनमुनियाँ भोली, कैसे आई सूझ सलोनी!
कहाँ छिपोगे, खेल रहे हो, झाँक-झाँक यह आँख मिचोनी।
अजब बाँकपन दिखलाती है, भोलेपन की अटपट बोली।
बापू को चा चा कहते हो, ना, ऐसे मत करो ठठोली ॥२॥
ककड़ियाँ चुन चुन लाते हो, लाओ चूमूँ मैं पग थलियाँ।
विहँस रहा है मेरा आँगन, विहँस रही है मेरी गलियाँ।
आओ, गले लिपट जाओ, अब मेरी गोदी बने बिछौना।
तुम सा एक खिलौना पाकर, लो, मैं भी बन गया खिलौना ॥३॥

इँगलैंड की बहुत सी स्त्रियों को हवाई हमले को रोकने की शिक्षा दी जा चुकी है। इस चित्र में वहाँ की कुछ स्त्रियाँ एक बहुत बड़े हवाई जहाज को उड़ते हुए देख रही हैं।

योरप की लड़ाई

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी

पिछले दो महीने से योरप में लड़ाई हो रही है। इस लड़ाई में हजारों आदमी मारे जा चुके हैं, कई गाँव और शहर नष्ट हो चुके हैं। इतना नुकसान होने पर भी अभी तक पहले की ही तरह जारी है।

अब तुम यह पूछोगे कि यह लड़ाई योरप में कहाँ हो रही है और क्यों हो रही है। तुमने जर्मनी और रूस का नाम सुना होगा। ये योरप के दो बड़े देश हैं। इन दोनों देशों के बीच में एक छोटा सा देश है, जिसे

पोलैंड कहते हैं। पोलैंड में लगभग ४ करोड़ आदमी रहते हैं। ये पोल कहलाते हैं। पोल लोगों का खास पेशा खेती है। कोयले की खानें खोदने, कपड़ा बुनने और तेल साफ करने के काम भी यहां होते हैं। इससे पोलैंड को काफी धन मिलता है।

पोलैंड भी अभी तक जर्मनी और रूस की तरह एक स्वतंत्र देश था। आज से ४ महीने पहले जर्मनी के अधिनायक हर हिटलर ने यह कहना शुरू किया कि पोलैंड जर्मनी का देश है और जर्मनी उसे अपने में मिला लेगा। जर्मनी के पड़ोस में ही इंगलैंड और फ्रांस हैं। इन देशों ने भी हर हिटलर की पोलैंड हड़पने की धमकी सुनी। उन्हें यह बात बुरी लगी। इसलिए उन्होंने हिटलर से यह बात साफ तौर से कह दी कि अगर वह पोलैंड पर चढ़ाई करेगा तो इंगलैंड और फ्रांस जर्मनी से लड़ेंगे। हिटलर ने पोलैंड ले लेने का एक नया उपाय सोचा। उसने देखा कि पोलैंड, जर्मनी और रूस के बीच में है। अब अगर रूस को भी पोलैंड का कुछ हिस्सा देने का लालच दिया जाय तो वह जर्मनी के खिलाफ न जायगा। उसने रूस को इस तरह का लालच देकर अपना मित्र बना लिया। अब इसे इंगलैंड और फ्रांस का बिलकुल डर नहीं रहा। इस तरह रूस को मिलाकर हिटलर पहली सितंबर को तीन ओर से पोलैंड पर हमला कर दिया। पोलों ने पहले से यह तय कर लिया था कि जहाँ तक हो सकेगा, जर्मनी के हमलों को रोकने की कोशिश की जायगी और जीते जी पोलैंड जर्मनी को नहीं दिया जायगा। इसी से लड़ाई होने पर पोलों ने भागने की नहीं की।

य ... आर ... काफी ... यह मोर्चा ... काम की ... मिलती ... ने क ... भीत

जब जर्मनी ने पोलैंड पर चढ़ाई तो इंगलैंड और फ्रांस ने भी, के अनुसार, जर्मनी के खिलाफ का एलान कर दिया।

इस

आजकल लन्दन को हवाई हमले से बचाने की कोशिश की जा रही है। हवाई हमले के रोकने के लिए गुब्बारे ही सबसे अच्छे साधन हैं।

जर्मनी के अधिनायक हर हिटलर ने अपने यहाँ के हर एक बच्चे को सैनिक बनाने की शिक्षा दी है।

अँगरेजी और फ्रासीसी सेनाएँ पोलैंड में पहुँच गई होगी। परतु यह बात नहीं है। पोलैंड ऐसी जगह है कि उसका अधिक भाग रूस और जर्मनी के नजदीक ही है। इसी से लडाई के दिनों में अँगरेजी और फ्रासीसी सेनाएँ आसानी से वहाँ नहीं पहुँच सकीं और अँगरेजों न पोलैंड में अपनी सेनाएँ न भेजकर जर्मनी के पास ही, उसके जहाजी बेड़े पर चढाई कर दी और उसे हानि पहुँचाई। जर्मनी के कई जहाज भी डुबा दिये गये। जर्मनी ने भी अँगरेजों का एक बहुत बडा जहाज डुबा दिया जिसपर १,४०० यात्री थे। इस सिल-सिले में तुम्हे एक बात याद रखनी चाहिए कि लड़ाई के दिनों में समुद्र के भीतर भी कुछ जहाज छिपकर चलते है। इन्हे पनडुब्बा या गोताखोर कहते है। ये जहाज पानी के भीतर ही भीतर चलते हैं और मौका पाने पर शत्रुओं के जहाज डुबा देते है। इस तरह इन पनडुब्बो के कारण लड़ाई के दिनों में समुद्री-यात्रा बहुत खतरनाक हो जाती है।

पोलैंड की राजधानी वारसा है। यह शहर जर्मनी के नजदीक है। इसलिए लड़ाई शुरू होने के ५ दिन बाद पोलैंड-निवासी पोलैंड की राजधानी वारसा से हटाकर दक्षिण की ओर एक ऐसी जगह ले गये जो जर्मनी से कुछ दूर है। इधर जर्मनी पोलैंड के गाँवों और शहरों को नष्ट करने के काम में लगा रहा। कई जगहों पर पोलैंड की सेना ने बडी वीरता से शत्रुओं का सामना किया और उनके कई हवाई जहाज नष्ट कर दिये। फिर भी जर्मनी, जैसे बडे देश की सेना के सामने उसका टिकना मुश्किल था। जर्मन हवाई जहाजों ने रात में १५ बार वारसा पर गोले बरसाये और उसको चूर चूर कर दिया।

वारसा जीतकर जर्मन सेनाएँ आगे बढ़ीं। मौक़ा पाकर रूसी सेनाएँ भी पोलैंड में घुस गईं। वे २४ घंटे में ४० मील बढ़ गईं और जर्मनी की सेना से मिल गईं।

पोलैंड की वीर सेनाएँ ३ हफ़्ते तक जर्मनी की बहुत बड़ी सेना का मुक़ाबला करती रहीं। परंतु बाद में वे हार गईं। पोलैंड की इस लड़ाई में कुल १०,५७२ जर्मन मारे गये और २०,२२२ घायल हुए।

रूस की राजधानी मास्को में लाल रूसियों का जुलूस निकल रहा है जिसमें बूढ़े, जवान, बच्चे और स्त्रियाँ सभी शामिल हैं। रूस अपनी लाल सेना के लिए मशहूर है।

पोलैंड जीत लेने के बाद जर्मनी और रूस ने उसे आपस में बाँट लिया। इस बँटवारे के अनुसार पोलैंड के दो भाग किये गये। पूरब का भाग रूस को मिला और पश्चिम का भाग जर्मनी ने ले लिया। अब तुम्हारे मन में यह सवाल पैदा होगा कि इस लड़ाई में पोलैंड के लड़कों की क्या हालत हुई होगी। उनकी हालत बहुत ही नाज़ुक थी, क्योंकि उनमें से बहुतों के माँ बाप मर गये। कुछ पोल-लड़के मकानों के गिरने से दबकर मर गये। परंतु बहुत से पोल लड़कों ने खाईं खोदने और जर्मन सेनाओं की चढ़ाई से देश को बचाने में पोलों को काफ़ी मदद दी। वीर देश के लड़के भी वीर होते हैं।

हम ऊपर बतला चुके हैं कि अँगरेज़ी और फ़्रांसीसी सेनाओं ने पोलैंड में न जाकर जर्मनी पर ही चढ़ाई कर दी थी। ये सेनाएँ पश्चिमी मोर्चे पर ही लड़ती रहीं। इस समय भी इसी मोर्चे पर लड़ाई हो रही है और लोगों का विचार है कि इस मोर्चे पर काफ़ी समय तक लड़ाई होती रहेगी। यह मोर्चा बहुत महत्त्व का है। यहीं पर फ़्रांस की पूर्वी और जर्मनी की पश्चिमी सीमाएँ मिलती हैं। अपनी अपनी सीमा मज़बूत बनाने के लिए इन दोनों देशों ने पहले से ज़मीन के भीतर क़िलों की एक बहुत बड़ी कतार बना ली है। फ़्रांस की कतार मैगनेट लाइन

की कतार सिगफ्रीड लाइन कहलाती है। मेगनेट लाइन के किलो को १५ हजार मजदूरों ने ११ साल मेहनत करके बनाया है। ये किले बहुत ही मजबूत है। इन्हे बम आसानी से नहीं हिला सकते। लड़ाई के दिनो में जहरीली गैस छोड़ी जाती है और लोग मर जाते है। जहरीली गैस भी इन किलों के भीतर नहीं घुस सकती। इन किलों के चारो ओर बिजली का जाल फैला हुआ है। इनमें सिपाहियो के आराम की लगभग सभी चीजें रक्खी गई है। उनके खाने के लिए इतना सामान पहले से ही रख दिया गया है कि अगर महीनो बाहर से खाने का सामान न भेजा जाय तो भी वहाँ के सिपाही भूख से नही मर सकते और लड़ाई जारी रख सकते हैं। इन क़िलों में जगह-जगह पर बड़ी बडी तोपें रक्खी गई है, जिनका मुँह जर्मनी की ओर है। ये तोपें इस तरह छिपाकर रक्खी गई है कि वे ऊपर से दिखलाई नहीं पडतीं। इन क़िलों में अस्पताल भी बने हुए है और जगह जगह टेलीफोन भी लगे हुए हैं। इन क़िलों के बनाने में कई करोड रुपये खर्च हुए हैं।

मैगनेट लाइन की तरह सिग फ्रीड लाइन भी जमीन के भीतर बनाई गई है। यह जर्मनी की लाइन है और जर्मनी में पश्चिमी दीवार के नाम से प्रसिद्ध है। इस लाइन में भी किले बनाये गये है। इन किलों के बनाने में सिर्फ ३ साल लगे है। यह लाइन मेगनेट लाइन के आमने-सामने है। इन दोनों के बीच में सैकड़ों मील तक एक नदी बहती है। सिग फ्रीड लाइन पर १२ हजार क़िले बनाये गये है जिनमें से कुछ तो पहाडियाँ काटकर बनाये गये है। इन क़िलों में भी सिपाहियो के खाने-पीने की सभी चीजें रक्खी गई है और जहरीली गैस से रक्षा करने का भी प्रबंध किया गया है। इन पर हवाई जहाजों का कुछ भी असर नहीं पड़ सकता; क्योंकि इन किलों की अगली कतार में हवाई जहाज गिरानेवाली तोपें रक्खी गई है।

इस समय इसी सीमा-प्रांत पर लड़ाई हो रही है। इस लड़ाई में जर्मनी और फ्रांस एक दूसरे की किलाबन्दी तोड़ने की कोशिश कर रहे है। इसलिए वे तोपो का ही अधिक प्रयोग कर रहे है। इन देशों में जिस देश की सीमा टूट जायगी उसमें शत्रुओं की सेनाएँ घुस जायँगी और देश के भीतर भी लड़ाई शुरू हो जायगी। लोगों का विचार है कि यह लड़ाई बहुत दिनों तक चलेगी; क्योकि यह हिटलर के घमड को दूर करने के लिए ही लड़ी जा रही है। अँगरेजों की फौजें फ्रांसीसी फौजों को मदद दे रही है। इस समय इँगलैंड को हवाई हमले का डर है। इसलिए वहाँ के स्कूल बंद कर दिये गये है और लंदन जैसे बडे बडे शहरों के लड़के अमरीका और आयरलैंड भेज दिये गये हैं।

तीन शराबी

लेखक, श्रीयुत श्रीनाथसिंह

तीन शराबी निकले घर से।
चले नशे में बन बन्दर से॥
और पियेंगे तीनों बोले।
डगमग डगमग तीनों डोले॥
पर थी कौड़ी पास न कानी।
इससे बहुत बढ़ी हैरानी॥
मिला मुसाफिर उन्हें अकेला।
तीनों ने मिल उसे ढकेला॥
उसका पैसा छीन कमीने।
पेड़ तले जा बैठे पीने॥
भेज एक को सौदा लेने।
यों मसूबे बाँधे दो ने॥
जब वह आवे उसको काटो।
औ' सब दाने-पत्तल चाटो॥
बड़ा लालची वह भी था पर।
लाया लड्डू जहर मिलाकर;
ताकि जायँ मर दोनों साथी।
और छके वह जैसे हाथी॥
यों तीनों ने जान गँवाई।
औ' तीनों की हुई सफाई॥
नशेबाज यों ही मरते हैं।
अपने को तबाह करते हैं॥

की क़तार सिगफ्रीड लाइन कहलाती है। मेगनेट लाइन के किलो को १५ हजार मजदूरों ने ११ साल मेहनत करके बनाया है। ये किले बहुत ही मजबूत हैं। इन्हे बम आसानी से नहीं हिला सकते। लड़ाई के दिनों में जहरीली गैस छोड़ी जाती है और लोग मर जाते हैं। जहरीली गैस भी इन किलों के भीतर नहीं घुस सकती। इन किलों के चारों ओर बिजली का जाल फैला हुआ है। इनमें सिपाहियों के आराम की लगभग सभी चीजें रक्खी गई है। उनके खाने के लिए इतना सामान पहले से ही रख दिया गया है कि अगर महीनो बाहर से खाने का सामान न भेजा जाय तो भी वहाँ के सिपाही भूख से नहीं मर सकते और लड़ाई जारी रख सकते है। इन क़िलो में जगह-जगह पर बड़ी बड़ी तोपें रक्खी गई हैं, जिनका मुँह जर्मनी की ओर है। ये तोपें इस तरह छिपाकर रक्खी गई हैं कि वे ऊपर से दिखलाई नहीं पड़ती। इन किलों में अस्पताल भी बने हुए है और जगह जगह टेलीफोन भी लगे हुए हैं। इन क़िलो के बनाने में कई करोड़ रुपये खर्च हुए है।

मैगनेट लाइन की तरह सिगफ्रीड लाइन भी जमीन के भीतर बनाई गई है। यह जर्मनी की लाइन है और जर्मनी में पश्चिमी दीवार के नाम से प्रसिद्ध है। इस लाइन में भी किले बनाये गये है। इन किलो के बनाने में सिर्फ ३ साल लगे है। यह लाइन मेगनेट लाइन के आमने-सामने है। इन दोनों के बीच में सैकड़ों मील तक एक नदी बहती है। सिगफ्रीड लाइन पर १२ हजार किले बनाये गये हैं जिनमें से कुछ तो पहाड़ियों काटकर बनाये गये है। इन किलों में भी सिपाहियो के खाने-पीने की सभी चीजें रक्खी गई हैं और जहरीली गैस से रक्षा करने का भी प्रबंध किया गया है। इन पर हवाई जहाजों का कुछ भी असर नही पड सकता; क्योंकि इन क़िलो की अगली कतार में हवाई जहाज गिरानेवाली तोपें रक्खी गई है।

इस समय इसी सीमा-प्रांत पर लड़ाई हो रही है। इस लड़ाई में जर्मनी और फ्रांस एक दूसरे की किलाबन्दी तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए वे तोपो का ही अधिक प्रयोग कर रहे है। इन देशों में जिस देश की सीमा टूट जायगी उसमें शत्रुओं की सेनाएँ घुस जायँगी और देश के भीतर भी लड़ाई शुरू हो जायगी। लोगों का विचार है कि यह लड़ाई बहुत दिनों तक चलेगी; क्योंकि यह हिटलर के घमंड को दूर करने के लिए ही लड़ी जा रही है। अँगरेजों की फौजें फ्रांसीसी फौजों को मदद दे रही है। इस समय इँगलैंड को हवाई हमले का डर है। इसलिए वहाँ के स्कूल बंद कर दिये गये है और लंदन जैसे बडे बडे शहरों के लड़के अमरीका और आयरलैंड भेज दिये गये हैं।

तीन शराबी

लेखक, श्रीयुत श्रीनाथसिंह

तीन शराबी निकले घर से।
चले नशे में बन बन्दर से ॥
आर पियेंगे तीनों बोले।
डगमग डगमग तीनों डोले ॥
पर थी कौड़ी पास न कानी।
इससे बहुत बढ़ी हैरानी ॥
मिला मुसाफिर उन्हें अकेला।
तीनों ने मिल उसे ढकेला ॥
उसका पैसा छीन कमीने।
पेड़ तले जा बैठे पीने ॥
भेज एक को सौदा लेने।
यों मसूबे बांधे दो ने ॥
जब वह आवे उसको काटो।
औ' सब दोने-पत्तल चाटो ॥
बड़ा लालची वह भी था पर।
लाया लड्डू जहर मिलाकर,
ताकि जायँ मर दोनों साथी।
और छके वह जैसे हाथी ॥
यों तीनों ने जान गँवाई।
औ' तीनों की हुई सफाई ॥
नशेबाज योंही मरते हैं।
अपने को तबाह करते हैं ॥

बुलबुल

बुलबुल

लेखक, श्रीयुत रामकृष्ण 'नद्दरजी'

बहुत से लोगों को बुलबुल पालने का शौक होता है। कुछ लोग तो उसकी लड़ाई देखने के लिए ही उसे पालते हैं। लड़ाई में शर्त रक्खी जाती और हार-जीत होती है।

बुलबुल कई तरह की होती है। बुलबुल को लोग गुलदुम भी कहते हैं। बुलबुल प्रायः अपने जोड़े के साथ ही रहती है। इसका रंग-रूप बहुत सुन्दर होता है। गुलदुम का रंग काला होता है। इसके माथे पर तिकोनी कलगी होती है। किसी किसी की छाती पर सफेद बुँदकियाँ होती हैं। पूँछ के नीचे एक लाल चकत्ता होता है।

इस लाल चकत्ते के लिए हमारे यहाँ एक कहावत है कि बुलबुल के ब्याह के समय इसकी माँ ने उतावलेपन में, माथे पर टीका करने की जगह, पूँछ के नीचे कर दिया था।

बुलबुल की आवाज बहुत मीठी होती है। यह केवल तीन-चार तरह से बोलती है। इसकी आवाज से हर एक प्राणी इसकी ओर खिंच जाता है।

बुलबुल बड़ी ही चुलबुली होती है। वह एक जगह पर लगातार देर तक नहीं बैठ सकती। वह क्षण क्षण में जगह बदलती रहती है और इधर-उधर फुदकती रहती है। बुलबुल जमीन के बजाय पेड़ों पर बैठना अधिक पसंद करती है। हाँ, कभी कभी कीड़ों को पकड़ने के लिए जमीन पर आती है।

बुलबुल कीड़े खाती ही है पर वह फलों का भी शौक़ करती है। लाल रंग के फलों की ओर यह विशेष रूप से आकृष्ट होती है। टमाटर, स्टाबरी आदि पर टूट पड़ती है। बुलबुलों से खेती के फलों को नुकसान भी होता है परन्तु लाभ बहुत अधिक होता है। क्योंकि बुलबुल बहुत से ऐसे कीड़ों को खाती है जो फसल को चट कर जानेवाले होते हैं।

बुलबुल का घोंसला भी बहुत सुंदर होता है। यह पेड़ की दो डालियों के बीच प्याले की तरह लटकता हुआ दिखलाई देता है। यह सूखे घास-फूस से बनाया जाता है।

बुलबुल एक बार में तीन अण्डे देती है। नर और मादा दोनों ही अण्डे सेते है। बुलबुल की दुम, बड़ी होने के कारण, घोंसले से बाहर निकली रहती है। बुलबुल के अण्डों का रंग गुलाबी होता है, और इन पर कई लाल और बादामी धारियाँ या बुँदकियाँ रहती हैं। बुलबुल का घोंसला जमीन से बहुत ऊँचा नहीं होता। साँप, बिल्ली, कौआ और छिपकली इसके दुश्मन होते हैं। ये ही घोंसले में घुसकर बुलबुल के सारे अण्डे नष्ट कर डालते हैं। बुलबुल को इससे जरा भी रंज नहीं होता। वह झट दूसरा घोंसला तैयार कर लेती और उसमें अण्डे देती है। इतने पर भी बुलबुलों की संख्या बहुत काफी है।

'पिट पिट्ट ! पिट पिट्ट ! पिट पिट्ट !' अरे यह तो बुलबुल है। कैसी प्यारी बोली है। रंग-रूप भी अच्छा, बोली भी सुरीली और कद भी छोटा और मनोमोहक है। आपकी गली में कोई बुलबुलबाज है ? है तो अवश्य उसके पास जाकर बुलबुल की सभी बातें देखो। बुलबुल की लड़ाई देखने योग्य होती है।

बुलबुल के देखने में और उसे 'पिट पिट्ट' कहकर बुलाने में बड़ा मजा आता है।

लोग बुलबुल की कमर में पेटी बाँधकर उसे पालते हैं। इससे बुलबुल को कष्ट भी होता है। इसके अलावा उसको बागों का सा मजा कहाँ आ सकता है ?

यह कौन कहाँ से आया है !

लेखक, श्रीयुत रामनरेश त्रिपाठी

मेरी आँखों का तारा है,
मन का यह एक सहारा है।
मेरे सपनों की मूरत है,
मेरे प्राणों का प्यारा है ॥१॥

कह कौन अभी से सकता है,
क्या खेल दिखाने आया है।
अपने इस नन्हें से तन में,
यह क्या क्या भरकर लाया है ॥२॥

कुछ लोग गरीब भिखारी हैं,
जिन पर न किसी की छाया है।
क्या आगे बढ करके उनको
यह गले लगाने आया है ? ॥३॥

कुछ लोग हारकर बैठे हैं,
उम्मीद मारकर बैठे हैं।
क्या हिम्मत देकर, हाथ पकड़
यह उन्हें उठाने आया है ? ॥४॥

कुछ लोग अँधेरे घर में है,
अपनी ही नहीं नजर में हैं।
क्या उनके घर के कोने में
यह दिया जलाने आया है ? ॥५॥

दिलवालों में गुणवालों में,
जुल्मों से भिड़नेवालों में।
नामी बन जीनेवालों में
क्या नाम कमाने आया है ? ॥६॥

मैं माँ हूँ, यह मेरा धन है,
मेरी आँखों का तारा है।
इसके सिवाय कुछ पता नहीं,
यह कौन कहाँ से आया है ! ॥७॥

('वानर' से)

गुड़ की डली

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, हि॰ सा॰ र॰, रसियाग

प्रिय बाल-सखाओ, आप कविवर श्रीमान् सोहनलालजी द्विवेदी की "क्यों" शीर्षक कविता में, पिछले महीने 'गुड़ की भेली' चख चुके हैं और गुड़ का नाम सुनते ही मेरी जीभ भी काबू में न रह सकी। लाख समझाया, पर वह अपनी ज़िद पर अड़ गई। आखिर उसका जी बहलाने के लिए मुझे गुड की तलाश में निकलना पड़ा। कई जगह की खाक छान डालने पर भी 'गुड़ की पूरी भेली' तो हाथ नहीं लग पाई मगर बचपन की मधुर स्मृति को टटोलने पर बड़ी कठिनाई से 'एक गुड का डली' निकाल सका हूँ। यह सच है कि द्विवेदीजी की भारी-भरकम सवा पाँचसेरी भेलीवाला मजा इसमें कहाँ है। यह तो सिर्फ छोटी सी डली ही ठहरी और तिसपर स्मृति के तहखाने से निकाली हुई; मगर डली ही सही, आखिर है तो गुड़ की न? कुछ तो मिठास देगी ही, चख देखिए जरा।

बात उन दिनों की है जब अपने राम, आपकी ही तरह, धोती पहने और बगल में बस्ता दबाये, 'मुकुल' पर धावा बोला करते थे। और बात है हिसार की, उस हरियाना-प्रान्तवाले हिसार की, जिसकी तारीफ में श्रद्धेय श्री देवेन्द्र सत्यार्थीजी अपना तम्बूरा लेकर यह मीठी तान छेडा करते हैं, "देसाँ यें देस हरियाणा, जिते दूध-दही का खाणा।"

हाँ, तो एक दिन—याद आता है—एक ताँगे में लदकर मैं अपनी एक बहन से मिलने के लिए उसके गाँव गया। झरोखे में से देखता हूँ कि बगल ही में एक जाट पडोसी का घर है। आँगन में उसके कुछ बच्चे खेल-कूद रहे हैं। जाट के घर पिछली रात को एक नये बच्चे का शुभागमन हुआ था और चूँकि घर की स्त्रियाँ मङ्गल-गीत गा रही थीं—इन बच्चों ने भी उनकी देखा-देखी उछल-कूद शुरू कर दी थी। एक लडकी—जिसका नाम शायद 'बुचकली' था—कहीं बाहर जा रही थी, गुड़ माँगने के इरादे से। भोली बालिका ने सोचा, "बथान में गाय-भैंस जब ब्याती है तब उन्हें गुड़ पिलाया जाता है, आज मेरी भाभी को बच्चा हुआ है इसलिए उसे भी क्यों न गुड़ ही खिलाया जाय।" लिहाजा वह कहीं गुड़ की डली लेने जा रही थी और सारे बच्चे, उसे बाहर जाती देख, पुकार पुकारकर कह रहे थे।—

बच्चे—बुचकली, ऐ बुचकली! कित् चाली?

वह—बागड़ में।

बच्चे—के ल्यावन् (क्या लाने)?

वह—गुड़ की डली।

बच्चे—किसने (किसे देगी)?

वह—भाभी ने।

बच्चे—के ब्याना (क्या जना)?

वह—गीगला।

बच्चे—क्यूँकर रोवे ?

वह—उआ, उआ, उआ।

मैं नहीं कह सकता कि हिसार के आस पास के सारे गाँवों में, इस मौके पर, 'गुड़ की डली' का स्वाँग छिड़ा करता है अथवा उसी दिन सिर्फ मेरे ही कानों का ऐसा भाग्य जगा था, उन जाट-बच्चों के इस सुंदर नाटक को देखने-सुनने का !

कुछ बुरा नहीं, अगर आप भी—जब आपकी भाभी, आपके लिए नया भतीजा लावे तो—इस 'गुड की डली' का तमाशा रचने का प्रयत्न कर देखें। हाँ, अपनी ओर से मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप इसे 'ड्रामा' से घाटे में हरगिज नहीं रहेंगे। "दुहूँ हाथ मुद-मङ्गल तारे !" यह मेरा नहीं, खास बाबा तुलसीदासजी का पेटेंट आशीर्वाद, आपके लिए, तैयार रख छोड़ा है।

चिट्ठी का उत्तर

[सितम्बर के बाल सखा में प्रो० मनोरञ्जन एम० ए० की छपी हुई कविता के उत्तर में]

लेखक, श्रीयुत गोस्वामी दुर्जनलाल

प्रोफेसर जी मुझे मिल गई,
पूरी 'राम-कहानी'।
चिट्ठी साथ कभी मत भेजो,
होती यदि हैरानी ॥
डाक-भवन के डाकू क्यों,
क्या डाका डाला करते ?
बैरंग ठप्पे लगा लिफाफों
पर निज कारज करते।
उनका कहना बहुत ठीक है,
'पूरे टिकट लगाओ।
पास नहीं पैसे हों तो,
मत लिखो, मौन रह जाओ' ॥
यदि फिर तुम्हें देखना ही है,
देखें वे क्या करते।
बैरंग ठप्पे लगा लगाकर,
वे भी तनिक न डरते ॥
जो अब आप पूछते मुझसे,
बुद्धिमान् प्रोफेसर !

मैंने पहली चिट्ठी का क्यों,
दिया नहीं है उत्तर ?
एक आने का टिकट आपसे,
पहले से था माँगा।
किन्तु न भेजा गया आप से,
सो रह गया अभागा ॥
पैसे तो उसमें लगते थे,
बैरंग यदि लिख देता।
आप उसे जो नहीं छुड़ाते,
तो मैं क्या कर लेता ॥
अब भी टिकट भेजिए जल्दी,
यदि कर रहे प्रतीक्षा।
आज आपके मित्र भाव की,
भी है अग्नि-परीक्षा ॥
और आपको जब लिखना हो,
इतनी ही है अर्जी।
एक आने का टिकट भेजिए,
फिर जैसी हो मर्जी ॥

शेषनाग की झील का एक दृश्य

मेरी अमरनाथ-यात्रा

लेखिका, कुमारी ललिता खोसला, जम्मू

शहर का जीवन मनुष्य को प्रकृति से बहुत दूर कर देता है। इसी से हमारे ऋषियों ने दूर और कठिन स्थानों पर ही तीर्थ-स्थानों की स्थापना की थी।

अब तो हज़ारों यात्री हर साल काश्मीर जाते हैं। मेरा तो ख़याल है कि काश्मीर के यात्री यदि अमरनाथ की चढ़ाई को प्रोग्राम (यात्राक्रम) से निकाल दें तो उनकी यात्रा बिलकुल शुष्क रह जाय। राज्य के धर्मार्थ विभाग की ओर से श्रावण मास की पूर्णमासी के दिन अमरनाथ की यात्रा का विशेष रूप से प्रबन्ध किया जाता है।

श्री अमरनाथजी का पुण्य तीर्थ श्रीनगर से उत्तर-पूर्व दिशा में, कैलास पर्वत के नीचे, काश्मीर प्रदेश की विशाल "लिदर" घाटी के अन्तर्गत है। यहाँ एक गुफा है। यह समुद्र तट से १२५०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। गुफा के बाहर चारों ओर बर्फ ही बर्फ दीख पड़ती है। इसके पास मीलों तक पहाड़ों पर किसी पक्षी या घास-पात का नाम-निशान नहीं मिलता। इसी में एक जगह शिवलिङ्ग है। यह बिलकुल बर्फ का बना है। इतनी बड़ी गुफा में एक ही जगह बर्फ जमती है। यह शिवलिंग चन्द्रमा के अनुसार घटता और बढ़ता है। पूर्णमासी के दिन बर्फ का विशाल शिवलिङ्ग पूर्ण हो जाता है। कृष्ण पक्ष में अमावास्या के दिन केवल पिण्ड मात्र रह जाता है।

अमरनाथ की गुफा।

लिदर-घाटी में रहनेवाला एक त्रिशूलधारी साधु।

इस गुफा की यात्रा कब से शुरू हुई, इसका कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं मिलता।

यात्रा से पूर्व सब यात्री "दशनामी अखाडा" श्रीनगर में इकट्ठे होते हैं। तीन दिन लगातार इस स्थान पर भजन, कीर्तन और उपदेश होते हैं। श्रावण की शुक्ल पञ्चमी के दिन यात्रा इसी अखाड़े से आरम्भ होती है। यात्रा के आगे भैरवजी का पुजारी छड़ी लेकर चलता है। यह छड़ी भी महादेव का चिह्न है। इस पर १११) रु० भेंट और सोने का जनेऊ चढाया जाता है। सैकड़ों साधु और यात्री छड़ी के साथ श्रीनगर से पैदल चलकर ़ दिन के बाद पहलगाँव पहुँचते हैं। रास्ते में तीन पड़ाव पड़ते हैं—चन्दनवाड़ी, वायुजन और पञ्चतरणी।

चन्दनवाडी पहलगाँव से छः मील की दूरी पर है। यह छोटा सा गाँव है। पहाड़ देवदार और भोजपत्र के वृक्षों से घिरा हुआ है। बहुत से यात्री पहलगाँव से ही टट्टू किराये पर ले लेते हैं। सामान लादने के लिए घोड़ों के सिवा काश्मीरी हातो (कुली) मिलते हैं। ये लोग बड़े मेहनती होते हैं। अगर ये न हों तो यात्रा कदापि सफल न हो।

चन्दनवाड़ी से ही बर्फ से ढके हुए पुल मिलने शुरू हो जाते हैं। नीचे नदी बहती रहती है। ऊपर लगभग ३० फुट मोटी बर्फ़ पड़ी रहती है। यहाँ से दो मील जाने के

पंचतरणी पर छड़ी का जलूस।

पचतरनी और अमरनाथ के बीच यात्री बर्फ पर चल रहे हैं।

पिस्सू नामक घाटी की कठिन चढ़ाई आती है। इस दो मील की चढ़ाई के बाद एक सुन्दर मैदान आता है। आगे मार्ग सीधा है। छः मील और चलने पर शेषनाग झील आती है।

इसके बाद छः मील के फासले पर "पञ्चतरणी" है। यहां पहुँचने पर ठंडी हवा चलनी शुरू हो जाती है। यहाँ हर साल कई यात्री निमोनिया का शिकार बन जाते हैं। इसी से यहाँ पहुँचने पर यात्रियों को विशेष सावधानी रखनी पड़ती है। यहाँ से चार मील चलने पर अमरनाथ की गुफा आ जाती है।

रास्ते में कई मील बर्फ पर चलना पड़ता है। इस पर चलने के लिए घास के जूतों का उपयोग किया जाता है। गुफा के पास पहुँचते ही यात्री अमरगङ्गा में नहाकर दर्शन करने चले जाते हैं। यहाँ का पानी बहुत ठंडा है। ठंडक के कारण दर्शन करने के बाद यात्री तुरत वापस लौटते हैं।

इससे पहले एक और रास्ता था जिस पर आये साल मौत की दुर्घटनाएँ होती थीं। इस रास्ते में एक तालाब पड़ता है जिसका नाम हत्यारा तालाब है। अब यह मार्ग बन्द कर दिया गया है।

इस यात्रा को सफल बनाने में "धर्मार्थ-विभाग" के अधिकारी और श्रीनगर के महावीर-दल के स्वयंसेवकों ने तल्लीनता से जो सेवाएँ की हैं उसके लिए मैं यात्रियों की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देती हूँ।

भाई-बहन

लेखिका श्रीमती गंगादेवी तापनावाल

महेश और इन्दिरा दोनों भाई-बहन थे। इन्दिरा की उम्र आठ साल की थी और महेश की दस की। इनके पिता का नाम बाबू मणिशंकर था। ये बम्बई की एक कागज-मिल के चीफ इञ्जीनियर थे, इसलिए पैसा भी खूब कमाते थे। बाबू मणिशंकर ने अपने दोनों बच्चों को बड़े लाड़-प्यार से पाला था। वे बेटा-बेटी में किसी तरह का कोई फर्क नहीं समझते थे। दोनों की पढ़ाई भी साथ साथ हो रही थी। नगर की एक खास पाठशाला में ये चौथी कक्षा में पढ़ते थे। इतना सब काम साथ होने पर भी भाई-बहन के स्वभाव में जमीन-आसमान का अन्तर था। एक शैतान, स्वार्थी, दूसरों को तंग करनेवाला था तो दूसरी उम्र में छोटी होती हुई भी बडी समझदार, शील-स्वभाववाली और दूसरों की मदद करनेवाली थी।

एक दिन की बात है, भाई-बहन नियमित रूप से स्कूल जा रहे थे। रास्ते में इन्हें एक अंधा भिखारी मिला। अपने पास ही इनकी बोली सुनकर उसने इनसे भी बड़े करुण स्वर में एक पैसा माँगा। इन्दिरा के पास इस समय चार पैसे थे और महेश के पास छः। इन्दिरा को उस भिखारी पर बड़ा तरस आया और उसने अपने चारों पैसे उसके हाथ पर रख दिये। यह देखकर महेश को इन्दिरा पर बडा गुस्सा आया और अपनी बहन तथा भिखारी का मजाक करने के लिए वह पास में पडा हुआ एक ढेला उस बेचारे गरीब अंधे के हाथ में रखकर खिलखिलाता हुआ चलता बना।

कुछ कदम चलने के बाद महेश इन्दिरा को डॉटकर कहने लगा—"तुम निरी बुद्धू हो। तुमने उस अंधे को अपने सारे पैसे क्यों दे दिये? देखो, मेरे पास कितने पैसे हैं। मैं दोपहर की छुट्टी में इनके फल, चिवड़ा आदि लेकर खाऊँगा। तब तुम मेरा मुँह ताकना। बडा मजा आयेगा।"

इन्दिरा वैसे ही अपने भाई के, बुड्ढे के प्रति किये गये, बर्ताव से खीझ उठी थी। अब तो वह और नाराज़ हो गई। लेकिन उसने अपना क्रोध दबाते हुए कहा—"भैया, मैंने उसे पैसे दे दिये तो क्या हो गया? मैं तो रोज ही कुछ न कुछ दोपहर के वक्त खाती रहती हूँ। अगर एक दिन न खाऊँगी, तो मर तो जाऊँगी नहीं। देखो, मैं तो अभी पेट भरकर स्कूल जा रही हूँ। फिर शाम को घर जाकर अम्माजी से लेकर कुछ खा लूँगी। दो घंटे में मेरा दम तो निकलेगा ही नहीं। फिर उस बेचारे अन्धे को देखो।

कितना भूखा मालूम होता था। मालूम पड़ता है जैसे उसने पिछले ४-५ दिन से कुछ खाया ही न हो। देखा न, पैसे पाकर कितना खुश हो रहा था—कितना आशीर्वाद दिया था। और फिर जो तुम इतना क्रोध करते हो, वह भी अकारण। मैंने उसे अपने पैसे दिये हैं, तुमसे तो मांगने गई नहीं थी।"

दफ्तर में आने पर बाबू मणिशंकर ने महेश के कान एंठ दिये।

इन्दिरा की इस बात को सुनकर महेश को कुछ देर तक कोई जवाब न सूझा। फिर उसने एक उपाय खोज निकाला। वह इन्दिरा से कहने लगा—"अच्छा, सुन ली तेरी बात। अच्छा-बुरा तो तब मालूम होगा, जब मैं यह बात बाबूजी से कहूँगा और तेरी पिटाई होगी। खुद तो खाने के लिए रो धोकर बाबूजी से पैसे ले आती है और यहाँ आकर उस ढोंगी को दे देती है। सब शिकायत कर दूँगा। और जब हमेशा के लिए तेरे पैसे बन्द हो जायेंगे, तब तो रोज मेरा मुँह ताका करेगी।"

अब दोनों चुप थे। थोड़ी देर में ही वे स्कूल पहुँचे। स्कूल की घंटी बजी और प्रार्थना शुरू हुई। इसके बाद सब अपनी-अपनी कक्षा में जाने लगे। इन्दिरा और महेश भी अपनी कक्षा में पहुँचे। गुरुजी के आते ही महेश ने इन्दिरा की शिकायत कर दी।

गुरुजी महेश की बात पर हँस पड़े। उन्होंने कहा—"इन्दिरा बहुत होशियार और दयालु है। उसने बड़ा परोपकार किया है। मैं आज उसे एक चीज इनाम दूँगा।" यह कहकर उन्होंने अपनी डेस्क में से 'परीदेश' नामक सुन्दर कहानियों की एक पुस्तक निकालकर इन्दिरा को दे दी।

अब तो महेश इन्दिरा से और भी जल-भुन गया। वह मन में कहने लगा कि खैर, कोई चिन्ता नहीं। गुरुजी बड़े खराब हैं। अब यह बाबूजी के पास तो पिटेगी ही। वह तो इसे इनाम में दो चाँटे देंगे और फिर ऊपर से इसके पैसे भी बन्द कर देंगे।

इधर करीब आधा घंटा खतम हो गया। गुरुजी पूरा एक सबक पढ़ा ले गये। महेश को अनमना देखकर

एक प्रश्न पूछा। वह हर रोज चट जवाब देता था किन्तु आज कहीं की कहीं हाँक गया। उसे पता ही न था कि कब सबक़ शुरू किया गया और कब ख़तम हुआ। वह तो इन्दिरा की शिकायत की ही बातें सोच रहा था। उसे तो पड़ी थी कि कब स्कूल से छुट्टी हो, और कब घर जाकर बाबूजी से इन्दिरा की मरम्मत करावे। जब गुरुजी को प्रश्न का उत्तर गडबड़ मिला तो वह महेश के पास पहुँच गये और दो-तीन चपत जड़ दिये। कहाँ तो वह इन्दिरा को पिटवाने की सोच रहा था, कहाँ ख़ुद ही पिट गया। इसके अलावा कक्षा में सबके सामने अपमानित होना पड़ा।

साढ़े तीन बजे स्कूल की छुट्टी हुई। महेश और इन्दिरा भी अपने घर की ओर चल पडे। रास्ते में इन दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। महेश रास्ते भर इन्दिरा को पिटवाने की बात सोच रहा था।

करीब ५ बजे बाबू मणिशकर दफ़्र से घर लौटे। आते ही महेश ने उन्हें इन्दिरा की सारी बातें सुना दीं। बाबूजी ने महेश से इन्दिरा को बुलाने को कहा। महेश अपनी बात की सफलता पर बाँसों उछलने लगा। लेकिन जब इन्दिरा कमरे के दरवाजे के पास आई, तो पिता ने दौड़कर उसे गोद में उठाकर चूम लिया। यही नहो, अपनी जेब में से एक रुपया भी निकालकर उसको दे दिया। यह सब देखकर महेश भौंचक्का-सा रह गया। अब तो वह वहाँ से भागने का अवसर देखने लगा। इतने ही में पिता ने उसे अपने पास बुलाया और उसके कान ऐंठते हुए कहा—"देख, तुझसे छोटी लड़की कितनी समझदार और दयालु है। तू तो निरा स्वार्थी ही रहा। अब अगर कल से इन्दिरा की कुछ भी शिकायत की या उसे जरा भी तग किया, तो तेरी ख़ूब ख़बर ली जायगी।"

उस दिन से महेश भी इन्दिरा को ख़ूब प्यार करने लगा और उसके हर एक अच्छे काम में मदद पहुँचाना अपना कर्त्तव्य समझने लगा।

मीठे वचन

लेखिका, श्रीमती सरोजिनी

फूलों से कहती है डालें,
झुक झुककर अब तुम डोलो,
यही समय है खेल-कूद का,
मिलकर ख़ूब हँसो खेलो,

इस डाली से उस डाली पर,
मन चाहे जितना डोलो,
यही सदा उद्देश्य हमारा,
मीठे वचन सदा बोलो॥

साहसी रम्मू

लेखिका, श्रीमती सिद्ध तिवारी

एक दिन रम्मू अपने हवाई घोड़े पर बैठकर घूमने चला। थोड़ी देर घूमने के बाद उसने देखा कि नीचे एक बड़ा-सा तालाब है। उसमें बहुत से लाल और सफेद कमल खिले हुए हैं और हंस उड़ रहे हैं। तालाब के बीच में एक छोटा सा मन्दिर है जिस पर लाल झण्डा फहरा रहा है।

रम्मू ने अपने घोड़े को तालाब के किनारे उतारा। मन्दिर में जाने का कोई मार्ग न था। उसने कमल के फूलों की एक माला बनाकर पहनी और घोड़े पर बैठकर मन्दिर की ओर उड़ा। घोड़े ने ज्योंही मन्दिर पर पैर रक्खा, वह फिसलकर तालाब में जा पड़ा। रम्मू किसी तरह तैरकर बचा और बड़ी सावधानी से रेंगता हुआ मन्दिर में घुसा। मन्दिर में एक सुन्दर सिंहासन रक्खा था। रम्मू जाकर उस पर बैठ गया। उसके बैठते ही वह आसन डगमगाया और रम्मू समेत भीतर घुस गया।

रम्मू अब एक बाग में था। चारों ओर से पहरेदार और माली दौड़ आये। वे रम्मू को पकड़कर राजा के सामने ले गये। राजा ने, कमल के फूल तोड़ने के कारण, रम्मू पर बड़ा क्रोध किया और उसे एक पेड़ से बाँधकर जला देने की आज्ञा दी।

रम्मू का घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

रम्मू घबराया। उसे बचने का कोई उपाय न सूझा। उसे पेड़ से बाँधकर उसमें आग लगा दी गई। उस पेड़ पर एक गिलहरी के बच्चे रक्खे थे। उसने झपटकर रम्मू का बन्धन काट दिया। रम्मू ऊपर चढ़ गया और गिलहरी तथा बच्चों को जेब में रखकर दूसरे पेड़ पर कूद गया।

राजा जब जले पेड़ को देखने के लिए आया तो एक काला-कलूटा देव उसमें से निकलकर राजा को मारने के लिए झपटा। वह इसी पेड पर रहता था जिसे राजा ने जलवा दिया था।

राजा डर के मारे भागा और देव उसके पीछे दौड़ने लगा। राजा सारे राज्य का चक्कर लगा आया पर देव ने उसका पीछा न छोड़ा। अब राजा ने बेबस होकर उससे लड़ने के लिए तलवार निकाली, लेकिन दानव ने दौड़कर राजा के एक ऐसी ठोकर मारी जिससे राजा उड़कर एक पेड़ पर अटक गया। रम्मू भी इसी पेड़ पर था और गिलहरी के बच्चों को छोड़ कर यह तमाशा देख रहा था। उसने देखा कि राजा बेहोश हो गया है और देव अपने लम्बे-लम्बे हाथ बढ़ाये उसे पकड़ने को बढ़ा आ रहा है। रम्मू ने राजा के हाथ से तलवार ले ली और तैयार होकर बैठ गया।

जब देव का दायाँ हाथ राजा के पास । तो रम्मू ने एक बार में उसे काट । अब देव ने बाँया हाथ बढ़ाया और वह भी काट डाला गया। देव घबराया। फिर वह पीठ से पेड़ को धक्का देने लगा। उसके कटे हाथों से खून की धारा बह निकली।

अब रम्मू ने नीचे उतरना शुरू किया और जब सिर के पास पहुँचा तो उसने दोनों हाथों से जोर से तलवार पकड़कर देव के सिर में मारी। वह भीतर धँस गई और रम्मू तलवार की मूठ पकड़कर लटक गया। तलवार उसके सारे शरीर को चीरती नीचे तक चली आई और देव दो टुकड़े होकर गिर पड़ा।

देव के पेट में से एक छोटा सा बालक निकला। पहले तो वह चारों ओर देखकर रोया फिर आकर रम्मू से चिपट गया। रम्मू ने उसे पुचकारकर चुप कराया।

राजा जब होश में आया तो देव को मरा हुआ देखकर आश्चर्य करने लगा। इतने में अपने कुमार को रम्मू के साथ खेलते देखा तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया और वह बहुत खुश हुआ।

उस बालक ने राजा को सब हाल सुनाया। तब तो राजा झपटकर रम्मू के पैरों पर गिर पड़ा और अपराध के लिए क्षमा माँगने लगा। रम्मू ने कहा—राजन्! बिना विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए।

राजा दोनों बालकों को रानी के पास ले गया। देव द्वारा खाये गये अपने कुमार को पाकर रानी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने

रम्मू की बड़ी खातिर की और रम्मू को एक खड़ाऊँ का जोड़ा दिया जिसे पहन वह जहाँ चाहे उड़कर जा सकता था। रानी ने रम्मू के भाइयों के लिए खिलौने और बहन शीला के लिए एक गुड़िया भी दी।

रम्मू ने राजा से सब हाल सुना दिया।

राजा रम्मू को तालाब के किनारे पहुँचा आया। रम्मू उड़कर अपने घर पहुँचा।

शीला को वह गुड़िया बहुत ही अच्छी लगी। यहाँ तक कि वह उसे कभी नहीं छोड़ती थी। शीला और गुड़िया की प्रीति देख लोग गुड़िया को शीला की बहन बताते तो शीला तुतलाती हुई अपने छोटे छोटे हाथों से उन्हें मारने दौड़ती।

रेलगाड़ी

लेखक, श्रीयुत बाबूरामजी पालीवाल

भक भक भक भक यह क्या आती?
मुँह से धुँआ उड़ाती जाती,
सीटी देती आती रेल,
लोग, दौड़ते रेलम-पेल ॥१॥

मोहन जब कलकत्ते जाता,
पैसा देकर टिकट मँगाता,
फिर गाड़ी में जाता बैठ,
अकड़ अकड़ दिखलाता ऐंठ ॥२॥

पाँच मिनट में यह जायगी,
नहीं जरा भी रुक पायेगी।
अभी इसे जाना है दूर,
हमें काम करना भरपूर ॥३॥

जब मंजिल पूरी कर लेगी,
तब यह मस्त पड़ी सोयेगी,
हम भी चलो करें अब काम,
सोवेंगे फिर रात तमाम ॥४॥

बाल-महाभारत

जटासुर-वध

लेखक, पं० मोहनलाल नेहरू

व्यासदेव का हुक्म यही था 'एक जगह मत रहना।
वन-वन फिरकर समय बिताना कष्ट बहुत कुछ सहना
पशुपत-अस्त्र मिलेगा शिव से जीत तुम्हारी होगी।
मगर प्राप्त वह तब ही होगा यदि बन जाओ योगी'॥
गये पार्थ आज्ञा पा ऋषि की घोर तपस्या करने।
लगे तपस्वी ऋषि वनवासी तेज देख बहु डरने॥
चले रुद्र दर्शन देने को गिरिजाजी के साथ।
भेष बनाये अपना ऐसा जैसे कोल किरात॥
बात बनाकर इधर-उधर की अर्जुन को उकसाया।
वीर पुरुष वह भी तापस था धनुष बाण ले आया॥
जितने बाण रहे तरकस में शिव पर सभी चलाये।
नहीं असर होता उनका लख अर्जुन अति शरमाये॥
शिव-प्रतिमा पर आँख बंद कर माला एक चढ़ाई।
आँख खुली तो वा ही माला शत्रु-कंठ में पाई॥
मस्तक अपना शिव चरणों पर बारंबार नवाया।
पशुपत-अस्त्र सहित आशिष वर देव देव से पाया॥
दिक्पालों, देवों, सिद्धों से मान पार्थ ने पाया।
शिक्षा तरह-तरह की पाकर शस्त्रों को अपनाया॥
बहुत दिवस बीते अर्जुन का नहीं मिला कुछ हाल।
पांडव गण तीरथ व्रत करते और बिताते काल॥
जा पहुँचे प्रभास तीर्थ वे मिले कृष्ण-बलदेव।
मिले सात्यकी औ राजे कुछ साथ लिये भूदेव॥
कहें सात्यकी 'हे राजे, तुम करो नहीं पछतावा,
जिस दिन करें युधिष्ठिर इच्छा, बोलेंगे हम धावा॥
मार गिरावें दुर्योधन को, मार उसके भ्राता।
जभी कृष्ण-बलदेव उठें तो साथी होय विधाता'॥

करें युधिष्ठिर 'भाई राजे अभी काल है शेष।
तीरथ-बरत हमें हैं करने, पीछे बनें नरेश'॥
चले वहाँ से चारों भाई अर्जुन बिना उदास।
पर्वतराज पहुँच कर करते उसको बहुत तलास॥
बोली कृष्णा 'भीमसेन तुम कमल लाल ले आओ।
वन सारा यह महक रहा है पास ताल के जाओ'॥
दूर गये तब एक सरोवर पाया भीम विशाल।
कमल खिले थे रंग-बिरंगे पीले हरे व लाल॥
रक्षक उसके बहुत खड़े थे भीमसेन ने ललकारा।
युद्ध हुआ घनघोर वहाँ पर सब यक्षों को मारा॥
तोड़े फूल सरोवर में से झोली भर कर लाल।
बाकी रक्षक देख रहे थे बोले कौन। मजाल॥
दुष्ट जटासुर साथ लगा था विप्र वेष को धारे।
मौका अपना ढूँढ रहा था पांडव-गण को मारे॥
भीम गये जब यक्ष-सरोवर मौका उसने पाया।
द्रुपद-सुता, तीनों पांडव को हिकमत से हथियाया॥
कहा धर्म ने 'दुष्ट असुर! है मौत तुम्हारी आई।
हड्डी-पसली नहीं बचेगी आ जावे मम भाई'॥
बोझ बहुत था, दुष्ट जटासुर दूर नहीं जा पाया।
विधिवश वीर भीम जब लौटा उसके सम्मुख आया॥
पांडवगण और कृष्णा को था उससे तुरत छुड़ाया।
पकड़ लिया उस दुष्ट असुर को कहीं न जाने पाया॥
असुर बहुत बलवान् पुरुष था युद्ध हुआ घन घोर।
पेड़ उखाड़े, शिला चलाई, बहुत मचाया शोर॥
भीमसेन की जीत हुई और असुर गया यम-धाम।
नहीं कोई कुछ कर सकता जब हुए विधाता बाम॥
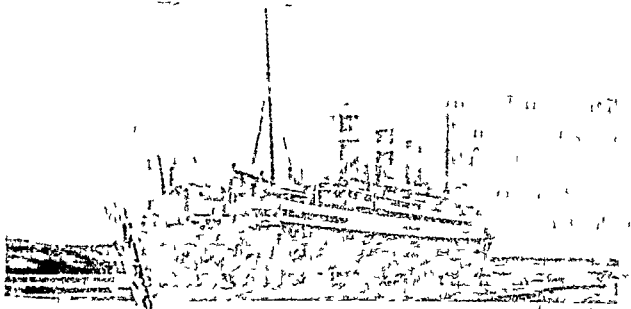
समुद्र और उसकी गहरा

समुद्र और उसकी गहराई

लेखक, श्रीयुत सुरेशशरण अग्रवाल, बा० एस् सी०

हमारी गोल पृथ्वी का कुछ भाग स्थल है और कुछ जल है। स्थल पर हम कहीं भी हों, हमें नाना प्रकार के जीव जन्तु और पौधे दिखलाई पड़ते हैं। चींटी से लेकर हाथी तक सैकड़ों, हजारों और लाखों तरह के विचित्र जीव-जन्तु हैं। ऐसे ही अनगिनत प्रकार के पौधे भी हैं। यदि कहीं किसी जंगल में चल रहे हो तब तो घास पत्ते और पेड़ों से छुट्टी ही नहीं मिलती। ऐसा मालूम होता है मानो अनन्त तक यही हाल है। और यदि पेड़-पौधों से खाली स्थान पर हों तब जीव जन्तु पीछा नहीं छोड़ते। यही नहीं, वैज्ञानिकों का कहना है कि हवा में इतने कीड़े-मकोड़े हैं कि हम उन सबको देख भी नहीं सकते। अच्छा, अगर इनसे भी छुट्टी पा लें और कलकत्ता, बम्बई, लन्दन, पेरिस, न्यूयार्क जैसे बड़े बड़े नगरों में जायें तो चारों ओर मनुष्यों का झुण्ड दिखलाई देगा। मगर स्थल की यह सब भीड़ समुद्र की भीड़ के सामने फीकी पड़ जाती है।

जल में पाये जानेवाले जन्तु और पौधे स्थल के जन्तुओं और पौधों की अपेक्षा कहीं अधिक हैं। इसका पहला कारण तो यही है कि पृथ्वी पर समुद्र स्थल से ढाई गुना अधिक स्थान घेरे हुए है। स्थल पर तो जीवित प्राणी लगभग सब पृथ्वी-तल के ही हैं और उससे अधिक नीचे या ऊपर कोई नहीं है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि स्थल-जीवन तो लम्बाई चौड़ाई में नापा जा सकता है। किन्तु जल जीवन को नापते समय ...

भी ध्यान देना होगा। जब पृथ्वी पर जल की मात्रा भी ज्यादा हो और जल का जीवन गहराई की दिशा में और हो, तब तो हमें निस्सन्देह समुद्री जीवन की जीत माननी पड़ेगी।

हम जानते हैं कि स्थल पर सब जीव-जन्तु पेड़-पौधों के सहारे जीते हैं। हाँ, कुछ जीव ऐसे हैं जो दूसरे जीवों पर निर्भर हैं। परन्तु बहुत से जीव तो पौधों के ही सहारे पर हैं। यही हाल समुद्र में रहनेवाले जीवों या जल-जन्तुओं का है। परन्तु हमें एक बात सदा याद रखनी चाहिए। पेड़-पौधों के लिए सूर्य का प्रकाश जरूरी है। अगर उन्हें प्रकाश न मिले तो वे नष्ट हो जायँ। किन्तु समुद्र की तली तक सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता। वह तो केवल ४००० फुट या पौन मील तक पहुँच सकता है। इसलिए समुद्र में पेड़-पौधे पौन मील नीचे तक ही मिलेंगे। पर इस पौन मील में पेड़-पौधों की कमी नहीं है। वे या तो स्वतन्त्र रूप से तैरते रहते हैं या समुद्र के उथले भागों की तली से मिले रहते हैं। कुछ पौधों का डील-डौल तो बहुत बड़ा होता है। २५० गज लम्बे पौधे पाये जाते हैं। परन्तु अधिकतर छोटे ही छोटे पौधे समुद्र में उगते हैं जो तैरते रहते हैं। यही छोटे पौधे बहुत से समुद्री जीव-जन्तुओं का भोजन हैं।

अब समुद्री जीव-जन्तुओं का हाल सुनो। वे समुद्र में बहुत गहराई तक फैले हुए हैं। और तुम जानते हो कि समुद्र की सबसे अधिक गहराई कितनी है? छः मील। इतने निचले भाग में जीव-जन्तु रहते किस बल पर होंगे? अधिकतर तो वे छोटे जन्तुओं को हज़म कर लेते हैं अथवा समुद्र के ऊपरी भागों से जो जीवित पदार्थ गिरते हैं, उन्हें खाकर सन्तुष्ट रहते हैं।

जब समुद्र में इतने प्राणी हैं तो इनसे किसी दिन मनुष्य को भी लाभ पहुँचेगा या नहीं? लोगों का विचार है कि जब स्थल पर इतने प्राणी हो जायँगे कि उनके लिए स्थल पर काफी भोजन न मिल सकेगा तब समुद्र के जन्तु और पौधे आहार के रूप में काम में लाये जायँगे। फिर धीरे धीरे समुद्र को भी स्थल की भाँति नये ढंग से जोता जायगा और खेती की जायगी।

ऊपर स्थान स्थान पर समुद्र की गहराई आई है। भला इसको नापते कैसे हैं? क्या तागे में गुट्टी बाँधकर नीचे छोड़ते जाते हैं? तब तो रील की रील खतम हो जायगी और शायद धागा भी मुसीबत में पड़ जाय। राह में किसी जानवर ने ही कुतर लिया तब? यही नहीं, ऐसा करने में अधिक समय भी लगेगा? समुद्र की गहराई नापने का तरीका बहुत सरल है। तुम जानते हो कि सूर्य की किरणों के आने में भी समय लगता है। इसकी चर्चा फिर कभी करूँगा। इस समय इतना ही जान लो कि सूर्य की जो किरणें तुम्हें इस समय दिखलाई दे रही हैं उन्हें अपना घर (अर्थात् सूर्य) छोड़े ८ मिनट हो गये। इसी प्रकार ध्वनि

के आने-जाने में भी समय लगता है। हवा में ध्वनि को ३५० गज़ जाने में १ सेकण्ड लगता है। प्रकाश की गति इस गति से लगभग एक लाख गुनी अधिक है, पर ध्वनि की गति भी काफी तेज है। बस, इसी गति से समुद्र की गहराई जानी जाती है। जिस स्थान पर समुद्र की गहराई मालूम करनी होती है वहाँ जहाज में बैठकर जाना पड़ता है। फिर लोग यंत्रों द्वारा बड़े जोर की आवाज करते हैं। यह आवाज सीधी समुद्र की तली तक पहुँचती और फिर वापस आ जाती है। वापस आई हुई आवाज एक बिजली के यंत्र से सुनी जाती है। यदि तुम कुएँ पर खड़े होकर 'आ' 'आ' या जोर कुछ शब्द करो तो मालूम पड़ता है कि कुएँ के नीचे बैठा हुआ कोई तुम्हारी नक़ल करता है। लेकिन सचमुच बैठा कोई नहीं रहता। वह तुम्हारी आवाज की गूँज तुम्हारे पास वापस आती है। हाँ, तो जितनी देर बाद जहाज पर गूँज सुनाई देती है उतने समय को बड़ी होशियारी और बारीकी से विशेष यंत्रों द्वारा जान लिया जाता है। यदि इस समय में १ सेकण्ड का भी फर्क हो गया तो समुद्र की गहराई जो मालूम होगी उसमें सैकड़ों गजों का अन्तर हो जायगा।

अब तुमने देख लिया कि किस प्रकार समुद्र की गहराई मालूम होती है और समुद्र के प्राणियों का भी कुछ हाल जान गये। समुद्र के विचित्र जीवों की चर्चा फिर कभी की जायगी।

कौए

लेखक, श्रीयुत 'मनोहर'

साँझ पड़ी है मुन्ना राजा
लौटो अपने घर को आओ।
साँझ पड़ी है मुन्नी रानी
लौटो अपने घर को आओ।
साँझ पड़ी है—लौट रहे हैं
पक्षी रैन-बसेरा करने,
साँझ पड़ी है—लौट रहे हैं
डगर गये दिवस को चरने।
अस्त हो रहा पश्चिम में रवि
छवि अपनी दिखलाता सुन्दर।

मुन्ना-मुन्नी बाल सखाओ,
खेलो कूदो अब लौटो घर।
बिछुड़े छुट कहीं कुछ तो कुछ
मिलकर सुन्दर पाँति बनाकर,
आते खग मनमोहक निज घर
पतवारों की भाँति बनाकर।
जी करता है गोद बिठाकर
हाथ फिराऊँ इनके पर पर,
कोई मेरे मुन्ना-मुन्नी से
गोदी में [illegible] रा।
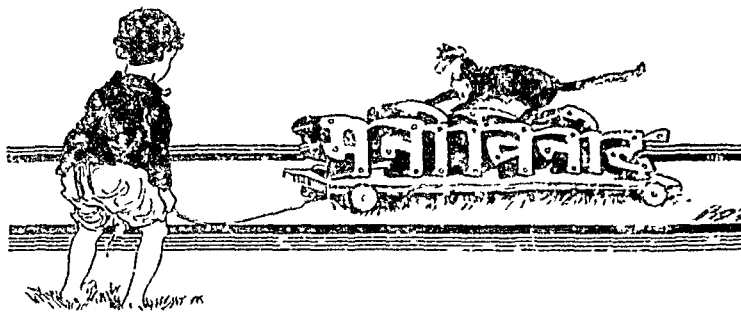
इस्फहान का वीरबल

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

समस्त भारतवर्ष में ऐसा विरला ही कोई होगा जिसे वीरबल के चुटकुले न याद हो या जिसने सुनकर उनका मजा न लिया हो। जब दो-चार आदमी एक स्थान पर इकट्ठा हो जाते ह तो मौके वे-मौके मजे ले लेकर उन चुटकुलों को दुहराते है। यही बात इस्फहान और ईरान में नासिरुद्दीन के हास्य और व्यग भरे चुटकुलों की है। जब तक ईरानी जाति जीवित है, नासिरुद्दीन को नहीं भूल सकती। जहाँ कहीं किसी क़हवाखाने में दो-चार व्यक्ति जमा हुए, नासिरुद्दीन के चुटकुले दुहराये जाने लगे। लोग क़हवा के साथ साथ चुटकुलों का भी आनन्द लेते है। ऐसा मालूम होता है कि अगर कहवा पीते समय मुल्ला (नासिरुद्दीन) के चुटकुले न कहे जायँ तो कहवा पीने में कुछ आनन्द ही नहीं आवे। कुछ लोग हाव-भाव द्वारा मुल्ला के चुटकुले सुनाते हैं, और स्वय प्रसन्न होकर दूसरों को भी प्रसन्न करते है।

मुल्ला के सभी चुटकुले इस्फहान से सबध रखते ह। लोगों का विचार है कि वे इसी शहर के रहनेवाले थे, इसी लिए उन्हें इस्फहानी कहते है। जिन लोगों ने भिन्न भिन्न भाषाओं में फारसी की कहानियाँ पढ़ी हैं वे इस्फहान के हाजी बाबा की स्मृति देखने के इच्छुक होंगे। लेकिन जिन्होंने नासिरुद्दीन के लतीफे सुने है उन्हे खूब मालूम है कि केवल इस्फहान ही नहीं, बल्कि ईरान का कोई भी क़हवाखाना मुल्ला की याद से खाली नहीं होता। असम्भव है कि दो-चार आदमी एक स्थान पर बैठकर हुक्का पीयें और मुल्ला का जिक्र न हो। मुल्ला की अजीब पगड़ी और उनकी मरियल घोड़ी आज तक प्रसिद्ध है। और मुल्ला की सवारी का तो कहना ही क्या? बन ठनकर जिधर से गुजरते, हजारों क़हक़हों का टैक्स वसूल कर लेते थे।

आइए, यहाँ पर हम भी मुल्ला के कुछ चुटकुलों को दुहरा लें।

(१)

मुल्ला साहब धार्मिक पुरुष थे। प्रार्थना पर बहुत विश्वास करते थे। एक बार मुल्ला साहब ने जोरों से प्रार्थना करनी शुरू की—ऐ खुदा! मुझे किसी तरह एक सौ रुपये दिलवा दे। लेकिन यह खूब समझ ले कि अगर एक भी कम या ज्यादा हुआ तो मैं हरगिज् न लूँगा।

उनका पड़ोसी दौलतमंद आदमी था। उसने मजाक के लिए एक थैली में ९९ रुपये रखकर मुल्ला के दरवाजे पर डाल दिये और स्वयं छिपकर तमाशा देखने लगा। जब मुल्ला साहब प्रार्थना समाप्त करके निकले तो उन्हें थैली दरवाजे पर रक्खी मिली। फौरन् बोले कि वाह मेरे अल्लाह! आखिर तूने रुपये भेज ही दिये। अब लगे बैठकर एक एक करके गिनने। जब ९९ निकले तो मुल्ला ने एक लम्बी साँस ली और बोले—ए खुदा! मैंने तो सौ माँगे थे, तूने ९९ ही दिये। मालूम होता है, तेरे खजाने में इतने ही बच रहे थे या गिनने में तुझसे भूल हो गई। खैर, मैं इनकार नहीं करूँगा, लेकिन जब एक हो जाय तो फिर भेज देना।

मुल्ला जब थैली उठाकर जाने लगे तो पड़ोसी घबराया हुआ आया और बोला—यह थैली तो मैंने मजाक के लिए यहाँ रख दी थी। लेकिन मुल्ला कब माननेवाले थे। बोले—मैंने खुदा से माँगा था, उसने दिया। अब तुझे क्यों दूँ?

बात बढ़ी और काजी तक जाने की नौबत आई। मुल्ला ने पड़ोसी से कहा—भाई, मेरे पास न तो टोपी है, न जूता, और न कपड़े कि पहनूँ और न सवारी के लिए खच्चर ही है। अगर तुम मुझे ये तमाम चीजें उधार दे दो तो मैं काजी के यहाँ चलने को तैयार हूँ। पड़ोसी लाचार था, राजी हो गया।

पड़ोसी ने सारी रामकहानी काजी को जा सुनाई। काजी ने मुल्ला को बुलाया। पूछने पर मुल्ला साहब बड़ी सरलता से बोले—जनाब! यह मेरा पड़ोसी है, बड़ा ही बेईमान और लालची। मैंने खुदा से रुपये माँगे थे। उसने मुझे दिये। अब यह नाहक मेरे पीछे पड़ा है कि रुपये दो। मैंने नहीं दिये तो आपके पास शिकायत लेकर आया है। जनाब! आप अपनी चमकदार आँखों से स्वयं देख सकते हैं कि यह आदमी देखने ही से लालची मालूम होता है। इसके लालच की यहाँ तक हद है कि आप अगर उससे पूछें कि मैं किसके कपड़े पहने हुए हूँ और किसके खच्चर पर आया हूँ तो यह कह देगा कि सब कुछ मेरा (पड़ोसी का) है।

काजी को समझ में यह बात आ गई। उन्होंने देखा कि सत्य की अच्छी परीक्षा है। पड़ोसी को बुलाकर मुल्ला का ... सवाल किया। पड़ोसी ने ... कहा—यह तमाम चीजें मेरी है

काज़ी को क्रोध आया और उन्होंने पडोसी को अदालत से निकलवा दिया और मुल्ला से माफी माँगी।

(२)

एक बार मुल्ला के यहाँ कुछ मेहमान आये तो उन्होंने एक पडोसी से खाना पकाने के लिए एक बड़ा सा बरतन मँगवाया। दूसरे दिन जब उसे वापस किया तो उसके साथ एक और छोटा बरतन भी था। पडोसी ने आश्चर्य से पूछा कि यह छोटा बरतन कैसा है। मुल्ला ने इतमीनान से उत्तर दिया—भाई, तुम्हारे बरतन ने बच्चा दिया है और यह चीज भी तुम्हारी है। पडोसी खूब हँसा। उसने दोनों बरतन रख लिये।

दूसरी बार मुल्ला ने पाँच बरतन मँगवाये; लेकिन दूसरे दिन सिर्फ एक वापस किया। जब पडोसी ने बाकी चार बरतन माँगे तो आप बोले कि अफसोस, वे सब रात के वक्त मर गये। पड़ोसी ने क्रोधित होकर कहा—ताँबे के बरतन कैसे मर सकते हैं? मुल्ला साहब ने जवाब दिया—अफ़सोस, सब मर गये। खुदा करे, वे सब स्वर्ग में खाना पकाने के काम में आवें। भाई, तुमने सुना नहीं, मौत सबके लिए है। जो पैदा होता है वह मरता भी है। तुम्हीं सोचो, जब ताँबे के बरतन बच्चा दे सकते हैं तो मर क्यों नहीं सकते!

ग़रीब पड़ोसी अपनी बेवकूफी पर पछताता हुआ चला गया।

(३)

कौन ऐसा है जिसे हज्जामों से वास्ता न पड़ा हो। सब जानते हैं कि हजामत बनवाते समय किन किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। मुल्ला भी एक बार सर मुँड़वाने बैठे। पहले तो नाई ने सर को खूब भिगोया, फिर उस्तरा चलाना शुरू किया। जहाँ उस्तरा लग गया, नाई ने थोड़ी सी रुई चिपका दी। मुल्ला आईने में देखते जाते थे। आधा सिर मुँड़ चुका था कि मुल्ला ने हज्जाम से कहा—बस, बस।

हज्जाम ने घबराकर पूछा—क्यों जनाब!

मुल्ला साहब बोले—तुम आधे सिर में रूई बो चुके, अब मैं आधे में गेहूँ की खेती करूँगा।

बेचारा हज्जाम बड़ा झेंपा।

(४)

जब मुल्ला साहब बुड्ढे हुए और मृत्यु का समय निकट आया तो आपने अपने वसीयतनामे में लिखा कि मुझे मरने के बाद एक पुरानी कब्र में दफनाया जाय। लोगों ने पूछा कि आप ऐसा क्यों लिखते हैं। मुल्ला साहब ने उत्तर दिया—इसमें एक फायदा है। जब खुदा के फरिश्ते मुझसे दुनिया का हिसाब पूछने आवेंगे तो उनसे कह दूँगा कि पहले तो एक बार पूछ गये थे, अब क्या बार बार हिसाब लोगे?

× × ×

मुल्ला साहब के बहुत से चुटकुले ऐसे हैं जिनको सुनकर यह फैसला नहीं किया जा

सकता कि मुल्ला साहब सचमुच अक़लमंद आदमी थे या बेवक़ूफ़। और न यही पता चल सकता है कि मुल्ला साहब स्वयं मूर्खता करते थे या दूसरों को मूर्ख बनाते थे। उनमें से कुछ यों हैं :—

(५)

एक बार मुल्ला साहब खच्चर पर सवार होकर बाजार गये। एक दूकान पर उतरे। लबादा खच्चर पर छोड़कर दूकान में गये लेकिन जब वापस आये तो लबादा नदारद। चारों तरफ देखा लेकिन जब कुछ पता न चला तो आपने खच्चर की काठी उतार ली और खच्चर से यह कहते हुए बैठ गये कि जब तक मेरा लबादा न दोगे मैं तुम्हारी काठी न दूँगा।

(६)

एक बार नासिरुद्दीन बड़ी मुसीबत में पड़े। घर में कुछ खाने-पीने को न था। चोरी करने का विचार जो आया तो झट एक बगीचे की दीवार से सीढ़ी लगाकर ऊपर चढ़ गये। फिर सीढ़ी उठाकर उसे अन्दर की तरफ लगाकर बाग में उतर गये। माली ने उन्हें देख लिया और चिल्लाकर पूछा—तू कौन है? यहाँ तेरा क्या काम है? क्यों आया है? मुल्ला साहब बोले—मैं सीढ़ी बेचने आया हूँ, आप खरीदिएगा?

उस दिन मौका न लगा तो दूसरे दिन फिर बाग में कूदे और गाजर-मूली तोड़-तोड़कर जेबों में भरने लगे। माली ने देखते ही इनको धर दबाया। मगर आप जरा भी न घबराये। बोले—देखो भाई, बाहर बड़े जोर की आँधी चल रही है, वही मुझे जबरदस्ती बाग में उड़ा लाई। मेरा कोई कसूर नहीं। माली मुस्कराया, बोला—और ये गाजर मूलियाँ कैसे उखड़ीं? आप बोले—तुम कैसे बेवक़ूफ़ हो! जो आँधी आदमी को उड़ा सकती है, उसके लिए गाजर मूली उखाड़ना क्या बड़ी बात है? माली ने फिर पूछा—मगर जनाब! ये सब आपकी जेब में कैसे पहुँचीं? मुल्ला साहब गम्भीर हो गये। बड़े तपाक से बोले—भाई! यही तो मैं भी सोच रहा हूँ।

(७)

नासिरुद्दीन एक बार काजी बना दिये गये। फिर तो बड़े-बड़े मुकदमों का फैसला होने लगा। एक दिन दो आदमी एक मजेदार मुकदमा लेकर आये। एक ने कहा—हुज़ूर, इसने मेरा कान काट खाया है। दूसरा बोला—हुज़ूर, यह झूठा है, इसने स्वयं अपना कान काटा है। हुज़ूर जरा चक्कर में पड़े, मगर तुरन्त ही एक तरकीब सूझ गई। हुक्म हुआ—सब लोग बाहर चले जायें। सब के चले जाने पर किवाड़ बन्द करके लगे आप अपने मुँह से कान काटने की कोशिश करने। नतीजा यह हुआ कि खुद गिरे, कुर्सी टूटी और काजी साहब का सिर भी फूटा। चटपट सिर ... पट्टी बाँधी, किवाड़ खोले और फैसला ... आदमी केवल अपना कान ही ... सकता बल्कि सर भी फाड़ ...

उन्होंने कृष्णा को मार डालने के लिए एक दूसरा उपाय सोचा। उन्होंने विष का प्याला तैयार किया और उसे पीने के लिए कृष्णा के पास भेज दिया। कृष्णाकुमारी की माँ यह नहीं चाहती थी कि बेटी को विष दिया जाय। परतु कृष्णा माँ को समझाती हुई बोली, "माँ, मै क्षत्रिय की लड़की हूँ। मौत से मैं नहीं डरती। मेरे मर जाने में ही मेवाड का मङ्गल है। पिताजी ने मेरे लिए जो सोच रक्खा है, वही ठीक है। मुझे मरने दो!" बस, कृष्णा ने विष का प्याला अपने हाथ में ले लिया और आँखें बन्द करके विष पी लिया। सभी लोग रोने पीटने लगे। पहले प्याले से कृष्णा नहीं मरी। इससे उसे दूसरा प्याला पीने के लिए दिया गया परतु उससे भी कृष्णा की मृत्यु नहीं हुई। राना ने तीसरे प्याले में अधिक विष भर दिया। बेचारी कृष्णा इस बार विष पीकर ऐसी सोई कि फिर न उठ सकी।

मेवाड की यह सच्ची कहानी पढ़ने से बहुत दुःख होता है। परतु इस कहानी से एक सच्ची बात की शिक्षा मिलती है। कृष्णाकुमारी ने देश और कुल के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण दे दिये। इसी वीरता के कारण कृष्णाकुमारी का नाम हमेशा अमर रहेगा।

मेरी बिल्ली

लेखक श्रीयुत चन्द्रभूषण पाण्डेय 'चन्द्र'

देखो मेरी बिल्ली आई,
साथ एक चूहा है लाई।
चूहे धरती है यह झटपट,
और उन्हे खाती है चटपट।

बिल्ली जब घर से जाती है,
चूहों की तब बन आती है;
कपडे-लत्ते और मिठाई,
सबकी करते तुरत सफाई।

एक बार चाची जब आई,
मेरे लिए मिठाई लाई,
मथुरा के थे खुर्चन पेड़े,
कलाकन्द जयपुर के जोड़े।

घर पर नहीं मुझे वह पाकर,
लगी नहाने छत पर जाकर,
झटपट वे चूहे तब आकर,
भागे तुरत मिठाई खाकर।

इसी लिए है बिल्ली पाली,
चूहों की है आफत घाली,
अब तो खाती खूब मिठाई,
लाती है जब मेरी ताई।

संसार के १६ सबसे बड़े नगर

देश	नगर	जन संख्या
इँगलेण्ड	लन्दन	८,४७५,०००
अमरीका	न्युयार्क	८,२०२,०००
जापान	टोकियो	६,९३०,०००
जर्मनी	बर्लिन	५,३१२,०००
अमरीका	चिकागो	३,३७६,०००
चीन	शङ्घाई	३,२००,०००
फ्रांस	पेरिस	२,८७७,०००
रूस	मास्को	२,८०,०००
रूस	लेनिनग्राड	२,७८३,०००
जापान	ओसाका	२,६००,०००
अर्जेंटिना	ब्यूनोस एयर्स	२,२१५,०००
अमरीका	फिलाडेल्फिया	१,९५०,०००
आस्ट्रिया	वियना	१,८८६,०००
अमरीका	डेट्रायट	१,५६८,०००
ब्राज़िल	रियोडीजेनिरो	१,५००,०००
हिन्दुस्तान	कलकत्ता	१,४८६,४००

(नवयुग से)

संसार की सैर

१—जापानी भाषा में दो प्रकार के अक्षर होते हैं। 'कटाना' का अक्षर मर्दों के इस्तेमाल के लिए और 'हीरानागा' अक्षर औरतों के इस्तेमाल के लिए है।

२—मोरक्को में अजिया नामक स्थान है, जहाँ के निवासी रोगों को दूर करने के लिए विचित्र तरह के इलाज करते हैं। अगर किसी के सर में दर्द हो तो वह अपना सर मुँड़वा डालता है। अगर ज़ोर का दर्द हो तो सिर मुँड़वाकर उस पर कब्र की धूल डाली जाती है। अगर दाँत में दर्द हो तो एक दाँत उखाड़कर किसी मंदिर पर चढ़ा दिया जाता है। लोगों का विश्वास है कि इसके बाद बाकी दाँत उम्र भर खराब नहीं होते।

३—फिलिपाइन्स द्वीप समूह में छोटे-बड़े मिलाकर कुल सात हजार टापू हैं, जिनमें ढाई हजार का नाम रक्खा जा चुका है। बाकी बेनाम हैं।

४—संसार में सबसे ज्यादा अण्डे दीमक देती है। वह एक दिन में ८६४०० अण्डे तक देती है।

५—ससार का सबसे पुराना अखबार चीन का आफिशल 'पेकिन गजट' था जो लगातार १ हजार वर्षों तक निकलता रहा पर आजकल बन्द हो गया है।

६—डलफिन मछली के २०० और घोंघे के १४०० दॉत होते हैं। मनुष्य और बन्दर के ३२ दॉत होते हैं। शेष जानवरों में कुछ के बीस और कुछ के इससे भी कम होते हैं।

—नवलकिशोर बाजपेयी

कुछ जानने योग्य बातें

१—एक कवि ने लिखा था "आदमी बुलबुला है पानी का", यह बात विज्ञान से साबित हो गई है। कहते है कि अगर लगभग डेढ़ मन के आदमी के ६१७६९ हिस्से किये जावें तो उसमें ४०६९४ हिस्से अर्थात् ६५ प्रतिशत पानी है; ११३५७ हिस्से कोयला और २ १६ हिस्से वे चीजें जिनकी राख बन जाती है और बाकी हाइड्रोजन, नाइट्रोजन और आक्सीजन गैसें है। पानी का हिस्सा बिलकुल एक सा हर जगह नहीं है। दिमाग, तिल्ली और रीढ़ हड्डी ७५ प्रतिशत पानी की बनी हैं। खून के पॉच हिस्सों में चार पानी के है और ऑख ९५ प्रतिशत पानी है।

२—आदमी की खाल में लगभग २० लाख छेद होते हे जिनमें से पसीना निकलता है।

× × × ×

३—सबसे मशहूर बाग हेगिगार्डन है।

४—सबसे बड़ा शहर लदन है।

५—सबसे बड़ी रेलवे-लाइन ट्रास साईबेरियन रेलवे है।

६—हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी इमारत ताजमहल और सबसे बड़ा पहाड़ हिमालय है।

—अभयप्रतापसिंह वर्मा

विचित्र बातें

१—अमरीका में सारस की तरह का एक पक्षी होता है जो जगल में जाकर भेड़ों को चरा लाता है।

२—फ्रास मे एक कारीगर ने एक ऐसी बाईसिकिल बनाई है जिसको मामूली सूटकेस में रखकर ले जा सकते है। इसका वजन १० सेर है।

३—कुछ मछलियॉ समुद्र की ८९ मील की गहराई में रहती है और उनके सिर पर प्रकाश होता है। जो मछलियॉ उनके पास जाती है उन्हे वे खा जाती हे।

४—चीन की भाषा में बहुत अक्षर है। उस भाषा का एक कोष भी छपा है जिसका वजन ४९ मन है और उसके ५०० खड हैं।

बसन्तकुमार पारीक

मजेदार पहेलियाँ

(१)

एक नारि है दुबली-पतली,
कटती - पिटती रहती है।
बिन बोले ही निज स्वामी के,
मन की बातें कहती है॥
(लेखनी)

(२)

एक पुरुष के देखे हमने, छाती ऊपर दाँत।
सिर पैरों का पता न हमको, लगा किसी भी भाँत॥
केवल छोड हवा को कुछ भी, कभी नहीं वह खाता।
बड़े बड़े गानेवालों से भी सुन्दर है गाता॥
(हारमोनियम)

(३)

कुत्ता पास न आने पावे, बैरी देखत ही घबरावे।
नद-नाले में करे सहाय, चोर दूर ही से भग जाय।
लुच्चे लपट जोड़ें हाथ, जब वह रहे तुम्हारे साथ।
(लाठी)

—बंशीधर शर्मा, किशनगढ़ स्टेट

जल में रहे अगिन में उपजे,
है आँखों का वह श्रृंगार।
(काजल)

—नेगराज अग्रवाल

(१)

मध्य कटे से मृत्यु हो, आदि कटे मजबूत।
अन्त काट उल्टा पढ़ो, हो जाता कन्जूस॥
उत्तर—मसूर (एक तरह का अनाज)

(२)

गाता है पर नर नहीं,
बजते पर दिखते नहीं।
सूई बिन चल सके न काम,
बतलाओ तुम उसका नाम॥
उत्तर—ग्रामोफोन

— शोभाराम गुप्ता

एक राग से गाती रहती,
निशि दिन चलती कहीं न जाती।
(घड़ी)

—अरुणजी, ब्रह्मा

महल बनाया करती हैं, माँ की झिड़की सहती हैं।
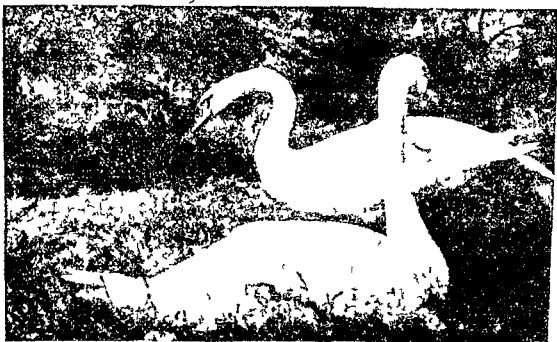
साथ साथ ये रहते हैं, कितने सुन्दर लगते हैं।

पुस्तक-परिचय

लोकहितकारी पुस्तकमाला की पुस्तकें—

लोकहितकारी पुस्तकमाला (भारतवासी प्रेस, दारागंज, प्रयाग) ने २३ महापुरुषों की जीवनियाँ छापी हैं। ये जीवनियाँ सुंदर ढङ्ग से लिखी गई हैं। इनमें संक्षेप में महापुरुषों की जिंदगी की लगभग सभी बातें आ गई हैं। कुछ जीवनियों में महापुरुषों के उपदेश भी दिये गये हैं। प्रत्येक पुस्तक के कवर पर उस महापुरुष का सुन्दर चित्र भी छापा गया है जिसकी जीवनी उस पुस्तक में लिखी गई है। इन जीवनियों की भाषा आसान रक्खी गई है। ये जीवनियाँ बालक बालिकाओं के काम की हैं। हर एक जीवनी का मूल्य =) है, परन्तु एक साथ खरीदने पर २७ किताबों का सेट २=) में मिलेगा। जीवनियों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) छत्रपति शिवाजी, (२) स्वामी रामतीर्थ, (३) पृथ्वीराज चौहान, (४) समर्थ रामदास, (५) नपोलियन, (६) गोखले, (७) चित्तरंजन दास, (८) महाराणा प्रतापसिंह, (९) रामकृष्ण परमहंस, (१०) गौतम बुद्ध, (११) महाराज रणजीतसिंह, (१२) गुरु नानक, (१३) अहल्याबाई, (१४) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (१५) मीराबाई, (१६) गोस्वामी तुलसीदास, (१७) स्वामी शंकराचार्य, (१८) स्वामी विवेकानंद, (१९) गुरु गोविन्दसिंह, (२०) श्री रामानुजाचार्य, (२१) भगवान श्रीराम, (२२) लोकमान्य तिलक, (२३) सरदार हरीसिंह नलुआ।

इन जीवनियों के आकार की नीचे लिखी ४ और पुस्तकें लोकहितकारी पुस्तकमाला की ओर से छपी हैं। इनमें से हर एक पुस्तक का मूल्य -)॥ है। इन पुस्तकों के नाम और उनका परिचय इस प्रकार है—

(१) मिचौनी—इसमें कविता में लिखी गई ६ कहानियाँ हैं। ये सभी कहानियाँ सुंदर और बालकों के पढ़ने योग्य हैं। कई कहानियों में चित्र भी दिये गये हैं।

(२) चित्तौड़ की कहानियाँ—इस पुस्तक में चित्तौड़ का वर्णन और वहाँ का इतिहास आसान भाषा में समझाया गया है। इसके पढ़ने से चित्तौड़ की सभी पिछली बातें, जिसके लिए वह मशहूर है, समझ में आ जाती हैं। पुस्तक अच्छी है और बालक बालिकाओं के पढ़ने योग्य है।

(३) सूर्य-नमस्कार—इस पुस्तक में सूर्य नमस्कार करने के नियम और उसकी सभी बातें संक्षेप में समझाई गई हैं। चित्र दे देने से यह पुस्तक और भी काम की हो गई है।

(४) सनातन शिक्षा—इस पुस्तक में ५ लेख दिये गये हैं जिनमें सदाचार इत्यादि के नियम अच्छी तरह समझाये गये हैं। पुस्तक अच्छी है।

सिंह। लड़के की करामात—श्री रमाकांत। कविता—श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा। प्रेम-ज्योति—कुमारी व्रजलता भार्गव। उद्गार—श्री रमेशचन्द्र माहेश्वरी। अहिंसा—श्री राधामोहन जालान। मैं—श्रीहरी। प्रात: उठो इत्यादि—श्री आर्यकुमार वीरेन्द्र त्रिपाठी। बाल सखा की चाह—श्री विश्वनाथ गुप्ता। कविता—श्री प्रेमसुख शर्मा। नम्र निवेदन—श्री लक्ष्मीदत्त मालवीय। वर्षा ऋतु—श्री गनेशलाल बक्सी। कृष्ण-विनय—श्री जुँझार सिंह। हार-जीत—श्री शेषमल कोठारी। बन्दर और सेठ जी—श्री रामचन्द्र उपाध्याय। शब्द का महत्त्व—श्री अक्षयकुमार। अनुरोध—श्री भगवानदास शिवहरे। श्री हरिश्चन्द्र—श्री विनोदकुमार। नोरगा जानवर—श्री मुहम्मद नवी अब्बासी। पथिक—श्री चन्द्रदत्त मकलानी। गरीब की आह—श्री रामनाथ। वन्दना—श्री गनेश बक्सी। युवक और युवती—श्री रामचरन साहु। जादू का दिया—कुमारी नर्मदा बाई। प्रफुल्ल फूल—श्री सत्येन्द्रकुमार गोरो वाला। तितली—श्री भगतसिंह विद्यार्थी। भाग्योदय—श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह। ठग—श्री रवीन्द्रनाथ ब्रह्म। मधुमक्खी—श्री घनश्यामदास वैष्णव। व्यायाम—श्री रेवन्त सिंह। सेवा—श्री रामयश। नानी की कहानी इत्यादि—श्री चतुर्भुजनारायण लाल। मेरा बाग—श्री अरुणजी वरमा। कौन—श्री देवीराम सिहावा। लारकपुर का हाथी—श्री विमलचन्द घनरूपमल मोजतिया। कविताएँ—श्री रामचन्द्र प्रसाद। कृष्ण—श्री मदनमोहन शर्मा विद्यार्थी। कविताएँ इत्यादि—श्री घासीराम हनुमान विद्यार्थी।

उछल कूद तुम इनसे सीखो, इनका हाथ मिलाना देखो।

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd., ALLAHABAD
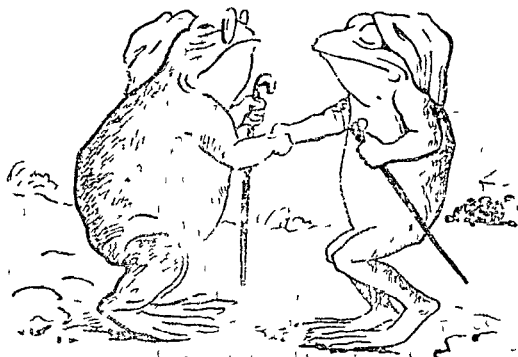
चीता बिल्ली, बाघ बिल्ली और पालतू बिल्ली
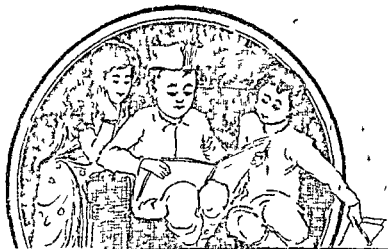
सम्पादक—श्रीनाथसिंह,
सहायक स०—देवदत्त द्विवेदी, बी० ए०

वर्ष २३] दिसम्बर १९३९—मार्गशीर्ष १९९६ [संख्या १२

ओस

लेखक, श्रीयुत मोहनलाल द्विवेदी

है पड़ी ओस, है पड़ी ओस
यह मोती जैसी जड़ी ओस।

वन वन में उपवन उपवन में,
फूलों में, फल में, तृण तृण में,
पेड़ों में, डाली, पत्तों में,
त्यों मधुमक्खी के छत्तों में,
निखरी हीरे की लड़ी ओस,
है पड़ी ओस, है पड़ी ओस।

खेतों में औ खलिहानों में,
गेहूँ में वैसे धानों में,
पर्वत में त्यों मैदानों में,
घर में, बाजार-दुकानों में,
हर दर पर देखो खड़ी ओस
है पड़ी ओस, है पड़ी ओस।

लंका का आदर्श वीर दुट्ठु गेमुनू

लेखक, श्रीयुत भूपेन्द्र सान्याल

ईसा के २०० साल पहले चोला-वंश के राजा एलारा ने लंका पर विजय प्राप्त की। पाली भाषा में लिखित लंका के इतिहास (महावंश) के अनुसार एलारा के समय से बौद्ध धर्म का लोप होने लगा। लंका-निवासी हारकर दक्षिण के जंगलों में भाग गये और वहीं रहने लगे।

दक्षिण में रोहण नाम का एक प्रदेश था। वहाँ सिंहल-निवासी राजा काकवन्न तिस्सा राज्य करता था। इसी प्रदेश के महागम नामक नगर में विद्रोह का वह अंकुर उगा जिसने तामिल देश के चढ़ाई करनेवालों को लंका से दूर कर दिया। यह कोशिश काकवन्न ने नहीं की। काकवन्न ने तो अपने लड़कों को शपथ खिलाई कि दामिल (तामिल) राजाओं से कभी न लड़ें। परन्तु बड़े भाई गेमुनू ने इस शपथ का तिरस्कार किया। शपथ के अन्न को भूमि पर छिटका-कर गेमुनू सेज पर टेढ़ा मेढ़ा सो रहा। माता के आने पर उसने उत्तर दिया कि विदेशियों की अधीनता में सीधे तानकर सोना कठिन है। पिता से विरोध करने के कारण ही उसका नाम दुट्ठु गेमुनू (दुष्ट गेमुनू) पड़ा।

किशोर गेमुनू ने अपने चारों ओर वीर योद्धाओं को एकत्रित किया और अपनी एक सेना का संगठन किया। उसने बार बार पिता से यह आज्ञा माँगी कि तामिल राजा एलारा के ऊपर चढ़ाई करने का हुक्म उसको दे दें और हुक्म न मिलने पर उसने अपने पिता को चूड़ियाँ भेंट कीं। पिता ने गुस्से में आकर गेमुनू को कैद करके लाने का हुक्म दिया परन्तु वह भाग निकला और दक्षिण में मलय पर्वत पर रहने लगा।

बहुत दिनों तक उसको यहाँ रहना पड़ा। कोटमाल की तराई में अब भी किसान उसकी वीरता-पूर्ण कृतियों की गाथा गाते हैं और उसके नाम पर तरह तरह की बातें प्रसिद्ध हैं। यहाँ तक कि उसके काम में आई हुई चीजें और अस्त्र-शस्त्र अब भी दिखलाये जाते हैं। गेमुनू की तक-लीफों का अन्त तभी हुआ जब उसके पिता की मृत्यु का सन्देश मिला। उसका छोटा भाई सद्धा तिस्सा, बड़े भाई के न रहने पर, सिंहासन का अधिकारी बन बैठा और उसने राजा के प्रसिद्ध हाथी कन्दूल को अपने अधीन कर लिया।

पहले युद्ध में दुट्ठु गेमुनू हार गया, परन्तु दूसरी बार युद्ध में सद्धा तिस्सा का हौदा पेड़ से टकराकर नीचे गिरा और उसने बौद्ध भिक्षुओं की शरण ली। भिक्षु लोग एक अर्थी सजाकर और अपने पीले कपड़े से ढाककर राजा को, दुट्ठु गेमुनू की आँखों के सामने से, ले गये। कुछ दिनों बाद एक बूढ़े ने विश्वास-घाती सद्धा तिस्सा को गेमुनू के सामने पेश किया परन्तु सद्धा पश्चात्ताप करने लगा और गेमुनू ने उसके अपराध को क्षमा किया।

सिंहासन पर बैठते ही गेमुनू सेना इकट्ठी करके दामिलों को हराने के लिए चल पड़ा। महियान गंगा के तट पर गेमुनू को पहली विजय प्राप्त हुई। कुछ लोगों ने इसका सामना भी किया परन्तु एक राजा के बन्दी हो जाने पर एलारा के सभी क़िले दुट्ठ गेमुनू के अधीन हो गये।

इसके बाद गेमुनू ने विजितपुरा पर चढ़ाई की। यहाँ गेमुनू के हाथी पर जलता हुआ अंगारा डाला गया और बहुत दिनों तक लड़ाई जारी रही परन्तु अन्त में तेजाब, हथौड़ी और रंदे के प्रयोग से किले का घोर फाटक टूट गया और विजितपुरा का तालाब खून से रँग गया। इसके बाद दामिलों की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण हुआ और दोनों राजाओं का आमना सामना हुआ। गेमुनू के होशियार हाथी कन्दूल ने एलारा के हाथी को नीचे गिरा दिया और गेमुनू ने अवसर पाकर बल्लम से एलारा के जीवन का अन्त कर दिया। इस स्थान पर गेमुनू ने एलारा का एक स्मारक बनवा दिया जहाँ किसी प्रकार का बाजा नहीं बज सकता था और सदियों तक लंका के राजा इस स्मारक के सामने अपना सिर नवाते थे।

एलारा के मरने पर भी लड़ाई खतम नहीं हुई। एलारा का भतीजा भल्लुक भारतवर्ष से लंका पहुँचा और दुट्ठ गेमुनू से युद्ध चलता रहा। अन्त में गेमुनू के एक सर्दार फुसदेव ने भल्लुक का वध किया। गेमुनू का प्रण पूरा हुआ। लंका प्रदेश दामिलों से मुक्त हुआ।

दुट्ठ गेमुनू ने अपने राज्य का उत्तम प्रबन्ध किया। भिक्षुओं के लिए विहार बनवाये, प्रजा के लिए अस्पताल बनवाये, गरीबों के लिए भोजन का प्रबन्ध किया और बहुत सुन्दर तथा विशाल बौद्ध मन्दिर बनवाये। प्रसिद्ध ताम्र प्रासाद १६०० स्तम्भों पर बना हुआ है, जहाँ पैर धोने का जलपात्र भी सोने का बना हुआ है।

इसके बाद गेमुनू ने रुवानवेली दागाबा का मन्दिर बनवाना शुरू किया। महावंश में लिखा है कि इसकी नींव डालने के लिए काशी, कश्मीर और फारस से साधु बुलवाये गये। इस मन्दिर का घेरा इतना बड़ा था कि एक साधु ने यह भविष्य वाणी की कि इसके बनने के पूर्व ही राजा की मृत्यु हो जायगी। इस मन्दिर में गौतम बुद्ध का भिक्षा पात्र और इतनी हड्डियाँ रक्खी गईं कि शायद इस तरह का कोई दूसरा स्मारक नहीं है। परन्तु इसकी बनावट समाप्त होने के पहले ही राजा बीमार हो गये। अब राजा को साधु की भविष्य-वाणी का स्मरण हो आया और उनकी बेचैनी बढ़ने लगी। परन्तु भिक्षुओं ने एक झूठा स्तम्भ और गुम्बद बनाकर राजा को सन्तोष दिलाया कि उनके जीवन में ही मन्दिर बन गया है। यह सुनकर मृत्यु के मुँह में पड़े हुए दुट्ठ गेमुनू को सन्तोष हुआ। परन्तु वे वास्तविक मंदिर को नहीं देख पाये।

माता के नाम एक पत्र

(लेखक, श्रीयुत केशवप्रसाद पाठक, एम० ए०

सो०—मोहन यह क्या ? नहीं साँझ भी होने पाई ;
तुमने पुस्तक पर फिर अपनी आँख गडाई ॥
मार दिन जो हैं लड़के पढ़ते ही रहते ।
वे पढ़कर बीमार कष्ट कितने ही सहते ॥
याद रखो यह बात बड़ों ने है सिखलाई ।
आओ उठो, चलो, कुछ घंटे खेलें भाई ॥
यह क्या आज उदास दिख रहे हो तुम कैसे ।
बाबूजी ने नहीं दिये क्या तुमको पैसे ?

मो०—आओ सोहन, अभी न मैं पढ़ने बैठा हूँ ;
और न पैसे के कारण ही मैं ऐंठा हूँ ॥
आज अचानक याद आ गई अपनी माँ की ।
लिख डाली दो-चार लकीरें भी कविता की ॥

सो०—दिखलाओ, क्या हानि दिखाने में भ्राता को ।
ओहो ! पत्र लिखा कविता ही में माता को ॥

पत्र

पूजनीय माता के चरणों में बहुतेरा,
करता है प्रणाम प्यारा यह बेटा तेरा ॥
बाबूजी, हम लोग सभी हैं कुशल यहाँ पर ।
आशा है अच्छे होंगे सब लोग वहाँ पर ॥
नानी के घर गईं अभी माँ तुम परसों से ।
पर ऐसा लगता न मिली हो तुम बरसों से ॥
बिना तुम्हारे यहाँ न कोई बात सुहाती ।
क्या जाने क्यों तेरी सुधि मुझको है आती ॥
जब कपड़े उतार भोजन करने जाता हूँ ।
और वहाँ पर नहीं तुझे बैठा पाता हूँ ॥
क्या जाने क्यों नहीं मुझे भोजन भाता है ।
खाता तो हूँ पर न स्वाद उसमें आता है ॥
एक बात भी बोल दिया करती थीं जब तुम ।
मिश्री सा कुछ घोल दिया करती थीं तब तुम ॥
यह न समझना मुझे कष्ट देता है कोई,
या, मेरी सुधि नहीं यहाँ लेता है कोई ॥
बाबूजी का प्यार बढ़ गया है माँ मुझ पर ।
नहीं बोलते मुझसे अब वह डाँट-डपटकर ॥
बड़े सवेरे दूध-जलेबी मुझे खिलाते ।
और दूर तक मुझे घुमाने भी ले जाते ॥
मजेदार नित नई कहानी मुझे सुनाते ।
और रात में मुझे साथ ही सदा सुलाते ॥
पर, माँ, मैं तो नहीं भूल पाता हूँ तुझको ।
क्या जानें क्यों तेरी सुधि आती है मुझको ॥
माँ, तू तो कहती थी मैं परसों आऊँगी ।
तेरे लिए न जाने मैं क्या क्या लाऊँगी ॥
अच्छा, माँ, मैं कहता हूँ तू कुछ मत लाना ।
पर पहली गाड़ी से अब वापस आ जाना ॥
नानी रोके अगर, उसे यह पत्र दिखाना ।
या अपने ही साथ उसे भी लेती आना ॥
तेरा स्वागत करने को मैं खड़ा रहूँगा ।
बाट जोहता वहीं द्वार पर अड़ा रहूँगा ॥
एक बार फिर याद दिलाता हूँ माँ तुझको ।
आ जाना तू अगर प्यार करती है मुझको ॥
एक बार फिर चरण चूमता हूँ मैं तेरे ।
कर देना अपराध क्षमा जो कुछ हों मेरे ॥

सो०—मोहन, तूने तो मुझको अचरज में डाला ।
इस छोटे से सिर में इतना भरा मसाला ॥
सूर और तुलसी के मैंने नाम सुने हैं ।
उनके भी ऐसे अचरज के काम सुने हैं ॥
आनेवाली बात कौन कैसे बतलावे ।
सम्भव है, तू कभी सूर तुलसी बन जावे ॥
अच्छा मोहन, मुझे क्षमा कर, अब जाऊँगा ।
कल शाला के समय तुझे लेने आऊँगा ॥

गॅंगा

लेखक, फ़ादर जीरर्ट, एस० जी०
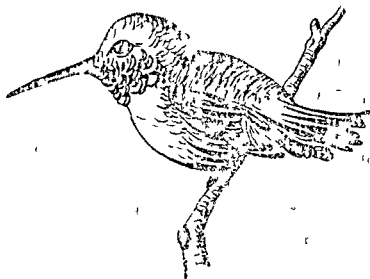
बालको, तुम लोगों में से बहुतों ने गेटीवल से मैना तो मारा होगा, परन्तु गॅंगा का नाम कभी नहीं सुना होगा। यदि तुम लोग इस छोटी सुन्दर चिड़िया को देख लो, तो गेटीवल से उसको मारने नहीं पाओगे, क्योंकि वह डाली पर नहीं बैठती और भूमि पर से भी कुछ नहीं चुगती। मालूम होता है कि वह हरदम उड़ती रहती है और आराम नहीं करती। मैं तुम्हें उसकी मनोरंजक बातें बताता हूँ।

गॅंगा के चित्र विचित्र पर सबसे अधिक चमकदार होते हैं। यह सबसे छोटी पर-वाली चिड़िया है। यही चिड़िया जो सीधे ऊपर-नीचे, दायें-बायें या उलटे उड़ती है, एक लहमे में एक जगह से दूसरी जगह चली जाती है और बड़े तड़के चौड़ी पत्ती पर, जहाँ भोर की ओस जमती है, स्नान करके, धूप में चमकती और खेलती है। जेठ बैसाख में दक्षिणी अमेरिका से मेक्सिको की खाड़ी पार कर, अढ़ाई सौ कोस पर, यह सुन्दर परी घूमा करती है। अमेरिका पहुँचकर वह बाग में चली जाती है, जिसमें भाँति-भाँति के फूल खिले रहते हैं। यहाँ वह अनोखा काम करती है। सब जानते हैं कि मक्खियाँ फूलों का रस इकट्ठा करती हैं, परन्तु इसके लिए उन्हें फूलों में घुसना होता है। गॅंगा अन्दर नहीं जाती। यह फूलों पर बिना बैठे अपनी लम्बी चोंच से मधु चूस लेती है और अपने परों को इतने जोर से फटफटाती रहती है मानो खूब उड़ रही हो। सुन्दर बाग में यों तो कई तरह के फूल होते हैं, पर गॅंगा लाल फूलों का मीठा रस अधिक पसन्द

करती है और पक्के विलायती भाँटे से धोखा खा जाती है। उसको देखने से मालूम होता है कि वह अपना समय उड़ने और रस चूसने में ही बिताती है अर्थात् कभी आराम नहीं करती, परन्तु ऐसा नहीं है।

यह चिड़िया फुर्ती से आकाश में उड़ती है पर दूसरी दूसरी चिड़ियाँ इसे डाह से देखती हैं और झपटकर इसे दबोचना चाहती है। ज्योंही कोई चिड़िया, चाहे वह इससे बड़ी ही क्यों न हो, इसको सताने आती है, त्योंही गेंगा अपनी नुकीली चोंच से उसकी आँखों को फोड़ देती है। यह कौए पर भी टूट पड़ती है और उसे जान बचाना कठिन हो जाता है। कभी कभी यह छोटी चिड़िया इतनी फुर्ती से झपट्टा मारती है कि दूसरी चिड़िया कदाचित् ही उड़ पाती है और यह उसे धर दबाती है।

गेंगा कारीगर भी है। उसके खोते की बनावट बड़ी पेचदार होती है। कारीगरी यह है कि खोते का व्यास केवल डेढ़ इञ्च होते हुए भी, वह इतना सुन्दर होता है कि पक्षियों से शौक़ रखनेवाले लोग उसे देखकर चकित-से खड़े रह जाते हैं। खोते का भीतरी भाग बहुत गुलगुला होता है और बाहरी भाग स्वाभाविक पच्चीकारी के साथ छाल की धज्जियों, रेशों और मकड़ी के जालों से गुँथा रहता है। खोता इतना सुन्दर होता है कि वह धूप में इन्द्र-धनुष-सा लगता है। इस सुन्दर खोते में यह दो सफेद अंडे देती है, जो मटर के दाने के समान होते हैं। गेंगा उन्हें दो हफ़्ते सेती है और बच्चों के निकल आने पर उन्हें खिलाती है। अंडे से निकलते समय बच्चे नंगे, लाचार और अन्धे रहते हैं और इतने छोटे होते हैं कि कीड़े की तरह दिखलाई पड़ते हैं। ये बच्चे तीन सप्ताह तक खोते में रहते हैं और दूसरी चिड़ियों के बच्चों के समान उड़ने की कोशिश नहीं करते। सब बच्चे अपने परों को बहुत ज़ोर से फटफटाते रहते हैं परन्तु उड़ते नहीं। धीरे धीरे उन्नति करते करते, किसी दिन सब एक साथ उड़ जाते और बारी बारी से काम करने लगते हैं।

यहाँ गेंगा का जीवन संक्षेप में सुनाया गया है। सावधानी से उसको देखकर आदमी बहुत चकित हो जाता है; क्योंकि यह छोटी चिड़िया, शहद की मक्खियों के समान परिश्रम करती है, धूप में उड़ती हुई चमकती है, नुकीली चोंच से, फुर्ती से अपनी रक्षा करती है और जो कुछ यह करती है बहुत होशियारी से करती है। यद्यपि हिन्दुस्तान में यह नहीं रहती, फिर भी हम लोग अब इसके बारे में कुछ कुछ जानते हैं।

शेगाँव में बालकों ने गांधी-जयन्ती कैसे मनाई ?

लेखक, श्रुत प्रभुदयाल विद्यार्थी, हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा

प्यारे बालको, आप सबको मालूम होगा कि हर साल २ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक महात्मा गांधी का जन्म दिवस हिन्दुस्तान के लोग बहुत खुशी से मनाते हैं।

गत १० अक्टूबर के दिन बापू ने ७१वें वर्ष में पदार्पण किया है। जीवित आदमियों में ऐसा शायद ही कोई आदमी मिलेगा जो बापू (गांधीजी) के नाम को न जानता हो। यहां तक कि पहाड़ी जातियां और आदिम निवासी तक बापू के नाम से परिचित हैं। क्योंकि बापू उनके भी मित्र हैं। बापू के नाम से वे बहुत प्रेम करते हैं। बापू सारे संसार को एक दृष्टि से देखते हैं। इसलिए वे सबके प्यार और पूजनीय हैं।

बापू के जन्म-दिवस के अवसर पर संसार भर से बधाइयां आती हैं और लगभग सभी जगह उत्सव मनाया जाता है। सभी छोटे बड़े श्रद्धाभाव से अपनी अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाते हैं। यह पुण्यपर्व हर साल अक्टूबर के पहले सप्ताह में आता है।

बापू को कोरी श्रद्धाञ्जलि पसन्द नहीं है। वे आशा करते हैं कि उस दिन विशेष रूप से शारीरिक श्रम करके गरीबों के साथ और भी निकट सम्पर्क जोड़ा जाय। वे अपने जन्म दिवस को कुछ भी महत्त्व नहीं देते। उन्होंने कहा है "यह तो दरिद्रनारायण का पुण्य दिन है"। उस दिन वे विशेष तौर से चर्खा, तकली कातना और हरिजनों की सेवा को सबसे ज्यादा पसन्द करते हैं। इसी लिए अपने जन्म दिवस को उन्होंने "चर्खा-जयन्ती" नाम दे रक्खा है। इस शुभ अवसर पर वर्धा (मध्यप्रान्त) जिले के उन प्राइमरी-स्कूलों के छोटे छोटे विद्यार्थियों ने गत १० अक्टूबर को गांधीजी के आश्रम में गांधी-जयन्ती मनाई जो शेगांव से १०-१२ मील के दायरे में है। लड़कों की संख्या लगभग ५०० थी। विद्यार्थी और शिक्षक सभी ने मिलकर शेगांव में दिन भर खेल-कूद का प्रदर्शन किया और तकली से सूत कातकर जयन्ती का पवित्र उत्सव
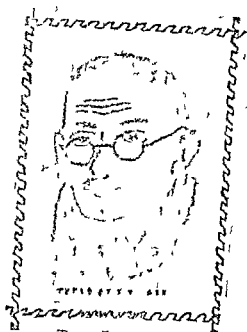
महात्मा गांधी

मनाया। सूत-यज्ञ में महात्मा गाँधी ने स्वय भी भाग लिया। उन्होंने बच्चों के बीच में बैठकर एक घण्टे तक चर्खा काता। सूत-यज्ञ समाप्त कर चुकने पर गाँधीजी ने विद्यार्थियो से कहा—"यह मेरा व्याख्यान तो बच्चों के लिए है, दूसरो के लिए नहीं। आशादेवी (प्रबन्धकर्त्री) ने तो मुझको ऐसी आशा दिलाई थी कि जो मेरी चाक (तकुआ, चर्खा की आवाज) बोलेगी, वही मेरा व्याख्यान होगा। दूसरे व्याख्यान की आवश्यकता नहीं होगी। परन्तु अभी मालूम हुआ कि उन्होने अपने पति से मशविरा नहीं किया। (हँसी) क्योंकि उनके पति ने दूसरी इच्छा प्रकट की है। वे कहते हैं कि मेरी चाक की आवाज सबके पास नहीं पहुँचती, इसलिए कुछ जबान की आवाज भी चाहिए। जिसे नई तालीम कहते हैं, यानी जो सच्ची शिक्षा है, उसके वे मत्री हैं। इसलिए उनकी बात माननी चाहिए।

"इसलिए मैं बच्चों से कहता हूँ कि हम जो मुँह से बोलते हैं उसकी क़ीमत हो या न हो, पर जो काम करते है उसकी कीमत जरूर है। मैंने अभी ५० मिनट तक काता। मुँह से तो बोलता नहीं था, मगर मैने जो सूत काता उसकी क़ीमत तुम्हें मिली। वह तुम्हारे नाम खाते में लिख दी गई। इसलिए जो तुम नई तालीम की शिक्षा लते हो उसकी कीमत हो या न हो, पर जो काम करते हो उसकी कीमत जरूर है।

"मेरे लिए आप यहाँ एकत्र हुए हैं। लेकिन जब यहाँ से लडके यह निश्चय करके चले जायँगे कि जैसे हमने यहाँ सूत काता है वैसे ही वे रोज सूत कातते रहेंगे, तो बहुत अच्छा होगा।

"यह छोटी सी बात मैंने कही। यदि वह तुमने मान ली तो बडे होने पर तुम समझोगे कि मैने जो आज कहा है वह बहुत ठीक कहा था। ईश्वर सबको दीर्घायु करे जिसमें इसका वे अनुभव कर सकें।"

शेगाँव मे इकट्ठे हुए बच्चों को बापू ने जो उपदेश और आशीर्वाद दिये है वे भारतवर्ष और दुनिया भर के बालसखाओं के लिए है। यदि आप लोग महात्मा गाँधी को प्यार करते है तो उनकी बात भी मानिए, तभी महात्माजी आप सबको प्यार करेंगे और सुन्दर आशीर्वाद देंगे। आप लोग अपनी शिक्षा में तकली-चर्खे को प्रधान स्थान देकर उसी के मार्फत इतिहास, भूगोल, गणित और सामान्य ज्ञान प्राप्त कीजिए। वही सच्ची और जीवन को सुख पहुँचानेवाली शिक्षा होगी। महात्माजी आप लोगों को इस शिक्षा से स्वतत्र तथा स्वावलम्बी नागरिक बना देना चाहते हैं। उनकी नई शिक्षा को आप लोग समझिए और मनन कीजिए।

बालको के उत्सव में राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसादजी, सरोजिनी नायडू, सरदार पटेल आदि नेता और मद्रास प्रान्त के प्रधान मत्री राजगोपालाचारी, बम्बई के खेर साहब, उड़ीसा

राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद

श्रीमती सरोजनी नायडू

के प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथदास और बिहार के श्रीकृष्णसिंह, मध्यप्रदेश के प्रधान मन्त्री शुक्लजी भी लड़कों के साथ जमीन पर बैठकर तकली कात रहे थे। उस वक्त की एक निराली छटा थी। बच्चों में भी कितनी शक्ति है—महात्मा गाँधी उनके बीच में, नेतागण और प्रधान मन्त्री उनकी पंक्तियों में एक साथ बैठकर सूत कात रहे थे। यदि महात्माजी की बात को सब लोग मान लें तो सभी शासक, मन्त्री और नेतागण एक दिन एक पंक्ति में बैठ जायँगे अर्थात् सब एक हो जायँगे और भेद-भाव मिट जायगा। ऐसी शक्ति महात्माजी की तकली और चर्खे में छिपी है।
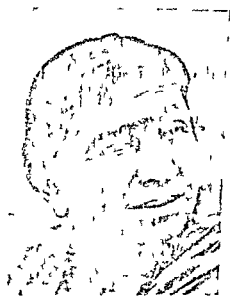
भविष्य में जब कभी किसी महापुरुष की जयन्ती और पुण्यस्मृति दिवस मनाने का मौका आये तब उस दिन सबसे अधिक श्रम कीजिए। अपनी मेहनत से लोगों को शान्ति पहुँचाइए और ऐसे शुभ अवसर पर भर-पेट गरीबों की सच्ची सेवा कीजिए।

महात्माजी आशा करते हैं कि भारत के विद्यार्थी, आदर्श भारतीय छात्र बनने की कोशिश करेंगे तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा करना ? समझ जायँगे और नई शिक्षा (तालीम) को अपने जीवन में अपना करके संसार को एक अमूल्य सम्पत्ति और आदर्श देंगे।

बाल सखाओ, आओ हम सब मिलकर महात्माजी की इच्छा पूरी करें।

बायाँ या दाहिना

लेखक, आचार्य काका कालेलकर
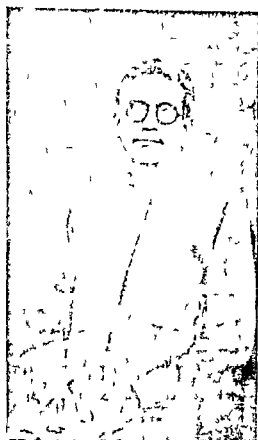
आचार्य काका कालेलकर

माता-पिता की जो सबसे छोटी सन्तान होती है वह जल्द बड़ी नहीं होती। मेरी दशा भी ऐसी ही थी। हाथ से भोजन करना भी होता है, इसका मुझे विचार तक नहीं आया था। माताजी खिलातीं, बहन खिलाती या भाभी खिलातीं। कितनी ही बार बाबा (पिताजी) चिढ़कर कहते, "इतना बड़ा घोड़े जैसा हो गया है, और अभी तक अपने हाथ से खाता नहीं है।" ऐसी बातें मुझे बुरी तो लगतीं, परन्तु इनसे मेरी आदत नहीं सुधरी।

एक दिन घर के सभी लोगों ने एक षड्यन्त्र रचा। सारा दिन कूद-फाँदकर शाम को मैं सो गया था। वहा से उठाकर लोग मुझे रसोईघर में ले गये। मेरे सामने एक थाली रक्खी गई। इतने में ही विष्णु ने चीमी को बुलाकर कहा, "चीमी, इस थाली में दाल-चावल मिलाकर तैयार कर।" चीमी मेरी भतीजी थी, और उम्र में मुझसे डेढ़ वर्ष छोटी थी। चीमी ने दाल-चावल मिलाकर तैयार किया। फिर विष्णु ने कहा 'अब दत्तू को खिला।' चीमी ने एक निवाला लेकर मेरे मुँह के सामने रक्खा। मैंने मुँह खोलकर निवाला ले लिया। सभी हँसने लगे। "भतीजी काका को खिलाती है, फिर भी इसे शर्म नहीं आती।" फिर मुझे पता चला कि मैं बेवकूफ बनाया गया हूँ। म शरमिन्दा हुआ और दूसरा निवाला लेने से मैने इन्कार कर दिया। उसी क्षण मैने अपने हाथ से भोजन करने की ठानी।

परन्तु किस हाथ से भोजन करना है, यह किसे पता था? मै विचार में पड़ा। सामने बैठे हुए लोगों की ओर मैने देखा, और उनकी नकल करते हुए बायाँ हाथ थाली में डाला। जो मै डरता था वही बात हुई। विष्णु ने दूसरी बार शिकायत की कि 'देखो, इस घोड़े को बायाँ और दाहिना

कौन सा है यह भी पता नहीं है। तभी से मैं पिताजी से पूछकर भोजन करने लगा। दो तीन बार ऐसा करके मैंने निश्चित किया कि इस बारे में अपनी बुद्धि काम नहीं दे सकती। फिर तो नित्य भोजन के पहले पिताजी से पूछ लेता और पूछता कि बायाँ हाथ कौन सा है। [illegible] हाथ जब हुआ कि मैं मुश्किल में आ जाता था। एक दिन अचानक मैंने जाना कि मेरे दाहिने कान में दो मोतियों की एक बाली है। मैंने सिद्धान्त निकाल लिया कि जिस ओर के कान में बाली है वह दाहिना है, उस ओर के हाथ से भोजन किया जाए। फिर तो प्रतिदिन भोजन करने के लिए बैठने के पहले दोनों कानों को हाथ लगाकर देखता, और जिस ओर के कान में हाथ को मोती लगते उसी ओर के हाथ से भोजन प्रारम्भ करता। कान की यह खोज किसी के ध्यान में नहीं आई। क्योंकि बहुत ही चालाकी से मैं यह काम करता था।

बचपन में मुझे बूट पहनने पड़ते थे। हमारे घर में अँगरेजी फैशन का प्रवेश नहीं हुआ था। अँगरेजी फैशन के साथ एक अहंकार होता है और गरीबों की ओर तुच्छता का भाव होता है। उसे हमारे घर में लाने-वाला कोई नहीं था। फिर भी देखा-देखी कितनी ही विदेशी वस्तुएँ आ ही गई थीं। मुझे एक रेशमी फराक और विलायती बूट पहनना पड़ता था। फराक पहनने में तो विशेष कठिनाई नहीं हुई; परन्तु बूट में बायाँ दाहिना हो जाता था। मुझे प्रतिदिन बैठकर पिताजी से पूछना पड़ता कि बायाँ कौन सा है और दाहिना कौन सा है। उन्होंने कितने ही दिन तक पैर और बूट के आकार का भेद समझाने का प्रयत्न किया। परन्तु मेरे दिमाग में यह किसी प्रकार भी नहीं उतरा।

मैं समझता था कि पिताजी में समझाने की शक्ति कम हो गई है। ऐसा भी नहीं मानता कि मेरी समझने की शक्ति ही अत्यन्त कम होगी। फिर भी मैं यह शास्त्र नहीं सीख सका। उनकी समझाने की और मेरी समझने की दिशाएँ अलग थीं। इसी से दोनों का मेल नहीं होता था।

बाद में तो मैंने दोनों बूट अभेद बुद्धि से, चाहे जैसा, पहनना प्रारम्भ किया और थोड़े ही दिन में उनका आकार मैंने ऐसा बना दिया कि फिर पिताजी भी उसे पहचान न सके कि बायाँ कौन सा है और दाहिना कौन सा।

—अनुवादक, श्रीयुत बकटलाल ओझा
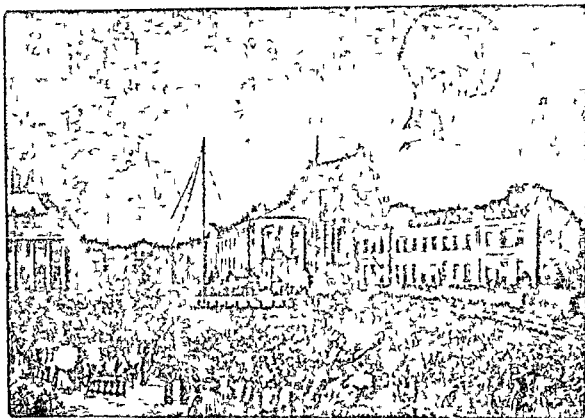
माटगोफर भाइयों का बनाया हुआ पहला गुब्बारा, जिसमें उन्होंने आजमाइश के लिए एक भेड़, मुर्ग़ी और बतख़ रक्खी थी। इस दृश्य को देखने के लिए हजारों की तादाद में लोग गये थे जिनमें फ्रांस के राजा चौदहवें लुई भी थे। गुब्बारा उड़ाने की आजमाइश सब से पहले फ्रांस में ही हुई थी।

गुब्बारे और पैराच्यूट

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी

लड़ाई के इन दिनों में गुब्बारे और पैराच्यूट का नाम अधिक लिया जा रहा है, क्योंकि हवाई लड़ाई में इनसे बहुत मदद मिल रही है। गुब्बारे का आविष्कार पैराच्यूट के आविष्कार से पहले हुआ। गुब्बारा बनाने का विचार सबसे पहले दो फ्रांसीसी युवकों के दिमाग में आया। ये दोनों युवक भाई भाई थे। इनके पिता कागज बनाने का काम करते थे। ये दोनों भाई एक रोज धूप में बैठकर आसमान की ओर देख रहे थे। उस समय चिमनियों से निकला हुआ धुँआ हवा में होकर ऊपर उठ रहा था। इस दृश्य को देखकर दोनों भाइयों के दिमाग़ में यह बात आई कि अगर किसी चीज में धुँआ भर दिया जाय तो वह चीज भी हवा में ऊपर उठ सकती है। इस बात की आजमाइश के लिए वे कागज के कारखाने की ओर बढ़े। वहाँ आकर उन्होंने कागज का एक बहुत बड़ा थैला बनाया और उसमें धुँआ भर दिया। जब थैला धुएँ से भर गया तो उन्होंने उसे छोड़ दिया। उन्होंने
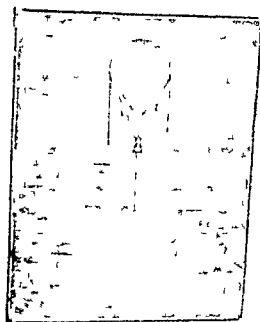
गुब्बारे का एक दृश्य
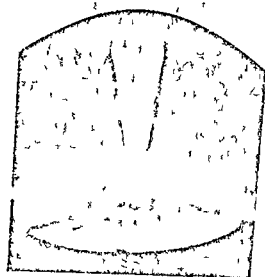
गुब्बारे का एक दूसरा दृश्य

देखा कि थैला हवा में धीरे धीरे ऊपर की ओर बढ़ रहा है और ऊपर छत आ जाने से रुक गया है। यह सन् १७८२ की घटना थी।

इस घटना ने उपरोक्त फ्रांसीसी युवकों को बहुत प्रभावित किया और उन्होंने जनता को दिखलाने के लिए कागज और छाल्टी का एक बहुत बड़ा गुब्बारा बनाया। ५ जून, सन् १७८३ को इस गुब्बारे को फ्रांसीसी नवयुवकों ने लोगों के सामने उड़ाया। लोग यह देखकर ताज्जुब करने लगे कि यह गुब्बारा ११० फीट ऊँचा उड़ा। गुब्बारा देखनेवालों में एक विज्ञान के प्रोफेसर भी थे। उन्होंने अपनी बुद्धि के अनुसार गुब्बारे में कई सुधार किये और एक बहुत बड़ा रबर का गुब्बारा बनाकर उसे पेरिस में उड़ाया। पेरिसवालों ने कभी भी गुब्बारा नहीं देखा था। इसी से उसे देखने के लिए लाखों आदमी इकट्ठे हुए। ठीक वक्त पर गुब्बारा छोड़ा गया और वह उड़ता हुआ आकाश में ओझल हो गया। दर्शकों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। जब तक गुब्बारे में धुँआ अधिक था, वह हवा में उड़ता रहा। परन्तु धुँआ कम होते ही वह नीचे आने लगा और एक गाँव में आकर गिर पड़ा। गाँववालों ने कभी गुब्बारा नहीं देखा था। इससे उन्होंने उसे राक्षस समझा और उसे मारने के लिए निकल पड़े। सब लोग हथियार से लैस थे। एक आदमी ने हिम्मत करके गोली दाग दी। गोली लगते ही रबर फट गया और गुब्बारे का धुँआ निकल गया। लोगों ने समझा कि गोली लगने से राक्षस मर गया है और उसकी मृत्यु तथा अपनी जीत पर उन लोगों ने काफी खुशी [illegible]। उन लोगों ने मिलकर रबर के ट[illegible] कर दिये और उसको

गुब्बार के आविष्कारक माटगोफर भाई इस बात की कोशिश में थे कि कोई ऐसी तदबीर मालूम हो जाय जिससे ,गुब्बारे में उडते समय उसके फटने पर जान बच सके। परन्तु वे इस प्रकार का कोई आविष्कार नहीं कर सके। सन् १७८५ में ब्लैंचर्ड नामक एक उडाके ने, जिसने उड़कर सबसे पहल इँगलिश चैनल को पार किया था, पैराच्यूट का आविष्कार किया। उसने अपने बचाव के लिए छतरीनुमा एक यत्र बना लिया था जिसे पकड़कर वह उतर के समय जमीन पर धीरे से उतर सके। पैराच्यूट की आजमाइश के लिए पहले उसके नीचे एक छोटी टोकरी बाँध दी गई थी और उसमें कुछ पालतू चिड़ियाँ रख दी गई थीं। गुब्बारे से छोडे जाने पर पैराच्यूट धीरे धीरे जमीन पर उतरा और उसमें रक्खी गई चिड़ियाँ जीवित रहीं। अब लोगों का विश्वास हो गया कि पैराच्यूट द्वारा लोग उड़ते समय अपनी जान बचा सकते हैं। पैराच्यूट की आजमाइश में रावर्ट काकिंग को अपनी जान खोनी पडी; क्योंकि उसने गलत तरीके पर पैराच्यूट तैयार किया था।

रावर्ट काकिंग का पेराच्यूट। यह पैराच्यूट गलत तरीके पर बनाया गया था। इसी से रावर्ट को अपनी जान खोना पडी।

रावर्ट काकिंग क बाद वैज्ञानिकों ने पैराच्यूट में काफी सुधार किये। इरविन नामक एक अमेरिकन ने एक इस प्रकार का पैराच्यूट तैयार किया कि सारा संसार चकित हो गया। इरविन लड़कपन से ही उड़ने और तैरने में दिलचस्पी लिया करता था। वह सोचा करता था कि जिस प्रकार आदमी ऊँचाई से पानी में कूदकर उसमें गोता लगा सकता है उसी प्रकार हवा में भी ऊँचाई से कूदा जा सकता है। इसके लिए उसने एक पैराच्यूट तैयार किया और हजारों आदमियों को यह तमाशा देखने के लिए बुलाया। वह हवाई जहाज में बैठकर १,५०० फीट उड़ा और बगैर पैराच्यूट खोले हुए हवाई जहाज से नीचे कूद पड़ा। लगभग सभी दर्शकों ने यह समझा कि इरविन मर जायगा। बहुतों ने तो अपना मुँह फेर लिया। कुछ लोगों ने यह भी समझा कि उसका पैराच्यूट खराब

होने से काम नहीं कर रहा है। परंतु अंत में लोगों ने पैराशूट को खुलते और इरविन को उसमें लटकते हुए पाया। सभी लोग उसके साहस और उसके पैराशूट की प्रशंसा करने लगे।

आज पैराशूट हवा में उड़नेवालों की बड़ी जरूरी चीज हो गई है। हवाई लड़ाई में इसका इतना अधिक प्रयोग होता है कि लगभग सभी जंगी हवाई जहाज इसे अपने पास रखते हैं। इसकी सहायता से कूदने-वाले आदमी के गोली द्वारा मारे जाने का बहुत कम खतरा रहता है।

मकड़ी
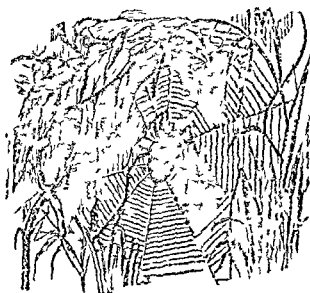
लेखक, श्रीयुत शोभाराम गुप्त

धारण करके धैर्य हमेशा,
मकड़ी तनती है जाला।
चाहे मेह बरसता हरदम,
चाहे पड़ती हो ज्वाला॥

चाहे तुम भी मिटा न दो क्यों,
बना-बनाया उसका घर।
तो भी हिम्मत नहीं हारती,
रहती सदा अटल पथ पर॥

भाग वहाँ से अन्य जगह में,
भवन बनाती है तत्पर।
कोशिश कर तुमको बतलाती,
रचो उससे अच्छा घर॥

बनो साहसी तुम भी प्यारे,
हारो हिम्मत नहीं कभी।
बिगड़े हुए काम को भाई,
धीरज धर तुम करो सभी॥

गन्दगी का परिणाम

लेखक, श्रीयुत भुवनेश्वरप्रसाद शर्मा

सुरेश रोज स्कूल जाता था और जी लगाकर पढ़ता भी था। वह फेल कभी नहीं हुआ। उसके अन्दर इतनी अच्छाइयाँ थीं। परन्तु गन्दा रहना और बड़ों का कहना न मानना, इन्हीं दो अवगुणों ने उसे बदनाम कर रक्खा था। लोग इन अवगुणों के कारण उससे घृणा करते थे।

एक दिन उसने स्कूल में देखा कि कुछ लड़के कबड्डी खेल रहे हैं। उसका भी जी चाहा कि खेले। वह उस दिन और दिनों की अपेक्षा बहुत गन्दे कपड़े पहने था और उसकी आँखों में तमाम कीचड़ भरा हुआ था। वह बहुत उत्सुक होकर साथियों के पास आकर बड़े स्नेह से बोला—"भाई, हमको भी खेलाओगे?" उन लोगों ने जब इसको अपनी तरफ आते देखा तो वे अपना काम बन्द करके एक किनारे खड़े हो गये और बोले—यहाँ मत आओ। हम लोगों ने तुमको मना किया था कि तुम हम लोगों के पास मत आया करो। हम लोग तुमको नहीं खेलायेंगे।

सुरेश—क्यों नहीं खेलाओगे?

सब लड़के—तुम्हारी नाक बह रही है। तुम्हारे कपड़े गंदे हैं। तुम नहाते नहीं और तुम्हें खुजली हुई है। हमको भी हो जायगी।

सुरेश—जब हम साफ रहेंगे तब तो हमें खेलाओगे?

सब लड़के—तब हम जरूर खेलायेंगे।

सुरेश इस बात को सुनकर रोता रोता घर आया। माँ ने देखते ही पूछा—क्यों रोते हो बेटा?

सुरेश—हमको लड़कों ने नहीं खेलाया।

माँ—क्यों नहीं खेलाया?

सुरेश—हम गंदे थे, इसलिए नहीं खेलाया।

माँ—मैं तो कहती हूँ कि तुम साफ रहा करो। बेटा! सफाई से तन्दुरुस्ती अच्छी रहती है, बुद्धि भी अच्छी तरह काम करती है साथ ही लोग घृणा भी नहीं करते।

इस बात को सुनकर सुरेश साबुन से खूब नहाया, साफ कपड़े पहने और फिर स्कूल गया। उसे देखते ही उसके साथी चकित हो गये। उन्होंने उसकी प्रशंसा की और उसे गले से लगाया। उस दिन से सुरेश हमेशा साफ रहने लगा।

इससे मालूम होता है कि सफ़ाई जितनी अच्छी चीज है, गन्दगी उतनी ही बुरी है। हम लोगों को चाहिए कि अच्छी आदतों से प्रेम करें और बुरी आदतों से घृणा।

———
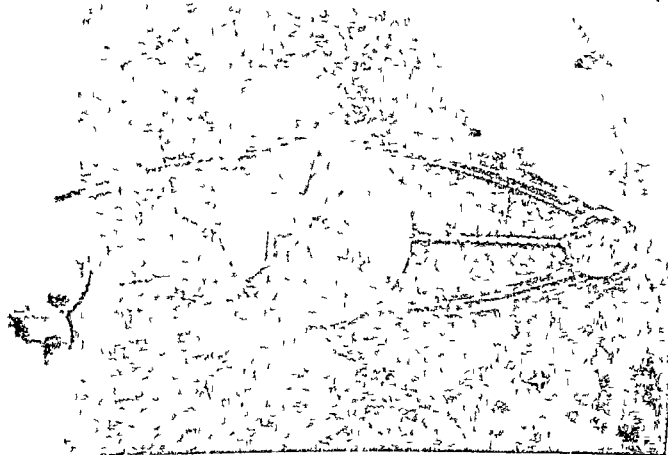
पृथ्वी सूर्य के आकर्षण से रुकी हुई है। आकर्षण हट जाने पर यह दूर चला जायगा।

पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों के जन्म की कहानी

लेखक श्रीयुत सुरेशशरण अग्रवाल, बी० एस् सी०

जहाँ हम कोई चीज देखते हैं, तुरन्त पूछ ते हैं कि यह चीज बनी कैसे। जब लोगों का ज्ञान बढ़ता गया तो वे बड़ी बड़ी चीजों की बनावट के सम्बन्ध में प्रश्न करने लगे। धीरे धीरे यह प्रश्न उठा कि पृथ्वी कैसे बनी?

कुछ लोगों का कहना है कि पृथ्वी गऊ पर खड़ी है। अब यह प्रश्न होता है कि गऊ किस पर खड़ी है। लोग इसका उत्तर देते हैं—कछुए पर। फिर पूछा जा सकता है कि कछुआ किस पर खड़ा है। इस प्रकार यह प्रश्न लगातार बढ़ता ही रहेगा। इससे यह बात साफ प्रकट है कि हमारे प्रश्न के ऐसे उत्तरों से न तो सही बात मालूम होगी और न हमें कुछ सन्तोष ही मिलेगा। पृथ्वी एक ग्रह है और सूर्य का ग्रह है। सूर्य के ९ ग्रह हैं, जिनमें से एक का पता सन् १९३० में लगा है। योरप में पृथ्वी के जन्म की कहानी कहनेवाला पहला आदमी लाप्लास था। यह फ्रांस देश का निवासी था। उसने बताया कि बहुत काल पहले
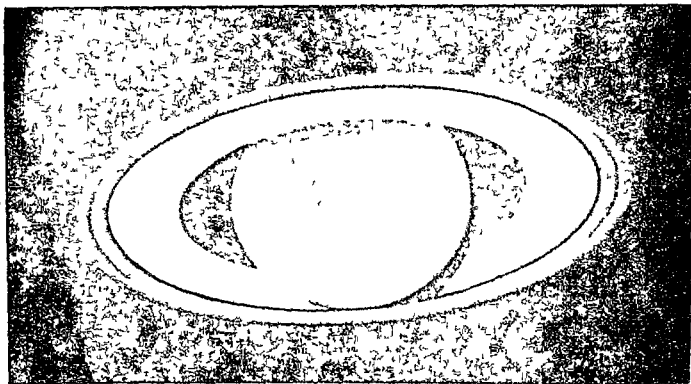
शनि और उसकी अँगूठी। दूरबीन से देखने पर यह ग्रह बहुत सुन्दर दिखलाई देता है।

सूर्य था। उस समय उसके कोई ग्रह भी नहीं था। उस समय सूर्य अन्य तारों के समान घूमता था। धीरे धीरे वह ठंडा हुआ। यह हम जानते हैं कि ठंड से चीजें सिकुड़ जाती हैं। इसलिए सूर्य भी सिकुडा। सिकुडने से उसके घूमने की गति बढ़ी और बढ़ते बढ़ते वह इतनी हुई कि उसका कुछ भाग उससे छूटकर निकल भागा। परन्तु यह भाग या टुकडा ऐसा नहीं था कि सूर्य के क्षेत्र से बिलकुल अलग हो जाता। वह टुकड़ा स्वयं सूर्य के चारों ओर घूमता रहा। बाद में ठंडा होकर वह एक ग्रह बन गया। यही पहला ग्रह हुआ। इसी प्रकार सूर्य से हमारी पृथ्वी तथा अन्य ग्रह भी बने।

तुममें से कुछ ने एक ग्रह शनि को में देखा होगा। यहाँ उसका चित्र दिया जा रहा है। उसके चारों ओर उसकी अँगूठी दिखलाई पड़ती है। यह अँगूठी क्या है? लाप्लास महाशय का कहना है कि जिस प्रकार सूर्य से पृथ्वी आदि ग्रह बने, ठीक उसी प्रकार इन ग्रहों से उपग्रह बने, जैसे पृथ्वी से चाँद बना है। लाप्लास ने यह भी बताया है कि शनि की अँगूठी उसमें से निकला हुआ भाग है जो भविष्य में ठंडा होकर शनि का उपग्रह बन जायगा।

इस बात को एक दूसरे फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने दूसरी तरह समझाया है। उसका नाम रोश था। उसका कहना है कि चन्द्रमा के कारण ज्वार-भाटे आते हैं; क्योंकि चन्द्रमा पृथ्वी को अपने विस्तार के अनुसार खींचता है। इस खींचने का प्रभाव जल पर, स्थल की अपेक्षा, अधिक पड़ेगा क्योंकि जल

हलका होता है और स्थल कड़ा होता है। पृथ्वी भी चन्द्रमा को खींचती है। परन्तु पृथ्वी तो चन्द्रमा से बहुत बड़ी है। अतएव वह चन्द्रमा को अधिक बल से खींच लेती है।

यह मत समझना कि चन्द्रमा कल-परसों या एक साल या पाँच साल में पृथ्वी के निकट आ जायगा। इस क्रिया में तो लाखों वर्ष लगेंगे। रोश ने कहा कि जैसे जैसे चन्द्रमा पृथ्वी की ओर आवेगा, उसको पृथ्वी अधिकाधिक बल से खींचेगी और पृथ्वी के कारण चन्द्रमा पर ज्वार भाटे बड़े और भयानक होते जायँगे। परन्तु पास आते आते चन्द्रमा की अवस्था बदलती जायगी और वह फिर पृथ्वी की चोट न सह सकेगा। तब चन्द्रमा छिन्न भिन्न हो जायगा और फिर उसके चारों ओर शनि की अँगूठी की तरह अँगूठी बन जायगी।

अब पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों के जन्म की कथा भी समझनी चाहिए। पहले अकेला सूर्य था। उस समय उसका आकार आज के आकार से कहीं बड़ा था। सूर्य किसी दूसरे बहुत बड़े सितारे के पास से होकर निकला। जैसे जैसे सूर्य निकट आता जाता था, उस पर उस सितारे के ज्वार-भाटे बढ़ते जाते। और एक समय आया कि ज्वार-भाटे इतने बढ़ गये कि सूर्य से कई टुकड़े छूट पड़े। ये अब उस बड़े सितारे की ओर लपके। उसने तो अपना रास्ता नापा और ये लटकते हुए रह गये और सूर्य के चारों ओर घूमते रहे। यही टुकड़े ठंडे होकर ग्रह बने।

शीतकाल

लेखक, श्रीयुत हरिदयाल चतुर्वेदी (अवस्था ९ वर्ष)

देखो शीतकाल अब आया,
हम सबको यह जी से भाया।
सदा सभी को सुख यह देता,
गर्मी का सब दुख हर लेता।
छोटे छोटे दिन अब होते,
सूर्य चढ़े तक बच्चे सोते।
पर यो बहुत देर तक सोना,
नहीं छोड़ना जल्द बिछौना।
कभी न अच्छा है कहलाना,
और आलसी हमें बनाता।
वे बालक हैं चतुर कहाते,
जो न कभी यों नींद लगाते।
पाँच बजे ही वे जग जाते,
कर दतौन फिर दौड़ लगाते।
माँ से दूध माँग पी जाते,
सबक याद कर चतुर कहाते।

दूसरे दिन नियत समय पर वे दोनों चोर, राजा और वज़ीर के सामने, हाज़िर हो गये।

दाना दुश्मन नादान दोस्त

लेखक, श्रीयुत देवीप्रसाद गुप्त "कुसुमाकर" बी० ए०, एल-एल० बी०

बच्चो! इस कहावत को तुमने कभी न कभी अवश्य सुना होगा। इस कहावत का अर्थ है कि नादान (मूर्ख) दोस्त से दाना (बुद्धिमान्) दुश्मन अच्छा होता है।

किसी राज्य में एक बहुत बड़ा राजा था। एक दिन उसके दरबार में कहीं से एक सौदागर आया जिसके पास तरह तरह के जानवर—हाथी, घोड़े आदि सभी—थे। राजा ने उस सौदागर से कई जानवर ख़रीदे। सौदागर के पास एक बन्दर भी था जिसको वह बहुत प्यार के साथ रखता था और वह शरीर-रक्षक का काम बड़े प्रेम से करता था। सौदागर जिस समय रात को सोता था तो यह बन्दर हाथ में तलवार लेकर पहरा देता और किसी को भी सौदागर के पास तक, सोती हुई हालत में, न पहुँचने देता था। बन्दर की स्वामि-भक्ति पर सौदागर मुग्ध था। राजा ने जब सौदागर के ज़बानी बन्दर के गुण सुने तब वह बन्दर को पाने के लिए उतावला हो उठा। सौदागर देने से इनकार करता और राजा उसको पाने के लिए हठ करता था। राजा ने कहा—तुम जो चाहो वह मूल्य ले लो परन्तु बन्दर को मुझे अवश्य दे दो। अन्त में बहुत कुछ कहने-सुनने पर

बहुत सा रुपया लेकर बन्दर देने पर सौदागर राजी हुआ। राजा ने बन्दर ले लिया।

राजा बन्दर की स्वामिभक्ति पर बहुत खुश था। क्योंकि बन्दर को रखने के पहले, उसके शरीर रक्षक मनुष्य पहरेदार को, कई बार पहरा चुकने पर भी, राजा कभी बैठा हुआ और कभी सोता हुआ पाता था।

बन्दर बराबर अपनी स्वामिभक्ति का परिचय देता रहा। एक बार सौदागर आया और राजा ने बन्दर की प्रशंसा करके उसको और भी इनाम दिया।

इसके कुछ दिन बाद एक रात को चोरी करने के लिए दो चोर राजा के महल में घुसे। फिरते हुए वे राजा के शयनागार के पास छिपकर आये और यह देखने लगे कि राजा के शयनागार में कीमती चीजें चुराने लायक कौन कौन सी हैं। उन्होंने देखा कि राजा के मस्तक से १०-१२ हाथ फासले पर, दीवाल के पास, एक रत्नजटित कीमती चिराग जल रहा है और चिराग तथा राजा के पलँग के बीच में कपड़े टाँगने के लिए जो चाँदी की जंजीर लगी हुई है उससे एक साँप लटक रहा है। साँप के हिलने से उसकी छाया भी, जो राजा के मस्तक पर पड़ रही थी, हिल रही है और बन्दर तलवार लिये हुए कभी इस तरफ और कभी उस तरफ आता है और तलवार मारने के इरादे में है। चोरों के पास भी तलवारें थीं। ज्योंही चोरों ने बन्दर का इरादा समझा, वे एकदम लपके और बन्दर के सिर को तलवार के एक वार में ही जुदा कर दिया। फिर उन्होंने उस साँप को तलवार से काटकर टुकड़े टुकड़े कर दिया और बन्दर की ढाल उन टुकड़ों पर औंधा दी। इसके बाद उन्होंने जल्दी में चिराग बुझाकर उस बहुमूल्य चिराग को ले लिया और चलते बने।

सबेरे राजा उठा तो देखा कि बन्दर मरा पड़ा है, चिराग गायब है और ढाल के नीचे एक साँप के टुकड़े ढके हुए हैं। चिराग का अफसोस राजा को न हुआ। वह शायद सोने का था और उसमें कुछ रत्न जड़े हुए थे परन्तु बन्दर को मरा हुआ देखकर उसको बहुत ही रंज हुआ। साँप की बात उसकी समझ में न आई। जब राजा दरबार में आया तो उसने सब किस्सा लोगों को सुनाया। सब अपनी अपनी बुद्धि दौड़ाने लगे। जाँच करने से मालूम हुआ कि कोई आदमी सेंध लगाकर महल के अन्दर दाखिल हुआ था। जब राजा को यह बात मालूम हुई तो बहुत कड़ा हुक्म वजीर को दिया गया कि वह आठ दिन के भीतर उस आदमी का पता लगावे, जिसने उस अमूल्य प्यारे बन्दर को मारा है वरना वजीर को प्राण दण्ड दिया जायगा। यह हुक्म बिजली की तरह राज्य भर में फैल गया।

वजीर से राजा रोज बड़ी उत्सुकता से पूछता और वजीर ने बड़ी कोशिशें कीं लेकिन पता न लगा। सात दिन निकल गये। चोरों

गणित-चमत्कार

लेखक, श्रीयुत वंशीधर मिश्र, एम० एल० ए०

अंक ९ हैं—१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९। नीचे सब अंक इस प्रकार लिखे गये हैं कि उनका योगफल १०० होता है।

```
   २
  १५
  ३६
  ४७
 ───
 १००
```

इस प्रकार इन अंकों की दूसरी तरतीब तुम दे सकते हो तो दो।

किसी संख्या को ९ से गुणा करने की सरल रीति यह है कि उस संख्या पर एक शून्य रख दो और उसी गुण्य संख्या को उसमें से घटा दो।

```
 २३४५६        २३४५६०
     ९         २३४५६
───────       ───────
२१११०४        २१११०४
```

किन्हीं तीन अंकों की कोई एक संख्या लो। उस संख्या के इकाई के स्थान के अंक को सैकड़े के स्थान पर रक्खो और सैकड़े के स्थान का अंक इकाई के स्थान पर रक्खो। इस प्रकार नई बनी हुई संख्या और ली हुई संख्या का अन्तर निकालो। शेष फल के अंकों का योगफल सदैव १८ होगा जो ९ का एक अपवर्त्य है।

४६७ संख्या ली गई। नई संख्या ७६४ हुई। दोनों का अन्तर ७६४—४६७ =२९७ आया। २+९+७=१८

यह भी ध्यान देने की बात है कि शेष-फल में दहाई के स्थान का अंक भी सदैव ९ आवेगा।

अपने किसी मित्र से ऊपर की क्रिया करने को कहो और फिर उससे इकाई या सैकड़ा के स्थान का अंक बताने को कहो। तो फिर तुम दूसरे स्थान का अंक बता दोगे।

इकाई और सैकड़ा के स्थानों के अंकों का योग ९ होता है। अतः ९ में से बताये हुए अंक को घटाने से दूसरा अंक मालूम हो जायगा।

मान लो, तुम्हारे मित्र ने ४६७ की संख्या ली थी और ऊपर की क्रिया करके शेषफल का २ का अंक बताया, तो तुम ९ में से २ घटाकर ७ को दूसरा अंक बता सकते हो।

सुन्दर लड़का

लेखक, श्रीयुत केदारनाथ जैतवाला

देखो! प्यारे सुन्दर लड़का, कैसा सुन्दर मुँह है इसका।
इस के कुल कपड़े हैं सुन्दर, मच्छर भगते इससे डरकर।
सुन्दर इसकी सभी देह है, धोती चाँदी सी सफ़ेद है।
स्याही से यह बचकर रहता, धब्बे नहीं है लगने देता।
इसकी सभी किताबें सुन्दर, रक्खी रहतीं झोले अन्दर।
सुन्दर हैं सब इसके अंग, सभी देख रहते हैं दंग।
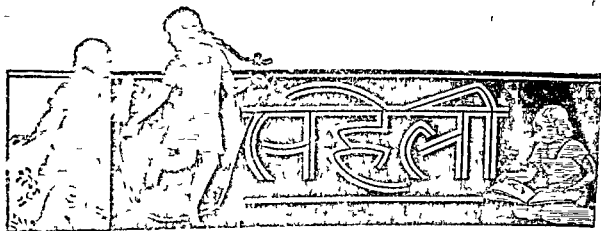
चम्पा की साड़ियाँ

चम्पा एक लड़की है उसकी सभी साड़ियाँ साफ रहती हैं। वह उन्हें सँभाल कर पहनती है। इसी से उसकी पुरानी साड़ियाँ भी नई दिखलाई पड़ती हैं। उसके और भी कपड़े साफ रहते हैं। कपड़े साफ होने से चम्पा के माँ-बाप उसको प्यार करते हैं। जो लड़कियाँ चम्पा की तरह अपने कपड़ों को साफ रखना चाहें उन्हें कपड़ों को सँभालकर रखना चाहिए और नीचे लिखी हुई बातों की ओर ध्यान देना चाहिए।

उन कपड़ों को भीतर रख देना चाहिए जो रोज नहीं पहने जाते, क्योंकि जो कपड़े बाहर पड़े रहते हैं वे गंदे हो जाते हैं। तुम लोगों के पास ऐसे भी बहुत से कपड़े होंगे जिन्हें तुम बहुत कम पहनती होगी। ऐसे कपड़े हमेशा सन्दूक की तह में पड़े रहते हैं। उन्हें महीने दो महीने में एक बार जरूर बाहर निकालकर धूप में या हवा में फैला देना चाहिए और बाद में उन्हें झाड़कर फिर सन्दूक में रख देना चाहिए। ऐसा करने से कपड़े साफ रहते हैं।

बरसात में कपड़ों को जरूर धूप में फैला देना चाहिए। क्योंकि बरसात में सील फैल जाती है और कपड़े खराब हो जाते हैं। कपड़ों के साथ साथ सन्दूक भी धूप में सुखा लेना चाहिए। क्योंकि सन्दूक के भीतर भी बरसात में सील पहुँच जाती है जिससे कपड़े खराब हो जाते हैं। बरसात में कुछ ऐसे कीड़े पैदा हो जाते हैं जो रेशमी और ऊनी कपड़ों को चाट डालते हैं। इससे कीमती कपड़े खराब हो जाते हैं। बरसात में रेशमी और ऊनी कपड़ों को धूप में फैला देने से कीड़े मर जाते हैं और कपड़ों की बदबू भी दूर हो जाती है। कपड़े को कीड़ों से बचाने के लिए नेप्थलीन की गोलियाँ, मगरैल या नीम की पत्तियाँ रख देनी चाहिएँ।

अगर कपड़े सफेद हों तो उन्हें धूप में फैलाने में कुछ हर्ज नहीं। लेकिन रंगीन

चम्पा के कपडे इसी लिए साफ रहते हैं कि वह उन्हें कभी कभी धूप में सुखा लेती है और सँभाल कर रखती है।

और कीमती कपडों को धूप में देर तक न सुखाना चाहिए। क्योंकि ऐसे कपड़ों को देर तक धूप में फैलाने से उनका रंग उडने लगता है।

गर्मी में बहुत ज्यादा पसीना होता है। इससे गर्मी में कपड़े बहुत जल्द गंदे हो जाते हैं। गंदे कपडों को साफ करने के लिए धोबी को दे देना चाहिए। गंदे कपड़े पहनने से तरह तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं। साफ कपडे पहनने से जी खुश रहता है और दूसरे लोग भी इज्जत करते हैं।

मेरी गैया

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभाल मोदी

देखो भैया, मेरी गैया मुझको दूध पिलाती है।
हरी घास खा, शीतल जल पी मन चाहा सुख पाती है॥
दिन भर चरागाह में चरती, संध्या को घर आती है।
अपने बछड़े से मिलने को, वह अति ही अकुलाती है॥
अपना दूध पिलाकर हमको वह बलवान बनायेगी।
मर जाने पर निज तन-द्वारा हमें लाभ पहुँचायेगी॥
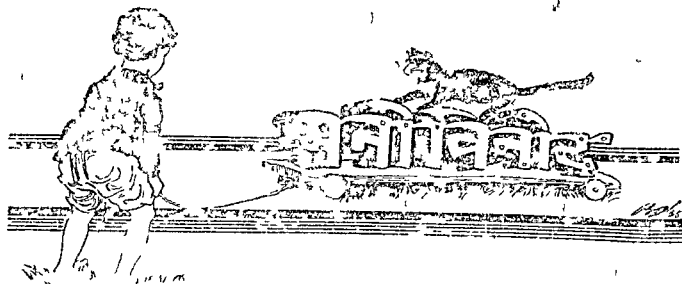
हँसो हँसाओ

लेखक, श्रीयुत कृष्णमनोहरसिंह साहल

(१)

एक देहाती अपने लड़के को पढ़ा लिखा-कर बाबू बनाना चाहता था। इसलिए उसने उसको अँगरेजी स्कूल में भर्ती कर दिया। कुछ समय बाद लड़के को कुछ कम दिखाई पड़ने लगा। देहाती बेचारा बहुत घबराया और लड़के को लेकर डाक्टर के पास पहुँचा। डाक्टर ने चश्मा लगाने को बताया। देहाती असन्तुष्ट होकर चला गया। थोड़े दिन बाद उसने डाक्टर से जाकर कहा—डाक्टर साहेब, लड़का जिद्दी है। दिन में तो चश्मा लगाता नहीं। पर जब वह रात को सो जाता है तो मैं उसे चुपके से चश्मा पहना देता हूँ।

(२)

एक होटल के मैनेजर ने नया रसोइया रक्खा। उसने बहुत खराब खाना पकाया।

मैनेजर ने कहा—"तुम तो कहते थे कि मैंने बड़े बड़े अफसरों के यहाँ काम किया है।"

रसोइये ने कहा—हाँ साहब, मैं फौज के कप्तान साहब के यहाँ काम करता था। उन्होंने दो बार घायल भी किया था।

मैनेजर—तुम बड़े भाग्यवान हो। मुझको आश्चर्य है कि उन्होंने तुमको मार ही क्यों न डाला?

(३)

मजिस्टेट—तुम्हारे ऊपर झूठ बोलने का मुकदमा चलाया जायगा।

गवाह—क्यों हुजूर?

मजिस्ट्रेट—तुमने कहा था कि तुम्हारे केवल एक भाई है लेकिन अभी तुम्हारी बहन की गवाही हुई। वह कहती है कि उसके दो भाई हैं।

(४)

शिक्षक—"ओ" के बाद क्या आता है?

लड़का—"आह"।

मजेदार चुटकुले

मास्टर साहब ने समझाया कि मनुष्य का शरीर मिट्टी से बनाया गया है। एक लड़के ने घर आकर माँ से पूछा—अम्मा, क्या हमारा शरीर मिट्टी से बना हुआ है ?

माँ—हाँ बेटा ! भगवान् ने हम सबको मिट्टी से ही बनाया है।

लड़का—तो माँ, जब हम पानी पीते हैं तो कीचड़ क्यों नहीं हो जाते ?

—गोविन्दप्रसाद गुप्त

मास्टर साहब ने लड़के से पूछा—"नल की स्त्री का क्या नाम था ?" लड़के ने समझा कि मास्टर साहब नल का स्त्रीलिंग पूछ रहे हैं। उसने उत्तर दिया—"नली।" सब लड़के हँसने लगे।

पुत्र (रोते रोते)—"बाबूजी, आज तो गुरुजी ने मुझे बड़े जोर से मुक्का मारा।"

पिता—"बड़े जोर से मारा ?"

पुत्र—"हाँ बाबूजी, घुमाकर उलटा मुक्का मारा, बड़े जोर से।"

पिता—"तो तूने भी बड़े जोर की बदमाशी की होगी।"

पुत्र—"नहीं बाबूजी, मैंने तो एक लड़के के कहने से धीरे से ही उनकी चोटी खींची थी। मैंने तो जोर से बदमाशी नहीं की।"

—चन्द्रभाल मोदी

बत्तोसी की बानगी

(१)

श्याम—मेरे पिताजी ऐसे बोलते हैं जैसे तुरही।

राम—मेरे पिताजी भी तो ऐसा बोलते हैं कि सब आफिस छोड़कर भाग जाते हैं।

(२)

सेठजी—यह लो एक पैसा, मगर यह तो बताओ तुम इतने गरीब क्यों हो गये।

भिखारी—सरकार, आप ही की तरह मैं भी योंही पैसे बाँटा करता था।

(३)

मजिस्ट्रेट—इसे यहाँ क्यों लाया ?

कांस्टेबिल—हुजूर, यह बाजार में शोर मचा रहा था। मैंने सोचा, यह भले आदमियों में रहने लायक नहीं। इसलिए इसे हुजूर के पास ले आया हूँ।

(४)

भिखारी—सरकार, एक कप (प्याला) चाय के लिए कुछ दे दीजिए।

सेठजी—अरे, क्या मैं जेब में शक्कर के डले लिये फिरता हूँ ?

—कुमारी रत्न वर्मा "तितली"

नई पहेलियां

पानी का यह है पिता, मन दिन गाल पुजाये।
आँखों बिन आसू गिरे, हवा लगत भग जाय ॥१॥

(बादल)

काला हूँ पर कौआ नहीं,
बेढब हूँ पर हाथी नहीं।
करे नाक से अपना काम,
बतलाओ तुम उसका नाम ॥२॥

(कलम)

—शिवमूर्तिलाल

कटे पैर तो मैं हूँ दवा।
कटे सिर तो हूँ मैं हवा ॥
कटे धड़ तो हो जाऊँ दत* ।
तुम बतलाओ मेरा मत ॥१॥

(दवात)

बारह अँगुलियों का हूँ गुच्छा।
खाने में लगता हूँ अच्छा ॥२॥

(केला)

—गोविन्दराव सर्वटे

मुँह में अपने आग जलाकर,
दुम से पीती पानी।
जब सब पानी सूख गया,
तब मुँह की आग बुझानी ॥

(चिराग की बत्ती)

—वरुणजी वर्मा

देखी मैंने सुन्दर बाला।
लाल बदन पर मुख है काला ॥

(घुँघुची)

—ब्रजेशबहादुर भाटिया

नई बुझौवल

तीन अक्षरवाले एक चतुर जानवर का नाम बताओ जिसका प्रथम अक्षर हटा लेने से मित्र, और दूसरा अक्षर कटने से माथा बन जाता है।

(सियार)

—भइया भोलानाथ सिनहा

चार अक्षरों की वह कौन सी ऋतु है जिसके पहले और दूसरे अक्षर से दूल्हा तथा तीसरे और चौथे अक्षर के मेल से किसी गिनती का बोध होता है।

(बरसात)

—हनुमानप्रसाद सिंह

* = पत्थर।

टमाटर के सैंडविच

सम्पादक जी,

श्री प्यारेलाल गर्ग ने अक्टूबर सन् १९३८ के बाल सखा में लिखा है कि डबल रोटी के टुकड़ों के बीच टमाटर की चटनी रखकर सैंडविच बनाये जाते हैं। परन्तु मैं आप सब को उसके बनाने का ठीक ठीक उपाय बताती हूँ। एक और तरह से भी सैंडविच बनाये जाते हैं। बजाय टमाटर की चटनी रखने के उसमें (डबल रोटी के टुकड़ों में) टमाटर का एक वरक़ भी रखते हैं। इस प्रकार सैंडविच तैयार करने का नियम यहाँ दिया जाता है।

ताजी डबल रोटी के पतले पतले वरक़ (टोस्ट) काट लो। वे न तो बहुत पतले हों और न बहुत मोटे ही अर्थात् मामूली हों। डबल रोटी का एक वरक लेकर उस पर मक्खन लगाओ और एक टमाटर का पतला सा वरक रख दो। उस पर नमक और काली मिर्च छिडक लो। फिर एक दूसरे डबल रोटी के टुकडे पर मक्खन लगाकर उसे टमाटर वाले टुकडे पर रख दो। फिर बीच में से काट दो। इसमें मक्खन लगाने की भी तारीफ होनी चाहिए। यह नहीं कि कहीं पर तो थोप दिया और कहीं बिलकुल सफाचट्ट कर दिया। मक्खन सब जगह बराबर लगाना चाहिए।

इस तरह तैयार किये गये सैंडविच मुझे तो बहुत अच्छे लगते हैं। आशा है, आपको भी अच्छे लगेंगे।

कुमारी निर्मलादेवी सक्सेना,
सिविल लाइस,
बदायूँ।

लेख की चोरी

अक्टूबर के बाल-सखा में "सब से छोटी मछली" नामक एक लेख छपा है। उसके लेखक श्रीयुत महेशकुमार रेकरीवाल हैं। पर असल में यह लेख उन्होंने 'ज्ञान की पिटारी' से लिया है।

—महावीर, बबई।

कलम सखा

मुझे देश-विदेश के टिकट इकट्ठे करने का शौक है। जिन सज्जनों को अदल बदल करनी हो वे निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें।

बनवारीलाल झूनझूनवाला
C/o श्रीराम रामनिरजन
श्रीराम मेनशन
३९ सडहर्स्ट रोड, बम्बई।

विचित्र रोशनाई

१ छटाँक गन्धक के तेजाब को १ बोतल पानी में मिलाकर खूब हिलाओ। जब वह ठंडा हो जाय, क्योंकि गंधक का तेजाब मिलने से पानी गरम हो जाता है, तो उस पानी से आप एक कागज पर लिखें। पहले तो आपको यही मालूम पड़ेगा कि इसपर कुछ लिखा ही नहीं, परन्तु आग पर गरम करने से काले अक्षर दिखाई पड़ेंगे।

—विष्णुप्रसाद व्यास

कुछ जानने योग्य बातें

१—दुनिया में सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया है और सबसे बड़ा महासागर प्रशान्त महासागर है। यह पूर्व-पश्चिम की ओर फैला है। यह ५७३६ फैदम गहरा है।

२—दुनिया में सबसे बड़ा पहाड़ गौरी-शंकर है। यह एशिया में है और २९१४१ फीट ऊँचा है।

३—दुनिया भर में सबसे बड़ी नदी मिसिसिपी है। यह उत्तरी अमरीका में है और ४३८२ मील लम्बी है।

४—दुनिया भर में सबसे बड़ी दीवाल 'चीन की दीवाल' है। यह एशिया में है और बहुत लम्बी है।

—अभयप्रतापसिंह वर्मा

संसार की सैर

प्रिटोरिया के एक डाक्टर ने हाल ही में चीर फाड़ का एक ऐसा कौशल दिखाया जो आश्चर्यजनक है।

समुद्र में नहाते समय एक आदमी के कान में कुछ बालू चला गया। कान का पर्दा फाड़-कर वह दिमाग के अन्दर चला गया और कान से खून निकलने लगा। उसे धीरे धीरे सप्टी-सीमिया हो गया। आखिर डाक्टर ने उसके कान के पास से चार इञ्च दिमाग की हड्डी काटकर निकाल दी और भीतर से कान व घाव को साफ किया। घाव तो भर गया मगर दिमाग की हड्डी खुली रहने से उसे तकलीफ होने लगी। अन्त में एक डाक्टर ने उसकी पसली का एक टुकड़ा काटकर दिमाग में उस जगह के साथ जोड़ दिया। ऊपर से चमड़ा खींचकर सी देने से धीरे धीरे दोनों हड्डियाँ जुड़ गईं। अब भी वह मनुष्य भला-चंगा है।

—नवलकिशोर वाजपेयी